ज्ञान पुष्प

वार्षिक पत्रिका 2014-15 अंक - 6

ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़

Scanned by CamScanner

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU) का विशेष अध्ययन केन्द्र

ज्ञान महाविद्यालय आगरा रोड, अलीगढ़

इग्नू के RSD Notification No. : 00371G/RSD/Estt./LSC/Notification/2014/2960 Dated 8 Dec., 2014 के द्वारा ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़ {कोड नं. 47036 (डी)} में निम्नांकित कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के लिए विशेष अध्ययन केन्द्र की स्थापना की गई है :

क्रमांक	कार्यक्रम	प्रवेश हेतु न्यूनतम शैक्षिक योग्यता	अवधि
1.	बैचलर ऑफ प्रोपेटरी प्रोग्राम	औपचारिक शिक्षा आवश्यक नहीं, न्यूनतम आयु 18 वर्ष	6 माह
2.	मास्टर ऑफ आर्टस इन सोशियोलॉजी	स्नातक	2 वर्ष
3.	मास्टर ऑफ आर्टस इन इकोनोमिक्स	स्नातक	2 वर्ष
4.	मास्टर ऑफ आर्टस इन रूरल डेवलपमेंट	स्नातक	2 वर्ष
5.	पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन रूरल डेवलपमेंट	स्नातक	1 वर्ष
6.	डिप्लोमा इन बिजनेस प्रोसेसिंग आउटसोर्सिंग फाइनेंस एण्ड एकाउण्टिंग	अंग्रेजी विषय सहित कम से कम 50 प्रतिशत प्राप्तांकों से 12वीं पास	1 वर्ष
7.	सर्टीफिकेट इन रूरल डेवलपमेंट	स्नातक	6 माह
8.	सर्टीफिकेट इन टीचिंग इन इंग्लिश	स्नातक या 10+2 (2 वर्ष के अध्यापन अनुभव सहित)	6 माह
9.	सर्टिफिके इन एनवायरमेंटल स्टडीज	10+2	6 माह
10.	सर्टिफिके इन गाइडेन्स	मान्यता प्राप्त शिक्षण संस्थाओं के अध्यापक या मैट्रिकलेशन/एस.एस.सी. उत्तीर्ण या इग्नू से बी.पी.पी.	6 माह

Scanned by CamScanner

षष्ठम् अंक

ज्ञान पुष्प

वार्षिक पत्रिका
2014–15

संरक्षक
डॉ. वाई. के. गुप्ता
(प्राचार्य)

प्रबन्ध सम्पादक
डॉ. एस.एस. यादव
(उप प्राचार्य)

मुख्य सम्पादक
डॉ. ललित उपाध्याय

सह सम्पादक
डॉ. हीरेश गोयल
श्री आर.के. शर्मा
श्रीमती शिवानी सारस्वत
डॉ. नरेन्द्र कुमार सिंह

परामर्श दाता
श्री मनोज यादव
डॉ. रत्न प्रकाश
डॉ. रेखा शर्मा
श्रीमती आभाकृष्ण जौहरी

ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़

(डा. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा से सम्बद्ध)

Mobile : 9219419405

E-mail : gyanmv@gmail.com Website : www.gyanmahavidhyalaya.com

Scanned by CamScanner

वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम्
सुजलां सुफलां मलयज-शीतलाम्
शस्य श्यामलां मातरम्।। वन्दे मातरम् ।। 1।।

शुभ्र-ज्योत्सना-पुलकित-यामिनीम्
फुल्लकुसुमित-द्रुमदलशोभिनीम्
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम्।। वन्दे मातरम्।। 2।।

त्रिंशकोटि कण्ठ-कलकल-निनाद कराले
द्वित्रिंशकोटिभुजैर्धृतखरकरवाले,
अबला केन मा एत बले
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीम्
रिपुदल वारिणीं मातरम्।। वन्दे मातरम्।। 3।।

तुमि विद्या तुमि धर्म,
तुमि हृदि तुमि मर्म,
त्वं हि प्राणाः शरीरे।
बाहुते तुमि मा शक्ति,
हृदये तुमि मा भक्ति।
तोमारि प्रतिमा गड़ि मन्दिरे-मन्दिरे।। वन्देमातरम्।। 4

त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणीं
कमला कमल-दल विहारिणीं
वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्
नमामि कमलां अमलां अतुलाम्
सुजलां सुफलां मातरम्।। वन्दे मातरम्।। 5।।

श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषिताम्
धरणीं भरणीं मातरम्।। वन्दे मातरम्।। 6।।

Scanned by CamScanner

ज्ञान पुष्प : 2014-2015

अविरल प्रेरणा के स्त्रोत

संस्थापक
स्व. डॉ. ज्ञानेन्द्र जी गोयल
22.09.1923 - 11.06.2002

समाज सेविका
स्व. श्रीमती स्वराज्य लताजी गोयल
22.09.1927 - 20.10.2011

भाव प्रवण स्मरण

ज्ञान का दीपक जला के, किया यह शत्-शत् शुभ काम।
स्वराज्यलता, सरस्वती बन, दे रहीं शुभाशीष वरदान ॥
ज्ञान युक्त एक ज्योति जली, दूर हो रहा अज्ञान।
विद्या बनके महक रही, वाणिज्य, कला और विज्ञान ॥
चाँद-तारों सी यह वाटिका, चमके सुबह और शाम।
भेद-भाव से दूर बना है, ज्ञान अर्जन का धाम ॥
हम सब मिलके दें श्रद्धांजलि, हमको दीजिए यह वरदान।
स्वराज्य, सरोकार से हम सब, करते रहें जन कल्याण ॥

प्रातः स्मरणीय, वन्दनीय, पूज्यनीय गोयल साहब एवं उनकी धर्मपत्नी को कोटि-कोटि नमन्।

डॉ. नरेन्द्र कुमार सिंह

Scanned by CamScanner

ALIGARH MUSLIM UNIVERSITY
Aligarh - 202 002, U.P., India.

LT. GEN. ZAMEER UDDIN SHAH (RETD)
PVSM, SM, VSM

Former Deputy Chief of Army Staff &
Member, Armed Forces Tribunal
Vice-Chancellor

Phone: (Off) +91-571-2700994/2702167
(Res) +91-571-2700173
Fax: (Off) +91-571-2702607
(Res) +91-571-2700087
Email: vcamu@amu.ac.in

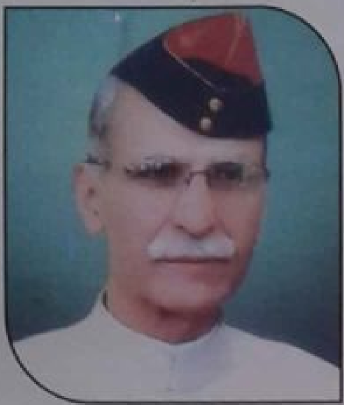

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि ज्ञान महाविद्यालय अपने कॉलेज की वार्षिक पत्रिका प्रकाशित कर रहा है। किसी भी शैक्षणिक संस्था के लिये यह एक महत्वपूर्ण कार्य है जिससे छात्र व छात्राओं को न केवल समाज के विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार व्यक्त करने का अवसर प्राप्त होता है, बल्कि उनमें साहित्यिक योग्यताओं के विकास का मार्ग भी प्रशस्त होता है।

मैं आशा करता हूँ कि इस वार्षिक पत्रिका को साहित्यिक एवं शैक्षणिक क्षेत्र में हाथों हाथ लिया जाएगा, और इसके सम्पादक मण्डल के सदस्यों की मेहनत को सम्मान की दृष्टि से देखा जाएगा।

ज़मीर शाह
29/01/15
(लेफ्टिनेन्ट जनरल ज़मीर उद्दीन शाह)

Scanned by CamScanner

SATISH KUMAR GAUTAM
Member of Parliament, Aligarh
Member, Chemical & Fertilizer Committee
Member, Railway Committee

सत्यमेव जयते

14-C, Firozshash Road, New Delhi
Telephone : 011-23355404
Off. : 204 Vaishno Tower, Vidhya Nagar,
Ramghat Road, Aligarh-202001
Mob. : 9457762404, Tel. : 0571-2742425

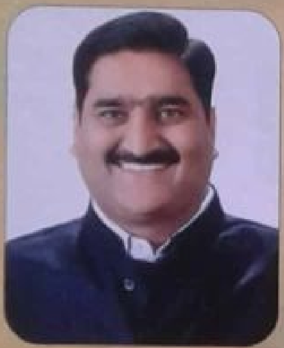

शुभकामना संदेश

दिनांक 7/2/2015

आपके महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक पत्रिका "ज्ञान पुष्प 2014-15" का प्रकाशन जोकि फरवरी 2015 में हो रहा है। यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि आपका संस्थान प्रतिवर्ष वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन करता है। मुझे आपकी संस्था द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सेवा योजना ईकाई के एक कार्यक्रम में सम्मिलित होने का अवसर मिला, जिसमें बड़ी संख्या में छात्र/छात्राओं ने रक्तदान किया था जो मुझे बड़ा ही अनुकरणीय प्रयास लगा। ऐसे कार्यक्रम निःसंदेह किसी भी संस्था में चार चाँद लगाते हैं।

मैं इस परिप्रेक्ष्य में आपकी संस्था के सभी अध्यापकों, विद्यार्थियों तथा अन्य सहयोगियों का जो कहीं न कहीं इस महाविद्यालय से जुडे हुये हैं, सभी को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ तथा यह कामना करता हूँ कि आने वाले दिनों में यह महाविद्यालय शिक्षण के क्षेत्र में नवीन कीर्तिमान स्थापित करे।

शुभकामनाओं सहित।

भवदीय
सतीश कुमार गौतम

डॉ. वाई.के. गुप्ता जी,
प्राचार्य
ज्ञान महाविद्यालय ,अलीगढ

Scanned by CamScanner

ज़फर आलम
नगर विधायक, अलीगढ़
समाजवादी पार्टी
आवास : 4/15, केला नगर, अलीगढ़ - 202002

सदस्य विधान सभा
उत्तर प्रदेश

ظفر عالم
लखनऊः
23-24, विधायक निवास, मीराबाई मार्ग-5, लखनऊ
कैंप कर्यालय :
महिला थाने के सामने, जेल रोड, अलीगढ़

पत्रांक ZA/2014/00024G

दिनांक 07-02-2015

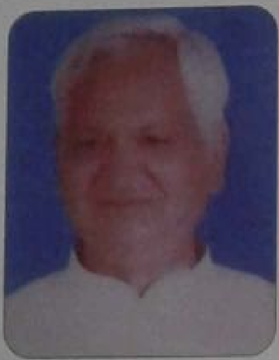

शुभकामना संदेश

यह जानकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़ अपनी वार्षिक पत्रिका ''ज्ञान पुष्प'' के षष्ठम संस्करण को प्रकाशित करने जा रहा है।

महाविद्यालय जहां एक ओर विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्रदान करने में सहयोग कर रहा है। वहीं सामाजिक सरोकार के अन्तर्गत स्वराज्य स्वाबलंबी योजना संचालित कर रहा है।

मैं ''ज्ञान पुष्प'' के सफल प्रकाशन हेतु प्रबंध समिति, प्राचार्य, समस्त प्राध्यापकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों व विद्यार्थियों को शुभकामना प्रदान करता हूँ। मुझे विश्वास है कि प्रस्तुत पत्रिका ''ज्ञान पुष्प'' 2014-15 छात्रों को मार्गदर्शन, उत्साह वर्द्धन एवं मनोरंजन करने में पूर्व सफल होगी।

जफ़र आलम
नगर विधायक/लोक सभा प्रत्याशी
अलीगढ़

Scanned by CamScanner

हाजी ज़मीर उल्लाह खाँ
कोल विधायक
अलीगढ़
मो० 08765954774

लखनऊ निवास/कार्यालय :
विधायक निवास-6,
फ्लैट नं. C-8, पार्क रोड
लखनऊ (उ.प्र.)

अलीगढ़ निवास/कार्यालय :
अमीर निशा, हाजी कुआ
सिविल लाइन, अलीगढ़
पिन : 202002 (उ.प्र.)

E-mail : hajizameerullah@gmail.com, samajwadipartyaligarh@gmail.com, **Website :** www.samajwadipartyaligarh.com

पत्रांक : स.वि.स./ दिनांक.......................

शुभकामना संदेश

बड़े हर्ष का विषय है कि ज्ञान महाविघालय अलीगढ़ द्वारा ज्ञान पुष्प वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका में प्रकाशित लेख व रचनायें छात्रों के लिये प्रेरक सिद्ध होंगी।

मैं महा विद्यालय प्रबन्ध समिति की अध्यक्षा, सचिव, प्राचार्य, सम्पादक मण्डल, प्राधायपकगण, विद्यार्थियों व शिक्षणेत्तर कर्मचारियों को हार्दिक शुभकामनाऐं प्रेषित करता हूँ।

हाजी जमीर उल्लाह खाँ
विधायक, अलीगढ़

Scanned by CamScanner

श्रीमती आशादेवी
अध्यक्षा
ज्ञान महाविद्यालय सोसायटी

शुभ संदेश

मैं ज्ञान महाविद्यालय की प्रबन्ध समिति की अध्यक्षा होने के नाते स्वयं को गौरवान्वित महसूस करती हूँ। हर्ष का विषय है कि महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका ''ज्ञान पुष्प'' 2014-15 के षष्ठम् अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। वार्षिक पत्रिका महाविद्यालय की प्रगति का दर्पण होती है। इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU) द्वारा इस वर्ष दस शैक्षिक कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के लिए हमारे महाविद्यालय में विशेष अध्ययन केन्द्र की स्थापना की गयी है, इससे अनेक विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा की मुख्य धारा से जुड़ने का शुभ अवसर मिलेगा। राष्ट्रीय मूल्याँकन एवं प्रत्यायन परिषद् (NAAC) द्वारा किए गए मूल्याँकन से भी हमें प्रगति की ओर अग्रसर होने हेतु मार्गदर्शन मिला है। महाविद्यालय के प्राचार्य, शिक्षक तथा शिक्षणेत्तर वर्ग के व्यक्तियों की टीम भावना विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत सिद्ध हो रही है।

'ज्ञान पुष्प' विद्यार्थियों तथा प्राध्यापकों के अच्छे लेख तथा रचनाओं का संकलन है। मैं महाविद्यालय द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में भाग लेकर शिक्षक, शिक्षणेत्तर वर्ग तथा विद्यार्थियों के सीधे सम्पर्क में रहती हूँ, यह सभी महाविद्यालय के संस्थापक शिक्षाविद् डॉ. ज्ञानेन्द्र गोयल के दृष्टिकोण (VISION) के अनुरूप कार्यरत् है।

'ज्ञान पुष्प' के इस अंक के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनायें।

श्रीमती आशादेवी
अध्यक्षा

Scanned by CamScanner

दीपक गोयल
सचिव
ज्ञान महाविद्यालय सोसायटी

हार्दिक शुभ कामनाएं

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि हमारा महाविद्यालय गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी अपनी वार्षिक पत्रिका 'ज्ञान -पुष्प' सत्र 2014-15 का प्रकाशन कर रहा है। यह 'ज्ञान -पुष्प' का षष्ठम् अंक है। पत्रिका में उत्तरोत्तर गुणात्मक सुधार हो रहा है, पत्रिका के नाम को सार्थक बनाने हेतु प्राचार्य तथा सम्पादक मण्डल के सदस्य निरन्तर प्रयासरत हैं। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री से महाविद्यालय की प्रगति दृष्टिगोचर होती है। ''ज्ञान पुष्प'' का उद्देश्य मुख्यतः विद्यार्थियों की लेखन कला का विकास करना है। इस दिशा में हमें आशातीत सफलता प्राप्त हुयी है। वर्ष के दौरान महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय स्तर के कार्यक्रमों में प्रतिभागी बनकर महाविद्यालय का गौरव बढ़ाया है, साथ ही अनेक प्राध्यापकों ने संगोष्ठियों में प्रतिभाग बन महाविद्यालय को गौरवान्वित किया है। जुलाई 2012 में हमारे महाविद्यालय के शिक्षक शिक्षा विभाग को राष्ट्रीय मूल्याँकन एवं प्रत्यायन परिषद् (NAAC) द्वारा 'ए' ग्रेड दिया जा चुका है। अक्टूबर, 2014 में NAAC के तीन सदस्यीय दल ने हमारे महाविद्यालय के कला, वाणिज्य, विज्ञान तथा प्रबन्धन संकायों का मूल्याँकन महाविद्यालय के प्रबन्धन की पहल पर किया गया है।

सुयोग्य प्राचार्य, प्राध्यापक एवं कर्मठ शिक्षणेत्तर वर्ग के अथक प्रयासों से महाविद्यालय चिकित्सक सह-शिक्षाविद् संस्थापक डॉ. ज्ञानेन्द्र गोयल के आदर्शों पर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। मैं महाविद्यालय की प्रगति के प्रति आशावान हूँ तथा महाविद्यालय पत्रिका 'ज्ञान -पुष्प' की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ।

दीपक गोयल
सचिव

Scanned by CamScanner

डॉ. वाई. के. गुप्ता

प्राचार्य

प्राचार्य की डेस्क से

प्रगति गतिशीलता की द्योतक है। उत्तरोत्तर गतिशील प्रगति को समेटे हुए ज्ञान महाविद्यालय शैक्षिक नवाचारों के साथ कदम बढाते हुए अपने अल्प काल में ही सुविधायुक्त फर्नीचर से सज्जित आकर्षक पाठ्य कक्ष, दो समृद्ध कम्प्यूटरीकृत पुस्तकालय, बेहद समृद्ध एवं अत्याधुनिक उपकरणों से युक्त प्रयोगशालाएं, विशाल हाल, सौर ऊर्जा से अबाध विद्युत आपूर्ति, सी. सी. कैमरे, मंत्र मुग्ध करने वाली हरियाली आदि इतनी सारी विशेषताओं से युक्त होना, यह प्रबन्ध तंत्र की कुशलता एवं योग्यता का जीता–जागता प्रमाण है तथा वार्षिक पत्रिका ''ज्ञान पुष्प'', वार्षिक पत्रक 'ज्ञान दीप', छमाही राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षिक जर्नल 'ज्ञान भव', 'ज्ञान अर्थ' एवं 'ज्ञान विज्ञान'' चतुर्मासिक समाचार बुलेटिन 'ज्ञान दर्शन' का नियमित प्रकाशन, नकल विहीन परीक्षा, लगभग शत–प्रतिशत परीक्षा परिणाम, नियमित कक्षाएं, अनुशासित वातावरण, वर्ष में अनेकों अतिथि व्याख्यान, सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं प्रतियोगिताओं का अनवरत रूप से जारी रहना, यह प्राध्यापकों के कठिन परिश्रम, लगन एवं ऊर्जा को परिलक्षित करता है।

अत्यन्त गौरव एवं आनन्द की बात है कि महाविद्यालय ने अपने आस–पास के चौदह गाँवों को सामाजिक सरोकार के तहत शिक्षित एवं जागरूक करने का अनूठा बीड़ा उठाया है। बढते हुए कम्प्यूटरीकृत युग में महाविद्यालय की पहल पर छात्रों को सोशल मीडिया के द्वारा फेस बुक पर 'ज्ञान वाटिका' से जोड़ा गया है जिससे वे नवीनतम जानकारियों को प्राप्त करने हेतु पूरे विश्व से जुड़ सकें और वैज्ञानिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं स्वास्थ्यवर्धक सूचनाओं से स्वयं को अद्यतन (update) रख सकें।

महाविद्यालय को और अधिक नई ऊँचाइयों पर ले जाने का सपना संजोये, युवा, बेहद ऊर्जावान डा. गौतम गोयल के सानिध्य में राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) का निरीक्षण कराना भी इस वर्ष की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि रही है।

इस वर्ष एक घटना जिसे हर्ष और दुःख का मिला–जुला संगम कहा जा सकता है, वह यह है कि कुछ अपने प्राध्यापक साथी कालिज छोड़कर जा रहे हैं। यह जानकर एक ओर तो हर्ष हुआ कि उनका चयन सरकारी विद्यालयों में हो गया है, और दूसरी ओर उनसे बिछुड़ने का दुःख, जिसकी खट्टी–मीठी यादें लम्बे समय तक मन को गुदगुदाती रहेगी।

महाविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों द्वारा अपना–अपना दायित्व पूर्ण जिम्मेवारी एवं उत्साह के साथ पूरा करने के लिए मैं सभी को धन्यवाद देता हूँ। प्रबन्ध तंत्र का मार्गदर्शन, सम्पादक मण्डल की मेहनत एवं लेखकों के ज्ञानयुक्त व अर्थपूर्ण लेखों के साथ ज्ञान महाविद्यालय की प्रतिष्ठित ज्ञानवर्धक वार्षिक पत्रिका **'ज्ञान पुष्प'** का षष्ठम संस्करण आपके समक्ष है अब यह विद्व पाठक ही बतायेंगे कि पत्रिका **'ज्ञान पुष्प'** ज्ञान बाँटने में कहां तक सफल हुई ?

साथ ही पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी सहयोगियों को हृदय से धन्यवाद देता हूं और पाठकों से आग्रह करता हूं कि वे अपने रचनात्मक सुझावों से अवगत कराकर अपनी इस पत्रिका को और अधिक उपयोगी बनाने में सहयोग करें।

अन्त में अपने प्राध्यापक बन्धुओं से आशा करता हूँ कि वे लगन, उत्साह एवं स्फूर्ति युक्त सहयोग का क्रम अनवरत रूप से जारी रखें, जिससे महाविद्यालय शिक्षा जगत के आकाश में ध्रुव तारे की मानिन्द चमके–दमके और छात्रों को ढ़ेर सारी शुभकामनाएं कि वे ज्ञानार्जन कर सफलता की ऊँचाइयों को छुएं।

डॉ. वाई. के. गुप्ता
प्राचार्य

Scanned by CamScanner

डॉ. ललित उपाध्याय

मुख्य सम्पादक

सम्पादकीय

वार्षिक पत्रिका 'ज्ञान पुष्प' के षष्ठम् अंक के प्रकाशन का महाविद्यालय के कुशल प्रबन्ध तंत्र द्वारा दिया गया चुनौतीपूर्ण उत्तर दायित्व मेरे लिए गौरव पूर्ण है। इस उत्तरदायित्व को लगातार दूसरी बार पूर्णता की ओर ले जाते हुए मैं अत्यधिक रोमांचित एवं हृदय से स्पन्दित हूँ।

डिजीटल इंडिया के जरिए ई-क्रान्ति से अगले पाँच साल में एक करोड़ से अधिक युवाओं को उनका कौशल विकास किये जाने का सरकार का लक्ष्य है, इन्हीं सम्भावनाओं को देखते हुए महाविद्यालय यह वर्ष Year of Skill Development के रूप में मना रहा है। जिसमें विद्यार्थियों को विभिन्न माध्यमों से कौशल विकास एवं व्यक्तित्व विकास का प्रशिक्षण दिलवाया गया है। साथ ही विद्यार्थियों को शैक्षणिक, साहित्यिक, सामाजिक, खेल एवं सहगामी गतिविधियों में प्रतिभाग करने हेतु प्रोत्साहित किया गया है।

वार्षिक पत्रिका 'ज्ञान पुष्प' के इस नवीन अंक को मूर्त रूप प्रदान करने में महाविद्यालय प्रबंध तन्त्र की अध्यक्षा श्रीमती आशा देवी जी, सचिव श्री दीपक गोयल जी, निदेशक ज्ञान आई. टी. आई. डॉ. गौतम गोयल जी, संरक्षक डॉ. वाई. के. गुप्ता जी (प्राचार्य), डॉ. एस. एस. यादव (उपप्राचार्य) व श्री मनोज यादव (प्रबंधक) का मार्ग दर्शन व परामर्श विशेष सराहनीय एवं उत्साहवर्धक रहा है। मैं सम्पादन कार्य में सहयोग हेतु श्री विजय प्रकाश नवमान जी का भी विशेष आभारी हूँ।

पत्रिका के सम्पादक मंडल के सभी सदस्यों, सभी विभागों के विभागाध्यक्षों, विभिन्न समितियों के प्रभारियों, प्राध्यापकों, विद्यार्थियों एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों के अमूल्य सहयोग को भुला पाना सम्भव नहीं है। इसके लिए मैं सभी का आभारी हूँ। इसके अतिरिक्त प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए सभी महानुभावों के प्रति भी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर इस महत्वपूर्ण कार्य में अपनी भूमिका निभाई। पत्रिका में जिन उत्साही रचनाकारों की रचनाओं को स्थान नहीं मिल पाया है, वे निराशा छोड़कर सतत् रूप से प्रयत्नशील रहें, सफलता एक दिन उनके कदम अवश्य चूमेगी।

''ज्ञान पुष्प'' के माध्यम से अपने महाविद्यालय के विद्यार्थियों को यहीं कहना चाहूँगा कि आगामी परीक्षाओं में वे मेहनत, एकाग्रता, आत्मविश्वास व पूर्ण निष्ठा के साथ मनोयोग से अध्ययन करें, जिससे अपना, परिजनों एवं महाविद्यालय का नाम रोशन कर सकें। साथ ही सफल विद्यार्थी जिस स्थान पर सेवा दें, वहां भी शिक्षा का प्रसार व प्रचार कवि की इन पंक्तियों के साथ अवश्य करते रहें-

शिक्षा से अब तक जो वंचित, नहीं ज्ञान जिनके उर संचित।
उनको ज्ञान दिलाओ साथी, घर-घर दीप जलाओ साथी॥

डॉ. ललित उपाध्याय

Scanned by CamScanner

College Topper's 2013-14

Mohini Verma
B.Sc. III (PCM)

Reshu Gupta
B.Sc. III (ZBC)

Meenakshi Sharma
B.Sc. II (PCM)

Shivani Bhardwaj
B.Sc. II (ZBC)

Kapil Kumar Gaur
B.Sc. I (PCM)

Mehvish Zafar
B.Sc. I (ZBC)

Mala Kumari
B.T.C. (2012)
1st & 2nd Semester

Nidhi Parashar
B.B.A. (2012)

Shubham Varshney
B.C.A.

Scanned by CamScanner

College Topper's 2013-14

Shahid Ahmad Mir
Accounts & Law Group
M. Com. (F)

Priyanka Dixit
Busi. Adm. Group
M. Com. (F)

Siraj Ahmad
Accounts & Law Group
M. Com. (P)

Hemlata
Busi. Admn. Group
M. Com. (P)

Arzoo Gupta
B. Com. III

Anita Varshney
B. Com. II

Dheeraj Singh
B. Com. I

Dushyant Maheshwari
B. Com. I

Bhageshwari Bhardwaj
B. A. III

Narendra Kumar
B. A. II

Ashu Arunesh
B. A. I

Scanned by CamScanner

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् (NAAC) पीयर टीम द्वारा निरीक्षण

नैक टीम प्राचार्य से वार्तालाप करते हुए

नैक टीम राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई का निरीक्षण करते हुए

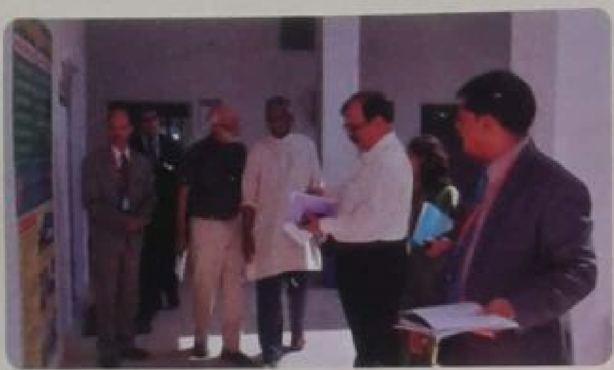

ज्ञान सामाजिक सरोकार समिति
का निरीक्षण करते हुए नैक टीम

नैक टीम (भौतिक विभाग) की प्रयोगशाला
का निरीक्षण करते हुए

नैक टीम (रसायन विज्ञान) प्रयोगशाला
का निरीक्षण करती हुई।

नैक टीम 'पुस्तकालय' का निरीक्षण करती हुई।

नैक टीम (जीव विज्ञान) प्रयोगशाला
का निरीक्षण करती हुई।

नैक टीम (वनस्पति विज्ञान) की प्रयोगशाला का
निरीक्षण करती हुई।

Scanned by CamScanner

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् (NAAC) पीयर टीम द्वारा निरीक्षण

नैक टीम (बॉटनीकल गार्डन) का निरीक्षण करती हुई

नैक टीम (B.T.C.) के TLM कक्ष का निरीक्षण करती हुई।

नैक टीम (भूगोल विभाग) की प्रयोगशाला का निरीक्षण करती हुई

नैक टीम (मनोविज्ञान विभाग) प्रयोगशाला का निरीक्षण करती हुई।

नैक टीम छात्र-छात्राओं से मुखातिब होती हुई।

नैक टीम छात्रों के अभिभावकों से बातचीत करती हुई

नैक टीम कला संकाय का निरीक्षण करती हुई।

नैक टीम वाणिज्य विभाग का निरीक्षण करती हुई।

Scanned by CamScanner

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् (NAAC) पीयर टीम द्वारा निरीक्षण

छात्राएँ नैक टीम के सामने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत करती हुई।

नैक टीम का स्वागत करते हुए प्रबंधक, प्राचार्य, उपप्राचार्य एवं प्राध्यापक

प्रार्थना सत्र् का अवलोकन करते टीम के सदस्य

शोध एवं प्रकाशन विभाग का निरीक्षण करती नैक टीम

प्राथमिक चिकित्सा व्यवस्थाओं की जानकारी प्राप्त करती हुई नैक टीम

नैक टीम द्वारा आर्ट एण्ड क्राफ्ट कक्ष का निरीक्षण

प्रशासनिक भवन में दस्तावेजो का निरीक्षण करते हुए नैक टीम सदस्य

नैक टीम द्वारा प्राध्यापकों के साथ बैठक

Scanned by CamScanner

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् (NAAC) पीयर टीम द्वारा निरीक्षण

पुस्तकालय के अभिलेखों का अवलोकन करते हुए नैक टीम के चेयरमैन

वाणिज्य संकाय के अभिलेखों का अवलोकन

कला संकाय के अभिलेखों का अवलोकन

विज्ञान संकाय के अभिलेखों का अवलोकन

एक्जिट मीटिंग से नैक टीम के चैयरमैन व सदस्यगण प्राचार्य को रिपोर्ट भेंट करते हुए।

एक्जिट मीटिंग में नैक टीम के चैयरमैन (पूर्व कुलपति केरल वि.वि.) द्वारा संबोधन

सचिव श्री दीपक गोयल नैक टीम का आभार व्यक्त करते हुए

उपस्थित प्राध्यापकगण एवं विद्यार्थी

Scanned by CamScanner

राष्ट्रीय दिवसों का आयोजन

स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोहण करते हुए प्राचार्य डॉ. वाई.के. गुप्ता

गणतंत्र दिवस पर राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की तस्वीर पर पुष्प भेंट करते हुए प्राचार्य, प्रबंधक व अन्य

गणतंत्रा दिवस पर विचार प्रकट करते हुए छात्रा

26 जनवरी समारोह में उपस्थित विद्यार्थीगण

गाँधी जयंती (2 अक्टूबर) पर ग्राम मड़राक में स्वच्छ भारत अभियान रैली का आयोजन

गाँधी जयंती पर मड़राक स्थित प्रा.वि. में एन.एस.एस. द्वारा आयोजित स्वच्छता अभियान के तहत् साफ-सफाई

एन.एस.एस. द्वारा आयोजित स्वच्छ भारत अभियान गोष्ठी में सचिव श्री दीपक गोयल द्वारा संबोधन

Scanned by CamScanner

ज्ञान पुष्प : 2014-2015

प्राचार्य के साथ समस्त संकायों के प्राध्यापकगण

Scanned by CamScanner

प्राचार्य के साथ शिक्षणेत्तर एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारीगण

Scanned by CamScanner

अनुक्रम

क्रमांक रचना का शीर्षक | लेखक का नाम | पृ. सं.

हिन्दी भाग

लेख एवं निबन्ध

क्रमांक	रचना का शीर्षक	लेखक का नाम	पृ. सं.
1.	ज्ञान महाविद्यालय में सुनहरा सफर	डा. एस. एस. यादव, उप प्राचार्य	1
2.	हरीमिता संवर्द्धन ही एक मात्र उपाय	डा. विवेक मिश्रा, प्रभारी, कला संकाय	3
3.	शिक्षा एवं सामाजिक परिवर्तन	रामकिशन शर्मा, विभागाध्यक्ष, बी.टी.सी.	5
4.	हमारा राष्ट्रीय चिन्ह : अशोक स्तम्भ	सुरेश चन्द्र, उप प्राचार्य ज्ञान आई.टी. आई.	6
5.	हितोपदेश	डा. रेखा शर्मा, उप प्राचार्य	7
6.	सफलता के गुरु मंत्र "जहां चाह वहां राह"	डा. ललित उपाध्याय, असि. प्रोफेसर, समाजशास्त्र	8
7.	उच्च शिक्षा : भूगोल विषय की रोजगार परक दिशाएं एवं संभावनाएँ	डॉ. सोमवीर सिंह, विभागाध्यक्ष, भूगोल	10
8.	दहेज प्रथा : क्रय विक्रय की मानवीय परम्परा	डॉ. राजेश कुशवाहा, प्रवक्ता, वाणिज्य संकाय	12
9.	जीवन में मनोविज्ञान का उपयोग	डॉ. वी. सी. गुप्ता, विभागाध्यक्ष, मनोविज्ञान	13
10.	कैसे राज करें, औरों के दिल पर ?	रवि कुमार, प्रवक्ता, बी. टी. सी.	14
11.	मनुष्य को अपने भीतर आत्म–विश्वास जाग्रत	श्रीमती शोभा सारस्वत, प्रवक्ता, बी. टी. सी.	15
12.	कहानी 101 की	श्रीमती वैशाली अग्रवाल, प्रवक्ता, बी. टी. सी.	15
13.	पत्रकारिता के क्षेत्र में हिन्दी का पतन	डॉ. बीना अग्रवाल, सहायक प्राध्यापिका, हिन्दी	16
14.	राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (RUSA)	नरेश कुमार (बी.एड.)	17
15.	किसी भी लड़की की सुन्दरता उसके चेहरे	लक्ष्मी अग्रवाल (बी.टी.सी.)	22
16.	प्रजातंत्र मात्र चुनाव तन्त्र नहीं	रजनी शर्मा (बी. टी. सी.)	23
17.	आलस्य का रोग	अंशु गुप्ता (बी. टी. सी.)	24
18.	21वीं सहस्त्राब्दी में भारतीय नारी की स्थिति	ओमवीर सिंह देशमुख (बी. एड.)	25
19.	अंधी माँ का बेटा	रजनेश कुमार (बी. टी. सी.)	26
20.	राष्ट्र भाषा हिन्दी	चन्द्रवीर सिंह (बी. टी. सी.)	27
21.	कन्या भ्रूण हत्या	मनोज कुमार गुप्ता (बी. ए.)	28
22.	गुरू शिष्य का अटूट सम्बन्ध	महिमा शर्मा (बी. एस–सी.)	29
23.	मनुष्य के कर्म और धर्म	धर्मेद्र कुमार (बी. एड.)	29
24.	हिन्दुस्तान का गौरव	अमित तौमर (बी. कॉम.)	30
25.	निष्क्रिय मत बनिए	नरेन्द्र कुमार (बी. ए.)	31
26.	कंजूस बनिया	मोहित गोस्वामी (बी. काम.)	31
27.	वार्तालाप	राहुल कुमार (बी. एड.)	32
28.	चिंता की चिता को जला दो	गौरव प्रसाद अग्रवाल (बी. काम.)	32
29.	"कौन छोटा, कौन बड़ा"	ममता रानी (बी.टी.सी.)	33
30.	ज्ञान भक्ति की साधना है जरूरी	विजय नवमान	33
31.	हमारी गौरवशाली परम्परा	ललित मोहन भारद्वाज (बी. एड.)	34
32.	भारत की महान विभूति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन	अजय कुमार (बी. एड.)	35
33.	विद्या सभी धनों में श्रेष्ठतम्	अनिल कुमार (बी.टी.सी.)	36
34.	उद्देश्य	कुलदीप कुशवाहा (बी. टी. सी.)	36
35.	एक सुबह	माला कुमारी (बी. टी. सी.)	37

Scanned by CamScanner

36.	स्वास्थ्य और भक्ति	दिनेश कुमार (बी. ए.)	38
37.	माँ	गोपाल सिंह (बी. ए.)	38
38.	भारम देश में महिलाओं का शोषण	प्रगति (बी. टी. सी.)	39
39.	लक्ष्य	पुष्पा कुमारी (बी. एड.)	40
40.	संघर्ष की राह	सिद्धार्थ गुप्ता (बी.कॉम.)	41
41.	सीख	साक्षी सक्सैना (बी. एस–सी.)	69
42.	माँ और पत्नि	स्वीटी कुमारी (बी. एड.)	69
	काव्य रचनाएं		
1.	कुछ मुख्य तथ्य	रूचि शर्मा (बी.एस–सी.)	40
2.	माँ की दुआ	रवि कुमार प्रवक्ता, बी. टी. सी.	42
3.	गीत	डा. नरेन्द्र कुमार सिंह, प्रवक्ता–हिन्दी	42
4.	शिष्य की गुरु से अपेक्षा	लख्मी चन्द्र, प्रवक्ता, बी. एड.	43
5.	आत्म ज्ञान	संजीव कुमार (बी. टी. सी.)	43
6.	जीवन नहीं मरा करता है	शिवम कश्यप (बी. कॉम.)	44
7.	असम्भव	मीना खान	44
8.	किसान की दुर्दशा	मुनेश कुमार (बी.एस–सी.)	45
9.	दु:ख का अन्त	सुजाना (बी. टी. सी.)	46
10.	अभिशाप है मद्यपान	देवेन्द्र सिंह तेवतिया, (बी. टी. सी.)	46
11.	दोस्ती	अनु गौड़ (बी. टी. सी.)	47
12.	भ्रूण की पुकार	रेखा (बी. टी. सी.)	47
13.	ज्ञान महाविद्यालय – तेरी अजब निराली शान	लोकेश कुमार (बी.एड)	48
14.	कलियुग की हास्य कविता	लोकेश कुमार (बी.एड)	48
15.	माँ	जितेन्द्र कुमार (बी. कॉम.)	49
16.	माँ	सुमित सक्सेना, प्रशासनिक भवन	49
17.	आशा का दीपक	चेतन अग्रवाल (बी. कॉम.)	50
18.	ओट	भारती (बी. ए.)	51
19.	भ्रष्टाचार मिटाओ, देश को बचाओ	कोमल अग्रवाल (बी. एड.)	51
20.	भारत के भविष्य की कल्पना	अतुल (बी. काम.)	52
21.	मैं भी शहीद हो जाँऊगी	नीलम भास्कर (बी. एस–सी.)	52
22.	सफर, दुआ	पूनम भारद्वाज बी. काम.)	53
23.	लड़कियाँ बोझ नहीं होती	दिनेश कुमार (बी. काम.)	53
24.	मेरे पापा, मेरी सोच, मेरी दिशा	मोहित वार्ष्णेय (बी. काम.)	54
25.	चौखट	रजनी कुमारी (बी. एस–सी.)	54
26.	देश भक्ति	प्रीति कुमारी (बी. एस–सी.)	55
27.	आज की दुनियां	शिशुपाल (बी. ए.)	55
28.	मैं हूँ एक लड़की	कविता कुमारी (बी. एस–सी.)	56
29.	बेटी की आवाज	प्रियंका वशिष्ठ (बी. एस–सी.)	56
30.	अपने अन्दर देख	पूजा वार्ष्णेय (बी. कॉम.)	57
31.	नीति	प्रीति गोस्वामी (बी. ए.)	58
32.	जीवन के रंग	तनु रानी (बी. ए.)	58

Scanned by CamScanner

33.	मैं हूँ कि उठती जाती हूँ	अरविन्द सागर (बी. ए.)	59
34.	घर आएगी नई हवा	गोपाल सिंह (बी. ए.)	60
35.	माँ बेटी	दीपिका शर्मा (बी. ए.)	60
36.	गजलीयत और अशआर	प्रियंका शर्मा (बी. बी. ए)	61
37.	मैंने सुना है	प्रियंका शर्मा (बी. बी. ए)	61
58.	विमर्श	संजीव कुमार (बी. टी. सी.)	62
59.	मैं दीपक हूँ	अरविन्द सागर (बी. ए.)	62
60.	माँ–बाप	रुचि शर्मा (बी. एस–सी.)	63
61.	परोपकार	प्रियंका कुमारी (बी. ए.)	63
62.	भ्रष्टाचारी, तुम्हें जीतना होगा	रिचा गौतम (बी. एस–सी.)	64
63.	निर्मल गंगा	स्वीटी कुमारी (बी. एड.)	65
64.	सच्चा सौन्दर्य	रश्मि वार्ष्णेय (बी. एड.)	65
65.	गुरु प्रकाश	रोहित कुमार शर्मा (आई. टी. आई.)	66
66.	मन की आवाज	नीतू (बी. एस–सी.)	66
67.	जय जवान जय किसान	पंकज कुमार (बी. ए.)	66
68.	एक मासूम लड़की	पूजा सिंह (बी. एड.)	67
69.	जुनून	अमित कुमार (बी. टी. सी.)	67
70.	कौन है भिखारी?	सुखवीर सिंह (बी. ए.)	68
71.	गुरू की महिमा	नरेन्द्र शर्मा (आई. टी. आई.)	68
72.	अन्तिम सत्य	मयंक वार्ष्णेय (बी. काम.)	70
73.	देर तो लगती है	सुगंधा पंवार (बी. ए.)	70
74.	मँहगाई	अर्चना (बी. टी. सी.)	71
75.	बस एक कदम और	सुनील कुमार (बी. टी. सी.)	71
76.	माँ	तृप्ति सिंह (बी. टी. सी.)	72
77.	बच्चे	शिव कुमारी (बी. एड.)	73
78.	प्रेरणा गीत	निशा रावत (बी. एड.)	74

ज्ञान मञ्जरी

1.	हमारे शरीर का मंत्रिमण्डल	शालिनी	21
2.	जीवन का सच	निशा गुप्ता (बी. काम.)	30
3.	पहेली	निपुण (बी. कॉम.)	41
4.	ज्ञान की बातें		47
5.	उत्तम बातें	सूरज वर्मा.........	50
6.	Discipline Calculation	मोहित वार्ष्णेय (बी. काम.)	54
7.	सफल लोगों की सात अच्छी आदतें	रेशु गुप्ता (बी. कॉम.)	57
8.	जिन्दगी का गुलदस्ता	अजय कुमार मौर्य (बी. एड.)	58
9.	प्यार की अनुभूति	भारती कुमारी (बी. ए.)	61
10.	एक से दस अंकों का भारतीय समाज में स्थान	सीनेश जैन (बी. टी. सी.)	62
11.	विज्ञान के दोहे	हिना चौधरी (बी. टी. सी.)	72
12.	राष्ट्रीय प्रतीक चिन्ह	शिव कुमारी (बी. एड.)	73
13.	जीवन का सार	लता कुमारी शर्मा (बी. एड.)	74

Scanned by CamScanner

ENGLISH PART

1.	Voluntary Management & Empowerment : A case study of Gujarat Earthquake	Ratna Prakash (Economics Deptt.)	1
2.	Fiscal Policy & Social Welfare	Dr. D. N. Gupta (Economics Deptt.)	5
3.	Examination	Pinky (B. T. C.)	5
4.	Save the Earth, It's our turns to lead	Mohd. Wahid (Geography Deptt.)	6
5.	Teacher's Survival Kit for every day living	Dr. V. C. Gupta (Phychology Deptt.)	8
6.	Test Your Knowledge about Computer	Sumit Saxena (Comp. Op.)	8
7.	Live Life, Like a Lotus	Neeraj Agarwal (B.Com.)	9
8.	Make Yourself Beautiful	Monika (B. Ed.)	9
9.	What? Why? How?	Param Jyoti Singh (B.T.C.)	10
10.	Sociological Psychological Facts	Manoj Kumar Gupta (B.A.)	10
11.	Nuclear Energy for India	Pramod Attri (B.T.C.)	11
12.	Girls' Imagination	Surabhi Jain (B. Com.)	12
13.	God and Devil	Ankur Verma (B. Com.)	12

ज्ञान महाविद्यालय एक नजर में

1. महाविद्यालय का इतिहास एवं प्रगति 13
2. महाविद्यालय के विभिन्न संकायों की प्रगति रिपोर्ट 15
   - वाणिज्य संकाय 15
   - विज्ञान संकाय 15
   - कलासंकाय 16
   - Deptt. of Management 17
   - Deptt. of Technology 18
   - शिक्षक शिक्षा विभाग (B. Ed.) 18
   - बी. टी. सी. विभाग 19
3. पुस्तकालय 20
4. राष्ट्रीय सेवा योजना 21
5. छात्र कल्याण समिति 23
6. अध्यापक कल्याण समिति 24
7. शोध एवं प्रकाशन समिति 24
8. अनुशासन समिति 25
9. स्वराज्य स्वावलम्बी योजना 25
10. स्वराज्य ज्ञान योजना 26
11. खेल विभाग 26
12. इग्नू विशेष अध्ययन केन्द्र 27
13. श्रद्धा सुमन 27
14. ज्ञान निजी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (ITI) 28
15. Visitor's Views 29
16. अखबार की सुर्खियों में ज्ञान महाविद्यालय 33

Scanned by CamScanner

ज्ञान महाविद्यालय में सुनहरा सफर........

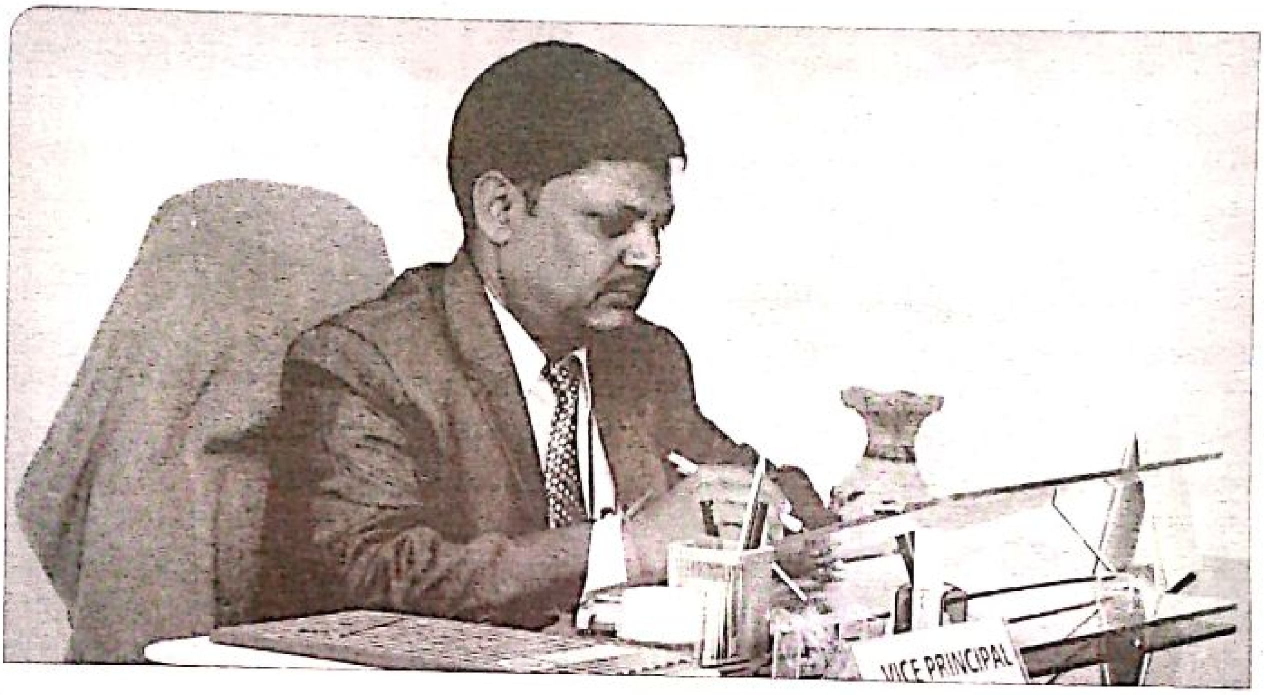

ज्ञान महाविद्यालय की पत्रिका **'ज्ञान–पुष्प'** के लिए जब प्रधान संपादक महोदय द्वारा मुझसे अपना संदेश देने को कहा तो मैंने सोचा कि संदेश क्यों? मैं अपना अनुभव शेयर करूँ क्योंकि अभी संदेश देने के लायक मैं अपने को नहीं समझता हूँ। मेरे सत्र् 2004–05 से सत्र् 2014–15 (वर्तमान तक) 11 वर्ष पता ही नहीं चले कि कब बीत गये। जब मैंने महाविद्यालय में प्रवेश किया था, उस समय स्व. डा. एल. सी. गौड़ प्राचार्य थे तथा कॉलेज के पास केवल चार कमरे थे। विजली, पंखा, साफ पानी, कैन्टीन, पेड़–पौधे यह सब दूर की बात थीं। किन्तु तत्कालीन प्राचार्य ने तन, मन एवं धन से जुड़ने व कार्य करने का आदेश दिया, तो मैं बिना हिचक के उनके बताये रास्ते पर दौड़ पड़ा। कुछ कठिनाईयाँ भी आयीं, क्योंकि वेतन के नाम पर कुछ भी नहीं था तथा जो था वह छः माह का वेतन ही था। किन्तु मैं डिगा नहीं। मैंने सीखने, सिखाने एवं कुछ नया करने की ललक को जारी रखा क्योंकि मैं बहुत ही साधारण परिवार से सम्बंध रखता था। अतः सीखना भी मेरे लिये अहम् था। रसायन विज्ञान विभाग में उस समय मैं अकेला था प्रयोगशालाओं में भी कुछ नहीं था, तो मैंने अपनी पढ़ाई के अनुभवों एवं बड़ों के सहयोग से प्रयोगशालाएं बनवायीं। अपनी देखरेख में ही फर्नीचर एवं गैस प्लान्ट लगवाया। उसी सत्र् में मुझे डा. वी. डी. उपाध्याय के रूप में दूसरा साथी मिला तो पठन–पाठन का काम और तेज हुआ। उस समय बी. एस–सी. की तीनों कक्षाओं को पढ़ाना, प्रेक्टीकल कराना, विभाग की जिम्मेदारी एवं अनुशासन का कार्य भी करना पड़ता था। दो वर्ष बाद डा. उपाध्याय को अनुशासन का कार्य तत्कालीन प्राचार्य द्वारा सौंप दिया गया। इस समय छात्र संख्या कम थी, जिसे बढ़ाने के लिये हमने डी. एस. कॉलेज, श्री वार्ष्णेय कॉलेज, टी. आर. कालेज एवं देहात के राजकीय डिग्री कॉलेजों में जाकर छात्रों के फोन संख्या व पते लिये और छात्र संख्या को बढ़ाया। प्रबन्ध तंत्र का सहयोग एवं परामर्श भी लगातार मिलता रहा जो कि अतुलनीय था। प्राचार्य के पद को छोड़कर बाकी महाविद्यालय के सारे पद मेरे पास थे अर्थात् चतुर्थ श्रेणी, तृतीय श्रेणी व आधिकारिक सभी कार्य करने पड़ते थे। नये कोर्स भी लाने थे, जिसके लिये भी आगरा, इलाहाबाद, लखनऊ तक भाग दौड़ भी समय–समय पर करनी पड़ी। महाविद्यालय में उस समय बी. एस–सी. के छात्र/छात्रा की संख्या 12 थी, जो आज लगभग 600 है तथा सम्पूर्ण महाविद्यालय में छात्र संख्या अब लगभग 2,500 है। यह स्थिति तब है जबकि महाविद्यालय में विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में नकल नहीं होती है। प्रबंध तंत्र ने मुझे विज्ञान संकाय प्रभारी, परीक्षा अधीक्षक, प्रवेश परीक्षाओं में परीक्षा

Scanned by CamScanner

अधीक्षक, प्रभारी/संयोजक पुरातन छात्र समिति, रोजगार एवं परामर्श समिति, साहित्यिक समिति, प्रवेश समिति आदि अनेकों प्रभार समय-समय पर मुझे दिये गये। उन सभी का मैंने बखूवी निर्वहन किया एवं कभी इंकार शब्द मेरी जुबान पर नहीं आया जबकि मेरे ऊपर प्राथमिकी भी थाना मडराक में दर्ज हुई, व्यक्तिगत हमले भी हुए।

शिक्षा संकाय के राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) जैसे कठिन कार्य में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया और महाविद्यालय को 'ए' ग्रेड 3.16 अंक के साथ प्राप्त हुआ जोकि महाविद्यालय के इतिहास में बड़ी उपलब्धि थी। इसी को ध्यान में रखकर प्रबन्धतंत्र ने फिर मुझे सम्पूर्ण कॉलेज का नैक कराने एवं उप-प्राचार्य का महत्वपूर्ण पद भी सौंप दिया। मैंने फिर इं. डा. गौतम गोयल एवं अपने शिक्षक साथियों के सहयोग से सेल्फ एप्रेजल रिपोर्ट (SAR) तैयार करायी तथा समन्वयक के रूप में यह मेरा सबसे सुखद अनुभव था। सम्पूर्ण कॉलेज का नैक कराने वाला डा. बी. आर. अम्वेडकर विश्वविद्यालय, आगरा का प्रथम महाविद्यालय वना, जिसको कराकर मैं अपने को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ।

प्रवंध तंत्र ने मुझे एक और जिम्मेदारी सौंपी। यह भी आगरा विश्वविद्यालय के स्ववित्तपोषित कॉलेजों के इतिहास में अलग थी। यह जिम्मेदारी राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (RUSA) का कठिन फार्म भरने की थी, उसे भी इं. डा. गौतम गोयल एवं साथियों की सहायता से सहजता से पूर्ण किया। शासकीय एवं अर्धशासकीय कॉलेज आज भी यह फार्म नहीं भर पा रहे हैं। वर्तमान में एक वहुत महत्वपूर्ण कार्य को भी मैं देख रहा हूँ, वह है ''ज्ञान विज्ञान'' जर्नल के प्रधान सम्पादक का प्रभार वह भी प्रबंध तंत्र द्वारा मुझे मेरी कर्मठता, लगन एवं ईमानदारी के कारण सौंपा गया है। मैं चाहूँगा यह जर्नल भी अनवरत रूप से चलता रहे, जिसको मेरी सेवाएँ, परामर्श व सहयोग हमेशा मिलता रहेगा।

महाविद्यालय ने मुझे एवं मेरे परिवार को बहुत मान-सम्मान दिलाया है, जिसका मैं हमेशा ऋणी रहूँगा। स्ववित्तपोषित कॉलेजों में वित्त बहुत महत्वपूर्ण होता है। अंततः उसकी भी जिम्मेदारी प्रवन्धतंत्र ने मुझे सौंप दी। शहर में आज जो भी मेरी पहचान है। वह प्रबन्धतंत्र व महाविद्यालय की देन है। मुझे आशा है कि मेरे इस कठिन संघर्ष पूर्ण प्रयासों से आगे आने वालों को मार्गदर्शन, प्रेरणा और सम्बल तो मिलेगा ही, लोग सकारात्मक सोच की ओर आगे बढ़ेंगे। यदि ऐसा हुआ तो मेरी अनेक उपलब्धियों में से यह सबसे बड़ी उपलब्धि होगी। मुझे अपने द्वारा किये गये कार्यों पर पूर्ण विश्वास है, मुझे चुनौती भरी परिस्थितियों कुछ करने के लिये सम्बल प्रदान करती रहती हैं।

इस वर्ष मेरा चयन बेसिक शिक्षा विभाग के जूनियर विद्यालयों में सहायक अध्यापक के पद पर हुआ है, जिसकी काउन्सलिंग हो गयी है किन्तु नियुक्ति पत्र मिलना बाकी है। मुझे विश्वास है यदि मैं ज्वाइन करता हूँ तो मेरे अनुभवों का फायदा बेसिक शिक्षा विभाग को भी मिलेगा।

मेरी एक इच्छा थी कि ज्ञान महाविद्यालय का लिंक रोड कच्चा है इसे कैसे बनवाया जाये? क्योंकि मैंने एवं मेरे समस्त स्टाफ ने बरसात के दिनों में बहुत परेशानियाँ झेली हैं। जो मेरे शुरूआत के साथी हैं, वह इस रास्ते को अच्छी तरह जानते थे। इसके लिये मैंने मा. श्री कृपालसिंह यादव, सदस्य अलीगढ़ विकास प्राधिकरण, अलीगढ़ से सहयोग की अपेक्षा की तो मेरे आग्रह पर उन्होंने संस्थापक दिवस समारोह 2013 में घोषणा की कि आगरा रोड से लिंक रोड 290 मीटर की सड़क एक वर्ष के अन्दर सीमेन्टेड करवा दी जायेगी। श्री कृपाल सिंह यादव जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी, कोमल विचारों वाले, ईमानदार एवं दृढ़ संकल्पी व्यक्ति हैं। उन्होंने एक वर्ष के अन्दर छात्र-हित को देखते हुए उपरोक्त कार्य को सम्पन्न करा दिया। मैं और ज्ञान महाविद्यालय परिवार आपके इस सहयोग के लिए सदा आभारी रहेगा।

कहने को तो बहुत कुछ है परन्तु यदि डा. वाई. के. गुप्ता, डा. अन्तिमा कुलश्रेष्ठ, डा. बी.डी. उपाध्याय एवं श्री मनोज यादव (प्रबन्धक) के सहयोग एवं प्यार की याद हमेशा आयेगी। इसके सन्दर्भ में एक शेर याद आ रहा है-

"कट तो जायगी तेरे बगैर भी,
मगर बड़ी उदास बड़ी बेकरार गुजरेगी।"

आज महाविद्यालय की पहचान बहुत दूर-दूर तक है। मैं उम्मीद एवं दुआ करता हूँ कि वह तरक्की के पथ पर ऐसे ही आगे बढ़ता रहे।

आप सभी का

डा. एस. एस. यादव
उप प्राचार्य

Scanned by CamScanner

हरीतिमा संबर्धन ही एक मात्र उपाय

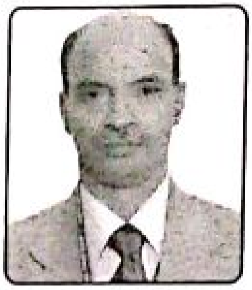

डॉ. विवेक मिश्रा
प्रभारी, कला संकाय
प्रवक्ता, समाजशास्त्र

प्राकृतिक बन्धनों को तोड़ने पर उतारू मनुष्य अपनी प्रवीणता पर दिनों दिन अहंकारी होता चला जा रहा है। फलतःसृष्टि सन्तुलन की अदृश्य प्रेरणा और भावी परिणामों की उपेक्षा होती रहती है। यही कारण है कि आये दिन अनेकानेक समस्याओं और संकटों का सामना करना पड़ रहा है। उदाहरण के लिये वृक्ष–वनस्पतियों के सम्बन्ध में बरती जाने वाली उपेक्षा और निष्ठुरता को ही लेते हैं। इन दिनों मनुष्य द्वारा वनस्पति जगत के साथ जो व्यवहार किया जा रहा है, वह उपेक्षामात्र न रहकर अनौचित्य और अत्याचार की सीमा में जा पहुँचा है। फलतः उसके दुष्परिणाम भी हाथों–हाथ सामने आ रहे हैं। इन दिनों पेड़ों की कटाई बुरी तरह हो रही है। वन क्षेत्र घटते जा रहे हैं। होना यह चाहिये कि जलावन, फर्नीचर आदि के लिये जितनी लकड़ी कटे उतने ही वृक्ष लगें, तब सन्तुलन बैठेगा, लेकिन स्थिति विपरीत है। वृक्ष सम्पदा को काटते रहने की गति अधिक और लगाने की गति मन्द रही तो इसका परिणाम इतना भयावह होगा, जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती।

पेड़ कटते जाने, वन प्रदेश घटते जाने के जहाँ एक ओर अनेक दुष्परिणाम हैं, वही दूसरी ओर वृक्ष–वनस्पतियों से हरी–भरी धरती के अनेक उपकार हैं। यह एक तथ्य है कि वनस्पति जगत और प्राणी जगत एक दूसरे पर आश्रित हैं। जल को जीवन धारा समझा जाता है, पर वस्तुतः शरीर यात्रा का प्रमुख माध्यम प्राणवायु है। हवा में आक्सीजन का जो अंश पाया जाता है, उसी से शरीर यात्रा संभव होती है। मनुष्य सांस से प्राणवायु खींचता है और कार्बन डाई आक्साइड छोड़ता है। इस ग्रहण –विसर्जन में वनस्पति जगत और प्राणि जगत परस्पर सहभागी हैं। प्राणी कार्बन डाई आक्साइड छोड़ता है उसे पेड़ पौधे 'फोटो–सिन्थेसिस' या प्रकाश संश्लेषण प्रक्रिया द्वारा अपना आहार बना लेते है और बदले में आक्सीजन छोड़ते हैं, जिसे प्राणी श्वास द्वारा ग्रहण करते हैं और जीवित रहते हैं। इस प्रकार दोनों ही पक्ष एक दूसरे के सहारे सर्वोपरि आवश्यकता की पूर्ति करते हैं। प्राणियों का आहार वनस्पति है। वनस्पति को पोषण देने के लिये प्राणियों द्वारा उत्सर्जित वर्ज्य पदार्थ व उत्पन्न किये कूड़े कचरे को प्रमुख माध्यम माना गया है। दोनों का तालमेल जितना सही रहेगा, उतनी ही यह धरती 'शस्य श्यामला' रहेगी और प्राणी जगत के निर्वाह में कमी न पड़ेगी। यदि आदान प्रदान का सन्तुलन बिगड़ा तो न केवल आहार संकट खड़ा होगा, वरन मनुष्य सहित समस्त जीव जगत का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जायेगा।

हरियाली की महत्ता वैज्ञानिक दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है। विशेषज्ञों के अनुसार जहाँ आस–पास घनी बस्तियाँ बसाई जानी आवश्यक हों, वहाँ बीच में 'ग्रीन बेल्ट' (हरित पट्टी) की गुन्जाइश छोड़नी आवश्यक होती है। प्राचीन ऋषियों ने इस दृष्टि से वन–उपवन लगाने की परम्परा आश्रम के साथ डाली। वृक्ष–वनस्पतियों को वे प्राणिजगत का जीवन मानते थे। वृक्षों की कमी देखकर कवि हृदय ऋषि भाव–विह्वल हो उठते थे और धरती से पूछते थे–

यथा पल्लव पुष्पाढ़या यथापुष्प फलर्द्धयः।
यथाफलार्द्धस्वारोहा हा मातः क्वागमन् द्रुमाः।।

अर्थात् पत्तों के समान ही जिनमें प्रचुर पुष्प होते थे और पुष्पों के समान ही प्रचुर फल लगते थे और प्रचुर फल से लदे होने पर भी जो सरलता से चढ़ने योग्य होते थे, हे माता पृथ्वी बता वे वृक्ष अब कहाँ गये?

वस्तुतः विश्व भर में आज वृक्षों और वनों–जंगलों की प्रायः यही स्थति है। पर्यावरण में भरती जा रही विषाक्तता और उसके दुष्परिणामों से संत्रस्त मानव सब कुछ जानते समझते हुये भी वनों के विनाश पर उतारू है। संसार भर में जंगलों का कटाव व्यापक स्तर पर अभी भी हो रहा है। सर्वेक्षणकर्त्ताओं के अनुसार पूरे विश्व में प्रति मिनट 77 हैक्टेयर की दर से जंगल काटे जा रहे हैं। अकेले ब्राजील में पिछले एक दशक में 620000 वर्ग मील जंगल का सफाया किया गया।

अपने देश में लगभग दस मिलियन हैक्टेयर भूमि ऊसर बंजर एवं निम्न स्तर की है जहाँ हरियाली का नितांत अभाव है। वैज्ञानिकों का कहना है कि इस भूमि को प्रतिवर्ष वृक्षारोपण द्वारा हरा–भरा बनाया जाये, जिससे देश के पर्यावरण को सन्तुलित

Scanned by CamScanner

बनाया जा सके। इससे भूमि का क्षरण एवं कटाव रूकेगा, साथ ही औसत वर्षा भी होगी। वृक्ष–वनस्पतियों से धरती हरी भरी बनी रहे तो उससे मनुष्यों को अनेक प्रत्यक्ष व परोक्ष लाभ होंगे। ईंधन व इमारती लकड़ी से लेकर फल–फूल, औषधियाँ प्रदान करने जैसे अनेक प्रत्यक्ष लाभ तो मनुष्य को इनसे मिलते ही है, कट रोकने, वातावरण में बढ़ती जा रही विषाक्तता को कम करने व शुद्ध प्राण वायु उपलब्ध कराने जैसे महत्वपूर्ण कार्य भी हरीतिमा संवर्धन से पूरे होते हैं। यह देखा गया है कि जिन देशों में या क्षेत्रों में कृषि क्रान्ति के अन्तर्गत खेतों के लिये जंगलों का सफाया करके जमीन तैयार की गई, वहां खेती तो पर्याप्त हुई, पर नदियों में विकराल बाढ़ आने लगी, जिससे जन–धन की अपार क्षति उठानी पड़ती है। उत्तराखण्ड की त्रासदी उदाहरण के तौर पर है, जिसमें हजारों लोगों को जान गंवानी पड़ी। इस संदर्भ में वैज्ञानिकों ने गहन अध्ययन–अनुसंधान किये, उनका निष्कर्ष यह है कि जिस देश में जितने संघन और अधिक वन होंगे, वहाँ नदियाँ उतनी जल्दी नहीं उफनेंगी। अपने देश में भी जैसे–जैसे वन सम्पदा नष्ट होती जा रही है, प्रतिवर्ष नदियों में आने वाली बाढ़ों की संख्या में वृद्धि हो रही है। इससे जन–धन की अत्यधिक हानि होती है। इसीलिये सरकार भी अब हरीतिमा संबर्धन के कार्यक्रमों को अत्यधिक महत्व देने लगी है।

अपने देश में यद्यपि वर्ष भर में तीन महीने ही वर्षा होती है, जब कि विश्व के अनेक देशों में बारह महीने पानी गिरता रहता है। एक कारण यह भी बताया जा रहा है कि तीन मास की मानसूनी वर्षा अधिक घनी होती है, इसलिये नदियों में ज्यादा बाढ़ें आती हैं, परन्तु यह कोई महत्त्वपूर्ण कारण नहीं है। भारत ही नहीं, कई देशों में मानसूनी वर्षा होती है, फिर भी वहाँ की नदियाँ यहाँ की अपेक्षा कम विनाश करती है। इस सम्बन्ध में विशेषज्ञों का कहना है कि नष्ट होती जा रही वन सम्पदा बाढ़ों की संख्या में अभिवृद्धि का महत्व–पूर्ण कारण है। वर्षा की बूंदें जब घने जंगल में उगे वृक्षों पर गिरती हैं तो बहुत सा पानी वे पत्ते ही सोख लेते हैं और कुछ का वाष्पीकरण हो जाता है। इसी प्रकार जंगल की वनस्पतियाँ बादल से गिरते हुये पानी को ही सीधे–सीधे उपयोग में ले लेती हैं। पेड़–पौधों द्वारा वर्षा का अधिकांश पानी सोख लिया जाता है या वाष्पीकृत कर दिया जाता है, अधिक वर्षा होने के कारण पानी की बूँदें जमीन पर गिरती हैं और खुले मैदान में वह पानी बह निकलता है। इस सम्बन्ध में कई स्थानों पर परीक्षण व प्रयोग किया गया तो पता चला कि लगातार पन्द्रह घण्टे वारिश हो और पन्द्रह सैन्टीमीटर अर्थात छः इन्च तक पानी गिरे तो संघन वन से एक भी बूँद पानी जमीन की सतह से नदी नाली में नहीं बहेगा, जबकि यह लगातार वर्षा खुली जगह में होने पर बड़ी–बड़ी बाढ़ें ला सकती है।

सघन वनों में पानी के न बहने का एक दूसरा भी कारण है। सीधे–सीधे जमीन पर गिरने वाली पानी की बूदें जल्दी ही बह जाती हैं, जबकि वृक्षों के पत्तों से होता हुआ गिरने वाला पानी जमीन पर अधिक देर तक ठहरता है। उससे भूमि को जले सोखने का भी अधिक समय मिलता है और पानी बहने की अपेक्षा जमीन में गहराई तक उतर जाता है। फलस्वरूप धरती की उर्वरा शक्ति और नमी भी अधिक स्थाई समय तक रहती है। वह पत्तों से धीरे–धीरे कम वेग से जमीन पर गिरता है और भूमि पर उगे हुए घास–फूस में से धीरे–धीरे बाहर निकलता है। इस स्वच्छ पानी में नदी को गहरा बनाने की शक्ति होती है, जबकि खुले मैदानी भाग से बहनें वाला पानी अपने साथ मिट्टी आदि बहाकर लाता है और नदियों को उथला बनाता है। पेड़ पौधों की उपस्थिति में भूमि द्वारा पानी का अवशोषण भी अपेक्षाकृत अधिक होता है। साथ ही इनकी दूर–दूर तक फैली जड़ें वर्षा के कारण होने वाले भूमि कटाव को भी रोकती हैं। यही कारण है कि अमेरिका जैसे देशों में आज वृक्षारोपण को अधिक महत्व दिया जाने लगा है।

वृक्ष वनस्पतियों का सम्बर्द्धन बाढ़ रोकने की दृष्टि से महत्वपूर्ण तो है ही, इसका और भी महत्वपूर्ण लाभ है। वह है वायु प्रदूषण की समस्या जो समूचे संसार के लिये विनाश का कारण बन गई है। शहरों में धुँआ उगलती चिमनियों और मोटर गाडियों ने वायु मण्डल को इतना विषाक्त बना दिया है कि शुद्ध वायु तो पूरी पृथ्वी पर प्राप्त नहीं हो सकती। दूषित वायु में सांस लेने वाले मनुष्य एवं अन्य प्राणी भी स्वस्थ व निरोगी किस प्रकार रह सकेंगे? यह वायु ही प्राणों का आधार हैं। वायुमण्डल में व्याप्त प्राणवायु ही जीव–जन्तुओं को जीवन देती है। इसके अभाव में अन्य विषैली गैसों का अनुपात बढ़ता जाता है जो प्राणी जगत के लिये विपत्ति का कारण बनता है। अनुसंधानकर्ता वैज्ञानिकों का मत है कि पृथ्वी के वायुमण्डल में प्राणवायु कम होती जा रही है और दूसरे तत्व बढ़ते जा रहे हैं। यदि वृक्ष–सम्पदा को नष्ट करने की रफ्तार यही रही, जो इन दिनों है तो मनुष्य और अन्य जीवों द्वारा छोड़ी गई साँस जिसमें अन्य उपयोगी तथा विषैली गैसें ही अधिक मात्रा में होती हैं, वे ही इतनी अधिक मात्रा में हो जायेंगी कि पृथ्वी पर जीवन दूभर हो जायेगा। इस समस्या का एक मात्र समाधान हरीतिमा संबर्धन ही माना गया है। आज की विध्वंशकारी परिस्थितियों में तो और भी अधिक आवश्यक हो गया है कि हर किसी को वृक्ष–वनस्पतियों के विकास, वृक्षारोपण एवं पेड़ न काटने के लिये कृत–संकल्पित होना ही चाहिये। ❑

Scanned by CamScanner

शिक्षा एवं सामाजिक परिवर्तन

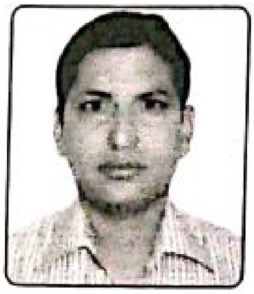

रामकिशन शर्मा
विभागध्यक्ष बी.टी.सी.

मनुष्य की भाषा, विचार, आवश्यकताएँ, जीवन, उद्देश्य, संस्कृति एवं सभ्यता किसी न किसी रूप में परिवर्तित होती रहती है और इस परिवर्तन को प्रायः विकास की प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है। संसार की प्रत्येक जड़ एवं चेतन वस्तु परिवर्तन क्रम में साझेदारी करती है। अतः सामान्यतया परिवर्तन से तात्पर्य है, पहले की स्थिति अथवा अस्तित्व में भिन्नता या बदलाव आना। वास्तव में परिवर्तन समय की मॉंग भी है। कोई भी समाज स्थिर नहीं रहता। समय और परिस्थिति के अनुसार उसकी परम्पराओं, रीतिरिवाजों, विचार धाराओं एवं रहन–सहन आदि में परिवर्तन होता रहता है। अतः परिवर्तन ही समाज को जीवित रखने का साधन है। जिस प्रकार एक मृत व्यक्ति के जीवन में ठहराव होता है और जीवित समाज में गति होती है, जो उसे सदैव सकारात्मक दिशा में परिवर्तन की ओर उन्मुख करेगी।

व्यक्ति शिक्षा क्यों प्राप्त करता है ? यदि हम इस बात पर विचार करें तो यह कह सकते हैं कि मनुष्य अपनी कल्पना, इच्छा आवश्यकता एवं व्यवसाय द्वारा समाज में अनुकूलता लाने के लिये प्रयत्नशील रहता है और शिक्षा ऊँचे स्तर के लिये दिशा व समझ प्रदान करती है। आवश्यकता आविष्कार की जननी है। आवश्यकता की पूर्ति हेतु व्यक्ति आविष्कार करता है व समाज में परिवर्तन लाता है। किस आवश्यकता की सन्तुष्टि करनी चाहिये शिक्षा इसके लिये उचित दृष्टिकोण प्रदान करती है। अतः सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन परस्पर सम्बन्धित हैं। शिक्षा को समाज की उन्नति के लिये भी प्रयत्नशील रहना चाहिये और इसके लिये अनेक संरचनात्मक शक्ति के रूप में भी अपनी भूमिका अदा करनी चाहिये। हम सभी यह भी जानते हैं कि प्रजातन्त्र में शिक्षा का कार्य बालक को समाज में समायोजित करना है परन्तु इसका यह तात्पर्य कदापि नही है कि जैसा समाज है उसके अनुरूप ही हम शिक्षा को व बालक को ढालते जाये वरन् शिक्षा के द्वारा हमें बालक के अन्दर इतनी क्षमता उत्पन्न करनी चाहिये कि वह समाज के स्वरूप को बदलने हेतु तत्पर रहे।

शिक्षा वह सशक्त साधन है जिसके द्वारा सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक परिवर्तन लाया जा सकता है। शिक्षा नेतृत्व प्रदान करती है जिसके द्वारा समाज में परिवर्तन लाया जाता है और यह परिवर्तन समाज के सभी पहलुओं को प्रभावित करता है। हम इस सामाजिक परिवर्तन को आधुनिकीकरण के रूप में जान सकते हैं। आधुनिकीकरण से तात्पर्य है, वह समाज जो विज्ञान व तकनीक पर आधारित हो, उसकी प्रक्रिया में परिवर्तन आना। इसी कारण आधुनिकीकरण की प्रक्रिया प्रत्यक्ष रूप से शैक्षिक विकास से सम्बन्ध रखती है। आधुनिकीकरण से आशय यह कदापि नहीं है कि हम राष्ट्रीय परिस्थितियों से अनभिज्ञ रहें। वास्तव में आधुनिकीकरण आर्थिक साधनों की प्रबलता पर बल देता है, जिससे व्यक्ति के अन्दर विभिन्न रूचियों को उत्पन्न किया जाये। चूँकि प्रत्येक समाज का विकास उसमें रहने वाले व्यक्तियों की रूचियों पर निर्भर करता है। प्राचीन काल में समाज प्रमुख रूप से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र जातियों में विभक्त था। ये जातियाँ कार्य के आधार पर बनाई गई थीं, परन्तु धीरे–धीरे इन्होंने जन्म का आधार ग्रहण कर लिया और व्यक्तियों को यह स्वतन्त्रता नहीं दी गई कि वह जाति के घेरे से बाहर निकल सकें। परन्तु आज के भारतीय समाज में बहुत परिवर्तन आ गया है और इसके प्रमुख कारण है, संस्कृतिकरण, पश्चिमीकरण, नगरीकरण व औद्योगीकरण। ❑

अनमोल वचन

सत्यवान उपाध्याय
ज्ञान महाविद्यालय

जिन्दगी जब रुलाने लगे, इतना मुस्कुराओ कि दर्द भी शर्माने लगे। निकले न आंसू आंखों से कभी और किस्मत भी मजबूर होकर आपको हंसाने लगे।।

**जो गिरा है, वो उठा है। जो उठा है, वो चला है,
जो चला है, वो आगे बढ़ा है। उसी ने कला को गढ़ा है।
गिरने से मत डरो, बढ़ते चलो, आगे बढ़ो।** ❑

Scanned by CamScanner

हमारा राष्ट्रीय चिन्ह- अशोक स्तम्भ

सुरेश चन्द्र
उप प्रधानाचार्य
ज्ञान आई.टी.आई.

राष्ट्रीय चिन्ह राष्ट्र के सम्पूर्ण विचारों एवं मूल्यों का परिचायक होता है। अशोक स्तम्भ भारतीय प्रतीकवाद की भावना का प्रतिनिधत्व करता हुआ सारी दुनिया को विश्वबंधुत्व एवं शान्ति का संदेश देता है। 26 जनवरी, 1950 को जब भारत ने गणराज्य का दर्जा प्राप्त किया, तब सारनाथ में स्थित अशोक स्तम्भ के शीर्ष को अपना प्रतीक घोषित किया। अशोक स्तम्भ मूलतः भगवान बुद्ध के शान्तिमय आदर्शों का प्रतीक है। भगवान बुद्ध ने जिस धर्म राज्य की कल्पना की थी, यह स्तम्भ अभिलेख उसी शान्ति पारस्परिक भ्रातृत्व और सहनशीलता पर आधारित है। अशोक का चिन्ह शीर्ष जो इस समय सारनाथ के पुरातत्व विभाग के संग्रहालय में सुरक्षित रखा है। सारनाथ में गौतम बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश 'धर्मचक्र प्रवर्तन' (बौद्ध धर्म) का उद्घोष किया था। बौद्ध इतिहास में इस घटना का विशेष महत्व है। स्तम्भ का सिंह शीर्ष लगभग 7'' फीट ऊँचा है। अनुमान है कि पहले इस स्तम्भ के ऊपर एक और चक्र रहा होगा, जिसके धवस्त भाग वहाँ आसपास मिले हैं। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेन सांग जब भारत भ्रमण पर आया था, तब सारनाथ भी गया था। उस समय स्तम्भ अपने मूलरूप में मौजूद था। उसने अपने यात्रा के वृतान्त में लिखा है–

अशोक स्तम्भ लगभग 70 फीट ऊँचा एक पाषाण स्तम्भ है। जिसमें हरिताश्म जैसे मृदुलता तथा दिव्य प्रकाश विद्यमान है। यह स्तम्भ उस जगह बनाया गया है जहाँ गौतम बुद्ध ने बौद्ध धर्म का पहला उपदेश दिया था। चार सिंहों वाला सारनाथ का स्तम्भ धर्मचक्र सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। सारनाथ के सिंह शीर्ष में एक गोल कंठे पर चार सिंह पररपर एक दूसरे से पीठ सटाकर खड़े हैं। यह मूर्ति कला का एक बेहतरीन नमूना है। पाषाण खण्ड की पट्टी पर चारों ओर से एक हाथी तथा एक दौड़ता हुए घोड़ा, एक साँड़ और एक सिंह की आकृति उत्कीर्णित प्रतिभागो से सुसज्जित है। इस प्रतिमा में एक चक्र है तथा सम्पूर्ण सिंह शीर्ष घटिकाकार कमल पर टिका है। राष्ट्रीय चिन्ह खण्ड पर केवल तीन सिंह दिखाई पड़ते हैं, चौथा सिंह पीछे होने के कारण दिखाई नहीं पड़ता है। खण्ड की पट्टिका के बीच में चक्र है। जिसके दायीं तरफ साँड तथा बायीं तरफ घोड़ा है। सिंह शीर्ष के नीचे जो घटिकाकार कमल है वह राष्ट्रीय चिन्ह में नजर नहीं आता। पाषाण खण्ड के नीचे देवनागरी लिपि में 'सत्यमेव जयते' उत्कीर्णित है। पाषाण खण्ड की पट्टी पर 24 अरें हैं। यह दार्शनिक गुरूओं के 24 घण्टे प्रगति करने का संदेश देते हैं। साथ ही यह धर्म चक्र है जो राजाओं का भी राजा माना जाता है, जिनके नीतिगत संदेशों का पालन बड़े से बड़े महाराजाधिराज को भी करना पड़ता है। यह धर्मचक्र राष्ट्रध्वज के बीच में भी अंकित हैं, जो इसकी महानता का प्रतीक हैं। साथ ही 4 दिशाओं की तरफ मुख किये हुए चार सिंह असीम प्रमुसत्ता का प्रतिनिधित्व करते हुए राज्य के अधिकार का वहन भी सिंह करते है। घण्टी के आकार के कमल सृजनात्मक शान्ति विधियों का परिचायक हैं। सिंह शीर्ष के पाषाण खण्ड पर उत्कीर्ण आदर्श लेख 'सत्यमेव जयते' मुडकोपनिषद से लिया गया है। इसका मूलमंत्र है सत्यमेव जयते नानतम। इसका अर्थ है कि केवल सत्य की ही विजय होती है, असत्य की नहीं। देव लोक का मार्ग सत्य से आपूरित है तथा ऋषि लोग जिस मार्ग पर चलते हैं, वही सत्य का परिधाम है। इस आख्यान को राष्ट्रीय चिन्ह में सम्मिलित किया गया है। इसलिए इसका प्रयोग निजी रूप में नहीं होना चाहिए।

राष्ट्रीय चिन्ह– अशोक स्तम्भ का उपयोग–

1. सरकारी नियमों के अनुसार अशोक स्तम्भ के शीर्ष का उपयोग केवल राष्ट्रपति, केन्द्रीय मंत्री एवं उनके मंत्रालय, विदेश स्थित भारतीय दूतावास एवं राज्यपाल, उपराज्यपाल, प्रमुख आयुक्तों के द्वारा, लैटर हैड् तथा सरकारी मुहरों पर किया जाता है।
2. केन्द्रीय मंत्रियों तथा अर्द्ध सरकारी प्रयोग के लिये लेखन सामग्री में राष्ट्रीय चिन्ह नीले रंग का तथा सरकारी अधिकारियों के प्रयोग के लिये लेखन सामग्री में यह चिन्ह लाल रंग का होता है।
3. लोकसभा सदस्यों के लिये हरे रंग का राष्ट्रीय चिन्ह तथा राज्यसभा सदस्यों के लिये लाल रंग का राष्ट्रीय चिन्ह प्रयोग करने की अनुमति है।
4. राष्ट्रीय चिन्ह का इस्तेमाल केन्द्र में राष्ट्रीय भवन एवं राज्यों में राजभवन एवं मोटर गाड़ियों पर किया जाता है।
5. सिंह के चारों शीर्ष शौर्य, चारों दिशाओं की एकता, प्रभुसत्ता, समृद्धि इत्यादि को प्रतिबिम्बित करते है किन्तु उनके साथ पराक्रम, स्वस्थ शासन एवं निष्ठापूर्ण चरित्र का दिग्दर्शन भी करते हैं। □

Scanned by CamScanner

हितोपदेश

डॉ. रेखा शर्मा
ज्ञान महाविद्यालय

हम सभी उपदेशों को सुनते रहते हैं पर व्यक्ति उन पर अमल नहीं करता। जो छोटे–छोटे सेवा कार्य हम कर सकते हैं, वे हम नहीं करते जो नन्हीं–नन्हीं भूलें हम रोज दोहराते हैं, उन्हें हम दूर नहीं करते। जो लघु सद्‌गुण हम अपना सकते हैं, उन्हें हम नहीं अपनाते तो समझना चाहिए कि हम स्वयं के उत्कर्ष के प्रति उदासीन एवं मानवीय गरिमा के अर्जन हेतु प्रयत्नशील नहीं है।

विरोध करना लोगों का आज स्वभाव बन गया है। बुराई से अधिक भलाई को विरोध का सामना करना पड़ता है क्योंकि समाज की दुष्प्रवृत्तियाँ अपने अस्तित्व के प्रति खतरा देखकर भड़क जाती हैं।

भाग्यवादी ऐसे पंगु की तरह हैं जो अपने पाँवों पर नहीं दूसरों के कंधों पर चलते है। जब तक दूसरे बुद्धिमान व्यक्ति उसे उठाए रहते हैं, तब तक तो वह किसी प्रकार चलता रहता हैं, दूसरों का आधार हटते ही वह गिरकर नष्ट हो जाता है। उन्नति करने के लिए, संघर्ष के लिए उसमें अध्यवसाय, पुरूषार्थ और समुचित उल्लास का अभाव होता है।

बहुत लोग करते हैं इसलिए हमको भी करना चाहिए, इस प्रकार की विचार धारा उन्हीं लोगों की होती हैं जिनके पास अपनी बुद्धि का संबल नहीं होता। पूरी दुनिया के एक ओर हो जाने पर भी असत्य एवं गलत वात के आगे सर नहीं झुकाना ही मनुष्यता का गौरव है। लोग बुरा न कहें, अंगुली न उठाएँ, इसलिए हमें गलत बात को भी कर डालना चाहिए, यह कोई तर्क नहीं है। उचित को स्वीकार व अनुचित को अस्वीकारें। वही व्यक्ति श्रेष्ठ हैं, जिसका हृदय विशाल है, जिसमें उदारता और परमार्थ की भावना विद्यमान है। बातों से नहीं, काम से ही किसी की निष्ठा परखी जाती है।

दुष्कर्म करने से पहले बार–बार विचारो। पर शुभ करने के लिए पहली ही भावना तरंग को कार्यान्वित होने दो।

बुरे आदमी बुराई के सक्रिय सजीव प्रचार होते हैं। वे अपने आचरणों द्वारा बुराइयों की शिक्षा लोगों को देते हैं, उन्हें अपने अच्छे कार्यो से सुधारने का प्रयत्न करें।

अनीति पूर्वक सफलता पाकर लोक–परलोक, संतोष, आत्मचरित्र, धर्म तथा कर्त्तव्य निष्ठा का पतन करने की अपेक्षा नीति की रक्षा करते हुए असफलता को शिरोधार्य कर लेना कहीं ऊँची बात है। अनीति मूलक सफलता अंत में पतन तथा शोक संताप का ही कारण बनती है। रावण, कंस, दुर्योधन जैसे लोगों ने अधर्म पूर्वक न जाने कितनी बड़ी–बड़ी सफलताएं पाई किन्तु अंत में उनका पतन ही हुआ और पाप के साथ लोकनिन्दा के भागी बने। आज भी उनका नाम घृणा पूर्वक ही लिया जाता है।

आशंका ग्रस्त भयभीत, निराश न रहें। तुम्हारे काम अच्छे हों तो तुम्हें अच्छा फल मिलेगा ही और तुम्हारी इच्छा, तुम्हारे विचार और तुम्हारे काम खराब हों तो तुम्हें खराब फल मिलेगा, क्योंकि अच्छा या बुरा फल ईश्वर अपनी इच्छा से हमको नहीं देता, बल्कि हमारी भावना के अनुसार देता हैं, इसलिए हमको अपनी भावना सुधारनी चाहिए और याद रखना चाहिए कि अपनी भावना सुधारना ही भाग्य फेरने की कुंजी है।

❑

कविता

फूल बने तो चमन में महकायेंगे हम लोग,
गर मिट्टी हुए तो हम लोग बिखर जायेंगे।
हमें हमारा नाम लेकर न पुकारे दुनिया,
आज किसी नाम से, कल किसी नाम से बनकर आयेंगे हम लोग।
एक इश्क नाम के बुजुर्ग थे दोस्तो,
हम फकीर उस सिलसिले के हैं।

Scanned by CamScanner

सफलता के गुरुमंत्र
जहाँ 'चाह' वहाँ 'राह'

डॉ. ललित उपाध्याय
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
समाजशास्त्र

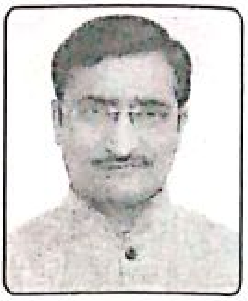

जिनका लक्ष्य नहीं जीवन में, ऐसे ही खो जाते हैं ।
जैसे लाख हजार पत्ते, यूँ ही पानी में बह जाते हैं ।।

जीवन में सफलता के लिए लक्ष्य होना आवश्यक है। लक्ष्य पाने की यात्रा में असफलता भी दस्तक देती है। किसी ने कहा भी है कि 'असफलता, सफलता की जननी होती है', 'संघर्ष किये बिना जय-जयकार नहीं होती है।'' ऐसा मानना है, उन सभी आइ. ए. एस. टॉपर्स का जिन्होंने आइ. ए. एस. बनने के लिए रात दिन मेहनत कर नियमित अभ्यास से सफलता का परचम लहराया।

इसमें आइ. ए. एस. टॉपर रैंक-1 (2011) बैच की शीना अग्रवाल हों, या रैंक-3 (2013) बैच के डाल्टनगंज (हजारीबाग) के रचितराज हों या आई.ए.एस. बैच रैंक-43 (2013) के करनाल निवासी जलज शर्मा हों। सभी ने विभिन्न पत्रिकाओं में दिए अपने साक्षात्कारों में सफलता का यही गुरुमंत्र दिया है कि अपनी काबिलियत पर भरोसा रखो, सफलता आपके कदम अवश्य चूमेगी।

जीवन में सफलता के मायने कुछ भी हों लेकिन तरीके समान हैं। एडबिन सी. ब्लिस ने लिखा है ''**सफलता का मतलब सिर्फ सफल होना नहीं है, बल्कि सफलता का सही अर्थ है, अपने असली मकसद को पाना। इसका मतलब यह है पूरा युद्ध जीतना, न कि छोटी-मोटी लड़ाईयाँ जीतना।**''

काम की प्राथमिकता और मूल्यांकन जरूरी

प्रत्येक व्यक्ति की पसंद अलग-अलग होती है। अतः पहले अधिक पसंद वाले काम को प्राथमिकता दें और उसी दिशा में आगे बढ़ें। अपनी मनपसंद काम को अपने अभ्यास का हिस्सा बनाएँ। जिस काम को करने की आप ठान चुके हैं, उसमें तब तक डटें रहें, जब तक आपको सफलता नहीं मिल जाती। इसके लिए यह जरूरी होता है कि आप बीच-बीच में स्वयं ही अपने काम का मूल्यांकन करते रहें और देखते रहें कि आप का काम सही दिशा में आगे बढ़ रहा है कि नहीं। इसमें दो लाभ होंगे- एक तो आपको अपने आपसे प्रोत्साहन मिलता रहेगा, दूसरा काम के प्रति लगन और प्रतिबद्धता बराबर बनी रहेगी, जो सफलता के लिए सबसे पहली शर्त है।

काम के लिए हो जुनून

सफलता उनके ही कदम चूमती है जो नियमित अभ्यास, मेहनत व लगन के साथ काम को जुनून की हद तक करते हैं। अभी हाल ही में भारतीय मूल के मंजुल भार्गव , जिन्होंने 1996 में हावर्ड यूनिवर्सिटी से बी.ए. करने के बाद शोध किया है, वे गणित का नोवेल माने जाने वाले 'फील्ड्स मेडल' (2014) को जीतकर काम के लिए जुनून के उदाहरण को सजीव किया है। यह पुरस्कार उन्हें संख्या, सिद्धान्त (नम्बर थ्योरी) के क्षेत्र में उनके असाधारण कार्य के लिए दिया गया है।

जरूरी व मुमकिन कार्य से करें शुरूआत

सेंट फ्रांसिस ऑफ आसिसी के अनुसार 'जो जरूरी है उससे शुरू करें, फिर जो मुमकिन है, वह करें और आप अचानक पाएँगे कि आप नामुमकिन (असंभव) काम भी करने लगे हैं।' सफलता कोई रहस्य नहीं है। यह केवल कुछ बुनियादी उसूलों को लगातार अमल में लाने का नायाब नतीजा होती है। आपको लक्ष्य तक पहुँचने के लिए जरूरी व मुमकिन शुरूआत के साथ, कभी हवा के रूख के साथ, तो कभी हवा के विपरीत सफलता रुपी नाव खेनी होगी और उसे लगातार खेते रहना होगा, जब तक कि लक्ष्य का किनारा नहीं मिल जाए। यही सफलता का गुरुमंत्र है।

खुशी से करें अपना काम

आचार्य पं. श्रीराम शर्मा जी ने लिखा है 'व्यक्ति काम की अधिकता से नहीं, बल्कि उसे भार समझकर अनियमित रूप से करने पर थकता है।' यह थकावट तनाव का कारण होती है, जो लोग तनाव को अपने पर हावी होने देते हैं, उनके कार्य प्रायः अधूरे व असफल ही रह जाते हैं, दूसरी ओर जो लोग किसी भी कार्य को छोटा या बड़ा नहीं समझते और पूरी लगन तथा आनंद के साथ करते हैं, वे ही लोग **सफलता के सृजनकर्ता** होते हैं, इसलिए हमें अपने काम को खुशी से करने की आदत डालनी चाहिए।

सकारात्मक विचारों से सपना होगा अपना

ऊर्जावान साकारात्मक विचारों की सुगंध को जीवन की बगिया में महकाने की आवश्यकता है। इसके लिए कार्य के प्रति

Scanned by CamScanner

निष्ठा, परिश्रम, स्पष्ट लक्ष्य, प्रयास और अपने में विश्वास ही मूलमंत्र है। अतः हमें सपने को अपना बनाने के लिए सभी पहलुओं पर विचार कर एक ठोस योजना बनाने की आवश्यकता है, जिसको तुरन्त अमल में लाना भी जरूरी है और देखते ही देखते आप पायेंगे कि आपका अपना सपना साकार होने लगा है।

वर्तमान समय की कीमत पहचानो

हर व्यक्ति सफलता पाना चाहता है और असफल होने पर दुःखी होता है, लेकिन बार–बार मिलने वाली असफलता ही हमें सफलता की मंजिल की ओर ले जाती है। इसके लिए वर्तमान समय की कीमत को पहचानना होगा क्योंकि वर्तमान ही हमारे व्यक्तित्व को तराश कर बहुमूल्य अवसर प्रदान करता है। अगर हम अपने 'आज' का भरपूर इस्तेमाल कर रहे हैं, तो हम खुद–ब–खुद आने वाले बेहतर 'कल' के लिए बीज बो रहे हैं।

डर के आगे 'जीत' है

सफलता इत्तिफाक से मिलने वाली चीज नहीं है। इसे पाने के लिए काफी तैयारी और आत्म–अनुशासित चरित्र की आवश्यकता है। सफलता का सबसे बड़ा दुश्मन है 'डर'। डर के आगे ही जीत आपकी प्रतीक्षा कर रही होती है, इसके लिए जरूरी है कि जब भी अवसर दरवाजा खटखटाये 'साहस' को दरवाजा खोलने के लिए भेजो, तो जीत और सफलता आपकी मुट्ठी में होगी।

आपकी पहचान भी है सफलता

सफलता का एक पैमाना आपकी समाज में पहचान से भी है। इसके लिए व्यक्ति को दूसरों के साथ अच्छे संबंध बनाना और उन्हें निभाना आना चाहिए। अच्छे संबंध, अच्छे व्यक्तित्व को बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, और जब ये ही संबंध महापुरुषों से, आदर्शों से या ईश्वरीय ज्ञान से जुड़ जाते हैं तो वह व्यक्ति महामानव, देव मानव के स्तर पर पहुँच कर सफलतम हो जाता है।

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

जाने माने लेखक चेतन भगत मानते हैं कि कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती। अगर आपका कोई सपना है, लीक से हटकर कुछ करना चाहते हैं तो नाकामी के डर से रूकें नहीं बल्कि एक कोशिश जरूर करें, सफलता का मिलना तय है। आपको वह सब कुछ मिलेगा, जो आप ख्वाहिश रखते होंगे।

गुरु कृपा से मिलेगा जादुई मंत्र

एक चीनी कहावत है– विद्यार्थी तैयार हो जाए तो गुरु उपस्थित हो जाता है। गुरु हम पर अनेक प्रकार से कृपा करते हैं। गुरू कृपा से ही ज्ञान, मन–मस्तिष्क पर चिर स्थायी होकर व्यावहारिक होता है, जो जीवन में सफलता के लिए आवश्यक है।

सफलता का जादुई मंत्र भी गुरू कृपा से प्राप्त होता है, वह मंत्र है– शिष्य को आत्म विश्वासी, दूरदर्शी, व निरन्तर प्रयास करने वाले व्यक्तित्व के रूप में प्रेरित कर उसके जीवन को दिशा देना। जीवन में सफलता हेतु सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ गुरु का सम्मान व आदर भी परम आवश्यक है। अंत में यही कहा जा सकता है कि सफलता आपके विश्वास पर टिकी है। आप क्या कर सकते हैं, यह दुनिया को मत बताइये, पहले कुछ कीजिए और फिर अपना उदाहरण देकर लोगों को प्रेरित करने की मुहिम छेड़िए क्योंकि सफलता की ओर बढ़ रहे व्यक्ति को हर बाधा में अवसर दिखाई देता है। अवसरों से भरी इस दुनियां में ज्ञान का बड़ा महत्व है और ज्ञान केवल अमल से सार्थक होता है, अमल नहीं तो ज्ञान अर्थहीन है। ज्ञान प्राप्त करने के लिए 'चाह' जरूरी है और जहाँ 'चाह' है, वहाँ 'राह' भी है और यही राहें व्यक्ति को सफलता के शिखर पर पहुँचाती है। ❑

अनमोल वचन

1. जिस तरह कीड़ा कपड़ों को कुतर डालता है, उसी तरह ईर्ष्या मनुष्य को खा जाती है।
2. क्रोध मूर्खता से शुरू होता है और पश्चाताप पर खत्म होता है।
3. नम्रता से देवता भी मनुष्य के वश में हो जाते हैं।
4. एक बार निकले बोल वापस नहीं आ सकते, इसलिए सोच कर बोलो।
5. सम्पन्नता मित्रता बढ़ाती है, विपदा उनकी परख करती है।
6. तलवार की चोट उतनी तेज नहीं होती, जितनी जिव्हया की।
7. धीरज के सामने भयंकर संकट भी धुएं के बादलों की तरह उड़ जाते हैं।
8. तीन सच्चे मित्र हैं – बूढ़ी पत्नी, पुराना कुत्ता और पास का धन।
9. मनुष्य के तीन सद्गुण हैं-- आशा, विश्वास और दान।
10. घर में मेल होना पृथ्वी पर स्वर्ग के समान है।

मनीष कुमार
चतुर्थ श्रेणी कर्मी

Scanned by CamScanner

उच्च शिक्षा :

भूगोल विषय की रोजगार परक दिशाएं एवं संभावनाएँ

डॉ. सोमवीर सिंह
अध्यक्ष, भूगोल विभाग

वर्तमान में हमारे देश के हजारों महाविद्यालयों से प्रत्येक वर्ष लाखों विद्यार्थी अपनी शिक्षा पूरी करके निकलते हैं, परन्तु बड़े दुर्भाग्य की बात है कि उनमें से अधिकांश विद्यार्थी बेरोजगार रह जाते हैं। उन्हें उस स्तर का रोजगार नहीं मिल पाता, जिस स्तर का रोजगार उनके अध्ययन के हिसाब से मिलना चाहिए। विद्यार्थी बेरोजगार इसलिए रह जाते हैं क्योंकि वह रोजगार लायक नहीं हैं बल्कि इसलिये रह जाते हैं कि जो महाविद्यालय स्तर पर उन्होंने अध्ययन किया है वह उनको स्तरीय रोजगार दिलाने के काबिल नहीं है। इसका कारण हमारे महाविद्यालयों में वर्षों से वही परम्परागत शिक्षा का दिया जाना है। कई वर्षो से न तो शिक्षा का स्तर बदला है और न ही पाठ्यक्रम, जबकि युग बहुत तेजी के साथ बदलता जा रहा है। इस दौड़ में हमारी महाविद्यालयी शिक्षा बहुत पिछड़ गयी है। हमारे महाविद्यालयों में जो शिक्षा दी जाती है, वह आज के इस वैज्ञानिक व तकनीकी युग में रोजगार परक नहीं कही जा सकती है। शिक्षा को पेशे से जोड़ना होगा। वर्तमान समय में सबसे अधिक माँग प्रबंधन, सूचना एवं प्रौद्योगिकी तथा मैडीकल से सम्बन्धित कोर्सों की है, परन्तु बिडम्बना यह है कि महाविद्यालयों में इस तरह के कोर्सेज नहीं चलाये जाते, अगर चलाये जाते हैं तो बहुत ही कम चलाये जाते हैं। ऐसे कोर्सेज या तो विश्वविद्यालय में चलाये जाते हैं या प्राइवेट संस्थानों में। विश्वविद्यालय में इस तरह के पाठ्यक्रमों में सीटें बहुत ही कम होती हैं जो माँग के अनुरूप नहीं कही जा सकती हैं। दूसरी तरफ प्राइवेट संस्थानों में इन पाठ्यक्रमों की फीस इतनी अधिक होती है कि एक सामान्य छात्र/छात्रा इनकी फीस नहीं दे सकते हैं। इसलिये अधिकांश छात्र–छात्राएँ अपनी स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद महाविद्यालयों का रूख करते हैं और यहाँ से अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद उनको कोई उपयुक्त रोजगार नहीं मिल पाता है। परन्तु उपर्युक्त तथ्यों को स्पष्ट करने का अर्थ यह भी नहीं है कि हमारे महाविद्यालयों में जो शिक्षा दी जाती है वह बिल्कुल अर्थहीन है।

प्रत्येक विषय के कुछ ऐसे क्षेत्र अवश्य होते हैं, जिनमें सम्बन्धित डिग्री या डिप्लोमा कर लेने पर रोजगार मिल जाता है। परन्तु इस तरह के रोजगारपरक पाठयक्रम कम संस्थानों में चलायें जाते हैं। आज जरूरत इस बात की है कि महाविद्यालयों में प्रत्येक विषय से सम्बन्धित रोजगारपरक पाठयक्रम शुरू किये जायें और महाविद्यालयी पाठयक्रमों को व्यवसाय से जोड़ा जाये। जब तक इन महाविद्यालयी पाठयक्रमों को व्यवसाय से नहीं जोड़ा जायेगा तब तक प्रति वर्ष हम अपने महाविद्यालयों से बेरोजगारों की भीड़ ही निकालते रहेंगे। उनको रोजगार दिलाने में उनकी कोई सहायता नहीं कर पायेंगे। इस तरह के रोजगार परक पाठयक्रम बनाने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को एक बोर्ड का गठन करना चाहिए जो रोजगार पाठयक्रमों की तलाश करे और उनकी रूपरेखा तय करे तथा इन पाठयक्रमों को महाविद्यालयों में लागू कराएँ तथा समय–समय पर उनकी समीक्षा करें।

अब मैं बात करता हूँ भूगोल विषय की, क्योंकि मैं भूगोल विषय का हूँ।

आज हमारे देश के हजारों महाविद्यालयों से प्रत्येक वर्ष हजारों विद्यार्थी भूगोल विषय में बी.ए./बी.एस.सी. और एम.ए./एम.एस.सी. में अपनी शिक्षा पूरी करके निकलते हैं। लेकिन इनमें से अधिकांश अभ्यर्थी बेरोजगार रह जाते हैं। अभ्यर्थी बेराजगार इसलिये रह जाते हैं क्योंकि उनको पता नहीं होता है कि वो डिग्री लेने के बाद किस क्षेत्र में रोजगार प्राप्त करें और वो क्षेत्र कौन–कौन से हैं। यह जानकारी अभ्यर्थी को दे कौन ? कौन उनका मार्ग दर्शन करें। इसलिये महाविद्यालयों में भूगोल विषय से सम्बन्धित रोजगार पाठ्यक्रम शुरू किये जायें। जिससे अभ्यर्थियों को यह पता चल सके कि उनको किस–किस क्षेत्र में रोजगार मिल सकता है और वे क्षेत्र कौन–कौन से है। मैं भूगोल विषय के ऐसे क्षेत्रों के बारे में बता रहा हूँ जिससे एक बेरोजगार थोड़ी सी मेहनत करके रोजगार पा सकता है।

1. **शिक्षक के रूप में :** भूगोल में एम.ए. / एम.एस–सी. की स्नातकोत्तर उपाधि अर्जित करने वाले अभ्यर्थी अगर बी.एड. और कर लें तो उन्हें इण्टर कॉलेज, नवोदय विद्यालय, केन्द्रीय विद्यालय में टी. जी. टी. और पी. जी. टी. शिक्षक के रूप में सरलता पूर्वक रोजगार मिल सकता है। भूगोल में स्नातकोत्तर उपाधि लेने के बाद नेट और पी–एच.डी. कर सकता है। यह डिग्री लेने के बाद व्यक्ति महाविद्यालय और विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर बन सकता है।

Scanned by CamScanner

2. नगर नियोजक के रूप में : नगर नियोजक बनने के इच्छुक अभ्यर्थी भूगोल विषय में एम.ए./एम.एस–सी. उत्तीर्ण करने के बाद रीजनल प्लानिंग तथा टाउन एण्ड कन्ट्री प्लानिंग में मास्टर डिग्री प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिये उनको आई.आई.टी. खड़गपुर और School of Planning and Architect, New Delhi में प्रवेश में प्राथमिकता मिलती है। प्रत्येक वर्ष इसके लिए प्रवेश परीक्षा होती है।

Regional Planning, Town & Country Planning में मास्टर डिग्री धारक अभ्यर्थी नगर नियोजक के रूप में रोजगार प्राप्त कर सकते हैं, साथ ही ऐसी डिग्री को प्राप्त करने वाले अभ्यर्थी भूमि उपयोग, भवन निर्माण, सड़क निर्माण, खनिज सम्पदा जैसे संसाधनों के समुचित एवं श्रेयकर उपयोग में स्थानीय अधिकारियों की सहायता कर सकते हैं।

3. प्रशासनिक सेवाओं के क्षेत्र में : भूगोल विषय में स्नातक की डिग्री लेने के बाद प्रशासनिक सेवाओं में जाने वाले अभ्यर्थियों के लिये भूगोल विषय इसलिये और फायदेमन्द है, क्योंकि सामान्य अध्ययन के पेपर में लगभग 30 प्रतिशत प्रश्न भूगोल विषय से पूछे जाते हैं, यही कारण है कि आजकल सिविल सर्विस के सफल अभ्यर्थी चिकित्सा, अभियांत्रिकी और विज्ञान के विषयों के स्थान पर भूगोल को अपना मुख्य विषय बनाकर परीक्षा में सम्मिलित होते हैं और सफल होकर रोजगार प्राप्त करते हैं।

4. सर्वेक्षक के रूप में : भूगोल विषय में डिग्री लेने के बाद नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यावरण के संरक्षण और सुधार के लिये सर्वेक्षण का काम कर सकते हैं और किसी भवन निर्माता संगठन या बीमा कम्पनी को वे व्यावसायिक रूप में सर्वेक्षक की सेवाएँ उपलब्ध करा सकते हैं। गैर सरकारी कम्पनियों में सर्वेक्षण (भूमि) या सर्वेक्षण (ऑकड़ा संकलन) का कार्य भी कुशलता पूर्वक कर सकते हैं और रोजगार पा सकते हैं।

5. मानचित्रकार : मानचित्रकार के रूप में भूगोल के विषय का अध्ययन मानचित्र निर्माण की सभी कलायें सिखाता है। भूगोल में मास्टर डिग्री लेने के बाद मानचित्रकारी के क्षेत्र में भी रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। नेशनल एटलस एण्ड थीमेटिक मैपिंग ऑर्गनाइजेशन (नाटमो), कोलकाता, भारतीय सर्वेक्षण विभाग, देहरादून ऐसे अभ्यर्थियों को प्राथमिकता देते हैं। नगर नियोजन संगठन, वन विभाग, भारतीय सर्वेक्षण विभाग, भूमि सर्वेक्षण एजेन्सियाँ, रक्षा क्षेत्र, रेल, सड़क तथा हवाई अड्डा प्राधिकरण, आवासीय बोर्ड तथा सरकार के पर्यटन विभाग में मानचित्रकारों की सेवायें ली जाती हैं। इसके अतिरिक्त मानचित्रकार, समाचार एजेन्सियों, अनुसंधान संस्थाओं, प्रकाशन उद्योग, पर्यटन और यात्रा आदि के क्षेत्रों में रोजगार प्राप्त कर सकते हैं।

6. कम्प्यूटर कार्टोग्राफर के रूप में : भूगोल में आधुनिक तकनीक अपनाकर इस विषय में भौगोलिक सूचना प्रणाली (G.I.S.), कम्प्यूटर मॉडलिंग तथा दूर संवेदन तकनीक और सांख्यिकी को सम्मिलित कर लिया है। इसलिये भौगोलिक सूचना प्रणाली तथा दूर संवेदन तकनीक में योग्यता रखने वाले अभ्यर्थियों के लिये कम्प्यूटर कार्टोग्राफर के रूप में रोजगार के अवसरों का क्षेत्र बढ़ा है।

7. रिमोट सेन्सिंग के क्षेत्र में : भूगोल विषय में डिग्री लेने के बाद अगर अभ्यर्थी रिमोट सेन्सिंग विषय में डिप्लोमा/डिग्री प्राप्त कर लेता है तो उसे सरकारी व गैर सरकारी संस्थानों एवं शोध संस्थानों में रोजगार आसानी से मिल जाता है।

वर्तमान में रिमोट सेन्सिंग का कोर्स कराने वाले संस्थान निम्नलिखित हैं :

अ. इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ रिमोट सेन्सिंग (IIRS) देहरादून

ब. इन्स्टीट्यूट ऑफ रिमोट सेन्सिंग, चेन्नई।

स. आई.आई.टी., कानपुर।

द. नेशनल रिमोट सेन्सिंग एजेन्सी (N.R.S.A.), हैदराबाद।

य. इण्डियन स्पेस रिसर्च ऑर्गनाइजेशन (ISRO), बैंगलोर।

8. रक्षा क्षेत्र में : भौगोलिक सूचना प्रणाली तथा दूर संवेदन तकनीक में योग्यता रखने वाले अभ्यर्थियों को रक्षा के क्षेत्र में रोजगार मिल जाता है। सेना में इससे संबंधित अनेक पद हैं, जिनमें रिमोट सेन्सिंग नेचुरलिस्ट, डाटा एडीटर, मैप क्वालिटी कन्ट्रोलर, मैप डिजीटर्स, जी.आई.एस. इन्जीनियर्स, कार्टोग्राफर्स क्लाइमैटोलिस्ट, लेक्चरर, इकोनोमिक ज्योग्राफर तथा पोलिटीकल ज्योग्राफर आदि पर होते हैं।

9. राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय एजेन्सीज में : राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भूगोल विषय में डिग्री लेने वाले अनेक अभ्यर्थी सामाजिक आर्थिक विकास सम्बन्धी योजनाओं में शोध विश्लेषक के रूप में कार्य करके रोजगार प्राप्त कर रहे हैं।

उपर्युक्त क्षेत्रों के अलावा भूगोल के अभ्यर्थी अगर पर्यटन को अपना रोजगार बनाना चाहते हैं, तो यह विषय उन्हें भी पर्याप्त सहायता प्रदान कर सकता है। देश के पर्यटन केन्द्रों की जानकारी प्राप्त कर किसी ट्रेवल एजेन्सी से सम्पर्क करके अपने प्रयासों से यात्री एकत्र कर उन्हें पर्यटन कराकर धन अर्जित कर सकते हैं। यह एक अनूठा रोजगार बन सकता है। ❑

Scanned by CamScanner

दहेज प्रथा: क्रय विक्रय की मानवीय परम्परा

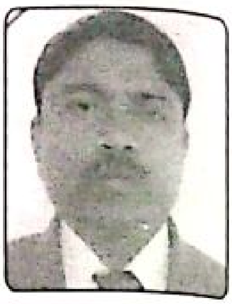

डॉ. राजेश कुशवाहा
प्रवक्ता- वाणिज्य संकाय

समाज में अनादिकाल से भाँति–भाँति के दूषण फैल रहे हैं। एक ओर मनुष्य अपने आपको सभ्य कहलाने के लिए प्रयासरत है, तो दूसरी ओर मूल दूषित वृत्ति लालच से मुक्त नहीं हो पाया है। समाज में फैली रूढ़ियों एवं कुपरम्पराओं में सम्भवतः सबसे अधिक कलंकित करने वाली प्रथा है– **दहेज प्रथा**।

प्राचीन काल से ही माता–पिता अपनी पुत्री का विवाह करते थे, तो इच्छा एवं सामर्थ्य अनुसार लड़की को दान दक्षिणा देते थे, क्योंकि कन्यादान करने के साथ–साथ दक्षिणा देना आवश्यक होता है। दान किसी भी प्रकार का हो, लेकिन साथ में दक्षिणा भी हो। जब माता–पिता अपने हृदय के टुकड़े को दान में देते हैं तो भला उसके साथ दक्षिणा क्यों नहीं ? समाज के प्रत्येक वर्ग में यह प्रथा प्रचलित है और यही प्रथा कालान्तर में मनुष्य का अधिकार अथवा अनिवार्य लालच बन गई।

भारतवर्ष इस प्रथा के लिए विश्वभर में बदनाम है। दूसरे देशों में भी स्वार्थवश लड़की से विवाह करके उसकी सम्पत्ति या माता–पिता की सम्पत्ति अथवा अन्य किसी प्रकार का लाभ पाने की इच्छा बनी रहती है। लेकिन लालच के रूप भिन्न होते हैं। इसीलिए उसे दहेज का नाम नहीं दिया जा सकता। वैसे भी पश्चिमी देशों में तो माता–पिता द्वारा विवाह करने की नौबत ही नहीं आती। उस समाज में लड़के–लड़कियां अपनी इच्छानुसार ही विवाह करते हैं। किन्तु भारत में अभी तक माता–पिता ही अपने पुत्र के लिए वधू एवं अपनी कन्या के लिए वर खोजते हैं। यद्यपि हमारे यहां की विवाह पद्धति सर्वोत्तम रीति है, किन्तु इस उत्तम रीति को दहेज प्रथा ने कलंकित कर दिया है।

परिवार में कन्या के जन्म के साथ तीन प्रश्न उठते हैं। पहला कन्या का विवाह करके उसके सुखमय भविष्य की चिन्ता, दूसरा दहेज प्रथा यदि लड़की अपने साथ दहेज नहीं लाती तो उसे अक्सर अपनी ससुराल में ताने सुनने पडते हैं। तीसरा कारण जो सबसे बड़ा है, जिसमें मानव की स्वार्थी मनोवृत्ति उजागर होती है। माता पिता कन्या को पराया धन समझकर अर्थात यह सोचकर कि लड़की को दूसरे के घर जाना है, अक्सर लड़की के साथ उपेक्षापूर्ण व्यवहार करते हैं। पुत्र को बुढ़ापे का सहारा मानकर जन्म से ही अत्यन्त लाड़–प्यार करते हैं। घिसी पिटी मनोवृत्ति कि लड़का तो भविष्य का सहारा है, जबकि लड़की बोझ। साथ ही समाज भी लड़कियों पर अनेक प्रकार के बन्धन लगाता है और लड़कों को अधिक खुला वातावरण प्रदान करता है। पुत्र की इच्छा इसलिए भी अधिक होती है कि माता पिता को लगता है कि मेरा वंश तो बेटे के द्वारा ही आगे चलेगा।

यहां तक कि झुग्गी–झोंपड़ी में रहने वाले भी यह सोचकर कि लड़का उनका वंश चलायेगा, इस कारण लड़के की चाह में यही लोग लड़कियों की कतार खड़ी कर देते हैं। माता–पिता सोचते हैं कि जब उनकी मृत्यु होगी तो उनका बेटा ही तो पिण्डदान करगा। किन्तु आज के बदलते परिवेश में कुछ आधुनिक विचारधारा के लोग इस परम्परा को नहीं मानते हैं। इस दुष्प्रवृत्ति से जितनी जल्दी जो भी मुक्त हो सके, उतना ही अच्छा है। भारत वर्ष में विवाह के कई प्रकार मनुस्मृति में बताये गये हैं जैसे– ब्रह्मविवाह, देवविवाह, प्रजापति विवाह, गान्धर्व विवाह, राक्षस विवाह, पिशाच विवाह। जिस विवाह में कन्या के माता–पिता दहेज के रूप में धन देते हैं, वह राक्षस विवाह कहा जाता है।

कालिदास के समय में दहेज प्रथा का उल्लेख करते हुए भगवत शरण उपाध्याय ने लिखा है कि तब भी दहेज की प्रथा थी, परन्तु आज के समान विवाह के पूर्व कोई शर्त नहीं थी। विवाह संस्कार की समाप्ति पर वर को कन्या के अभिभावक अपनी सामर्थ्य और उत्साह के अनुसार दहेज देते थे। कन्या को आभूषणों से अलंकृत कर दिया जाता था।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामायण में इस बात का जिक्र किया है, "कह न जाए कुछ ढाईज भूरि, रहा कनक मणि मण्डप पूरी।"

जो दान दहेज माता पिता अपनी इच्छानुसार देते थे, वह अपनी कन्या के सुख–सौभाग्य के लिए उपहार स्वरूप हुआ करता था। समाज में ऐसी प्रतियोगिता की भावना नहीं थी कि अमुक व्यक्ति ने कितना खर्च किया है, उससे ज्यादा मैं खर्च करूंगा। जो यह प्रथा बढ़कर बदलते हुए यहां तक पहुँच गई कि दहेज न लाने

Scanned by CamScanner

पर बहु को नये–नये ढंग से प्रताड़ित किया जाने लगा। यहां तक कि उन्हें जिंदा जलाया जाने लगा। देखा जाए तो आज के माता पिता अपने बेटों का पशुओं के समान क्रय विक्रय करते हैं। जिस तरह मेले में पशु बेचने के लिए बोली लगायी जाती है, वैसे ही लड़का बेचने के लिए भी एक तरह से बोली ही लगायी जाती है। न जाने कितनी पत्र–पत्रिकाएं, समाचार पत्र, फिल्में इस कुप्रथा को समाप्त करने के लिए इसके विरोध में भांति–भांति से मानव समाज को समझाने का प्रयास करती हैं, लेकिन जो लोग लालची हैं। उनके ऊपर किसी बात का प्रभाव नहीं पड़ता। दहेज न देने पाने की स्थिति में माता पिता कभी–कभी अपनी कन्याओं से भी हाथ धो बैठते है या फिर कन्या के विवाह के लिए इतना कर्ज ले लेते हैं कि चुकाने में ही कमर टूट जाती है।

महाकवि निराला ने तो अपनी एक मात्र बेटी के विवाह में न निमंत्रण पत्र छपवाए, न रिश्तेदारों को बुलाया, न ही किसी तरह का खर्चे से सम्बन्धित दिखावा किया। जब निराला जी जैसे कवि एक बुद्धिजीवी हमारे देश में ऐसे दृष्टान्त उपस्थित कर सकते हैं, तो भारतीय समाज के बुद्धिजीवी वर्ग को इस ओर पहल करनी चाहिए। विवाह में दान–दहेज लेना और देना पाप है। इच्छानुसार दिया गया भेंट स्वरूप धन या वस्तु को लेने में फिर भी कोई हर्ज नहीं है लेकिन न मिलने पर बहू को सताना या बहू के माता पिता से मांगना निश्चय ही सबसे बड़ा अधर्म है। यह परम्परा या वृत्ति किसी भी समाज के लिए कलंक है। ❑

जीवन में मनोविज्ञान का उपयोग

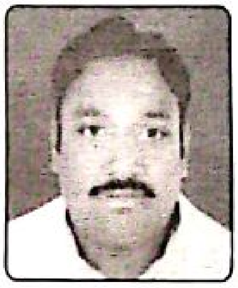

डॉ. वी. सी. गुप्ता
विभागाध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग

आम का युग तनाव (प्रतिबल) का युग है, जिसमें हर व्यक्ति किसी न किसी चिन्ता या तनावयुक्त जीवन जी रहा है। यह चिन्ता जीवन के किसी भी क्षेत्र से सम्बन्धित हो सकती है।

मनोविज्ञान के अन्तर्गत विभिन्न परिस्थितियों के प्रति प्राणी के व्यवहारों, प्रतिक्रियाओं, अनुक्रियाओं एवं साथ ही साथ अनुभवों का अध्ययन प्राणी के वातावरण के सन्दर्भ में किया जाता है। अतः मनोविज्ञान के विकास के साथ–साथ इसकी उपयोगिता दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है और इसी के आधार पर मानव की विभिन्न समास्याओं जैसे व्यक्तिगत, शैक्षिक, पारिवारिक, व्यवसायिक एवं सामाजिक आदि के समाधान के लिए मनोविज्ञान का उपयोग किया जाता है।

इन समस्याओं के अतिरिक्त मनोविज्ञान द्वारा व्यक्ति की अन्य समस्याएं जैसे – भविष्य, उद्योग, व्यवसाय, खेल, राजनीति, कानून एवं अपराध आदि के क्षेत्रों के साथ–साथ वैवाहिक सम्बन्धी समस्याओं, पर्यावरणीय प्रदूषण आदि ज्वलन्त समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

मनोविज्ञान का उपयोग व्यक्ति के व्यवहारिक जीवन से सम्बन्धित समस्याओ के अध्ययन एवं उनक समाधान के लिए भी किया जाता है। व्यावहारिक मनोविज्ञान द्वारा अधिकांशतः ऐसी समस्याओं का अध्ययन किया जाता है जो जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं से सम्बन्धित होती हैं।

हमारी भारतीय परिस्थितियों में इन समस्याओं का अध्ययन नितान्त आवश्यक प्रतीत होता है, क्योंकि आज भारतीय जीवन शैली भौतिकतावादी हो गई है, जिसमें व्यक्ति अन्यान्य प्रकार के भोग के सामान जुटाने में लगा रहता है, और इनका समायोजन परिस्थितियों द्वारा प्रभावित होता रहता है, जिससे व्यक्ति के मानसिक स्वास्क्ष्य पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। आयु की दृष्टि से बच्चों, युवाओं यहाँ तक की वृद्धावस्था तक मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन आवश्यक है ताकि व्यक्ति केवल शारीरिक रोगों से नहीं अपितु मानसिक रोगों से भी मुक्त रह सके।

इन सबके अतिरिक्त चिकित्सा क्षेत्रों में, उद्योग धन्धों के क्षेत्रों में, प्यावरणीय सम्बन्धों एवं सर्वाधिक महत्वूपर्ण शिक्षा के क्षेत्रों में उचित मार्गदर्शन कर व्यक्तिके जीवन को सही दिशा में प्रेरित कर उसके जीवन को इस तनावपूर्ण युग में अधिक से अधिक सुखी वतावरण का निर्माण करना ही मनोविज्ञान का लक्ष्य ही नहीं अपितु नैतिक कर्तव्य भी है। ❑

Scanned by CamScanner

कैसे राज करें औरों के दिल पर ?

रवि कुमार
प्रवक्ता बी.टी.सी. विभाग

संपत्ति कमाना आसान है, परन्तु अपने मित्रों के दिलों को जीतना और लोगों को प्रभावित करना मुश्किल है। लोगों को प्रभावित करने के मूलभूत तरीकों में तीन सिद्धान्त आते हैं– पहला सिद्धांत है– बुराई मत करो, निन्दा मत करो, शिकायत मत करो। दूसरा सिद्धांत है– सच्ची तारीफ करने की आदत डालो, तीसरा सिद्धांत है– सामने वाले आदमी में प्रबल इच्छा जगाओ।

अगर आप दूसरों से स्नेह, सम्मान सहानुभूति चाहते हैं तो उनकी आलोचना, बुराई न करें। किसी की आलोचना करने से कोई फायदा नहीं होता, क्योंकि इससे सामने वाला व्यक्ति अपना बचाव करने लगता है, बहाने बनाने लगता है या तर्क देने लगता है। आलोचना खतरनाक भी है, क्योंकि इससे उस व्यक्ति का बहुमूल्य आत्म सम्मान आहत होता है, उसके दिल को ठेस पहुँचती है और वह आपके प्रति दुर्भावना रखने लगता है।

आलोचना से कोई सुधरता नहीं है, बल्कि इससे सम्बन्ध जरूर बिगड़ जाते हैं। महान वैज्ञानिक 'हँस सेल्ये' ने इस संदर्भ में कहा है– "जितना हम सराहना के भूखे होते हैं, उतना ही हम निन्दा से डरते हैं।" आलोचना या निन्दा से कर्मचारियों, परिवार के सदस्यों और दोस्तों का मनोबल कम हो जाता है और उस स्थिति में कोई सुधार नहीं होता, जिसके लिए आलोचना की जाती है।

मनुष्य का स्वभाव ही यह है कि हर गलत काम करने पर वह दूसरों को दोष देता है, परिस्थितियों को दोष देता है, परंतु खुद को दोष नहीं देता। स्वयं अब्राहम लिंकन ने अपने जीवन के अनुभव से दूसरों की आलोचना करने के बुरे परिणाम को जाना, उनका प्रिय कोटेशन था, "किसी की आलोचना मत करो, ताकि आपकी भी आलोचना न हो"।

यदि किसी के मन में स्वयं के प्रति विद्वेष पैदा करना है, जो दशकों तक चलता रहे और मौत के बाद भी बना रहे, तो इसके लिए कुछ खास नहीं करना पड़ता, सिर्फ चुनिंदा शब्दों में चुभती हुई आलोचना करनी होती है। आलोचना करने में इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि की गई आलोचना कितनी सही है या गलत। जाने–अनजाने ज्यादातर लोग ऐसा ही करते हैं और दूसरों के मन में खुद के प्रति विषबीज बो देते हैं।

शालीन, शिष्ट एवं विनम्र व्यवहार के द्वारा हम औरों के दिल जीत सकते हैं। अतः हमें सदा औरों के साथ विनम्र व्यवहार करना चाहिए। हमारी व्यवहार कुशलता से ही हमारी पहचान होती है, अतः इसको समुन्नत करके हमें अपनी पहचान बनानी चाहिए।

- तेरी पनाह में हमें रखना, सीखें हम नेक राह पर चलना।
  कपट कर्म, चोरी, बेईमानी और हिंसा से हमें बचाना।।
  नाली का बन जाऊँ ना पानी, निर्मल गंगा जल ही बनाना।
  करुणा की छाँह में हमें रखना, सीखें हम नेक राह पर चलना।।
  तुझसा नहीं कोई क्षमावान, मुझसा नहीं कोई अपराधी।
  पुण्य की नगरी में भी मैंने,पापों की गठरी बाँधी।
  अपनी निगाह में हमें रखना, सीखें हम नेक राह पर चलना।।
- शैले शैले न माणिक्यम् मौक्तिकम् न गजे गजे।
  साधुवो न सर्वत्र चन्दनम् न वने वने।।

अर्थात्– हर पर्वत पर मणि नहीं मिलती, हर हाथी के मस्तिष्क पर मोती नहीं मिलता, सज्जन लोग हर जगह नहीं मिलते, हर वन में चन्दन नहीं मिलता।

निशानी

एक बादशाह अपने जन्मदिन के मौके पर कैदियों को रिहा कर रहा था। उन कैदियों में एक बूढ़ा भी शामिल था। बादशाह ने उससे पूछा, "आप कब से कैद में हैं।"

बूढ़े कैदी ने कहा– मैं तो आपके बाप दादा के वक्त से इस जेल में कैद हूँ।

बादशाह ने कहा– इन्हें छोड़ना नहीं, यह तो हमारे बाप दादा की निशानी हैं।

शालिनी
बी.कॉम. द्वितीय

Scanned by CamScanner

मनुष्य को अपने भीतर आत्म–विश्वास जाग्रत करना चाहिए

श्रीमती शोभा सारस्वत
प्रवक्ता, बी.टी.सी.

जब संसार में सभी व्यक्ति मनुष्य का साथ छोड़ दें, पराजय और पीड़ाओं के आवेश मनुष्य को घायल कर दें। पैरों के नीचे से सभी आधार खिसक जायें, जीवन के अंधकार में हम अकेले पड़ जायें, तो भी क्या हम जीवित रह सकते हैं। कुछ कर सकते हैं। हाँ हम जीवित भी रह सकते हैं और कुछ अच्छा भी कर सकते हैं, जब यदि हम स्वयं अपने साथ हैं, तो कोई भी शक्ति हमें नहीं रोक सकती है। मनुष्य का अपना आत्म विश्वास ही अकेला इतना शक्तिशाली साधन है, जो उसे मंजिल पर पहुँचा सकता है। स्वामी विवेकानन्द ने भी कहा था "आत्म–विश्वास सरीखा दूसरा मित्र नहीं है, आत्म विश्वास ही भावी उन्नति की प्रथम सीढ़ी है।" अतः मनुष्य की इच्छा हो या ना हो जीवन में परिवर्तनशील परिस्थितियाँ आती रहती हैं। आज उतार है, तो कल चढ़ाव, चढ़े हुए गिरते हैं और गिरे हुए उठते हैं। कठिनाइयाँ, दुःख परेशानियाँ जीवन की कसौटी है, जिनमें मनुष्य का व्यक्तित्व निखरता है। कठिनाइयाँ मनुष्य के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। इन्हें खुले हृदय से स्वीकार करके आत्म विश्वास प्राप्त किया जा सकता है। हमें हर परिस्थिति में अपने मन को सन्तुलित, शांत और स्थिर रखना चाहिए। हमारे धैर्य की परीक्षा सुख की अपेक्षा दुःख में ही अधिक होती है। उन्हें प्रारब्ध का योग समझकर प्रसन्नता पूर्वक जीवन को जीना चाहिए। परिवर्तन से डरना और संघर्ष से कतराना मनुष्य की बहुत बड़ी कायरता है। मनुष्य जब तक जीवित है, उसे परिवर्तनों का सामना करना ही पड़ेगा। अतः हमें अपने स्वयं के आत्म विश्वास को जगाना चाहिए और आत्म–विश्वास के साथ स्वयं की मदद करके समाज में अपना स्थान बनाने की कोशिश करनी चाहिए। कायर नहीं आत्म–विश्वासी बनना चाहिए। ❑

कहानी 101 की

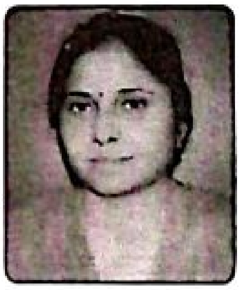

श्रीमती वैशाली अग्रवाल
प्रवक्ता, बी.टी.सी.

एक दिन 1, 1 आपस में बातें कर रहे थे, यहाँ–वहाँ की कहानियाँ सुना रहे थे। अचानक शून्य को देखकर दोनों हँसने लगे, उसके गोल–मटोल होने का मज़ाक उड़ाने लगे। एक ने शून्य से कहा, इतना मत फूलो, यह अहंकार की निशानी है। तुम हम जैसे बनो, यही अच्छी जिन्दगानी है। शून्य ने कुछ नहीं कहा, गम्भीरता से बोला, मेरे होने से ही है तुम लोगों का बोलवाला। मेरे अकेले तुम्हारे आगे होने पर तुम्हारी कीमत दस गुना बढ़ जाती है और मेरे स्थान बदलकर तुम्हारे पहले लगने से तुम्हारी कीमत दस गुनी कम हो जाती है।

इसी तरह यदि हम ईश्वर को अपने सामने रखते हैं, तो हमारी ताकत कई गुना बढ़ जाती है और पीछे रखने पर हमारी ताकत कई गुना घट जाती है। अतः हमें जीवन में ईश्वर को हमेशा अपने आगे रखना चाहिए जिससे वे हमारे आगे–आगे चलकर हमारा मार्गदर्शन करते रहें। ❑

Scanned by CamScanner

पत्रकारिता के क्षेत्र में हिन्दी का पतन

डॉ. बीना अग्रवाल
सहायक प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग

वर्तमान समय में हम पत्रकारिता की नैतिकता और उसकी सामाजिक जिम्मेदारियों का जिक्र करते हैं, तो हमें हिन्दी और भाषा की पत्रकारिता की याद आती है। यदि देखा जाए तो हिन्दी साहित्य, भाषा तथा पत्रकारिता का रिश्ता बहुत गहरा है, लेकिन इस बात को हम अन्य भाषाओं के सन्दर्भ में अधिक गम्भीरता से नहीं कह सकते।

जब हिन्दी के विकसित होने का समय जोरों पर था, उसी समय आजादी की लड़ाई का शुरूआती दौर था। आज के सन्दर्भ में हम भारतेन्दु हरिश्चन्द्र साहित्यकार को समाज का हितैषी मानकर एक खाने में नहीं रख सकते। इसके साथ ही आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी को नई हिन्दी का गढ़ने वाला न मानना उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व के पहलुओं को नजरअंदाज करना है। यही बात हिन्दी पत्रकारिता के सम्बन्ध में लागू होती है।

पत्रकारिता के क्षेत्र में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, द्विवेदी जी तथा प्रेमचन्द जी का बहुत योगदान रहा है। नई चीजों को हिंदी भाषा में गढ़ने के लिए अज्ञेय जी, रघुवीर सहाय जी तथा धर्मवीर भारती जी का नाम लिया जा सकता है।

सबसे अधिक अराजकता का दौर आज भी चल रहा है। चाहे वह भाषा हो या कॉपी लेखन। दुर्भाग्य है कि कोई नया आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जैसा सामने नहीं आ रहा है। हाल के दौर में अंग्रेजी के शब्दों को हिन्दी में लाकर 'हिंग्लिश' बनाने की कोशिश अधिक की जा रही है। हिंदी को विगाड़कर उसके मूल चरित्र को विकृत किया जा रहा है। आज इक्कीसवीं सदी के शुरूआत के माहौल में एक अलग बदलाव दिखायी देता है, चाहे वह समाचार कक्ष हो या खानपान स्थल या घर आदि। पत्रकारिता की भाषा अगर इसके अनुरूप न बदले तो वह मर जाएगी।

हिन्दी पत्रकारिता भाषा को शिथिल पड़ना पड़ा क्योंकि कुछ साहित्य और अकादमिक संस्थाओं के समूहों ने हिंदी समाज को सम्मानजनक नजरों से नहीं देखना चाहा। इस समूह ने वैज्ञानिक और पारिभाषिक शब्द बनाने का मजाक उड़ाया।

लेकिन इस सबके बावजूद हमें हिंदी को बढ़ाना है, पत्रकारिता को बढ़ाना है, हिंदी वालों को बढ़ाना है, हिंदी की प्रगति के लिए वर्तनी की एकरूपता बहुत जरूरी है। इस क्रम में यह काम सबसे पहले अखबारों, रेडियो स्टेशनों और दूरदर्शन स्रोत (चैनलों) मे होना चाहिए, क्योंकि इन सबकी भाषा समाज के लिए आदर्श बनती है। यदि आदर्श ही गलत होगा तो आम आदमी की भाषा क्या होगी। किसी भी विषय पर लिखने से पहले कॉपी तैयार करनी चाहिए। इसी में सबसे ज्यादा सावधानी व मानसिक तैयारी की जरूरत होती है। जिस प्रकार एक सच को छिपाने के लिए सैकड़ों झूठ की आवश्यकता पड़ती है, फिर भी वह नहीं छिपता, उसी प्रकार यहाँ पर छूटी हुई गलती आगे निरन्तर परेशान करती रहेगी।

अच्छी शैली में लिखने की जरूरत दूरदर्शन स्रोत (चैनलों) को ही नहीं, ये गड़बड़ियाँ कमोवेश हर जगह दिखाई देती है। हिंदी के सबसे अच्छे कहे जाने वाले साहित्यिक प्रकाशनों में पर्याप्त गड़बड़ियाँ हैं। वहाँ भी प्रेस कॉपी का काम पर्याप्त नहीं होता।

वाक्य विन्यास की समस्या भी हिन्दी की कॉपियों में देखने को मिलती है, कहना न होगा कि पंजाब से निकलने वाले हिंदी अखबारों में पंजाबी तथा गुजरात के हिंदी अखबारों में गुजराती रंग दूरदर्शन स्रोत (चैनलों) पर खूब चढ़ रहा है। यह बात हिंदी के विस्तार के लिए तो अच्छी है, लेकिन यह असर हिंदी भाषा के रूप को विगाड़ रहा है।

आजकल हिंदी के साथ अंग्रेजी शब्दों को जबरन ठूँसने का चलन इधर काफी बढ़ा है। अपने नाम में डॉ. एम.ए.पी.एच.डी., बगैरह लगाना अशोभनीय हैं, लेकिन इसका प्रयोग भी धड़ल्ले से हो रहा है। क्रिया विशेषणों के मामले में अराजकता है। कुछ गड़बड़ियाँ तो ऐसी हैं, जिन्हें लाठी के जोर पर मनवाने का कार्य चल रहा है। एक उदाहरण जैसे– पाक का मतलब– पाकिस्तानी है– पाकिस्तान नहीं। पाक सेना, पाक सरकार का प्रयोग तो सही है, लेकिन यह कहना उचित नहीं है कि पाक ऐसा कह रहा है, या पाक ने यह कहा। यह प्रयोग एकदम अशुद्ध है।

वर्तमान में दुःखद स्थिति यह है कि हिंदी के अनेक पत्रकार 'अनेकों', 'सबों', 'औरों', जैसे प्रयोग करते हैं, जो कि व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध है।

अंत में यह कहना उचित होगा कि पत्रकारिता का काम बहुत बड़ी रचना करना नहीं है। सरल, सही और रचनात्मक लेखन ही पत्रकारिता की जान है। अपूर्ण और अस्पष्ट समाचार देने से बेहतर है समाचार न देना। ❑

Scanned by CamScanner

शैक्षिक प्रदर्शनी (बी.टी.सी. विभाग)

बी.टी.सी. विभाग में शैक्षिक प्रदर्शनी में उपस्थित मुख्य अतिथि डॉ. महेश चन्द्र वार्ष्णेय, प्राचार्य व अन्य

प्रदर्शनी में मुख्य अतिथि को स्मृति चिन्ह देते हुए प्राचार्य व प्राध्यापक

अखिल भारतीय काव्य सम्मेलन व गोष्ठियों का आयोजन

कवि कुमार विश्वास व अन्य कवियों के साथ सचिव श्री दीपक गोयल व प्राचार्य डॉ. वाई. के. गुप्ता

कवि शंशाक प्रभाकर एवं अन्य कवि के साथ उप प्राचार्य डा. एस. एस. यादव व अन्य

प्राचार्य व उप प्राचार्य के साथ कवि कुमार विश्वास

ज्ञान महोत्सव के अन्तर्गत आयोजित काव्य गोष्ठी में मंचासीन कविगण व मुख्य अतिथि डॉ. प्रभाकर शर्मा

हास्य कवि श्री सबरस मुरसानी ने हास्य कवि गोष्ठी में दर्शकों को खूब गुदगुदाया

ज्ञान महोत्सव काव्य गोष्ठी में कविता का आनन्द लेते हुए ज्ञान परिवार सदस्य

Scanned by CamScanner

वार्षिकोत्सव – 2014

अतिथिगण एवं अध्यक्षा श्रीमती आशा देवी दीप प्रज्ज्वलन करते हुए

मुख्य अतिथि अपर आयुक्त श्री देवेन्द्र दीक्षित जी का पुष्प गुच्छा भेंट कर स्वागत करते हुए उप प्राचार्य डॉ. एस.एस. यादव

विशिष्ट अतिथि ए.डी.ए. बोर्ड के सदस्य श्री कृपाल सिंह का स्वागत करते हुए बी.टी.सी. विभागाध्यक्ष श्री आर.के. शर्मा

वार्षिकोत्सव में रंगारंग प्रस्तुतियाँ देती छात्राऐं

कार्यक्रम के दौरान उपस्थित मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि, प्राध्यापक व छात्र-छात्राऐं

''ज्ञान पुष्प' वार्षिक पत्रिका के पंचम अंक का विमोचन करते हुए अतिथिगण

Scanned by CamScanner

वार्षिकोत्सव – 2014

वार्षिकोत्सव में रक्तदाताओं को मैड़ल प्रदान करती हुई अध्यक्षा श्रीमती आशा देवी

मेधावी छात्राओं का सम्मान करते हुए अतिथि श्रीमती मोहिनी व श्री मनमोहन चावला

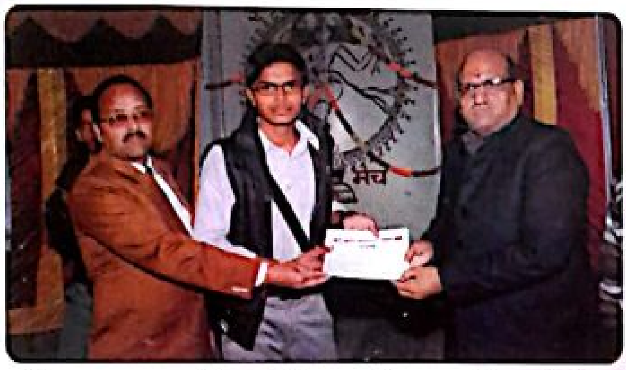

प्रतिभावान छात्र को सम्मानित करते हुए कालेज समिति सदस्य श्री अनिल खंड़ेलवाल व प्राचार्य डा.वाई. के. गुप्ता

उत्कृष्ट सेवाओं के लिए प्राध्यापकों को डॉ. बी. डी. गुप्ता मैमोरियल पुरस्कार प्रदान करती हुए अध्यक्षा श्रीमती आशा देवी

शिक्षणेत्तर कर्मचारी को राजपाल सिंह मैमोरियल पुरस्कार देते हुए महाविद्यालय समिति के सदस्य श्री अनिल खंड़ेलवाल

चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों को महावीर सिंह मैमोरियल पुरस्कार से सम्मानित करते हुए कोषाध्यक्ष श्री असलूब अहमद

वार्षिकोत्सव में उपस्थित ज्ञान परिवार

मुख्य अतिथि अपर आयुक्त श्री देवेन्द्र दीक्षित को प्रतीक चिन्ह भेंट करते हुए सचिव श्री दीपक गोयल

ज्ञानार्जन दिवस (संस्थापक दिवस)- 2014

ज्ञानार्जन दिवस पर दीप प्रज्ज्वलित करते हुए मुख्य अतिथि श्री जगवीर किशोर जैन व अन्य अतिथि

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एम.एल.सी. जगवीर किशोर जैन का स्वागत करते उप प्राचार्य डॉ. एस.एस. यादव

अतिथि श्रीमती श्रीदेवी गोयल (पूर्व डी.जी.पी., महाराष्ट्र) का स्वागत करती प्राध्यापिका श्रीमती मधु चाहर

अतिथि श्री वीरेन्द्र गोयल का स्वागत करते हुए प्राध्यापक डॉ. ललित उपाध्याय

ज्ञानार्जन दिवस पर उपस्थित मंचासीन अतिथिगण

'ज्ञानभव' जर्नल का विमोचन करते हुए अतिथिगण

सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करती हुई छात्राएं

विशिष्ट अतिथि ए.डी.एम. (सिटी) श्री अवधेश तिवारी द्वारा संबोधन

Scanned by CamScanner

ज्ञानार्जन (संस्थापक) दिवस– 2014

रंगारंग नृत्य प्रस्तुति करती हुई छात्राएं

अतिथिगण को प्रतीक चिन्ह देते हुए ज्ञान परिवार सदस्य श्री चाँद गोयल (पूर्व मुख्य सचिव, महाराष्ट्र) व श्रीमती श्रीदेवी जी

अतिथि शाखा प्रबंधक बैंक ऑफ बड़ौदा, अलीगढ़ को प्रतीक चिन्ह देती हुई समिति सदस्या डॉ. मधु गर्ग

मुख्य अतिथि श्री जगवीर किशोर जैन को प्रतीक चिन्ह देते हुए श्री चाँद गोयल (पूर्व मुख्य सचिव, महाराष्ट्र)

महाविद्यालय समिति के उपाध्यक्ष श्री अवि प्रकाश मित्तल को स्मृति चिन्ह भेंट करती हुई श्रीमती श्रीदेवी गोयल

अतिथि सेल्स टैक्स कमिश्नर को प्रतीक चिन्ह देते हुए प्राचार्य डॉ. वाई. के. गुप्ता व डॉ. रेखा शर्मा

ज्ञान परिवार व अतिथियों द्वारा ज्ञान भवन में प्रयोगशाला का भ्रमण

ज्ञान आई. टी. आई. का अवलोकन करते हुए अतिथिगण व सचिव श्री दीपक गोयल

Scanned by CamScanner

रक्तदान शिविर एवं संगोष्ठी (राष्ट्रीय सेवा योजना)

लोकसभा सांसद अलीगढ़ श्री सतीश गौतम ने फीता काटकर रक्तदान शिविर का शुभारंभ किया

रक्तदाता छात्रा का हौसला बढ़ाते हुए प्राचार्य डॉ. वाई. के. गुप्ता व प्रबंधक श्री मनोज यादव, डॉ. ललित

पं. दीनदयाल अस्पताल के सी.एम.एस. डॉ. बालकिशन द्वारा भी रक्तदाताओं के उत्साह को सराहा

डी.एम. श्री अभिषेक प्रकाश ने विश्व रक्तदाता दिवस पर पी. ओ. डॉ. ललित उपाध्याय को सम्मानित किया

ज्ञान मेला – 2014

ज्ञान मेले का दीप प्रज्ज्वलन कर शुभारंभ करते हुए अतिथि डॉ. अमित चतुर्वेदी क्षे. नि. इग्नू, ए.सी.एम. प्रथम, सचिव

कार्यक्रम में उपस्थित मंचासीन अतिथिगण

स्टॉल का निरीक्षण करते हुए अतिथि डॉ. एस.पी.एस. जादौन, पूर्व प्राचार्य, एस.वी. कॉलेज, ए.सी.एम. डॉ. सोनकर

प्राचार्य, डी.एस. कॉलेज, डॉ. ऐ.के. तोमर को जानकारी देते हुए सचिव श्री दीपक गोयल व प्रबंधक श्री मनोज यादव

Scanned by CamScanner

ज्ञान दिवस – 2014 (पुरातन छात्र समिति पदाधिकारियों का शपथ ग्रहण समारोह)

कार्यक्रम में उपस्थित प्राचार्य, मु. अतिथि डॉ. राजीव लोचन शुक्ला, सचिव श्री दीपक गोयल, प्राचार्य व उपप्राचार्य

पुरातन छात्रों की पत्रिका 'ज्ञान दीप' का विमोचन करते हुए अतिथिगण

छात्राओं द्वारा दी गई रंगारंग प्रस्तुतियाँ

ज्ञान दिवस पर उपस्थित प्राध्यापक व छात्रा-छात्राएें

पुरातन छात्रा समिति की नव निर्वाचित कोषाध्यक्ष को प्रमाण-पत्रा देते हुए प्राचार्य डा. वाई. के. गुप्ता व अन्य छात्रा प्रदाधिकारी

मुख्य अतिथि डॉ. राजीव लोचन शुक्ला को प्रतीक चिन्ह भेंट करते हुए सचिव श्री दीपक गोयल

प्राचार्य डॉ. वाई के गुप्ता, विशिष्ट अतिथि अकील उर्रहमान को प्रतीक चिन्ह भेंट करते हुए

ज्ञान दियरा पर उपस्थित नव निर्वाचित पुरातन छात्रा समिति के साथ प्राचार्य, उपप्रचार्य व ज्ञान परिवार

Scanned by CamScanner

मतदाता जागरूकता अभियान (राष्ट्रीय सेवा योजना, स्काउट व गाइड)

मुख्य अतिथियों द्वारा मतदाता जागरूकता अभियान को स्लोगन बैनर के साथ किया शुभारंभ

निर्वाचन आयोग की ब्राण्ड ऐम्बेसेडर मालिनी अवस्थी के साथ ए.डी.एम. (वित्त) डॉ.वी. के. सिंह, डॉ. ललित उपाध्याय

स्वीप जिला समन्वयक डॉ. चंद्रवीर सिंह ने किया मतदाता जागरूकता रैली का शुभारंभ

स्काउट व गाइड शिविरार्थियों ने मतदाताओं से की अपील

दैनिक जागरण के 'हम जागे, जनतंत्र आगे' प्रचार वाहन का महाविद्यालय में किया स्वागत

मतदाता जागरूकता अभियान में मतदान का लिया संकल्प

हिन्दुस्तान समाचार पत्र के कैन्डिल मार्च में शामिल उप प्राचार्य डा. एस. एस. यादव व डा. ललित उपाध्याय

निर्वाचन आयोग द्वारा नामित कॉलेज कैम्पस एम्बेसेडर श्री नरेन्द्र कुमार व श्री प्रेम सिंह के साथ डॉ. ललित उपाध्याय

राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (RUSA)

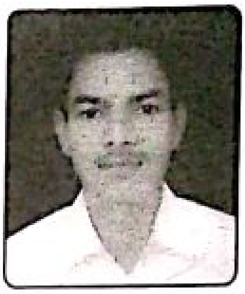

नरेश कुमार
बी.एड

भारत में सर्वशिक्षा अभियान, प्राथमिक शिक्षा एवं माध्यमिक शिक्षा अभियान ने माध्यमिक शिक्षा के लिए सुनिश्चित तौर पर एक सुदृढ़ आधार तैयार किया है लेकिन देश की उच्चतर शिक्षा प्रणाली गुणवत्ता, उपादेयता तथा श्रेष्ठता आदि सभी मानकों के मामले में स्तरीय नहीं है। कला, विज्ञान, वाणिज्य, शिक्षक–शिक्षा तथा विधि संकायों के सामान्य पाठ्यक्रमों से स्नातक/स्नातकोत्तर की डिग्री हासिल करने वाले अधिकांश युवाओं की व्यावहारिक योग्यता रोजगार के अवसरों के अनुकूल नहीं है। वर्तमान समय में भारत को "जनांकिकीय लाभांश" प्राप्त है, जो अगले पाँच दशकों तक प्राप्त होता रहेगा। अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन का आकलन है कि सन् 2020 तक भारत में 20 से 24 वर्ष के आयुवर्ग के 116 मिलियन कामगार होंगे, जब कि भारत के चिर प्रतिद्वन्दी चीन में ऐसे कामगारों की संख्या 94 मिलियन होगी। आश्रित अनुपात भारत के सर्वथा अनुकूल है। एक आंकलन के अनुसार सन् 2020 तक भारत की औसत आयु 29 वर्ष होगी जो संयुक्त राज्य अमरीका (40 वर्ष) जापान (46 वर्ष) तथा यूरोप (47 वर्ष) के मुकाबले काफी कम होगी। सन् 2011 की जनगणना के अन्तिम आँकडों के अनुसार देश की 60 प्रतिशत जनसंख्या 15 से 59 वर्ष आयु वर्ग में है। ऐसे में आवश्यकता केवल इस बात की है कि 20–24 वर्ष आयु वर्ग के युवाओं को उच्च गुणवत्ता युक्त रोजगारपरक उच्च शिक्षा उपलब्ध कराई जाए, जिससे उनकी रोजगार प्राप्त करने की क्षमता में सुधार हो सके।

बारहवीं पंचवर्षीय योजना में उच्च शिक्षा को देश एवं वैश्विक आवश्यकताओं के अनुरूप उपादेय बनाने तथा समाज के विभिन्न वर्गों में उच्चशिक्षा तक पहुँच की असमानताओं को दूर करने को उच्च प्राथमिकता प्रदान की गई है। यह उसी दशा में सम्भव है, जब उच्च शिक्षा प्रणाली की कमजोरियों एवं इसके समक्ष विद्यमान चुनौतियों को दूर करते हुए इसका सुदृढीकरण किया जाए तथा अवसरों में वृद्धि की जाए।

उच्च शिक्षा प्रणाली की कमजोरियाँ

भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली अग्रलिखित कमियों के दौर से गुजर रही है।

- उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात वर्तमान में 13.4% है, जबकि संयुक्त राज्य अमरीका में 95% रूस में 76% स्वीडन में 74% अर्जेन्टाइना में 71%, यू.के. में 59% है।
- अनुसूचित जाति (12.2%), अनुसूचित जनजातियों (9.7%), अन्य पिछडी जातियों (18.7%), मुसलमानों (9.5%) में सकल नामांकन अनुपात औसत से भी नीचा है।
- पुरूषों के लिए सकल नामांकन अनुपात जहाँ 20.9% है, वहीं महिलाओं के लिए 16.5% है।
- ग्रामीण क्षेत्रों एवं शहरों क्षेत्रों में उच्च शिक्षा संस्थानों की गुणवत्ता, सुविधाओं और संसाधनों में भारी असमानताएं हैं।
- विकसित राज्यों तथा पिछड़े राज्यों के शिक्षण संस्थानों में सुविधाओं और संसाधनों में भारी अन्तर है।

भारतीय उच्चतर शिक्षा प्रणाली का वर्तमान स्वरूप

भारतीय उच्चतर शिक्षा प्रणाली में निम्नलिखित प्रकार की संस्थाएँ हैं–

i. केन्द्रीय विश्वविद्यालय (केन्द्र सरकार द्वारा वित्त पोषित)
ii. राज्य विश्वविद्यालय (यूजीसी एवं राज्य सरकारों द्वारा वित्त पोषित)
iii. विश्वविद्यालयवत् संस्थाएँ, डीम्ड विश्वविद्यालय (केन्द्र राज्य एवं निजी संसाधनों से वित्त पोषित)
iv. निजी विश्वविद्यालय (निजी संसाधनों से वित्त पोषित)
v. महाविद्यालय (केन्द्र सरकार, राज्य सरकारों एवं निजी संसाधनों द्वारा वित पोषित) 31 मार्च 2013 को देश में 44 केन्द्रीय विश्वविद्यालय, 286 राज्य (सरकार) विश्वविद्यालय, 111 निजी विश्वविद्यालय, 129 डीम्ड विश्वविद्यालय, 35539 महाविद्यालय 13507 तकनीकी (इंजीनियरिंग प्रबन्ध, फार्मेसी होटल प्रबन्ध) महाविद्यालय/संस्थान तथा 200 दूरस्थ शिक्षा संस्थान कार्यरत थे।

विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में 2012–13 में कुल 203.27 लाख विद्यार्थी अध्ययनरत थे। तकनीकी शिक्षण संस्थानों में प्रवेश हेतु 22.37 लाख स्थान थे। 30.56 लाख विद्यार्थी दूरस्थ शिक्षा में, 23.02 लाख विद्यार्थी डिप्लोमा/पी.जी. डिप्लोमा पाठ्यक्रमों में पंजीकृत हैं।

Scanned by CamScanner

राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान के विशिष्ट तथ्य

- उच्चतर शिक्षा में सुधार एवं उन्नयन हेतु यह एक व्यापक योजना है, अन्य समस्त योजनाएँ इसके अन्तर्गत समाहित हो जायेंगी।
- केन्द्र सरकार से वित्त पोषण राज्यों के बजट के माध्यम से मानव संसाधन विकास मन्त्रालय से उच्चतर शिक्षा में स्थापित तथा संचालित संस्थानों को मिलेगा।

भारत में उच्चशिक्षा की स्थिति (2012–13)

क्रं.	विवरण	2012–13
1.	विश्वविद्यालय	574
2.	महाविद्यालय	35539
3.	अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद द्वारा अनुमोदित संस्थान	13507
4.	दूरस्थ शिक्षण विश्वविद्यालय/संस्थान	200
5.	विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में सकल नामांकन (लाखों में)	203.27
6.	मुक्त दूरस्थ शिक्षण प्रणाली में नामांकन (लाखों में)	38.56
7.	विद्यालयेत्तर डिप्लोमा/पीजी डिप्लोमा में नामांकन (लाखों में)	23.02
8.	अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद द्वारा अनुमोदित पाठ्यक्रमों में सीटों की संख्या (लाखों में)	30.14

भारत में उच्चतर शिक्षा प्रणाली

	विवरण	31 मार्च, 2013	30 जून, 2014
A	विश्वविद्यालय	574	700
1.	केन्द्रीय विश्वविद्यालय	44	
2.	राज्य विश्वविद्यालय	397	
	i. राज्य सरकार	286	
	ii. निजी	111	
3.	विश्वविद्यालय (डीम्ड विश्वविद्यालय)	129	
4.	राज्य विधान मण्डल द्वारा पारित अधिनियम के अन्तर्गत स्थापित संस्थान	4	
5.	अध्ययन विद्यार्थी (लाख)	29.26	(14.39%)
B.	**महाविद्यालय**	35539	
	महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी (लाख)	174.01	(85.61%)
	i. स्नातक स्तर	156.02	(89.38%)
	ii. स्नातकोत्तर स्तर	17.99	(72.16%)
C	**कुल नामांकन (लाख)**		
	i. पुरूष	116.55	(57.34%)
	ii. महिला	86.72	(42.66%)
D	**अनुसंधित्सु (लाख)**	1.61	
	i. विश्वविद्यालयों में	1.28	(79.45%)
	ii. महाविद्यालयों में	0.33	(20.57%)

Scanned by CamScanner

भारत में तकनीकी शिक्षा (31 दिसम्बर, 2013)

क्रं.	पाठ्यक्रम	संस्थानों की संख्या	प्रवेश हेतु सीटों की संख्या
1.	इंजीनियरिंग	3495	1761976
2.	मैंनेजमेंट	2450	385008
3.	मास्टर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन	1241	100700
4.	फार्मेसी	1145	121652
5.	आर्किटेक्चर	126	5996
6.	होटल मैंनेजमेंट एवं कैटरिंग टेक्नोलौजी	105	8401
	सकल योग	**8562**	**2236743**

लक्ष्य (Goal) : तेरहवीं पंचवर्षीय योजना के अन्त तक (2016–17) सकल नामांकन अनुपात को बढ़ाकर 32% के स्तर पर लाना इस योजना का एक समग्र एवं बृहत्तर लक्ष्य है। भारत सरकार का उद्देश्य राज्य विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों की गुणवत्ता में सुधार लाना तथा उनकी विद्यमान क्षमताओं को उच्चीकृत करना है ताकि वे गतिमान माँग संचालित गुणवत्ता के प्रति जागरूक, दक्ष, दूरदर्शी तथा आर्थिक एवं प्रोद्योगिकीय स्थानीय–प्रान्तीय–राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर होने वाले तीव्रगामी आर्थिक व प्रौद्योगिकीय विकास के प्रति उत्साह पूर्वक अनुकूल हो सकें। इस योजना के प्रमुख उद्देश्य निम्नांकित हैं–

- यह सुनिश्चित करते हुए कि उच्चतर शिक्षा क्षेत्र की सभी संस्थाएँ प्रत्यायन को एक अनिवार्य गुणवत्ता आश्वासन ढाँचे तथा निर्धारित मानकों को अपनाएंगी, विद्यमान राज्य संस्थाओं की समग्र गुणवत्ता में सुधार लाना।
- राज्य स्तर पर नियोजन एवं अनुश्रवण हेतु संस्थानिक ढाँचा सुसाध्य तरीके से सृजित करके, राज्य विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता का प्रोन्नयन करके तथा उच्चतर शिक्षा संस्थाओं में परीक्षा सुधारों को लागू करके राज्य उच्चतर शिक्षा प्रणाली में रूपान्तरकारी सुधार लाना।
- उच्चतर शिक्षा संस्थानों में अकादमिक एवं परीक्षा सुधारों को सुनिश्चित करना।
- कुछ विश्वविद्यालयों को विश्वस्तरीय अनुसंधान विश्वविद्यालयों के रूप में परिवर्तित करना।
- सभी उच्चतर शिक्षा संस्थानों में गुणवत्तायुक्त पर्याप्त संकाय (प्राध्यापक) की उपलब्धता सुनिश्चित करना, रोजगार के प्रत्येक स्तर पर क्षमता निर्माण सुनिश्चित करना।

क्षेत्र : देश के समस्त राज्यों तथा केन्द्र शासित क्षेत्रों के विश्वविद्यालय अनुदान की धारा 2(f) तथा 12(B) के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त सभी राज्य विश्वविद्यालय तथा महाविद्यालय एवं अर्हताओं को पूरा करने वाले धारा 2(f) तथा 12(B) से अनाच्छादित राज्य विश्वविद्यालय/महाविद्यालय इस योजना के तहत आच्छादित होंगे। अर्हता के सापेक्ष लगभग 306 राज्य विश्वविद्यालय तथा 8500 महाविद्यालयों को इस योजना के तहत स्नातकों को रोजगारपरक व सीखने के वातावरण में सुधार लाने, अनुसंधान विकास और अभिनवीकरण को ऊँचा उठाने के लिए आच्छादित किया जाएगा। राजकोष से वित्त पोषित महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय योजना के सभी संघटकों के अन्तर्गत सहायता पाने के लिए अर्ह होंगे, वहीं निजी संस्थान अधोरचना सहायता सहित कुछ ही संघटकों के अन्तर्गत सहायता प्राप्त कर सकें जो 50 : 50 के अनुपात में होगी। प्रत्येक संस्थान को प्रत्येक संघटक के लिए संस्थानिक विकास योजना तैयार करनी होगी।

- 44 केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में से 39 केन्द्रीय विश्वविद्यालयों का विकास एवं अनुरक्षण विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा, IGNOU, केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, इम्फाल, इण्डियन मैरीटाइम विश्वविद्यालय, चेन्नई का वित्तीयन क्रमशः मानव संसाधन विकास मंत्रालय तथा जहाजरानी एवं परिवहन मंत्रालय द्वारा और दक्षिण एशियन विश्वविद्यालय का वित्तीयन विदेशी मामलों के मंत्रालय द्वारा किया जाता है।

राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान का रणनीतिक फोकस

राज्य संस्थानों को रणनीतिक वित्तीयन यह सुनिश्चित करेगा कि गुणवत्ता एवं पहुँच जैसे मुददों को समतामूलक तरीके से हल किया जाता है। इसके लिए राज्यों को राज्य उच्चतर शिक्षा आयोग के अग्रलिखित बिन्दुओं को ध्यान में रखकर तैयारी करनी होगी–

- उचित मानचित्रणोपरान्त भौगोलिक एवं क्षेत्रीय नियोजन
- कार्यक्रम एवं अनुशासन आयोजना
- अनिवार्य प्रत्यायन एवं गुणवत्ता सुधार
- शासन एवं अकादमिक सुधार
- उपलब्धि आधारित प्रतिपूर्ति, अनुसंधान एवं अभिनवीकरण पर ध्यान देना।

Scanned by CamScanner

उच्च शिक्षा में विनियमनकारी निकाय

क्र.	विनियमनकारी निकाय	स्थापना वर्ष	मुख्यालय	अध्यक्ष	कार्य क्षेत्र
1.	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC)	28 दिसम्बर 1953	नई दिल्ली, क्षेत्रीय कार्यालय–हैदराबाद बंगलूरू, गुवाहाटी, कोलकाता, भोपाल और पुणे	प्रो. वेद प्रकाश	विश्वविद्यालय में शिक्षण, परीक्षा अनुसंधान एवं प्रसार, मानकों को बनाए रखना, विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों को अनुदान प्रदान करना, उच्चशिक्षा के विकास हेतु केन्द्र एवं राज्य सरकारों को परामर्श देना।
2.	अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् (AICTE)	1945	नई दिल्ली	प्रो. एस.एस. मंथा	इंजीनियरिंग एवं प्रौद्योगिकी आर्किटेक्चर एवं नगर नियोजन प्रबन्धन, फार्मेसी, अनुप्रयोगात्मक कला एवं क्राफ्ट, होटल मैनेजमेंट तथा कैटरिंग टैक्नोलॉजी में शिक्षण, प्रशिक्षण एवं अनुसंधान,
3.	राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE)	1995	नई दिल्ली	मुहम्मद अख्तर सिदि्दकी	महाविद्यालयों एवं विश्व विद्यालयों में शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रमों–बी.एड. व एम.एड. का विनियमन
4.	भारतीय चिकित्सा परिषद् (MCI)	1934	नई दिल्ली	डा. के. के. तलवार	M.B.B.S. तथा स्नातकोत्तर पाठयक्रमों में शिक्षण, प्रशिक्षण एवं अनुसंधान का विनियमन
5.	भारतीय नर्सिंग परिषद (NCI)	1947	नई दिल्ली	टी. दिलीप कुमार	B.Sc. नर्सिंग एवं M.Sc. नर्सिंग पाठ्यक्रमों का विनियमन
6.	भारतीय परिषद (BCI)	1961	नई दिल्ली	मनत कुमार मिश्रा	विधि शिक्षा एवं तत्सम्बन्धित अनुसंधान प्रणाली का विनियमन
7.	आर्किटेक्चर परिषद्	1972	नई दिल्ली	उदय सी. गडकरी	आर्कीटेक्ट में न्यूनतम मानकों का निर्धारण एवं शिक्षा की गुणवत्ता का विनियमन।

भारत में अनुसंधान परिषद्

क्रं.	अनुसंधान परिषद् का नाम	स्थापना वर्ष	मुख्यालय	अध्यक्ष
1.	भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद (ICHR)	1972	नई दिल्ली	प्रो. वासुदेव चटर्जी
2.	भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICSSR)	1969	नई दिल्ली	प्रो. सुखदेव थोराट
3.	भारतीय दर्शनशास्त्र अनुसंधान परिषद (ICPR)	1977	नई दिल्ली	प्रो. मृणाल गिरि
4.	भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (ICMR)	1949	नई दिल्ली	डॉ. वी.एम. कटोच महानिदेशक
5.	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR)	1929	नई दिल्ली	केन्द्रीय कृषि मंत्री पदेन अध्यक्ष डा. एस. अय्यप्पन महानिदेशक
6.	वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR)	1942	नई दिल्ली अध्यक्ष,	श्री नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री पदेन डा. समीर के. ब्रह्मचारी, महानिदेशक
7.	राष्ट्रीय ग्रामीण संस्थान परिषद (NCRI)	1995	हैदराबाद	डॉ. एस.बी. प्रभात
8.	भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान(IIAS)	1965	शिमला	गोपाल कृष्ण गांधी

Scanned by CamScanner

उच्च शिक्षा प्रणाली में स्वायत्तता : उच्चशिक्षा की संवृद्धि एवं विकास हेतु स्वायत्तता का मुद्दा अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। यह गुणवत्ता एवं जबावदेही की अपरिहार्य शर्त है। उच्चशिक्षा पर डा. राधाकृष्णन आयोग (1948), कोठारी आयोग (1964–66), राष्ट्रीय ज्ञान आयोग (2005) तथा यशपाल समिति (2009) ने विश्वविद्यालयों को स्वायत्तशासी निकाय बनाये जाने पर बल दिया है। उच्चतर शिक्षा अभियान में इस बात पर विशेष ध्यान दिये जाने का उल्लेख है कि राज्य स्तरीय संस्थानों को स्वायत्तता प्रदान की जाए। राज्य एवं इसके अन्तर्गत संचालित संस्थान समता पहुँच तथा श्रेष्ठता सुनिशिचित करते हुए स्वायत्तता के साथ कार्य करेंगे। स्वायत्तता का सिद्धान्त मुख्य रूप से इस बात पर बल देता है कि अकादमिक श्रेष्ठता प्राप्त करने के लिए उच्चतर शिक्षा संस्थानों को अपने तरीके से कार्य करने की स्वतंत्रता प्रदान की जाए तथा संस्थान अपना प्रशासन अपने स्वयं के नियमों एवं विनियमनों के अनुसार चलाएँ। विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता का रिसाव नीचे की ओर उनके विभिन्न विभागों में भी परिलक्षित होना चाहिए। वर्तमान में भारत के विश्वविद्यालय संसद/राज्यों के विधान मण्डलों द्वारा पारित अधिनियमों में उल्लिखित उद्देश्यों, कार्यो, प्रशासनिक संरचना, विभिन्न स्तर के अधिकारियों की शक्तियों व कार्यो के अनुसार संचालित हो रहे हैं, जिनमें एक ठहराव और कठोरता है। स्वायत्तता प्रदान करने के लिए इन अधिनियमों/परिनियमावलियों में बदलाव की आवश्यकता है। विश्वविद्यालय विद्यार्थियों के भविष्य और देश के भविष्य के प्रति जबावदेह है। इसी स्तर की जबाव देही सुनिश्चित करने के लिए उच्च शिक्षा संस्थानों को यथोचित प्रणाली विकसित करनी चाहिए।

स्वायत्तता के क्षेत्र निम्न होने चाहिए–

प्रवेश हेतु विद्यार्थियों का चयन, प्राध्यापकों की नियुक्ति एवं प्रोन्नयन, पाठ्यक्रमों का निर्धारण, अध्यापनकला, मूल्याँकन, अनुसंधान के क्षेत्र, संसाधनों का उपयोग।

सम्बद्धता सुधार : राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान के प्रावधानों के तहत राज्य सरकारों को अनिवार्यतः सम्बद्धता प्रणाली में सुधार लाना है तभी वे इस योजना के तहत निधियाँ पाने के लिए अर्ह होंगे। ये सुधार अग्रलिखित रूप में हों–

- किसी विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों की अधिकतम संख्या 100 हो। इसका सीधा सा अर्थ है कि महाविद्यालयों की वर्तमान संख्या के स्तर पर ही अनेक विश्वविद्यालयों की स्थापना करनी होगी।
- 25 वर्ष से अधिक संचालित सरकारी एवं अनुदानित महाविद्यालय, जो राष्ट्रीय मूल्यॉकन एवं प्रत्यायन परिषद से 'ए' ग्रेड प्राप्त कर चुके हों, को स्वायत्तशासी बनाए जाने पर विचार किया जा सकता है। 50 वर्ष या अधिक से संचालित ऐसे महाविद्यालयों को डिग्री प्रदान करने का भी अधिकार प्रदान किए जाने पर विचार किया जाना चाहिए।
- विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में प्रवेश क्षमता को बढ़ाकर दो गुना किया जाए।
- राज्य सरकार से वित्त पोषित सरकारी एवं अनुदानित महाविद्यालयों में रोजगारपरक पाठ्यक्रम संचालित किए जाएँ।

निष्कर्ष : राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान सैद्धान्तिक तौर पर भारतीय उच्चशिक्षा प्रणाली की विसंगतियों को दूर करके इसे घरेलू एवं विदेशी मानकों व आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने की दिशा में एक सशक्त प्रयास है लेकिन राज्य स्तर पर उच्चतर शिक्षा प्रणाली की कमजोर स्थिति अत्यधिक दोष पूर्ण परीक्षा प्रणाली, परीक्षाफलों का समय से न निकल पाना, अंक तालिकाओं में बड़े पैमाने की त्रुटियाँ, स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों का अति घटिया स्तर, स्ववित्त पोषित संस्थानों का लाभ "लाभ को अधिकतम करने" की भावना से काम करना, बड़े पैमाने पर प्राध्यापकों के रिक्त पद, कुलपतियों की नियुक्ति का राजनीतिकरण आदि कुछ ऐसे मुद्दे हैं जिनके बारे में राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान खामोश है। वस्तुतः यह यूजीसी की शक्तियों एवं अधिकार क्षेत्र को कम करने का प्रच्छन्न प्रयास है। ❑

हमारे शरीर का मंत्रीमण्डल

मस्तिष्क	–	प्रधानमन्त्री
फेफड़े	–	गृहमन्त्री
दिल	–	वित्तमन्त्री
त्वचा	–	रक्षामन्त्री
पैर	–	यातायात मन्त्री (परिवहन मन्त्री)
पेट	–	खाद्य आपूर्ति मंत्री
आँखें	–	न्याय प्रमुख
नाक	–	स्वास्थ्य मन्त्री

शालिनी
बी.कॉम. द्वितीय

Scanned by CamScanner

किसी भी लड़की की सुन्दरता उसके चेहरे से ज्यादा दिल से होती है।

लक्ष्मी अग्रवाल
बी.टी.सी.

अशोक भाई ने घर में पैर रखा 'अजी सुनती हो!' आवाज सुनते ही अशोक भाई की पत्नी हाथ में पानी का गिलास लेकर बाहर आयीं और बोलीं "अपनी बेटी का रिश्ता आया है, अच्छा भला इज्जतदार सुखी परिवार है, लड़के का नाम युवराज है, बैंक में काम करता है, बस बेटी हाँ कर दे तो सगाई कर देते हैं।"

बेटी उनकी एकमात्र संतान थी। घर में हमेशा आनन्द का वातावरण रहता था। कभी कभार अशोक भाई की सिगरेट व पान मसाले की आदत के कारण उनकी पत्नी व बेटी के साथ कहा–सुनी हो जाती, लेकिन अशोक भाई उसे मजाक मानकर का टाल देते थे।

बेटी खूब समझदार और संस्कारी थी। एस.एस.सी. पास करके ट्यूशन तथा सिलाई का काम करके पिता की मदद करने की कोशिश करती थी।

अब तो बेटी ग्रेजुएट हो गई थी और नौकरी भी करती थी, लेकिन अशोक भाई उसके वेतन में से एक रुपया भी नहीं लेते थे, और रोज कहते 'बेटी यह वेतन अपने पास रख, भविष्य में तेरे काम आयेगा। दोनों घरों की सहमति से बेटी और युवराज की सगाई कर दी गई और शादी का मूहर्त भी निकलवा दिया।

अब शादी के 15 दिन बाकी थे।

अशोक भाई ने बेटी को पास में बिठाया और कहा, "बेटी तेरे ससुर से मेरी बात हुई. उन्होंने कहा है कि दहेज में कुछ नहीं लेंगे, ना रुपये, ना गहने, और न ही कोई चीज। तो बता तेरी शादी के लिए मैंने कुछ रुपये जमा किए हैं।

यह दो लाख रुपये मैं तुझे देता हूँ। तेरे भविष्य में काम आयेंगे, तू अपने खाते में जमा करवा देना,"

ठीक है" बेटी छोटा सा जवाब देकर अपने कमरे में चली गई।

समय को जाते कहाँ देर लगती है? शुभ दिन बारात आँगन में आयी, पंडित जी ने चवरी में विवाह विधि शुरू की। फेरे फिरने का समय आया............

कोयल जैसे कुहुकी हो, ऐसे बेटी दो शब्दों में बोली–

"रुको पण्डित जी।

मुझे आप सबकी उपस्थिति में अपने पापा से बात करनी है।

"पापा आपने मुझे लाड़ प्यार से बड़ा किया, पढ़ाया, लिखाया खूब प्रेम दिया इसका कर्ज तो चुका सकती नहीं.....

लेकिन युवराज और मेरे ससुरजी की सहमति से आपका दिया दो लाख रूपये का चैक मैं वापस देती हूँ।

इन रुपयों से मेरी शादी हेतु लिए हुए उधार वापस दे देना और दूसरा चैक तीन लाख का जो मैंने अपने वेतन में से बचत की है......

जब आप रिटायर होंगे तब आपके काम आयेंगे, मैं नहीं चाहती कि आपको बुढ़ापे में किसी के आगे हाथ फैलाना पड़े।

अगर मैं आपका लड़का होता, तब भी इतना तो करता ना?

वहाँ पर सभी की नजर बेटी पर थी। "पापा अब मैं आपसे जो दहेज में मांगू वो दोगे?

अशोक भाई भारी आवाज में.......... "हाँ बेटी", इतना ही बोल सके।

"तो पापा मुझे वचन दो" आज के बाद सिगरेट को हाथ नहीं लगाओगे। तम्बाकू, पान–मसाले का व्यसन आज से छोड़ दोगे सबकी मौजूदगी में दहेज में बस इतना ही माँगती हूँ।

लड़की का बाप मना कैसे करता?

शादी में लड़की की विदाई के समय कन्या पक्ष को रोते देखा होगा लेकिन आज तो बारातियों की आँखों से आँसुओं की धारा निकल चुकी थी।

मैं दूर से उस बेटी को लक्ष्मी रूप में देख रही थी। उपहार के रुपयों का लिफाफा मैं अपनी जेब से नहीं निकाल पा रही थी। साक्षात, लक्ष्मी को मैं कैसे लक्ष्मी दूँ?

लेकिन एक सवाल मेरे मन में जरूर उठा, "भ्रूण हत्या करने वाले लोगों को इस जैसी लक्ष्मी मिलेगी क्या"?

कृपया रोईए नहीं, आँसू पौंछिए और प्रेरणा लीजिये। ❑

Scanned by CamScanner

प्रजातन्त्र मात्र चुनाव तन्त्र नहीं

रजनी शर्मा
बी.टी.सी.

प्रजातन्त्र में हर वयस्क नागरिक को अपना राजनीतिक भविष्य चुनने का अधिकार होता है। लेकिन भारत में पारिवारिक प्रेम की परम्पराएं प्रजातन्त्र के मताधिकार का मखौल भी उड़ाती मिल जाती हैं। पारिवारिक सौमनस्य की फजीहत तो है ही, चुनाव में जीत होनी चाहिए। लठैतों के बोल बाले से विरोधी के वोट न डलने पाएँ और अब लाठी बहुत पीछे रह गयी, तमंचे और बंदूकें भी नहीं। कार्यवाहियों का दबदबा बूथ कैप्चरिंग कराता है। हिस्ट्रीशीटर जब हमारी चुनाव प्रक्रिया को धता बताकर हमारे भाग्य विधाता बनने आ जाते हैं तो देश का भविष्य आसानी से आँका जा सकता है। पिछली बार हर पार्टी के उम्मीदवारों में हिस्ट्रीशीटर थे। कुछ जीतकर आए, मन्त्री भी बने। आगे देखें क्या होता है?

उत्तर साफ है– होना–जाना क्या है? जैसा कल था वैसा ही आज होगा, देखें, आने वाला कल हमारे लिए क्या लाता है।

उक्त कथन प्रतिष्ठित साप्ताहिक दिनमान के यशस्वी सम्पादक श्री कन्हैया लाल नंदन के एक लेख से उद्धृत है।

विचारणीय है कि हमारी चुनाव प्रक्रिया ने प्रायः आतंकवाद का रूप क्यों कर धारण कर लिया है। चुनाव आयोग द्वारा पारित आदेश भी यही घोषित करते हैं कि उसका कर्तव्य शांतिपूर्ण चुनाव कराने तक ही सीमित हो गया है। उसके सामने सदैव दो प्रश्न झूलते रहते हैं– राजनीतिक दल अपने पक्ष में अवैध मतदान हेतु कौन–कौन सी रणनीतियाँ बना रहे हैं तथा कौन–कौन से हथकण्डे अपना रहे हैं। चुनाव आयोग अन्य कार्य भी करता है, अनेक उपयोगी निर्णय भी लेता है। परन्तु आतंकवादी कार्यवाहियों एवं आक्रान्तवादी आक्रमणों के प्रति वह सदैव चिन्तित रहता है। वह बुद्धिजीवी संस्था की अपेक्षा पुलिस एवं सी.आई.डी. अफसरों की संस्था का रूप धारण करता जा रहा है। हम चाहते हैं कि बुद्धिजीवी आगे बढ़कर चुनावों में भाग लें और देश का शासन चलाने में सक्रिय भूमिका का निर्वाह करें। वे ऐसा किसके बलबूते पर करें? जब चुनाव आयोग ही सदैव मानसिक खिंचाव और दवाब में कार्य करता रहता है, तब चुनावों में वे ही व्यक्ति भाग ले सकते हैं जो मानसिक तनाव और दवाव के अभ्यस्त हैं अथवा जिनके लिए मस्तिष्क से सम्बन्धित कोई भी जानकारी अथवा प्रक्रिया अपना अर्थ खो चुकी हैं, जिनकी बुद्धि कुंठित है और कुण्ठाओं एवं कोमल भावनाओं के साथ सदा सर्वदा के लिए जिनका संबंध विच्छेद हो चुका है और प्रस्तुत चुनावों में भाग लेने के लिए धन–बल और जनबल अपेक्षित है। बुद्धिजीवियों के पास कुछ भी नहीं है। यह स्थिति भयावह है। इसके प्रति हमारे कर्णधार जागरूक हैं। वे इन अभिशप्त विषमताओं पर अंकुश लगाने की बातें भी करते हैं, पता नहीं कौन से तत्व उन्हें सशंकित या बाधित कर देते हैं तथा स्थिति बद से बदतर होती जा रही है।

हम बड़े गर्व से कहते हैं कि भारत का जनतन्त्र विश्व का सबसे बढ़ा जनतन्त्र है। विरोधी दल सत्ता दल के कार्यों को लक्ष्य करके जनतन्त्र की हत्या की दुहाई देते हैं और फिर भी यह मानकर चलते हैं कि हमारे देश में जनतन्त्र जीवित है।

हम भारत में जनतन्त्र को सफल बताते हैं। उसकी जड़ें गहरी जमने की कल्पना करके खुश भी हो लेते हैं और जनता के बुद्धि–विवेक की सराहना करते हैं– यह कहकर कि वह आवश्यकतानुसार क्रान्तिकारी निर्णय लेती है। ऐसे निर्णय उस जनता ने लिए जो व्यक्ति को नहीं, वरन् चुनाव चिन्ह पर मोहर लगाकर मतदान करती है, जिसको यही ज्ञान नहीं है कि किसके पक्ष में मतदान करके आयी है, उसमें प्रशंसनीय बुद्धि, विवेक की कल्पना करना सहज साहस का कार्य नहीं है। यह स्थिति बुद्धिजीवी के लिए तो उत्साहवर्धक नहीं हो सकती। प्रश्न उत्पन्न होता है कि भारतीय मतदाताओं ने ऐसे कौन से निर्णय लिए हैं जिन पर हम गर्व कर सकते हैं और उनके परिप्रेक्ष्य में हम भारत के जनतंत्र को सुरक्षित महसूस करते हैं। हमारे विचार से पिछले 60 वर्ष में उसने ऐसा चमत्कार केवल एक बार दिखाया है आपातकालीन स्थिति हटने के बाद इंदिरा गाँधी को आगामी चुनाव में पराजित करके।

भारतीय चुनाव प्रक्रिया ने भारत की जनता को दो अभिशाप प्रदान किए हैं– अवांछित व्यक्तियों को शासन सत्ता प्राप्त है। दूसरा अभिशाप है– समाज को खंडित करना तथा पारिवारिक सम्बन्धों को विषाक्त एवं विश्रंखलित कर देना।

प्रजातन्त्र मात्र एक शासन पद्धति न होकर जीवन की एक महत्वपूर्ण पद्धति है, जिसकी अनुभूति समानता, समरसता, विरोधी के प्रति सहिष्णुता की त्रिवेणी में स्नान करके उपलब्ध की जाती है।

Scanned by CamScanner

प्रजातन्त्र के जन्मस्थान के निवासी विद्वान थियोडर पार्कर का कथन है :

Democracy Means not "I am as good as you are", but you are as good as I am. अर्थात् लोकतन्त्र का यह अर्थ नहीं है कि "मैं उतना ही अच्छा हूँ जितने तुम", बल्कि यह अर्थ होता है, "तुम उतने ही अच्छे हो, जितना अच्छा मैं हूँ"।

भारत में लोकतन्त्र के प्रवर्तक पं. जवाहरलाल नेहरू का कथन था कि "जनतन्त्र/लोकतन्त्र की माँग है– अनुशासन, सहिष्णुता, पारस्परिक सद्भाव"।

हमारे युवा वर्ग को अगले चुनावों में सक्रिय भागीदार बनना होगा और देश के संचालन सूत्र का अधिकारी बनना होगा। उनका यह कर्तव्य है कि वे भारत के जनतन्त्र की आवश्यकताओं को समझें और उसी दृष्टि से अपने को प्रशिक्षित और अनुशासित करने का अभ्यास करें। आपको स्मरण रखना होगा :

"Democracy without Education is hypocracy without limitations."

"शिक्षा रहित लोकतन्त्र सीमा रहित धूर्तता है"।

हमें जनतन्त्र को आशीर्वाद के रूप में ग्रहण करना चाहिए। हम भ्रमवश मात्र चुनाव को प्रजातन्त्र का पर्याय मान बैठे हैं। वह हमारे ऊपर निर्भर है कि हम प्रजातन्त्र का परिणाम बनें अथवा अज्ञान की दुःखद त्रासदी। हमने प्रजातन्त्र के सम्बन्ध में इन बातों की ओर ध्यान नहीं दिया और जनतन्त्र की आदिम व्याख्या को हृदयंगम कर लिया है–

❑

"आलस्य का रोग"

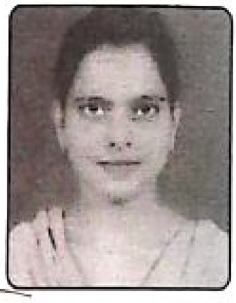

अन्शु गुप्ता
बी.टी.सी.

आलस्य का रोग जिस किसी को भी जीवन में पकड़ लेता है, तो फिर वह सँभल नहीं पाता। आलस्य से शरीर और मन, दोनों कमजोर पड़ जाते हैं। आलसी व्यक्ति जीवनभर लक्ष्य से भटकता रहता है। कहा भी गया है कि आलसी को विद्या कहाँ, बिना विद्या वाले को धन कहाँ, बिना धन वाले को मित्र कहाँ और बिना मित्र के सुख कहाँ?

कई बार व्यक्ति कुछ करने में समर्थ होता है, फिर भी उस कार्य को टालने लगता है और धीरे–धीरे कई अवसर हाथ से निकल जाते हैं। तब पश्चाताप के अलावा और कुछ नहीं बचता। 'आज नहीं कल' आलसी व्यक्तियों का जीवन सूत्र होता है। शायद आलसी व्यक्ति यह नहीं सोचता कि जंग लगकर नष्ट होने की अपेक्षा श्रम करके, मेहनत करके घिस–घिस कर खत्म होना कहीं ज्यादा अच्छा होता है। वेद का उद्घोष है कि उठो, जागो और जो इस जीवन में प्राप्त करने आए हो, उसके लक्ष्य के लिए जुट जाओ। जो जगकर उठता नहीं है, वह भी आलसी है। जो अविचल भाव से लक्ष्य के प्रति समर्पित होकर कार्य सिद्धि तक जुटा रहता है, वही व्यक्ति सही मायने में जाग्रत कहलाएगा। आलसी वही नहीं है, जो काम नहीं करता बल्कि वह भी है जो अपनी क्षमता से कम काम करता है। क्षमता से कम काम करने से हमारी शक्ति क्षीण होती जाती है और हम अपनी असीमित ऊर्जा को सीमा में बाँधकर उसका सही प्रयोग नहीं कर पाते। आलसी व्यक्ति को दरिद्रता भी जल्दी ही आ जाती है। आलसी व्यक्ति उत्साही नहीं होने के कारण जीवन में अक्सर असफलता का सामना करते हैं। सफल होने के लिए जरूरी है कि–

हम आलस्य का त्याग करें और अपनी पूरी क्षमता से काम करें। ❑

Scanned by CamScanner

21वीं सहस्त्राब्दी में भारतीय नारी की स्थिति

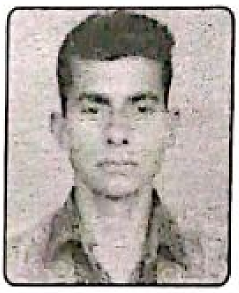

ओमवीर सिंह देशमुख
बी. एड

गाँव की एक लड़की हाथों में किताब लिए पढ़ने के लिए जा रही है। उसे अपने घर से करीब तीन किलोमीटर पैदल चलकर शहर जाना है और उस शहर से दूसरे शहर जाने के लिए बस पकड़नी है, जहाँ उसका कॉलेज है। जब वह घर से चली है, बेहद चौकन्नी है, चारों तरफ नजर गड़ाए हुए है कि कहीं कोई दरिंदा दोनों ओर खड़ी हुई फसल के बीच से निकलकर उस पर हमला न कर दे। तो यह है नई सहस्त्राब्दी में पदार्पण करने वाली भारतीय महिला की एक तस्वीर।

हम बड़ी–बड़ी बातें करते हैं कि हमने महिलाओं के लिए यह किया, वह किया, आज की नारी को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त हैं और वह पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं, परन्तु ये सभी कागजी बोल हैं। असल में स्थिति कुछ और ही है। हालात ये हैं कि कुछ क्षेत्रों में महिलाओं की बुनियादी जरूरतें भी पूरी नहीं हो रही हैं। आज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर देखा जाए तो विश्व में सबसे अधिक महिलाओं के साथ घटनायें भारत में ही होती हैं दिनों–दिन महिलाओं पर अत्याचार बढ़ रहे हैं, हत्या, लूटपाट, छेडखानी, रेप, गेंगरेप एवं दहेज हत्या आदि की शिकार महिलायें हो रही हैं।

हमारी संस्कृति के अनुसार लड़की को पराया धन समझा जाता है, लड़की की अपेक्षा लडके को ज्यादा महत्व दिया जाता है। घर वालों की सोच होती है कि लडके को इंजीनियरिंग करायेगे तथा लड़की को ग्रेजुएशन। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि लड़की एक बोझ है, लड़की एक परायी अमानत है तो उसे और ज्यादा सहेज कर रखा जाना चाहिए। इसका उल्टा व्यवहार उसके साथ किया जाता है।

आज भी हमारी आँखों के सामने प्राचीन नारी की छवि उभरती है तो हमारा शीश उसके प्रति नतमस्तक हो जाता है। द्रोपदी, सीता, अहिल्या, मीरा, सावित्री, अनुसूया, गार्गी, लीलावती, आदि अनेक नारियाँ रहीं, जिन्होंने अपने परिवार तथा समाज के साथ–साथ हमारे देश को भी गौरवान्वित किया है। आचार्य मण्डन मिश्रा की पत्नी ने जगदगुरू शंकराचार्य से शास्त्रार्थ करके स्त्रियों के गौरव को बढ़ाया। विद्यालयी शिक्षा से वंचित रहने पर भी भारतीय नारी ने पुरूष समाज को सुसंस्कारित करने का बीड़ा उठाया। शिवाजी को महान बनाने वाली उनकी माता जीजाबाई थी। तुलसीदास को राम बोला बनाने वाली उनकी अर्द्धांगिनी रत्नावली थी। सैंकड़ों वर्षो के युद्धों में अपने धर्म और संस्कृति को बचाये रखने वाली भारत की नारियाँ ही थीं।

आज हम भले ही 21वीं सदी में प्रवेश कर गये हैं, परन्तु इस 21वीं सदी तक भारतीय नारी ने क्या पाया, क्या खोया है, इसका अन्दाजा उसे आज तक नहीं हैं। इस सदी के पहुँचते–पहुँचते उसका जो रूप उभरकर सामने आया हैं, इसका सारांश यही है कि कठिन परिस्थितियों को सहते हुए भी अपने को एक दया, ममता मधुरिमा, स्वच्छता, समर्पण, त्याग.............................. ।

मानव अधिकार के अनुच्छेद 16 में स्त्री को अपना जीवन साथी चुनने की स्वतंत्रता का पूर्ण अधिकार प्राप्त है। इस अधिकार की दुर्दशा जितनी भारत में देखी जा सकती है, उतनी अन्य किसी देश में नहीं। क्या समाज कभी सभी लड़कियों को अपना जीवन साथी चुनने का अधिकार प्रदान करेगा? अभी हमारा समाज अन्तर्जातीय एवं अन्तर धार्मिक विवाह को मान्यता नहीं देता। यदि एक जाति वर्ग की लड़की अपने से छोटी जाति के लड़के से शादी करती है तो या तो उसे आत्महत्या करने के लिए मजबूर कर दिया जाता है या उसके घरवालों द्वारा आँनर किलिंग का रूप देकर उसे मार दिया जाता है। भारत को आजाद हुए 68 वर्ष हो गये लेकिन आज भी नारी की स्थिति दयनीय है तो फिर हम कैसे कहे कि आज नारी की स्थिति अच्छी है। कुछ जगह आज भी महिलाओं पर अत्याचार किये जाते हैं। तो फिर कैसे कहें कि नारी के अधिकार सार्थक हुए।

आज की नारी पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने की होड में इंजीनियरिंग, वाणिज्य, सेना, पायलट, पुलिस, शिक्षा आदि सेवाओं में जा रही है, आज के इस समानता सार्थक युग में इस दौड को उचित कहा जा रहा हैं। स्त्री के लिए वैसी शिक्षा और नौकरी चाहिए, जिससे उसका स्त्रियोचित स्वभाव कायम रहे। फिर भी यदि नारी समाज का अल्पांश कानून तथा पुलिस जैसे क्षेत्रों में जाना चाहे तो उसे पुरुषवत अधिकार दिये जाने चाहिए क्योंकि रानी लक्ष्मीबाई, इन्दिरा गाँधी, सरोजनी नायडू तथा किरण बेदी आदि प्रतिभाओं ने कठोर क्षेत्रों में जाकर समाज को क्रान्तिकारी दिशा प्रदान करने में सफलता प्राप्त की है।

Scanned by CamScanner

नारी को महत्वपूर्ण अधिकार तभी प्राप्त हो सकते हैं, जब सभी पुरुष नारी को अपने समान अधिकार प्रदान करें।

हमें स्वयं भी कमजोर होने की झूठी मानसिकता त्याग कर अपने को सभी तरह से आत्म निर्भर बनाना पड़ेगा, तभी नारी अधिकारों की सार्थकता सिद्ध होगी। सभी नारियों के प्रति अच्छा व्यवहार करें, हम तभी जय शंकर प्रसाद जी की उक्तियों को सार्थक कर पायेंगे।

'नारी तुम केवल श्रृद्धा हो, विश्वास रजत नगपग तल में।
पीपूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।।'

अंधी माँ का बेटा

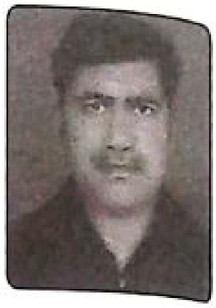

रजनेश कुमार
बी.टी.सी.

एक औरत थी, जो अंधी थी, जिसके कारण उसके बेटे को स्कूल में बच्चे चिड़ाते थे कि अंधी का बेटा आ गया। हर बात पर उसे यह शब्द सुनने को मिलता था कि ''अंधी का बेटा आ गया'' इसलिए वह अपनी माँ से चिड़ता था। उसे कहीं भी अपने साथ ले जाने में हिचकता था और उसे नापसन्द करता था। उसकी माँ ने उसे पढ़ाया और इस लायक बना दिया कि वह अपने पैरों पर खड़ा हो सके।

लेकिन जब वह बड़ा आदमी बन गया, तो अपनी माँ को छोड़ अलग रहने लगा। एक दिन एक बूढ़ी औरत उसके घर आई और गार्ड से बोली, ''मुझे तुम्हारे साहब से मिलना है।''

जब गार्ड ने अपने मालिक से कहा तो मालिक ने कहा कि कह दो कि साहब अभी घर पर नहीं हैं।

गार्ड ने जब बुढ़िया से बोला कि साहब घर पर नहीं हैं, तो बुढ़िया वहाँ से चली गयी। थोड़ी देर बाद साहब अपनी कार से ऑफिस जा रहा था, तो उसने देखा कि रास्ते में भीड़ लगी हुई है, उसने जाकर देखा कि वहाँ भीड़ क्यों लगी है?

वहाँ जाकर देखा तो वहाँ उसकी माँ मरी पड़ी थी और उसने देखा कि उसके हाथ में कुछ है। उसने जब मुठ्ठी खोली, तो देखा कि एक पत्र है जिसमें यह लिखा था कि बेटा जब तू छोटा था तो खेलते वक्त तेरी आँख में सरिया धँस गयी थी, और तू अन्धा हो गया था, तो मैंने तुम्हें अपनी आँखें दे दी थीं। इतना पढ़कर लड़का जोर–जोर से रोने लगा।

उसकी माँ उसके पास नहीं आ सकती थी, दोस्तो वक्त रहते ही लोगों का मान करना सीखो।

माँ–बाप का कर्ज हम कभी नहीं चुका सकते।

1. ''हमारी प्यास का अंदाज भी अलग है दोस्तो, कभी समंदर को ठुकरा देते हैं, तो कभी आँसू तक पी जाते हैं।''
2. ''बैठना भाईयों के बीच, चाहे बैर क्यों ना हो।
   खाना माँ के हाथों का, चाहे जहर क्यों न हो।।''

Scanned by CamScanner

राष्ट्र भाषा हिन्दी

चन्द्रवीर सिंह
बी.टी.सी.

किसी भी स्वतन्त्र राष्ट्र के लिए तीन वस्तुएँ अनिवार्य होती हैं– (1) राष्ट्रध्वज (2) राष्ट्रगान (3) राष्ट्रभाषा।

हमारे पास राष्ट्रध्वज एवं राष्ट्रगान तो है, किन्तु राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को उसका उचित स्थान अब तक न मिल पाना बड़े दुर्भाग्य की बात है। किसी भी स्वतन्त्र राष्ट्र के लिए राष्ट्रभाषा का प्रश्न मूलभूत महत्व का होता है, क्योंकि राष्ट्रभाषा समस्त राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोने वाली, उसकी सांस्कृतिक धरोहर को सहेजने वाली एवं उसे उसके प्राचीन गौरव का स्मरण दिलाकर उसमें अस्मिता का बोध जगाने वाली संजीवनी है, जिसके बिना राष्ट्र प्रायः मृतक समान हो जाता है। भारतेन्दु जी ने ठीक ही लिखा है–

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कौ मूल।
विनु निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय कौ सूल।।

राष्ट्रभाषा के द्वारा ही व्यक्ति अपनी तथा राष्ट्र की उन्नति कर सकता है और हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी है, जिसका ऋण प्रत्येक भारतीय पर है, जिनमें से आचार्य विनोवा भावे अपने आपको हिन्दी का ऋणी मानते थे। वे कहते थे "यदि मैंने हिन्दी का सहारा न लिया होता तो कश्मीर, असम या केरल आदि के गाँवों में जाकर मैं क्रान्तिपूर्ण सन्देश जनता तक न पहुँचा सकता था। यदि मैं मराठी का सहारा लेता तो केवल महाराष्ट्र तक सीमित रहता। यदि मैं अंग्रेजी का सहारा लेता तो कुछ ही प्रान्तों में कुछ विशिष्ट व्यक्तियों तक सीमित रहता। लेकिन हिन्दी भाषा के द्वारा मैंने पूरे देश में घूम–घूमकर अपने सन्देशों को लोगों तक पहुँचाया। इसीलिए मैं कहता हूँ कि हिन्दी का प्रत्येक भारतीय पर उपकार है।"

उनकी यह मान्यता थी कि राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास से क्षेत्रीय भाषाओं का विकास अवरुद्ध नहीं होगा। उनका मन्तव्य चिरस्मणीय है– कि प्रत्येक प्रान्तीय भाषा का अपना–अपना स्थान है। उन्होंने कहा जिस प्रकार मनुष्य को देखने के लिये दो आँखों की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार राष्ट्र के लिए भी दो भाषाओं की आवश्यकता होती है– एक प्रान्तीय भाषा और दूसरी राष्ट्रभाषा का ज्ञान अनिवार्य है। जिस प्रकार भगवान शंकर का तीसरा नेत्र ज्ञानरूपी नेत्र माना जाता है। यदि व्यक्ति के लिए भी तीसरे नेत्र की आवश्यकता पड़े तो संस्कृत भाषा का ज्ञान लाभकारी सिद्ध होगा और उस समय अंग्रेजी भाषा चश्मे के रूप में काम आयेगी। चश्मे की जरूरत सबको नहीं पड़ती और हर समय भी नहीं पड़ती, केवल कुछ लोगों को ही पड़ती है। बस इतना ही अंग्रेजी का स्थान है, इससे अधिक नहीं।

हिन्दी की महानता का वर्णन करते हुये कवि ने कहा है–

भारत माँ के दिव्य भाल पर, रही सुशोभित जो है बिन्दी।
वही राष्ट्रभाषा है अपनी, राष्ट्र अस्मिता है यह हिन्दी,
स्वतन्त्रता के महासमर की, हिन्दी रही महाप्रेरक
बनी यही हिन्दी भाषा है, अमर शहीदों की उत्प्रेरक,

इस सन्दर्भ में तुर्की देश के स्वतन्त्रता सेनानी व राष्ट्राध्यक्ष अतातुर्क कमालपाशा का उल्लेख अप्रासंगिक न होगा। तुर्की जब अरबों के आधिपत्य से मुक्त होकर स्वतन्त्र हुआ तो उस समय उसकी राजभाषा अरबी थी। कमालपाशा मन ही मन में तुर्की को राजभाषा तथा शिक्षा का माध्यम बनाने का निर्णय कर चुके थे। उन्होंने राजभाषा व शिक्षा के माध्यम की समस्याओं के समाधान के लिए शिक्षाशास्त्रियों एवं उच्च पदाधिकारियों की एक अत्यन्त आवश्यक बैठक का आयोजन किया और आमन्त्रित लोगों से उक्त सन्दर्भ में लम्बा विचार–विमर्श करते हुये उनसे प्रश्न किया "अब स्वतन्त्र देश की तुर्की भाषा को सम्पूर्ण राष्ट्र की राष्ट्रभाषा बनाने में कितना समय लगेगा?" इस प्रश्न पर काफी समय तक विचार–विमर्श करने के पश्चात् उन्होंने उत्तर दिया कि कम से कम दस वर्ष का समय लगेगा। यह सुनकर अतातुर्क कमालपाशा ने ये ऐतिहासिक शब्द कहे थे कि "आप सभी समझ लीजिए वह दस वर्ष का समय कल समाप्त हो रहा है। कल से तुर्की अपने स्वतन्त्र देश की राष्ट्रभाषा होगी।" यह कहकर सभा को विसर्जित कर दिया।

ऐसे ही कमालपाशा जैसे नेताओं की जरूरत है हमारे देश के लिए, जिसने एक ही दिन में अपने देश की तुर्की भाषा को राष्ट्रभाषा का स्थान दिलाया।

लेकिन आज तक हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी को उसका स्थान प्राप्त नहीं हुआ है, उसके स्थान पर अंग्रेजी भाषा आसीन है तथा उसके अधिकारों का उपभोग कर रही है।

विभिन्न भाषाओं का अध्ययन करना कोई बुरी बात नहीं है लेकिन सभी भाषाओं में अपनी राष्ट्रभाषा को सर्वोपरि मानना

Scanned by CamScanner

चाहिए। हिन्दी के महान कवि मैथली शरण गुप्त कहते हैं –

मेरा किसी भाषा विशेष से विरोध नहीं,
चाहे विश्व की सारी भाषायें पढ़ जाइये।
लेकिन निज हृदय आसन पर,
केवल हिन्दी को बिठाइये।।
इतनी प्यारी–प्यारी लगती है अंग्रेजी तो,
क्यों भगाया अंग्रेजों को ये तो बताइये।
भाषा ने ही देश की गुलामी कर दी,
हिन्द को बचाना है तो हिन्दी को बचाइये।।

हिन्दी भाषा का किसी भाषा से कम महत्व नहीं है। इसके इतिहास को देखें तो इस पर हमें गर्व होता है। यह हिन्दी कैसी भाषा है, इसके गुणों का वर्णन करते हुये किसी कवि ने कहा था–

हिन्दी है वैज्ञानिक भाषा, हिन्दी ज्योतिर्मय आलोक।
निविड़ तिमिर का क्षत करती है, प्रभा प्राप्त करता भूलोक।।
ऐसी हिन्दी भाषा की क्यों, होती है घनघोर उपेक्षा।
आओ लें संकल्प सभी हम, प्राणों से भी करें सुरक्षा।।

कन्या भ्रूण हत्या

मनोज कुमार गुप्ता
बी.ए. तृतीय वर्ष

एक औरत गर्भ से थी। पति को जब पता लगा कि कोख में बेटी है तो वो उसका गर्भपात करवाना चाहता है। दुःखी होकर पत्नी अपने पति से क्या कहती है,

न मारो इस नन्हीं कली को, वो खूब सारा प्यार हम पर लुटायेगी।
जितने भी टूटे हैं सपने, फिर से वो सब सजाएगी......... ।।
न मारो नन्हीं कली को, जब जब घर आओगे तुम्हें खूब हंसाएगी।
तुम प्यार न करना वेशक उसको, वो अपना प्यार लुटाएगी...... ।।
न मारो नन्हीं कली को, हर काम की चिंता एक पल में भगाएगी।
किस्मत को दोष न दो, वो अपना घर आँगन महकाएगी.......... ।।
ये सब सुन पति अपनी पत्नी से कहता है, सुनो।
मैं भी नहीं चाहता मारना, इस नन्हीं कली को,
तुम क्या जानो, प्यार नहीं है क्या मझको अपनी परी से।
पर डरता हूँ समाज में हो रही रोज–रोज की दरिंदगी से।।
क्या फिर खुद वो इन सबसे, अपनी लाज बचा पाएगी।
क्यों न मारूँ मैं इस कली को, वो बाहर नोंची जाएगी।।
मै प्यार इसे खूब दूँगा, पर बाहर किस–किससे बचाऊँगा।
जब उठेंगी हर तरफ से नजरें, तो रोक खुद को न पाऊँगा।।
क्या तुम अपनी नन्हीं परी को, इस दौर में लाना चाहोगी।
जब तड़पेगी वो नजरों के आगे, क्या वो सब सह पाओगी।।
क्यों न मारूं मैं अपनी नन्हीं परी को?
क्या बीती होगी उन पर, जिन्हें मिला है ऐसा नजराना।
क्या तुम भी अपनी परी को ऐसी मौत चाहोगी दिलाना ।।

ये सुनकर गर्भ से आवाज आती है–

सुनो माँ–पापा मैं आपकी बेटी हूँ, मेरी भी सुनो–

पापा सुनो न, साथ देना आप मेरा, मजबूत बनाना मेरे हौंसले को, घर लक्ष्मी है आपकी बेटी, वक्त पड़ने पर मैं काली भी बन जाऊँगी, पापा सुनो, न मारो अपनी नन्हीं कली को, उड़ान देना मेरे हर बजूद को, मैं भी कल्पना चावला की तरह ऊँची उड़ान भर जाऊँगी.........

पापा सुनो, न मारो अपनी नन्हीं कली को, आप बन जाना मेरी छत्रछाया, मैं झाँसी की रानी की तरह खुद की गैरों से लाज बचाऊँगी.........

पति (पिता) ये सुनकर मौन हो गया और वह अपने फैसले पर शर्मिंदगी महसूस करने लगा और अपनी बेटी से कहता है:–

मैं अब कैसे तुझसे नजरे मिलाऊँगा ।
चल पड़ा था तेरा गला दबाने,
अब कैसे खुद को तेरे सामने लाऊँगा।।
मुझे माफ करना ऐ मेरी बेटी,
तुझे इस दुनिया में सम्मान से लाऊँगा।
वहशी है ये दुनिया तो क्या हुआ,
तुझे बहादुर बिटिया बनाऊँगा।।
मेरी इस गलती की मुझे है शर्म,
घर–घर जाके सबका भ्रम मिटाऊँगा।
बेटियाँ बोझ नहीं होतीं,
अब सारे समाज में अलख जगाऊँगा।।

Scanned by CamScanner

गुरु शिष्य का अटूट सम्बन्ध

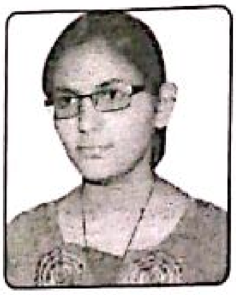

महिमा शर्मा
बी. एस.-सी. (प्रथम वर्ष)

एक बार की बात है, विद्यालय में एक लड़की पढ़ती थी। वह कक्षा छः में अध्ययन करती थी। वह पढ़ने में बहुत कमजोर व किसी से कोई भी बात कहने में हिचकिचाती थी। उसके अन्दर हुनर और पढ़ने की जिज्ञासा तो थी पर उसको कैसे व्यक्त करना है, उसे यह समझ नहीं थी। ऐसे ही करते–करते तीन साल वीत गए। तब वह कक्षा 9 में आई और लड़की ने घर वालों के जोर डालने पर विज्ञान वर्ग में पढ़ाई करना आरम्भ कर दिया। लेकिन विद्यालय में आई एक नई अध्यापिका के कहने पर उसने प्रायोगिक विषय संगीत को चुना जो कि उसे पता भी नहीं था कि संगीत में होता क्या है। उसने पहले दिन संगीत की कक्षा में प्रवेश किया और डरते हुए अध्यापिका से कहा 'मैडम नमस्ते' तभी उन अध्यापिका ने उस लड़की से असका नाम पूछा और उसकी ओर ज्यादा ध्यान देने लगी। उनके साथ रहते–रहते उस लड़की की सारी झिझक खुल गई और ऐसे ही वह संगीत और उन अध्यापिका को अच्छी तरह से जान गयी।

ऐसे ही पूरा एक साल बीत गया और जब कक्षा 9 का परिणाम आया तो पता चला कि उस लड़की के पूरे विद्यालय में सबसे अधिक अंक हैं। उसको यह सुनकर हौसला मिला और वह एक राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रम में गीत गाने गई अर्थात् उसने अपनी कला का प्रचार किया, इससे वह अपने विद्यालय, पूरे शहर व पूरे देश में जानी जाने लगी। लेकिन उसके बाद भी उसने अपनी अध्यापिका का साथ नहीं छोड़ा। वह उनके आशीर्वाद के बिना कोई कार्य नहीं करती थी।

आज भी उन गुरू शिष्य का उतना ही अटूट सम्बन्ध है, जितना पहले था। अगर आज के गुरु शिष्य भी ऐसे हों तो उनके बीच ये अटूट संबंध हो सकता है।

इससे यह सिद्ध होता है कि अगर विद्यार्थी कोई बड़ा काम करता है तो उसे घमण्ड नहीं करना चाहिए और अपने गुरु का आदर सम्मान करना कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

- धन्यवाद करती हूँ मैं ऐसे गुरू का जो अपने शिष्य के अन्दर की कला को जगाते हैं और उन्हें खुले पक्षी की तरह उड़ना सिखाते हैं। हर शिष्य को भी अपने गुरू की आज्ञा का पालन करना चाहिए जैसे कि उस लड़की ने किया। तभी हम खुले आसमान में उड़ सकते हैं अन्यथा नहीं।
- मैं आशा करती हूँ कि इस कहानी से लोगों का अन्ध विश्वास एक विश्वास में बदल जाएगा। गलती किसी गुरु या शिष्य की नहीं होती है। गलती होती है तो उन अन्धविश्वासी लोगों की और आज की नई सोच की।

मनुष्य के कर्म और धर्म

धर्मेन्द्र कुमार
बी. एड

मनुष्य के शरीर की आवश्यकतायें पूरी करके जीवित रह लेने से मनुष्य की सच्ची जिन्दगी नहीं बिताई जा सकती है। मनुष्य को मनुष्य के रूप में जिन्दा रहने के लिए रोटी के अतिरिक्त और कुछ भी चाहिए और ये और कुछ हैं– उसके विश्वास, उसके आदर्श, नैतिकता और उसके जीवन मूल्य! इनके सहारे ही वह पशुओं से ऊपर उठकर मनुष्य की भाँति जीवन जीता है। केवल भोजन के सहारे तो पशु भी जिन्दा रहते हैं। पशु से ऊँचा उठाने वाली यदि कोई चीज है तो निश्चित ही वह रोटी नहीं हो सकती। व्यक्ति नैतिक धर्म मूल्यों को अपनाकर ही मानवीय जिन्दगी जीता है। इसी बात को हमारे पूर्वजो ने इस रूप में कहा है कि आहार, निद्रा, भय और मैथुन यह तो पशु और मनुष्यों में समान ही होते हैं, केवल धर्म पालन ही मनुष्य में एक अलग विशेष गुण होता है। धर्म के बिना मनुष्य पशु के समान समझा जाता है।

Scanned by CamScanner

हिन्दुस्तान का गौरव

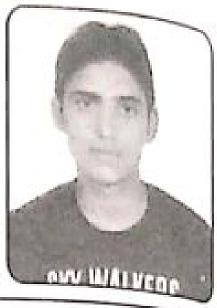

अमित तौमर
बी. कॉम. प्रथम वर्ष

हम सभी जिस भूमि पर निवास करते हैं ऐसी पवित्र भारत भूमि के कण–कण को अनेक महापुरूषों ने जन्म लेकर धन्य किया है। हम सब सौभाग्यशाली हैं, जो कि हमने ऐसी पावन व पुण्यमय हिन्दुस्तान की भूमि पर जन्म लिया है। हमारा देश पहले **'सोने की चिड़िया'** के नाम से जाना जाता था, लेकिन आज हम निज कर्मवश दर–दर की ठोकरे खा रहे हैं। यदि हम पुनः अपने देश को सोने की चिड़िया बनाना चाहते हैं तो हमें गोपाल दास जी बरैया जैसे सच्चरित्र, ईमानदार तथा सर्वगुण सम्पन्न व्यक्तित्व को याद करना होगा।

गोपाल दास जी बरैया एक बार अपने परिवार के साथ तीर्थयात्रा पर जा रहे थे उस समय रेलवे विभाग में यह नियम था कि जो बच्चा 3 साल से अधिक उन का होगा उसकी पूरी टिकट लेनी होगी। अतः बरैया जी ने अपने छोटे भाई को कुछ रूपये देकर टिकट लाने को कहा। तीर्थयात्रा करते समय बरैया जी के लडके की उम्र तीन साल से एक दिन अधिक थी। जब भाई टिकट लेकर आये तो उन्होंने देखा कि उन टिकटों में एक आधी टिकट थी ऐसा देखकर बरैया जी ने छोटे भाई से पूछा कि यह आधी टिकट किसकी हैं ? उनके छोटे भाई ने उत्तर दिया कि यह आधी टिकट आपके बच्चे की है।

यह सुनकर बरैया जी अपने छोटे भाई को जोर–जोर से डाँटने लगे और कहने लगे, आप आधी टिकट लेकर क्यों आये हो ? यह तो तीन वर्ष से एक दिन बड़ा हैं। अतः वह दौड़कर टिकट वाले के पास गये और उससे कहने लगे आप इस बच्चे की पूरी टिकट दीजिए। तब टिकट देने वाले ने कहा, "भाई साहब यह तो बहुत छोटा है, इसकी आधी टिकट ही लगेगी।" नहीं, यह एक दिन बड़ा है। टिकट वितरक ने पुनः कहा, अरे भाई साहब कुछ नहीं होता इतना तो चलता है। बहुत देर तक उन दोनों की बहस चलती रही, लेकिन टिकट वाले ने उन्हें टिकट नहीं दी और अन्त में बरैया जी उसकी मेज पर रूपये छोड़कर आ गये।

बरैया जी की ईमानदारी के व्यवहार से रेलवे विभाग बड़ा प्रभावित हुआ तथा स्टेशन पर बरैया जी के नाम से एक बोर्ड लगाया गया। उस बोर्ड पर लिखा गया कि हिन्दुस्तान में एक ऐसे व्यक्ति भी हुए हैं, जिन्होंने अपनी ईमानदारी का परिचय देकर एक बच्चे की पूरी टिकट ली।

इस प्रकार यदि हिन्दुस्तान का प्रत्येक व्यक्ति ईमानदार व सत्यनिष्ठ हो जायेगा तो हमारा देश पुनः अपने गौरव को प्राप्त कर जगद्गुरू कहा जाने लगेगा। ❑

जीवन का सच

निशा गुप्ता
बी.कॉम. प्रथम वर्ष

1. जीवन एक सच है, – उसे खोइये मत।
2. जीवन एक चुनौती है, – उसका सामना कीजिए।
3. जीवन एक सफर है, – उसको पूरा कीजिए।
4. जीवन एक कर्तव्य है, – उसका पालन कीजिए।
5. जीवन एक वरदान है, – उसे स्वीकार कीजिए।
6. जीवन एक पहेली है, – उसे सुलझाइये।
7. जीवन एक कथा है, – उसे स्वीकार कीजिए।
8. जीवन एक गीत है, – उसे गुनगुनाइये।
9. जीवन एक अनुराग है, – उसका अनुभव कीजिए।
10. जीवन एक अवसर है, – उसका सदुपयोग कीजिए।
11. जीवन एक आत्मा है, – उसका बोध कीजिए।
12. जीवन एक दुःख है, – उसे भोगिए।
13. जीवन एक अनुभव है, – उसे सोचिए।

Scanned by CamScanner

निष्क्रिय मत बनिए

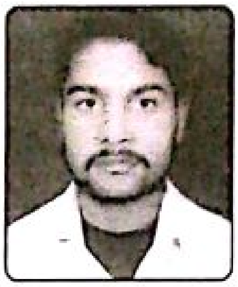

नरेन्द्र कुमार
बी.ए. तृतीय वर्ष

यदि गम्भीरतापूर्वक सोचा जाए तो हमें ज्ञात होगा कि जिन पदार्थों को हम जड़ कहते हैं, वे भी किसी–न–किसी रूप में गतिमान् बने रहते हैं। पृथ्वी, सूर्य, चन्द्रमा आदि गतिमान हैं। एक स्थान पर रखे हुए पदार्थ, खूँटी पर टँगे हुए वस्त्रादि कभी–कभी अपने आप गिर जाते हैं, बात बिलकुल सही है कि जो हमें गतिमान नहीं दिखाई देता है, वह भी वस्तुतः गतिमान है। उपनिषद कहता है कि ब्रह्माण्ड स्थिर प्रतीत होता है परन्तु वह भी गतिमान है। वस्तुतः गति सृष्टि का शाश्वत एवं सर्वव्यापी नियम है, तो फिर हम निष्क्रिय होने की ओर प्रवृत्त होने का प्रयत्न क्यों करें। निष्क्रिय व्यक्ति जीवित लाश कहा जाता है। क्या कोई भी व्यक्ति चाहेगा कि उसको इतना निकम्मा एवं मृत तुल्य समझा जाए?

मनुष्य यदि हाथ पर हाथ रखकर बैठ जाए, सर्वथा निष्क्रिय होने की बात करने लगे, तो परिणाम क्या होगा? हम अपने विनाश का मार्ग स्वयं प्रशस्त करेंगे, यही इस प्रश्न का उत्तर है। युद्ध–स्थल पर पहुँचकर अर्जुन ने प्रायः ऐसा ही किया था। अर्जुन को युद्ध में प्रवृत्त करने के लिए भगवान श्रीकृष्ण को श्रीमद् भगवद् गीता का उपदेश देना पड़ा, हमारे जीवन को प्रेरणा प्रदान करने के लिए गीता रूपी भगवान सदैव हमारे सामने प्रस्तुत रहते हैं। समस्त धर्म एवं ज्ञान ग्रन्थ इस बात को एक स्वर से स्वीकार करते हैं कि कर्म के बिना न यज्ञ होता है, न अन्न उत्पन्न होता है और न मनुष्य का जन्म, पालन आदि सम्भव है। कर्म का नियम शाश्वत और अविचल है। हो सकता है कि प्रयत्न करने पर हमें इच्छित फल की प्राप्ति न हो, परन्तु यह निर्विवाद एवं निश्चित है कि प्रयत्न न करने पर तो कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकेगा, मूरे डिजरैली ने ठीक ही कहा है कि "कर्म सदैव सुख न ला सके, परन्तु कर्म के बिना सुख नहीं मिलता"

संसार में जितने भी श्रेष्ठ वीर, धीर, ज्ञानी–ऋषि और विमल शरीरधारी मनुष्य हुए हैं। वे सब अपने–अपने कर्मों के फलस्वरूप हुए हैं। जो व्यक्ति निष्क्रिय होता है, उसे सब वस्तुओं का अभाव होता हैं। उसे कुछ भी प्राप्त नहीं होता हैं। वह केवल दैव को दोष देता है और अपने भाग्य को कोसता है। समस्त ज्ञानी जन धर्मग्रन्थ, आचरण ग्रन्थ एक ही आदेश देते हैं–

"उठो, कर्म करो, और आगे बढ़ो."

"सक्रिय बनिए"

"घोर निराशा के क्षणों में यह स्मरण रखना चाहिए कि हर अमावस्या के बाद पूर्णिमा सुनिश्चित है, हर काली रात प्रभात की उज्जवलता लेकर आती है?

❑

कंजूस बनिया

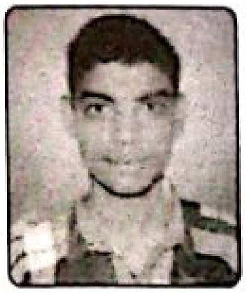

मोहित गोस्वामी
बी.कॉम. तृतीय वर्ष

एक कंजूस बनिया दुकान पर गया। उसने दुकानदार से केले के भाव पूछे। दुकानदार ने उत्तर दिया–बारह रू. दर्जन है। कंजूस बनिया बोला कि एक केला कितने का दोगे? दुकानदार ने उत्तर दिया– एक रुपए का एक केला दूँगा। बनिया बोला कि चालीस पैसे में दे दो। दुकानदार ने कहा कि चालीस पैसे में तो सिर्फ छिलका ही मिलता है, केला नहीं। यह सुनकर बनिया बोला कि ये लो साठ पैसे और मुझे एक केला छीलकर दे दो "छिलका तुम अपने पास रखो"

❑

Scanned by CamScanner

वार्तालाप

राहुल कुमार
बी. एड

पंकज – राहुल, नमस्ते। त्वम् कुत्र गच्छसि।

राहुल– मित्र, अहम् विद्यालयम् गच्छामि।

पंकज– तम विद्यालयः मम गृहात् अतिदूरस्यनास्ति।

पंकज – अहम् अपि त्वया सह तत्र गन्तुम् इच्छामि।

राहुल– अवश्यम् अवश्यम्। आवाम् सहैव विद्यालयं गच्छावः।

पंकज– तस्य विद्यालयस्य किम् नाम अस्ति?

राहुल – मम 'ज्ञानम् महाविद्यालयम् अस्ति।

पंकज – त्वम् विद्यालस्य कस्मिन् प्रकोष्टठे पठसि?

राहुल – अहम् चतुर्थी प्रकोष्ठे पठामि

पंकज– मित्र। तव कक्षाध्यापकः कः अस्ति?

राहुल– श्रीमान् लख्मीःचन्द्रम् मम कक्षाध्यापकः अस्ति। सः अस्मान् भारतीयः इतिहासम् एवम्ः तस्या समस्यः पाठयति।

पंकज– अन्ये अध्यापकाः के के विषयाः पाठयन्ति?

राहुल– तत्र अन्ये योग्या : अध्यापकाः सन्ति ये स्नेहेन् शिक्षाः के दार्शनिकः एवम्ः समाज शस्त्रीयम्, आधारः, भारतीयः शिक्षाम्ः शिक्षा मनोविज्ञानम् एवमं मापनः, विद्यालयस्य प्रशासनम्, शैक्षिकः प्रौद्योगिकीम तथा अन्यान प्रयोगशाला सन्ति।

पंकज – किम् अत्र आलेख्यस्य कक्षः अपि अस्ति?

राहुल – किम् न मित्र। सः आलेख्यस्य कक्ष अस्ति। अहम् आलेख्यम् अपि करोमि।

पंकज – तव कक्षायाम् कति छात्राः पठन्ति?

राहुल – मम कक्षायाम् यत्वारिशत् छात्राः पठन्ति।

पंकज – किम् त्वम छात्रैः सह क्रीडसि?

राहुल – सर्वे क्रीड़ाक्षेत्रे पादकन्दुकम, किकेदं इत्यादयः क्रीड़ाः क्रीड़ामः।

पंकज – किम् प्रधानाचार्यः युष्मभ्यम् उपदेशं अपिय पच्छति।

राहुल – आम् पूज्य प्रधानाचार्यः अस्मभ्यम् उपदेशं यच्छति। सर्वे छात्राः अनुशासनम् पालयन्ति। विद्यालयः अस्मभ्यं पवित्रं शिक्षा स्थानम् अस्ति।

पंकज – शोभनम्! त्वम् धन्यः अस्ति।

चिंता की चिता को जला दो...!!!

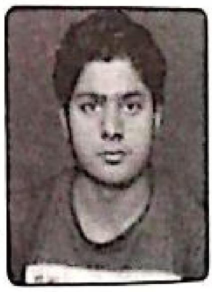

गौरव प्रसाद अग्रवाल
बी. कॉम. तृतीय वर्ष

सावधान..........!!! आजकल एक खतरनाक बीमारी बड़ी तेजी से फैल रही है। बच्चे, बूढ़े और जवान चाहे नर हो या नारी, सभी इसका शिकार बन रहे हैं। आप भी एक बार नीचे लिखे इसके लक्षणों को खुद पर जाँच लें, चैक कर लें कि कहीं आप भी इस रोग से ग्रस्त तो नहीं..........!!!!!

- अगर मैं लोन न चुका पाया, तो.........???
- अगर मैं इन्टरव्यू में पास न हुआ, तो...........???
- अगर मेरा इस बार प्रमोशन न हुआ, तो.......???
- अगर मैं पेपर में फेल हो गया, तो...........???
- अगर मेरा प्रोजेक्ट समय पर पूरा न हुआ, तो,.........???
- अगर पापा ने बाइक दिलवाने से मना कर दिया, तो.......???
- अगर मेरे बेटे का एडमिशन अच्छे स्कूल में न हुआ, तो......???
- अगर................अगर................अगर.............तो ? तो ? तो ?

यदि हम लिखते जाएँ, शायद यह लिस्ट कभी खत्म नहीं होगी। 'अगर..........तो' की यह लगातार चलती कड़ी एक भयंकर रोग है जिसे कहते हैं– चिंता...........???

चिंता ऐसी डाकिनी, काटि कलेजा खाय।
वैद्य बिचारो का करे, कहाँ तक दवा खिलाय।।

स्काउट एवं गाइड शिविर (बी.एड. विभाग)

बी.एड. विभाग द्वारा आयोजित स्काउट व गाइड शिविर में ध्वजारोहण करते हुए प्राचार्य डा. वाई. के. गुप्ता

स्काउट व गाइड द्वारा मतदाता जागरूकता रैली में प्रतिभाग

स्काउट व गाइड की भूमिका में बी.एड. विद्यार्थी

शिविर में तम्बू का निरीक्षण करते हुए अतिथिगण

सहभोज कार्यक्रम में प्रबंधक श्री मनोज यादव व अन्य 'प्राध्यापकगण

गाइड द्वारा शिविर के दौरान सहभोज की तैयारी में छात्राऐं

शिविर के समापन समारोह में उपस्थित अतिथिगण

शिविर में तंबूओं का निरीक्षण करते हुए निर्णायक व अतिथिगण

Scanned by CamScanner

राष्ट्रीय सेवा योजना गतिविधियाँ

एन.एस.एस. दिवस पर अतिथियों को प्रतीक चिन्ह भेंट करते हुए प्राचार्य डॉ. वाई. के. गुप्ता

एक दिवसीय एन.एस.एस. शिविर में प्राचार्य द्वारा संबोधन

विशेष शिविर में उद्घाटन पर सचिव श्री दीपक गोयल द्वारा संबोधन

सुशासन दिवस पर आयोजित रैली

शिविर में स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत ग्राम में साफ-सफाई करते हुए स्वयंसेवक

विशेष शिविर के समापन समारोह में मुख्य अतिथि ए.डी. बेसिक श्री गिर्राज किशोर द्वारा संबोधन

चंडीगढ़ में आयोजित कार्यशाला में एन.एस.एस. कार्यक्रम अधिकारी डॉ. ललित उपाध्याय द्वारा प्रतिभाग

एन.एस.एस. शिविर में अतिथि डॉ. वैरिन्दम गुणाकर (यूथ फॉर नेशन) द्वारा संबोधन

Scanned by CamScanner

अतिथि व्याख्यान : 2014-15

बी.टी.सी. विभाग में मुख्य अतिथि व वक्ता डॉ. गिर्राज किशोर (पूर्व डीन) को सम्मानित करते हुए विभागाध्यक्ष

डॉ. एच.एन. सिंह (एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र) डी.एस. कॉलेज को सम्मानित करते हुए विभागाध्यक्ष

वाणिज्य संकाय व्याख्यान में डॉ. डी.के. अस्थाना (पूर्व शा.प्र., इंडियन ओवरसीज बैंक) को प्रतीक चिन्ह देते हुए प्राचार्य

डॉ. प्रेमकुमार (एसो.प्रो. हिन्दी विभाग) डी.एस. कॉलेज को स्मृति चिन्ह देते हुए प्राचार्य व प्रबंधक

डॉ. एम.के. भारद्वाज (एसो.प्रो., वनस्पति विज्ञान विभाग) डी.एस. कॉलेज को स्मृति चिन्ह देते हुए उपप्राचार्य व प्रवक्ता

डॉ. वी.पी. सिंह (एसो.प्रो. अंग्रेजी विभाग) डी.एस. कॉलेज द्वारा महाविद्यालय के अंग्रेजी विभाग में व्याख्यान

डॉ. पारुल यादव (एसो.प्रो. जन्तु विज्ञान विभाग) डी.एस. कॉलेज को प्रतीक चिन्ह भेंट करते हुए उपप्राचार्य व अन्य

बी.एड. विभाग में डॉ. अनवर जहाँ जुबेरी (पूर्व कुलपति, कालीकट विवि.) द्वारा अतिथि व्याख्यान

Scanned by CamScanner

ज्ञान सामाजिक सरोकार समिति

ज्ञान गंगा परिचय यात्रा को हरी झंडी दिखाकर शुभारंभ करते हुए प्राचार्य डॉ. वाई. के. गुप्ता

ग्राम मुकुन्दपुर में ज्ञान गंगा परिचय यात्रा के दौरान जल संरक्षण की प्रतिज्ञा लेते हुए ग्रामवासी

ज्ञानदीप ज्योति कार्यक्रम में दीया बाती समिति सदस्यों को सौंपते हुए प्राचार्य व सचिव

कम्बल वितरण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री पूरण सिंह राना (SDM कोल) व श्रीमती मिथलेश यादव व सचिव

जीव-जन्तु रक्षा अभियान में उपस्थित छात्रा/छात्राएं व प्राध्यापकगण

मातृ दिवस पर मंचासीन अतिथि सचिव श्री दीपक गोयल व अन्य

स्वराज्य स्वावलम्बी योजना के अन्तर्गत छात्रा को विवाह के अवसर पर सिलाई मशीन भेंट करते हुए प्राचार्य व प्रबंधक

बढौली फतेह खाँ ग्रामवासी छात्रा को सिलाई मशीन भेंट करते हुए सचिव श्री दीपक गोयल व प्राचार्य

Scanned by CamScanner

"कौन छोटा, कौन बड़ा"

ममता रानी
बी. टी. सी.

शिष्य ने प्रश्न किया, 'गुरुवर जब संसार में सभी आदमी एक ही तत्व के एक से बने हैं तो यह छोटे–बड़े का भेदभाव क्यों ?'' गुरु ने उत्तर दिया ''वत्स छोटा–बड़ा संसार में कोई नहीं, यह सब अपने–अपने आचरण का खेल है। जो सज्जन हैं, वे बड़े हो जाते हैं, जबकि नेकी और सज्जनता के अभाव में वही छोटे कहलाते हैं'' गुरु ने बात ठीक समझा दी थी, पर शिष्य की समझ में अच्छी तरह जमीं नही।

कुछ दिन बाद राजा की सवारी निकली। गुरुजी अपने शिष्य को लेकर राजपथ के बीचों–बीच जा बैठे। पहले सैनिकों का दल आया। एक सिपाही ने आगे बढ़कर वृद्ध संन्यासी को धक्का मारा और कहा, ''मूर्ख! मार्ग में बैठा है, पता नहीं महाराज की सवारी आ रही है'' सैनिकों के पीछे प्रधान सेनापति था। उसने धक्का तो नहीं दिया, हाँ वहाँ से हटने के लिए साधु को डांट अवश्य लगाई। इसके बाद मन्त्री निकले, उन्होंने बिना कुछ कहे रथ एक ओर से निकाल लिया और आगे बढ़ गए। सबसे पीछे आ रहे महाराज ने सन्यासी को देखा तो रथ से उतरकर उनके पास आए और पूछा ''भगवन आप यहाँ बैठे हैं, कोई कष्ट तो नहीं। हम आपके सेवक हैं, कोई कष्ट हो तो कहो।'' संन्यासी ने उत्तर में केवल आशीर्वाद दिया और महाराज को भी वहाँ से जाने दिया।

शिष्य बगल में खड़ा सब देख रहा था। गुरु के पास आकर उसने कहा, ''गुरुदेव, व्यक्ति अपने आप में छोटा है न बड़ा। गुणों के आधार पर ही कुछ बड़े हो जाते हैं, जबकि दूसरे छोटे ही बने रहते हैं।''

शिष्य को अपने गुरु की बात समझ में आ गई थी। उसने खुद से निश्चय किया कि वह कभी अपने आचरण को नीचा नहीं गिरने देगा। सच तो यही है कि आपकी विनम्रता ही आपको छोटा या बड़ा बनाती है।

''जिन्दगी क्या है ?''

जिन्दगी एक शमा की मानिन्द है।
जो हवा में रखी है।
जो लोग जिन्दगी को एक मकसद समझकर गुजारते हैं, वो कभी नाकाम नहीं होते हैं।
जिन्दगी एक हीरा है जिसे तराशना इंसान का काम है।
जिन्दगी की एक अजमत ये है कि तुम वो काम करके दिखाओ जो दूसरे समझते हैं कि तुम नहीं कर सकते।
जिन्दगी अनमोल है, जिसे सँवारना इंसान का फर्ज है।

❑

ज्ञान और भक्ति की साधना है जरूरी

''श्रीराम ने अपने अनुज लक्ष्मण को समझाते हुए कहा, ज्ञानी वही है, जिसमें मान, अभिमान, क्रोध आदि एक भी दुर्गुण न हो''

विजय नवमान

एक बार पंचवटी स्थित आश्रम में भगवान श्री राम लक्ष्मण जी के साथ बैठे थे। लक्ष्मणजी ने सरल भाव से कुछ जिज्ञासाएँ उनके समक्ष रखीं। उन्होंने पूछा, 'प्रभू! माया किसे कहते हैं?' श्री राम ने बताया, ''यह मैं हूँ और यह मेरा है, वह तू है और वह तेरा है। बस यही माया है, जिसने समस्त जीवों को अपने वश में कर रखा है। उन्होंने आगे कहा, माया दो प्रकार की होती है। एक विद्या माया है, जो जीव के गुणों को ग्रहण करने तथा ईश्वर प्राप्ति की ओर उन्मुख होने की प्रेरणा देती है। दूसरी दोषयुक्त अविद्या माया है, जिसके वश में होकर जीव संसार रूपी कुएं में पड़कर अनेक दुख भोगता है।'' श्री राम ने अपने अनुज को समझाते हुए कहा –

तात, ज्ञानी वह है, जिसमें मान, अभिमान आदि एक भी दोष नहीं है और जो सबमें समान रूप से ब्रह्म को ही देखता है। परम विरागी उसी को कहा जाता है जो सांसारिक सुविधाओं को त्याग चुका हो। वेदों में ऐसा वर्णन है कि धर्म के आचरण से वैराग्य और योग के माध्यम से ज्ञान प्राप्त होता है। यही मोक्ष देने वाला होता है। भक्ति अनुपम सुख का मूल है। भक्ति को ज्ञान – विज्ञान आदि किसी दूसरे साधन की आवश्यकता नहीं होती है। वह भक्ति तभी मिलती है, जब संतजन प्रसन्न होते हैं, जिस भक्त में काम, मद आदि दोष नहीं होते, उसे सहज ही भक्ति साधना में सफलता मिलती है। श्री राम जी के वचन सुनकर लक्ष्मण जी गद्‌गद हो उठे। ॐ

Scanned by CamScanner

हमारी गौरवशाली परम्परा

ललित मोहन भारद्वाज
बी. एड

"एतद्‌देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।"
(मनुस्मृति 2.20)

"भारत ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में गहन अध्ययन व अनुसन्धान किया है। भारत ने ही विश्व को जीवन की दिशा, दृष्टि, व शिक्षा दी है। उसी ज्ञान–विज्ञान के बल पर हमारे महापुरुषों ने वैभवशाली भारत का निर्माण किया।"

"अपना इतिहास अनादि है", इसको कई विदेशी विद्वानों ने भी माना है।

सांस्कृतिक, वैचारिक, व्यावहारिक व साहित्यिक वैभव–

क. साहित्यिक वैभव :

1. **चार पुरूषार्थ**– धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष।
2. **संस्कार व्यवस्था**–जन्म से मृत्यु तक सोलह संस्कारों की व्यवस्था, (पूर्व में 40 संस्कारों का वर्णन)
3. **परिवार व्यवस्था**–संयुक्त परिवार, उसमें प्रत्येक घटक (सदस्य) के सम्पूर्ण विकास की व्यवस्था, इसके लिये समर्पण आदि।
4. **आश्रम व्यवस्था**–ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ व सन्यास आश्रम।
5. **गुरू शिष्य सम्बन्ध परिकल्पना**–गुरुकुल व्यवस्था।
6. **भारतीय जीवन शैली**–आत्मा की अमरता, पुर्नजन्म व कर्मफल का सिद्धान्त।
7. **आत्मा–परमात्मा तथा जीवात्मा**–परस्पर सम्बन्धित हैं (व्यष्टि, समष्टि, सृष्टि व परमेष्टि)।

ख. ऐहिक जीवन में प्रगति :

ऋग्वेद में कृषि सम्बन्धी वर्णन। कृषि क्षेत्र के सभी यन्त्रों व तकनीकी प्रक्रियाओं की विस्तृत जानकारी व वर्णन। **जैसे**– हल, सिंचाई, पशुपालन, जैविक खाद आदि।

■ संसार में हजारों वर्ष पूर्व सर्वप्रथम कृषि अध्ययन भारत में ही प्रारम्भ हुआ। हजारों वर्ष पुराने कृषि, पाराशर, वृक्ष–आयुर्वेद आदि कृषि ग्रन्थ आज भी विश्वस्तरीय शिक्षा में मान्य। कपास की उत्पत्ति भारत में ही, भारत में ही धान की 6600 प्रजातियाँ, घाघ कवि की कहावतें आदि।

■ **शिक्षा के क्षेत्र में**– ऋग्वेद विश्व का प्रचीनतम ग्रन्थ। भारत सम्पूर्ण विश्व की शिक्षा का सर्वोत्कृष्ट केन्द्र। सम्पूर्ण विश्व से विद्यार्थी भारत के विश्वविद्यालयों में शिक्षा ग्रहण करने हेतु आते थे। भारत में तक्षशिला, नालन्दा, विक्रमशिला आदि 65 विश्वविद्यालयों का वर्णन। तकनीकी शिक्षा पर लगभग 300 पुस्तकें।

■ **लन्दन में 'मद्रास सिस्टम ऑफ एजूकेशन**– संस्कृत भाषा व व्याकरण विश्व की समृद्धतम भाषा व व्याकरण, जो आज संगणक (कम्प्यूटर) के लिये भी श्रेष्ठतम मानी जा रही है। संस्कृत भाषा पूर्व ध्वन्यात्मक। जापानी व चीनी चित्रात्मक है। अंग्रेजी भाषा न ही ध्वन्यात्मक है न ही चित्रात्मक है।

■ **आर्थिक क्षेत्र**– यहाँ के धन–धान्यपूर्ण, समृद्ध तथा सदाचारी समाज का अनेक विदेशी यात्रियों (चीनी यात्री फाहियान, हवेन सांग, अलवेरूनी आदि) द्वारा उल्लेख (मेगरथनीज की इण्डिका पुस्तकें)।

■ **व्यापार के क्षेत्र में**– समुद्री मार्ग से विश्व भर में भारत का व्यापार संचालित होता था जो विश्व के व्यापार का 24 प्रतिशत था। गुणवत्ता के कारण भारतीय वस्तुएँ विश्व भर में आकर्षण तथा माँग का केन्द्र थीं।

■ **सांस्कृतिक दिग्विजय**– तात्कालिक विश्व के प्रत्येक देश में हमारे ऋषि–मुनि–सन्त, विद्वान, वैज्ञानिक आदि गये। उन्होंने वहाँ के जीवन को श्रेष्ठ (आर्य) बनाया। **जैसे**– अमेरिका, मैक्सिको, इटली, ब्रिटेन, जापान, चीन, रूस आदि। आज भी पूर्वीदीप समूह के लोग हमारी श्रेष्ठता के कारण ही स्वयं हमारे विचारों को अपना रहे हैं।

■ **साहित्य**– गीता का अनुवाद विश्व की सभी भाषाओं में। रामायण, महाभारत, अभिज्ञान, शाकुन्तलम्, चार वेद आदि। विश्व के जन–जीवन से सम्बन्धित दिशा देने वाला साहित्य नालन्दा विश्वविद्यालय के विशाल पुस्तकालय के नौ–नौ मंजिल के 3 विशाल प्रखण्डों 'रत्न सागर' 'धर्म सागर' व "गुणसागर" में उपलब्ध था।

■ **कौटिल्य अर्थशास्त्र में 300 ग्रन्थों के सन्दर्भ**– गणित, बोधायन, शुल्वसूत्र (प्रमेय का सरल सूत्र)। पाइथागोरस ने आकर इस प्रमेय को सीखा। पाइथागोरस के आने से अनेक वर्ष पूर्व शुल्व सूत्रों में इस प्रमेय की सिद्धि हो चुकी थी। ☐

Scanned by CamScanner

भारत की महान विभूति
डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

अजय कुमार
बी. एड

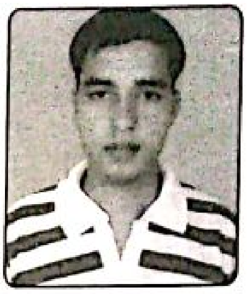

भारत भूमि पर अनेक महान विभूतियों ने अपने ज्ञान से हम सभी का मार्गदर्शन किया है। उन्हीं में से एक हैं डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी। वे एक महान शिक्षाविद् होने के साथ–साथ महान प्रवक्ता और महान दार्शनिक भी थे।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का मानना था कि यदि सही तरीके से शिक्षा दी जाए तो समाज की कई बुराइयों को मिटाया जा सकता है।

ऐसे महान शिक्षक का जन्मदिन शिक्षक दिवस के रूप में मनाना हमारे लिए गौरव की बात है। यह उनके व्यक्तित्व का ही असर था कि 1952 में आपके लिए उपराष्ट्रपति का पद सृजित किया गया। स्वतंत्र भारत के पहले उपराष्ट्रपति जब 1962 में राष्ट्रपति बने तब आपके कुछ शिष्यों एवं प्रशंसकों ने आपसे निवेदन किया कि आपका जन्मदिन शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाए। तभी से 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। वे ज्ञान के सागर थे। उनकी हाजिर जवाबी का एक किस्सा नीचे दिया जा रहा है।

एक बार एक प्रीतिभोज के अवसर पर एक अंग्रेज ने कहा– "ईश्वर हम सभी अंग्रेजों को बहुत प्यार करता है इसलिए हम इतने गोरे और सुन्दर हैं।" उस सभा में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन भी उपस्थित थे। उन्हें यह बात बिल्कुल अच्छी नहीं लगी और अपना मनगढ़ंत किस्सा सुनाया :

"मित्रो! एक बार ईश्वर का रोटी बनाने का मन हुआ। उन्होंने जो पहली रोटी बनाई, वह रोटी जरा कम सिकी और कच्ची रह गई, जिससे गोरों का जन्म हुआ। दूसरी रोटी कच्ची न रह जाए इसलिए वह थोड़ी ज्यादा सेकी और परिणाम स्वरूप नीग्रो पैदा हुए। मगर इस बार भगवान चौकन्ने हो गए और ठीक से रोटी पकाने लगे। इस बार रोटी न ज्यादा पकी और न कच्ची रही, परिणाम स्वरूप हम भारतीयों का जन्म हुआ।"

यह किस्सा सुनकर उस अंग्रेज का सिर शर्म से झुक गया और लोग हँसते–हँसते लौट–पोट हो गये।

इस प्रकार किसी को आहत किए बिना उन्होंने भारतीयों को श्रेष्ठ बना दिया। उनका मानना था कि व्यक्ति निर्माण एवं चरित्र निर्माण में शिक्षा का विशेष योगदान है। "ऐसे उच्च कोटि की विचारधारा वाले व्यक्ति को भारत के प्रथम राष्ट्रपति महामहिम डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने भारतरत्न से सम्मानित किया" उन महान शिक्षा शास्त्री की विचारधारा को ध्यान में रखते हुए मित्रो मेरा यही मानना है कि शिक्षा की ज्योति को ईमानदारी से अपने जीवन में आत्मसात् करो, क्योंकि शिक्षा किसी में भेद नहीं करती, जो इसके महत्व को समझ जाता है, वह अपना भविष्य सँवार लेता है।

अंत में इन पंक्तियों के साथ मैं अपने विचारों को विराम देता हूँ–

ज्ञानी के मुख से झरे, ज्ञान सदा की बात।
हर एक पांखुड़ी फूल की, खुशबू की सौगात।

गुरू का महत्व कभी होगा न कम,
भले कर लें कितनी भी उन्नति हम,
वैसे तो है इण्टरनेट पर हर प्रकार का ज्ञान,
पर अच्छे–बुरे की नहीं है उसे पहचान।

नहीं है शब्द कैसे करूँ धन्यवाद,
बस चाहिए हर पल आप सबका आशीर्वाद,
हूँ जहाँ आज मैं उसमें है बड़ा योगदान,
आप सबका जिन्होंने दिया है मुझे इतना ज्ञान।

आपने बनाया है मुझे इस योग्य,
कि प्राप्त करूँ मैं अपना लक्ष्य,
दिया है हर समय आपने सहारा,
जब भी लगा मुझे कि मैं हारा।

पर मैं हूँ कितना मतलबी,
याद किया न मैंने आपको कभी,
आज करता हूँ दिल से आप सबका सम्मान,
आप सबको है मेरा शत् शत् प्रणाम्।

Scanned by CamScanner

विद्या सभी धनों में श्रेष्ठतम्

अनिल कुमार
बी.टी.सी.

संसार में बहुत प्रकार के धन हैं। सभी धनों में श्रेष्ठ विद्या रूपी धन को माना गया है। क्योंकि इस धन को जितनी अधिक मात्रा में खर्च करते हैं, उतनी ही मात्रा में बढ़ता है। अन्य धन खर्च करने पर घटते हैं। इसलिए धन का मनुष्य जीवन में बहुत महत्व है। विद्या के महत्व का वर्णन नीतिकार ने बहुत अच्छे शब्दों में किया है–

''न चोरहार्यं न मातृभाज्यं न राजहार्यं न च भारकारि।
व्यये कृते वर्धत इव नित्यं विद्या धनं सर्वधनं प्रधानम्।।''

अर्थात् विद्या इस प्रकार का धन है जिसे न तो चोर चुरा सकता है, न भाई इसको बाँट सकता है और न ही राजा इस पर कोई कर ले सकता है और न ही इस धन में कोई भार है। इस धन को जितनी अधिक मात्रा में खर्च करते हैं, उतनी ही अधिक मात्रा में बढ़ता है। इसीलिए इस धन को सर्वश्रेष्ठ धन की उपाधि प्राप्त हुई। विद्या धन का मनुष्य के जीवन में बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है। यह विद्या मानव–जीवन में क्या–क्या कर सकती है?

''मातेव रक्षति पितेव हिते नियुक्ते,
कान्तेव चाभिरमत्यपनीय खेदम्।
कीर्तिं च दिक्षु विमला वितनोति लक्ष्मीं,
किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या।।''

अर्थात् विद्या माता की तरह हमारी रक्षा करती है। पिता की तरह हमारे हित के बारे में सोचती है। विद्या हमारे दुःखों का निवारण करती है और विद्या के द्वारा ही हमारी कीर्ति चारों दिशाओं में फैलती है तथा समाज में हमारी प्रतिष्ठा बढ़ती है। ऐसा संसार में क्या है जो विद्या नहीं कर सकती। अर्थात् विद्या सब कुछ कर सकती है इसीलिये इसे कल्पवृक्ष कहा गया है।

इसीलिये मनुष्य को विद्या का अर्जन अधिक से अधिक मात्रा में करना चाहिए, जिससे कि हमारी तथा हमारे राष्ट्र यशरूपी पताका विश्व में फहराये और हमारे देश को पहले की तरह विश्व गुरु की उपाधि प्राप्त हो। ❑

उद्देश्य

कुलदीप कुशवाहा
बी.टी.सी.

एक युवक ने बहुत धनी आदमी को देखकर धनवान बनने का निश्चय किया। कई दिन तक वह कमाई में लगा रहा और कुछ पैसे भी कमा लिए। इसी बीच उसकी भेंट एक विद्वान से हुई। अब उसने विद्वान बनने का निश्चय किया और दूसरे ही दिन से कमाई छोड़कर पढ़ने में लग गया। अभी अक्षर अभ्यास ही सीख पाया था कि उसकी भेंट संगीतज्ञ से हुई। उसे संगीत में अधिक आकर्षण दिखायी दिया। अतः उस दिन से पढ़ाई बन्द कर संगीत सीखने लग गया। कुछ दिन बाद वह भी छोड़कर नेतागिरी करने लगा। काफी उम्र बीत गयी, न वह धनी बन सका, न विद्वान्, न संगीतज्ञ और न ही नेता। तब उसे बड़ा दुःख हुआ। एक दिन उसकी एक महात्मा से भेंट हुयी। उसने अपने दुःख का कारण बताया।

महात्मा मुस्करा कर बोले, 'बेटा, दुनिया बड़ी चिकनी है, जहाँ जाओगे कोई न कोई आकर्षण दिखाई देगा। एक निश्चय कर उसी पर अमल करो, तो तुम्हें अवश्य सफलता मिलेगी। बार–बार रूचि बदलते रहने से कोई भी सफल नहीं हो सकता।

युवक समझ गया और फिर अपना एक उद्देश्य निश्चित कर उसको पूरा करने में जुट गया। ❑

एक सुबह

माला कुमारी
बी. टी. सी.

घर के तिनकों पर ओस की बूँदें मोती की तरह चमक रही थीं, पौधों पर फूलों की नई कोपलें नव जीवन के उदय होने का सन्देश दे रही थीं। कुछ खिले और रंग–बिरंगे फूल मन को प्रसन्नता प्रदान कर रहे थे और जीवन में भी रंग होने का सन्देश दे रहे थे। आसमान में घिरी काली घटायें मन को लुभा रही थीं, उस पर पवन देव भी मध्यम गति से चलकर सुगन्धित वायु से साँसों को तरोताजा कर उन्हें महका रहे थे। गगन में कलरव करते पक्षियों के स्वर नया संगीत हर जगह बिखेर रहे थे।

जैसे ही हवा का एक तेज झोंका आता, तो लगता था, मानो पक्षियों के संगीत पर सभी पेड़–पौधे हिल–हिल कर नृत्य मुद्रायें दिखा रहे हों।

जब कभी बादलों की ओर नजर पड़ती, तो लगता अभी एक अमृत की बूंद गिरेगी, जो तन, मन को भिगोकर रोमांचित कर देगी।

सुबह–सुबह का ऐसा अद्भुत और देवलोकमय नजारा पार्क में उपस्थित सभी लोगों को दिखाई दे रहा था। नन्हे–नन्हे बच्चे घास पर दौड़–दौड़ कर खेल रहे थे। लगता था मैं भी इसी बचपन में वापस चली जाऊँ। उनका छुपन–छुपाई का खेल चल रहा था। जब भी वो छुपने के लिए पेड़ों या पौधों की ओट में जाते, तो लगता था कि वो भी अपनी बाहें, उनकी तरफ फैला रहे हैं। उनकी खिलखिलाती हँसी उन्हें भी मुस्कराना सिखा रही थी। वो दुनियादारी से अन्जान अबोध बचपन अपने में मस्त था।

दूसरी तरफ कुछ युवा घास पर नंगे पैर घूमकर अपने आने वाले भविष्य के बारे में सोच रहे थे। इनमें भी अनेक वर्गों का वर्गीकरण था। कुछ युवा तो जबरदस्ती जगाकर लाये गये थे, जो शायद अभी बिस्तर पर निद्रा में लीन रहना चाहते थे।

कुछ नव यौवनायें अपने पतियों की प्रेम भरी बातों का आदान–प्रदान कर रही थीं, जिसमें इतना सुहाना मौसम उनके मन में और अधिक प्रेम की हिलोरे भर रहा था। उनके समूह से उनके पति भले ही पुरुष समूह में थे, पर वो उनकी तरफ ऐसे देख रही थीं कि प्रेम में पहली बार उन्हें निहार रही हों या आज पहली मुलाकात हो। कुछ अपने भविष्य में आने वाले इस पल को सोच कर ही रोमांचित हो रही थीं।

वहीं एक तरफ जीवन के लम्बे अनुभव अपने में समेटे और संघर्ष की लड़ाई लड़ते–लड़ते हारकर आँखों में बस ये इन्तजार करते हुए कि ये सांसे कब थम जायें पता नहीं। शायद बादलों के झुरमुट से कोई उन्हें ले जाने वाला आने वाला है, इसी प्रतीक्षा में बादलों की ओर निहारते हुए बैठे थे, हमारे वृद्ध समुदाय के लोग। कुछ घास पर नंगे पैर घूमकर ये बता रहे थे कि जीवन चलने का नाम, चलते रहो सुबह–शाम। कुछ जीवन से हारकर बैठ गये थे। कुछ अपने जीवन की विस्मृत घटनाओं का स्मरण कर उन्हें दूसरों को सुनाकर गौरव का अनुभव कर रहे थे।

इस तरह यहाँ मानव समाज की तीनों अवस्थाओं का जोड़–मिलन दिखाई दे रहा था कि तभी भास्कर साहब ने आसमान के दरवाजे से दस्तक देना शुरू किया, तो सभी लोग अपने–अपने गन्तव्य स्थान को जाने के लिए दरवाजे से निकलने लगे।

मैंने भी अपनी राह पकड़ी। मम्मी ने खिड़की का पर्दा हटाया, जिससे सूरज की पहली किरण मेरी आँखों पर पड़ी और मम्मी ने कहा सूरज सिर पर चढ़ आया है, ऑफिस नहीं जाना क्या? मैं उठी और आँखें मलते हुए मैंने कॉलोनी के पार्क पर निगाह उठाई, जो बिल्कुल खाली पड़ा था। यही हकीकत की सुबह थी और वो सुबह एक सपने की थी।

"चिराग–ए–फिक्र यकीनन बुझा के सोते हैं,
मगर नसीब की शमा जला के सोते हैं।
वो रोज ख्वाब में जन्नत को देखते होंगे,
जो अपनी माँ के पैर दबा के सोते हैं।"

Scanned by CamScanner

स्वास्थ्य और भक्ति

दिनेश कुमार
बी.ए. द्वितीय

स्वस्थ रहना : हमारे शरीर का मूल धर्म है। जो व्यक्ति स्वस्थ नहीं है या किसी विकार से ग्रस्त है, वह व्यक्ति जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। स्वस्थ शरीर ही धार्मिक व्यक्ति का पहला लक्षण है, जिसका अर्थ है स्वयं में अवस्थित होना, अपनी मूल प्रकृति में स्थिर होना। लेकिन जब कभी हमारा शरीर अपने मूल धर्म से गिरता है तो हम अस्वस्थ हो जाते है।

अस्वस्थ होना हमारा स्वभाव नहीं है, यह विकार है जो शरीर के संतुलन को बिगाड़ देता है। परमात्मा ने हमें विकारयुक्त होने का आदेश नहीं दिया। उसने तो हमें स्वस्थ रहने का उपदेश दिया। शरीर को स्वस्थ रखने का उपाय बताया, विकारों से मुक्ति का मार्ग बताया और शरीर में विकार न आए, इसके लिए सावधानियाँ बतायीं, लेकिन जब हम इन तमाम निर्देशों का पालन नहीं करते हैं तो हम अस्वस्थ हो जाते हैं और अस्वस्थ होते ही हमारा मन, बुद्धि और विवेक सब असंतुलित हो जाते हैं। इस तरह हम हीन भावना के शिकार हो जाते हैं। अस्वस्थ व्यक्ति न नैतिक मूल्यों का पालन कर सकता हैं और न जीवन में कोई ठोस काम कर सकता है और न ईश्वर की आराधना में तल्लीन हो सकता है। जिसके शरीर में कोई विकार न हो, कोई बीमारी न हो, तभी वह अपने मन को भक्ति में केन्द्रित कर सकता है।

परमात्मा की आराधना के लिए मन को पूरी तरह शांत होना चाहिए। सारी इंद्रियों के द्वार बन्द होने चाहिए और अपने आत्म तत्व या इष्टदेव को मन में धारण कर उसका चिंतन करना चाहिए। कई बार लोग कहते हैं कि भक्ति वृद्धावस्था में करनी चाहिए, ऐसे लोग परमात्मा की भक्ति से चूक जाते हैं। शरीर जब थक जाए तो भक्ति की बात करना मूर्खता है। भक्ति के फूल तो स्वस्थ शरीर में ही खिलते हैं।

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है और स्वस्थ मन ही चिंतन की ओर मुड़ता है। जिस प्रकार अगर सिर में दर्द हो, पेट या कमर में दर्द हो, तो हमारा किसी काम में मन नहीं लगता, फिर भक्ति का नाटक करने से क्या फायदा। इसके लिए जरूरी है कि ऐसा प्रबन्ध किया जाए जिससे हमारा शरीर स्वस्थ रहे और शरीर तभी स्वस्थ रह सकता है, जब उसे उचित भोजन दिया जाए और समुचित व्यायाम किया जाए।

सड़क नहीं मन साफ करो

स्वच्छ भारत अभियान की पहल हमारे प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ने की। गलियों सड़कों और आस पास की जगहों को साफ करना अच्छी बात है।

लेकिन देश में आये दिन हो रही चोरी–डकैती, अपहरण, दुष्कर्म जैसी गंदगी को भी साफ करना जरूरी है। मोदी जी को उन तमाम समस्याओं पर भी ध्यान आकर्षित करना चाहिए, जिनसे समाज जूझ रहा है। समाज बुरे लोगों से दूषित हो चुका है। पहले इस सफाई पर जोर लगाने की जरूरत है। ❑

माँ

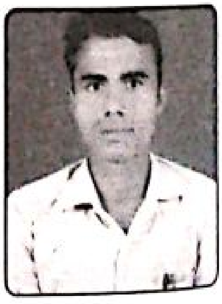

गोपाल सिंह
बी.ए. द्वितीय

"माँ तेरे दूध का मुझसे अदा क्या होगा,
तू है नाराज तो खुश मुझसे खुदा क्या होगा।"

माँ को समझने का प्रयास करो और उसे कभी मत भूलो, जिसने नौ महीने आपको कोख में रखा है, पर वो आज लाचार है, अगर बूढ़ी हो चुकी है, तो उसे सहारा दीजिए न कि उसे दुत्कारिये। उसको आपकी दौलत, शानो–शौकत से कुछ नहीं लेना–देना। अरे उसके लिये तो आपका दीदार सबसे बड़ा है। अगर आपकी माँ है तो भूल कर भी उसकी बूढ़ी आँखों में आँसू न आने देना, वरना जिंदगी भर आप उसके एक आँसू की कीमत नहीं चुका पायेंगे। उसे इतना प्यार दीजिए जितना कि आज तक किसी ने अपनी माँ को न दिया हो। दुनिया में कितने ऐसे हैं– जिनकी माँ अब उनके पास नहीं है। माँ से बड़ा दुनिया में कोई धन नहीं है। ❑

Scanned by CamScanner

भारत देश में महिलाओं का शोषण

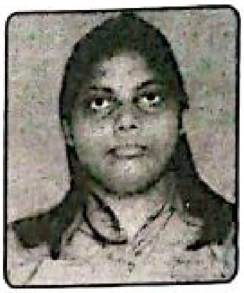

प्रगति
बी.टी.सी. द्वितीय सत्र

महज हर साल आजादी का जश्न मनाया जाता है। वंदे मातरम' और भारत माता की जय' के घोष से गूँज उठेगा वतन का कौना–कौना, पर क्या हम सचमुच इस जश्न में शामिल हो पाएँगे? यकीनन बहन–बेटियों, माताओं के साथ जो कुछ घट रहा है, उसे देखकर हर इंसान का मन मायूस है और आँखें नम। तेज धार के समान यथार्थ सीने में चुभता रहता है 'ड्रीम भारत' का सपना तार–तार हो रहा है और दिल कहता है कि आजादी अभी बाकी है..

मैं पढ़ाई के सिलसिले में बाहर गई थी। सामान बहुत था। स्टेशन पर उतरने के बाद लगा– कोई तो हो, जिससे मदद माँग सकूँ। तभी एक शख्स आया और अपने कंधे पर मेरा लगेज उठाकर मुझे रिक्शे तक छोड़ आया। मैं विदेश में इमोशनल हो रही थी। अपनापन महसूस हुआ, पर डर था, ज्यादा इमोशनल हुई तो कुछ गलत न हो जाए, लाजिमी था सोचना, क्योंकि मेरे साथ कोई न था। पर मेरा डर फजूल था। वह मेरी मदद करने के बाद चला गया। मेरे वतन के लोग ऐसे क्यों नहीं हैं, यहाँ लड़कियाँ हरदम किसी अनहोनी के साये में क्यों जी रही हैं। आजादी के मौके पर किए गए कुछ पारम्परिक सवालों पर साइंस की स्टूडेंट प्रगति ने ऐसे ही कई सवालों की झड़ी लगा दी। वेशक समय के साथ बदलाव नियति है। 1947 से लेकर आज तक हम वदले और खूब वदले। विज्ञान और प्रौद्योगिकी से लेकर रहन–सहन और खानपान सब बदल रहा है। देश निर्माण में हम भागीदार बन रहे हैं। आजादी के सबक जिंदा रहें, इसलिए इंडिपेंडेंस डे मनाते हैं हम। पर यह क्या ? आज हमें महिलाओं के विषय में सोचने को मजबूर होना पड़ रहा है। बस कुछ अपनों के ही कारण। बस अब और नहीं, आजादी के इतने वर्षों बाद भी कन्या भ्रूण हत्याएँ, बाल विवाह और दहेज के बढते मामलों के बीच छेड़छाड़ के बाद उन्हें सरेआम पेड़ पर लटका देने, उन्हें जिंदा जला देने या हत्या करने जैसे निकृष्ट कृत्यों का जुड़ना क्या दर्शाता है ? क्या ऐसे मामले सचमुच बढ गए हैं या सुर्खियों में आने से प्रकाश में आ जाते हैं ?

नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार साल 1971 में जहाँ दुष्कर्म के मामले 2,487 थे, वह 2013 आते–आते 93,707 तक पहुँच गए। कोलकाता, मुंबई, दिल्ली, जालंधर, चंडीगढ़, हिसार, बदायूँ, अलीगढ़, औरेया, फतेहपुर, इस देश का हर शहर, हर कस्बा, हर गाँव स्तब्ध है, भोगी है गवाह है। साथ ही दोषी भी है... क्रूरता की पराकाष्ठा का, जहाँ स्त्री हर नौवें मिनट पर बलात्कार का शिकार बनती है और हर तीसरे मिनट पर उसके साथ किसी न किसी प्रकार का अपराध होता है। अपराधी किसी जाति या समुदाय विशेष से नहीं होते, ये हमारे परिवारों में ही पनपे वे विकृत लोग हैं जिनके छोटे–छोटे दुस्साहसों को हमने नजरअंदाज किया था। दरअसल दंड और पुरस्कार की अनुचित मात्रा व्यक्तित्व में असंतुलन लाती है और व्यक्ति कुंठा से ग्रसित हो जाता है। इनमें से जो सोबर और अंतर्मुखी होते हैं, वे उन्हें अपेक्षाकृत छिपे ओर सतही उपराधी कहते हैं।

चाय की चुस्कियों के साथ अखबार में घटना पढ़कर कुछ क्षण चर्चा करना, मात्र सामाजिक कायरता है। पीड़िता के साथ खड़ा होना, अपराध का निस्तारण और घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के क्रम में हमें अपनी भूमिका तय करनी होगी, ताकि रूक सके–दुष्कर्म बलात्कार और छेड़खानी। शर्म आती है उन पर जो दुष्कर्म, बलात्कार और छेड़खानी का दोष बड़ी चतुराई से लड़की के माथे पर मढ़ देते हैं। आज हम सबको मिलकर यह शपथ लेनी होगी कि समाज में महिलाओं के प्रति होने वाले अत्याचार को रोकने में कामयाबी हासिल करके रहेंगे, हमारा यह दृढ़ निश्चय है।

इस लेख को अन्तिम रूप देकर मैं यहाँ मशहूर शायर अली सरदार जाफरी की कुछ पंक्तियाँ लिख रही हूँ जो बिल्कुल सटीक बैठती हैं.......

कौन आजाद हुआ,
किसके माथे से गुलामी की सियाही छूटी,
मेरे सीने में अभी दर्द है महकूमी का,
मादरे–हिन्द के चेहरे पे उदासी वही,
कौन आजाद हुआ....
खंजर आजाद है सीनों में उतरने के लिए
मौत आजाद है लाशों पे गुजरने के लिए...
कौन आजाद हुआ....

अफसोस, जब तक महिलाओं पर, यानी आधी आबादी पर हिंसा के वादल मँडराते रहेंगे, दुर्भाग्य का युग खत्म होना असंभव है। मेरा एक विचार–

बिन नारी संसार नहीं, बिन पुरूष संसार नहीं।
नारी के साथ ये अनहोनी, मुझे बर्दाश्त नहीं।।

Scanned by CamScanner

कुछ मुख्य तथ्य

रूचि शर्मा
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

1. हाथ आई सफलता पर न इतराएं।
   क्रोध की प्रतिक्रिया क्रोध नहीं।
   मिलकर रहें, बाँट कर खायें।
   दूर की सोचोगे तो, दूर तक जाओगे।

2. सफलता के लिए जरूरी है, संघर्ष।
   बिना गिरे कैसे जानोगे, उठने के तरीके।
   सुधार की शुरूआत खुद से हो।

3. नदी जब किनारा छोड़ देती है,
   राह में चट्टान तक तोड़ देती है।
   बात छोटी सी अगर चुभ जाए दिल में,
   जिन्दगी के रास्ते को मोड़ देती है।

4. जीवन में एक बार जो फैसला कर लिया तो,
   फिर पीछे मुड़कर मत देखो, क्योंकि
   पलट–पलट कर देखने वाले इतिहास नहीं बनाते।

❑

अनमोल वचन

सफल व्यक्ति कोई अलग प्रकार का कार्य नहीं करते, वरन् वे हर कार्य अलग ढंग से करते हैं।

जिन्दगी में अच्छे लोगों की तलाश मत करो,
केवल 'स्वयं अच्छे बन जाओ'
आपसे स्वयं अच्छे लोग जुड़ते चले जाएंगे।

लक्ष्य

पुष्पा कुमारी
बी. एड

एक मकड़ी कमरे के किसी कोने में जाला बना रही थी। तभी एक चीटी वहाँ आयी और उसने मकड़ी से कहा, मकड़ी बहन, आप यहाँ जाला क्यों बना रही हो ? यह कमरा तो बहुत साफ सुथरा है, यहाँ एक भी कीट–पतंगा नहीं आता। यहाँ आपका जाला बनाना व्यर्थ है, यह सुनते ही मकड़ी ने जाला बनाना बंद कर दिया।

मकड़ी पुनः खिड़की पर जाला बनाने लगी। खिड़की के पास से एक चिड़िया गुजर रही थी। चिड़िया ने मकड़ी से कहा, जल्द ही वर्षा का मौसम आने वाला है, यदि उसने खिड़की पर अपना जाला बनाया तो वह तेज हवा एवं बारिश के कारण टूट जायेगा। अतः उसे खिड़की पर जाला नहीं बनाना चाहिए। इस बार भी मकड़ी ने जाला बनाना छोड़ दिया।

तीसरी बार मकड़ी ने एक टूटी–फूटी अलमारी को जाला बनाने के लिए चुना, लेकिन तभी वहाँ पर एक व्यक्ति आया और बोला यह अलमारी तो बिक गई है, कल चली जायेगी, इसलिए तेरा जाल बनाना बेकार है। फिर से यह सुनते ही मकड़ी ने जाला बनाना छोड़ दिया।

बेचारी मकड़ी भूख और थकान से इतनी कमजोर हो चुकी थी कि वह फिर कभी अपना जाला न बना सकी और अन्त में उसकी मृत्यु हो गयी।

शिक्षा– हमें किसी के कहने पर अपना लक्ष्य बार–बार नहीं बदलना चाहिए और अपने लक्ष्य की ओर ही बढ़ना चाहिए।

❑

Scanned by CamScanner

संघर्ष की राह

सिद्धार्थ गुप्ता
बी.कॉम तृतीय वर्ष

बालक ईश्वरचन्द्र के पिता को तीन रुपये मासिक वेतन मिलता था। परिवार का खर्च चलाना मुश्किल था। ईश्वरचंन्द्र ने अपने पिता की विवशता को देखकर अपनी पढ़ाई के लिए रास्ता खुद ही निकाला। उन्होंने गाँव के उन लड़कों को अपना मित्र बनाया, जो पढ़ने जाते थे। उनकी पुस्तकों के सहारे उन्होंने अक्षर ज्ञान प्राप्त कर लिया। एक दिन उन्होंने कोयले से जमीन पर लिखकर अपने पिता को दिखाया। पिता ने ईश्वरचन्द्र की विद्या के प्रति लगन देखकर तंगी का जीवन जीते हुए भी उन्हें गाँव की पाठशाला में भर्ती करा दिया। स्कूल की सभी परीक्षाओं में ईश्वरचन्द्र ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। आगे की पढ़ाई के लिए फिर आर्थिक तंगी आड़े आ रही थी। ईश्वरचंन्द्र ने फिर स्वयं अपनी राह बनाई और आगे पढ़ने के लिये माता-पिता से केवल आशीर्वाद भर माँगा। उन्होंने कहा कि आप मुझे किसी विद्यालय में भर्ती करा दें फिर मैं आपसे किसी प्रकार का खर्च नहीं माँगूगा। ईश्वरचन्द्र का कोलकाता के एक संस्कृत विद्यालय में दाखिला करा दिया गया। विद्यालय में ईश्वरचंन्द्र ने अपनी लगन और प्रतिभा से शिक्षकों को प्रसन्न कर लिया। उनकी फीस माफ हो गई। ईश्वरचन्द्र के मित्रों ने किताबें उपलब्ध करा दीं। फिर उन्होंने अपना खर्च पूरा करने के लिये मजदूरी शुरू कर दी। ऐसी स्थिति में भी उन्होंने इतना परिश्रम किया कि उन्नीस वर्ष की आयु तक पहुँचते-पहुँचते वह व्याकरण, साहित्य, स्मृति तथा वेद शास्त्र में निपुण हो गए, जिसके लिए पढ़ना कठिन था, वह एक बड़ा विद्वान बन गया। आगे चलकर यही बालक ईश्वरचंन्द्र विद्यासागर के नाम से विख्यात हुआ।

पहेली

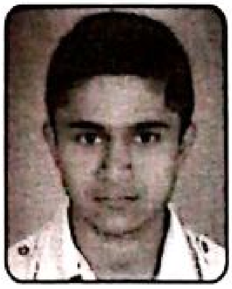

निपुण
बी.कॉम. प्रथम वर्ष

एक बार एक आदमी जंगल से गुजर रहा था। उस जंगल में शिव के तीन मन्दिर थे और पास में एक छोटा तालाब था। तालाब की विशेषता थी कि उसमें फूल धोने पर दुगने हो जाते थे। उस आदमी ने वहाँ से कुछ फूल तोड़े और तालाब में उन्हें धोया तो वह फूल दुगने हो गए। उसने उन दुगने फूलों में से कुछ फूल पहले मन्दिर में चढ़ा दिए। फिर उसने बचे हुए फूलों को तालाब में फिर धोया तो वह फिर दुगने हो गए। फिर उसने जितने फूल पहले मन्दिर में चढ़ाए थे। उतने ही फूल दूसरे मन्दिर में चढ़ा दिए। अब बचे हुए फूलों को उसने फिर धोया और वह फिर दुगने हो गए। फिर उसने सारे फूल तीसरे मन्दिर में चढ़ा दिए। उसने तीनों मन्दिरों में बराबर फूल चढ़ाए थे तो बताओ कि उसने कितने फूल तोड़े और प्रत्येक मन्दिर में कितने-कितने फूल चढ़ाए?

❑

Scanned by CamScanner

"माँ की दुआ"

रवि कुमार
बी.टी.सी. प्रवक्ता

फ्रिक में बच्चों की, ऐसी धुल जाती है माँ,
नौजवॉ होते हुए भी, बूढ़ी नजर आती है माँ,
रूह के रिश्तों की ये गहराई तो देखिये,
चोट लगती है हमें, और चिल्लाती है माँ।
कब जरूरत पड़े मेरे बच्चों को यह सोचकर,
थोड़ी सी आहट से जग जाती है माँ,
घर से जब परदेश जाता है, नूरे नज़र,
हाथ में गीता कुरान लेकर, दर पर आ जाती है माँ।
और जब परेशानी में घिर जाते हैं हम,
पर देश में ख्वाबों में ही आँसू पोंछने आ जाती है माँ,
चाहे हम खुशियों में माँ को भूलें ए दोस्त,
मुसीबत सर पर हो तो याद आती है माँ।
लौटकर वापस सफर से आते हैं हम,
डालकर बाँहे गले में, सर को सहलाती है माँ,
शुक्रिया हो ही नहीं सकता उसका कभी अदा,
मरते-मरते भी दुआ जीने की दे जाती है माँ।
मरते दम तक, बच्चा ना आये परदेश से,
अपनी दोनों आँखे, चौखट पर रख जाती है माँ,
कब्र के आगोश में, जब थक कर सो जाती है माँ,
तब कहीं जाकर, थोड़ा सा सुकून पाती है माँ।
प्यार कहते हैं किसे, ममता भला क्या चीज है,
ये उन बच्चों से पूछिये, जिनकी मर जाती है माँ।

गीत

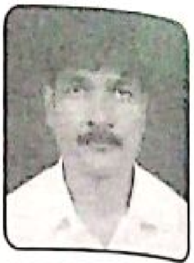

डॉ. नरेन्द्र कुमार सिंह
प्रवक्ता हिन्दी

तुमको नये वर्षकी हार्दिक शुभकामनाएँ,
एक देश,एक वेष, एक हृदय विशेषकर,
आओं एक दूजे को गले से गले लगाएँ।
तुमको नये वर्ष....................

तुम्हारे हर कदम पर शुभ,
पल-पल पर मंगलदीप जलें।
जिसके प्रकाश पर मोहित होकर
कदम से कदम मिलाकर हम वीर चलें।
तुम्हारे चरणों पर चन्दा-सूरज सांझ सकारे,
नमन चढ़ाते हुए करें कामनाएँ।
तुमको नये वर्ष....................

भारत माँ के हृदय को उज्जवल हम ही करेंगे,
क्षण मात्र की चमक-दमक से हम नहीं डरेंगे।
अब संसार को जीतकर माँ के चरणों में
इतिहास, भूगोल बदलकर रखेंगे।
आओ साक्षी मान अल्ला भगवान को,
होली, ईद मनाएँ।
तुमको नये वर्ष....................

Scanned by CamScanner

शिष्य की गुरु से अपेक्षा

लख्मी चन्द्र
प्रवक्ता बी.एड

गुरू आसरा इस जहाँ का मिले न मिले,
मुझको तुम्हारा सहारा सदा चाहिए,
गुरू चाँद तारे फलक पर दिखें न दिखें,
मुझको तुम्हारा नजारा सदा चाहिए। 1
गुरू खुशियाँ हैं कम और ज्यादा हैं गम,
जहाँ देखो वहीं हैं हरम ही हरम,
गुरू मेरी महफिल में शमा जले न जले,
मेरे दिल में उजाला तेरा सदा चाहिए।2
गुरू कभी वैराग हैं कभी अनुराग है,
जहाँ बदले हैं माली वही बाग है,
गुरू तेरी चाहत की दुनिया बसे न बसे
मेरे दिल में बसेरा तुम्हारा सदा चाहिए। 3
गुरू पैर मेरे थके हैं चले न चले,
मेरे दिल में इशारा तुम्हारा सदा चाहिए,
गुरू जिन्दगी का जिन्दगी से वास्ता रहे ना रहे,
पर मुझे तुम्हारा रास्ता सदा चाहिए। 4
गुरू जीवन में जीव रहे न रहें,
मुझे तुम्हारा जीवन सदा चाहिए,
गुरू आसरा इस जहाँ का मिले न मिलें,
मुझको तुम्हारा सहारा सदा चाहिए। 5
गुरू हमारा मान रहे न रहे,
तुम्हारा सम्मान सदा रहना चाहिए,
गुरू हमारा अन्धकार रहे न रहे,
तुम्हारा प्रकाश सदा रहना चाहिए। 6 ❑

आत्म ज्ञान

संजीव कुमार
बी.टी.सी. चतुर्थ सत्र

असन्तोष मन रहे क्षोभ से, सदा क्रोध उसका परिणाम।
कहाँ झेलता आत्म–ज्ञान सब, द्रोह मात्र मन का आयाम।।
दीन–हीन का भाव नहीं जब, परम समान हुआ वह रूप।
जिसे चाह नहीं इन्द्रासन की, उसे देख झुकता सुर–भूप।।
चाह सखी मन का बंधन है, चाहे रहे मोक्ष की चाह।
उदासीन निर्पेक्ष भाव ही, है विरक्ति की पक्की राह।।
है प्रतिद्वन्द व्यथा का कारण, यदि निर्द्वन्द तो क्या स्वीकार।
नहीं उस पर अधिकार किसी का, उसे चाहिये कब अधिकार।।
कर्म विचार श्रंखला टूटी, बस तत्क्षण तुम हुये कृतार्थ।
चाह यदि मन स्वर्ग मोक्ष की, कर्म रहेंगे सब धर्मार्थ।।
यही कहा माधव ने ऋषि से, कर्म–सदा मन का सखि भोग।
किन्तु मात्र तन ही बंधन है, तन–बिन नहीं कर्म उपयोग।।
सद–मन कर्म विवेक, आत्मसत, कृष्ण योग से अगली बात।
पार्थ कर्म ही दे सकता है, महा–समर में तुम्हें निजात।।
जागे स्वप्न सुषप्ति कैसी, भूख–प्यास तो तन को ज्ञात।
सब सखि भाव जुड़े हैं तन से, जैसे सूरज से दिन–रात।।
मात्र हुआ मर्यादित मानव, शुद्ध–आत्ममन· विनय अकूत।
मान रहे है शिव–हरि–ब्रह्मा, पंच तत्व तन बस अवधूत।।
तुरीयावस्था प्राप्त हुई जब, पूर्ण मदः में पूर्ण प्रवेश।
जो तू था जब वही हो गया, बता कहाँ क्या तेरा वेश।।
इसीलिए मैं कहती ललिता, मानव तन ही प्रभु का सार।
है उसका अधिकार सभी पर, नहीं कहीं उस पर अधिकार।। ❑

हँसना मना है

सुमित सक्सैना
कम्प्यूटर आपरेटर

1. टाम – किसकी आँख ज्यादा अच्छी है, आदमी की या चिड़िया की।
   जेरी – चिड़िया
   टाम – कैसे?
   जैरी – कभी चिड़िया को चश्मा लगाते हुए देखा है।
2. व्यापारी के घर में एक चोर घुस आया, रात का समय था, व्यापारी सो रहा था। चोर की आहट सुनकर उठ गया।
   चोर – सोना कहाँ है?
   व्यापारी – पूरा घर खाली है, कहीं सो जाओ।
3. अध्यापिका – बताओ, पृथ्वी पर ओस क्यों पड़ती है?
   छात्रा – पृथ्वी अपनी धुरी पर चक्कर लगाकर थक जाती है और उसे थकान से पसीना आ जाता है।

Scanned by CamScanner

जीवन नहीं मरा करता है

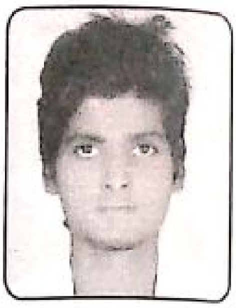

शिवम कश्यप
बी.कॉम. प्रथम वर्ष

छिप–छिपकर अश्रु बहाने वालो,
मोती व्यर्थ लुटाने वालो,
कुछ सपनों के मर जाने से जीवन नहीं मरा करता है।
सपना क्या है? नयन–सेज पर,
सोया हुआ आँख का पानी,
और टूटना है उसका ज्यों
जागे कच्ची नींद जवानी।
गीली उमर बनाने वालो,
डूबे बिना नहाने वालो,
कुछ पानी के बह जाने से सावन नहीं मरा करता है।।
माला बिखर गयी तो क्या है,
खुद ही हल हो गयी समस्या,
आँसू गर नीलाम हुए तो,
समझो पूरी हुई समस्या।
रूठे दिवस मनाने वालो,
फटी कमीज सिलाने वालो,
कुछ दीयों के बुझ जाने से आँगन नहीं मरा करता है।
खोता कुछ भी नहीं यहाँ पर,
केवल जिल्द बदलती पोथी,
जैसे रात उतार चाँदनी,
पहने सुबह धूप की धोती।
वस्त्र बदलकर आने वालो,
चाल बदलकर जाने वालो,
चन्द खिलौनों के खोने से, बचपन नहीं मरा करता है।
कितनी बार गगरियाँ फूटीं
शिकन न आयी पर पनघट पर,
कितनी बार किश्तियाँ डूबीं,
चहल–पहल वैसी है तट पर।
तम की उमर बढ़ाने वालो,
लौ की आयु घटाने वालो,
लाख करें पतझर कोशिश, पर उपवन नहीं मरा करता है।
लूट लिया माली ने उपवन,
लूटी न लेकिन गन्ध फूल की,
तूफानों तक ने छेड़ा पर,
खिड़की बन्द न हुई धूल की।
नफरत गले लगाने वालो,
सब पर धूल उड़ाने वालो,
कुछ मुखड़ों की नाराजी से, दर्पण नहीं मरा करता है। ❑

असम्भव

खुशबू के बिना फूल का होना,
फूल के बिना गुलशन का होना,
गुलशन के बिना यम का होना असम्भव है।
इसी प्रकार कर्म के बिना फल का होना असंभव है।
पृथ्वी के बिना अम्बर का होना,
सूरज के बिना तपन का होना,
चाँद के बिना चाँदनी का होना असम्भव है।
इसी प्रकार गुरू के बिना ज्ञान का होना असम्भव है।
दिन के बिना रात का होना,
दिल के बिना धड़कन का होना,
ममता के बिना माँ का होना असम्भव है।
इसी प्रकार परिश्रम के बिना लक्ष्य का पूरा होना असम्भव है।
संगीत के बिना नृत्य का होना,
दु:ख के बिना सुख का होना,
कला के बिना कलाकार का होना असम्भव है।
इसी प्रकार दया के बिना दयावान का होना असम्भव है।। ❑

मीना खान
कार्यालय अधीक्षिका

किसान की दुर्दशा

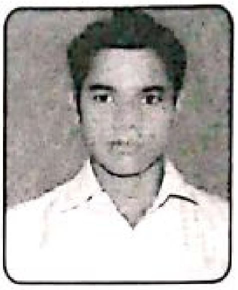

मुनेश कुमार
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

जो देता है खुशहाली, जिसके दम से हरियाली,
आज वही बर्बाद खड़ा है, देखो उसकी बदहाली,
बहुत बुरी हालत है देखो, धरती के भगवान की।
टूटी माला जैसे बिखरी, किस्मत आज किसान की........

ऐसी आँधी चली कि घर का, तिनका–तिनका बिखर गया,
आखिर धरती माँ से उसका, प्यारा बेटा बिछड़ गया,
अखबारों की रद्दी बनकर, कथा बिकी बलिदान की !
टूटी माला जैसे बिखरी किस्मत आज किसान की...........

एक अरब पच्चीस करोड़ की, भूख जो रोज मिटाता है,
कह नहीं पाता कभी किसी से, जब खुद भूखा सो जाता है,
फिर सीने पर गोली खाता, देखो सरकारी सम्मान की !
टूटी माला जैसे बिखरी किस्मत आज किसान की............

किसी को काले धन की चिंता, किसी को भ्रष्टाचार की,
मगर लड़ाई कौन लड़ेगा, फसलों के हकदार की,
सरे आम बाजार में इज्जत, लुट जाती खलिहान की !
टूटी माला जैसे बिखरी, किस्मत आज किसान की............

जो अपने कंधो पर देखो, खुद हल लेकर चलता है,
आज उसी की कठिनाइयों का, हल क्यों नहीं निकलता है,
है जिनसे उम्मीद उन्हें बस, चिंता है मतदान की !
टूटी माला जैसे बिखरी किस्मत आज किसान की...............

देख कलेजा फट जाता है, आँखों से आँसू बहते,
ऐसा न हो मेरी कलम रो पड़े, सच्चाई कहते–कहते,
बाली तक गिरवी रक्खी है बेटी के अभिमान की।
टूटी माला जैसे बिखरी, किस्मत आज किसान की......

इतना सूद चुकाया उसने, कि अपनी सुध भूल गया,
सावन के मौसम झूला लगा के, फाँसी झूल गया,
और अमुआ की डाली पर देखो, लाश टंगी ईसान की।
टूटी माला जैसे बिखरी किस्मत आज किसान की..........

चीख पड़ी खेतों की माटी, तड़प उठी गम से धरती,
बिना कफन पगडण्डी से, गुजरी थी जब उसकी अर्थी,
और आज विदा हो चला, जिसे चिंता थी कन्यादान की।
टूटी माला जैसे बिखरी, किस्मत आज किसान की...........

मैं किसान के बलिदानों के, गीत सुनाया करता हूँ,
बहरों की बस्ती से मैं, फरियाद लगाया करता हूँ,
"मुनेश तो अपना कवि धर्म निभाता, आगे मर्जी राम की।

जीवन सूत्र

- जिस व्यक्ति का जवीन संतुलित है, चित्त निर्मल है तथा मन एकाग्रता लिए है, वही सकारात्मक दृष्टि से सोच सकता है।
- जिस व्यक्ति के विचारों में दिशा, दशा, आशा, उत्साह एवं विश्वास नहीं है, वह नकारात्क दृष्टि से सोचता है।
- सही तरीके की सोच से आपका लक्ष्य नजदीक दिखाई देगा।
- अनावश्यक चिन्ता से डिप्रेशन उत्पन्न होता है, अतः अनावश्यक बातें न सोचें।

Scanned by CamScanner

दुःख का अन्त

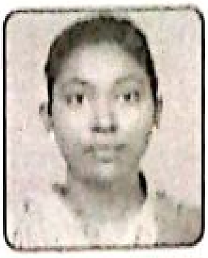

सुजाता
बी.टी.सी.

यादों का दरिया है दिल में,
एहसासों की बुनियाद है हर पल में,
होता कब है अंत दुःख का,
जलती हैं कुछ आत्मा दुःख में,
यह मैंने इस जग में हर पल देखा है।

समय होता एक समान नहीं,
यह कहते मैंने लोगों को देखा है,
जिंदा लाशें बैठीं राह किनारे,
क्या उनकी हाथ की रेखा को,
तुमने कभी बदलते देखा है।

उनके माथे की हर रेखा को,
मैंने हर पल गहरा होते देखा है,
आँखों में आँसू की एक धारा को,
मैने उनकी बहते देखा है,
क्या यही बदलती भाग्य की रेखा है।

जान लिया मैंने आज,
सबको न्याय यहाँ मिलता नहीं,
क्यों ईश्वर धीर सबकी रखता नहीं,
क्या देखकर ज्वाला को दुःख की,
ईश्वर का हृदय कभी पिघलता नहीं।

कोई तरसता यहाँ दो टूक के लिए,
भोजन नहीं पास जिसके,
दो वक्त की भूख के लिए,
क्या यही लिखा था उनकी,
हाथ की रेखा में।

❑

"अभिशाप है मद्यपान"

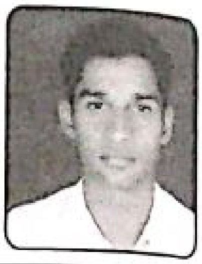

देवेन्द्र सिंह तेवतिया
बी.टी.सी.

हे भारत के वीर सपूतो,
आंग्ल सभ्यता अब छोड़ो।
सुरा–सुन्दरी के चक्कर से,
शीघ्र स्वयं ही मुख मोड़ो।।

मद्यपान से शारीरिक क्षति,
नैतिक मूल्य नष्ट होते।
आर्थिक स्थिति जर्जर होती,
नव–निर्माण स्वप्न खोते।।

सुरापान नाना रोगों से,
करता मानव को आक्रांत।
दुर्घटनाओं, अपराधों से नर,
जीवन को कर विभ्रांत।।

दिशाहीन हो जाता मानव,
अपना करता स्वयं विनाश।
नशा त्याग दें मनुज श्रेष्ठ सब,
करें राष्ट्र का नबल विकास।।

भारतीय जीवन से सारे,
मादक द्रव्य शीघ्र हो दूर।
जिससे अपना देश प्रगति कर,
स्वस्थ, सभ्य हो नित भरपूर।।

राष्ट्रपिता गाँधी कहते थे,
मदिरालय सब है अभिशाप।
जिनमें पलते निन्दनीय सब,
अंधः पतन के क्रिया–कलाप।।

अतः मद्य सब त्याग करें हम,
नर जीवन सुरभित वरदान।
तभी राष्ट्र का नवोत्थान नित,
हो समाज का भी कल्याण।।

❑

Scanned by CamScanner

दोस्ती

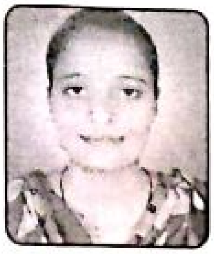

अनु गौड़
बी. टी. सी.

दोस्ती हमको जीना सिखाती है,
दोस्ती जीवन के नये रंग दिखाती हैं,
दोस्ती रूठों को मनाती है,
दोस्ती हर सुख–दुःख में साथ निभाती है।
दोस्ती फूलों की खुशबू की तरह है जो,
जहाँ जाती है हर दोस्त को महकाती है,
दोस्ती हमें दोस्त बनाना सिखाती है,
दोस्ती हमें नये फर्ज सिखाती है,
दोस्ती हमें दोस्तों की सहायता सिखाती है,
दोस्ती बिछड़ों को मिलाती है,
दोस्ती सपनों को सँजोती हैं,
दोस्ती हमें नयी राह दिखाती है।
दोस्ती हमें दोस्त होने का अहसास दिलाती है,
दोस्ती कभी बच्चों की हँसी, बड़ों का प्यार,
माँ का दुलार बन जाती है,
दोस्ती हमको जीना सिखाती है।

भ्रूण की पुकार

रेखा
बी. टी. सी.

पापा मेरे घर आने की, चाह बन्द क्यों करते हो।
भ्रूण परीक्षण करके घर की, राह बन्द क्यों करते हो।।
क्या मुझको अधिकार नहीं, जो मैं दुनिया में आ पाऊँ,
नारी के सम्पूर्ण सत्य को, जग के सम्मुख ला पाऊँ,
मेरी साँसों का असमय ही, प्रवाह बन्द क्यों करते हो,
पापा मेरे घर आने की, चाह बन्द....................

सच कहती हूँ, मेरा आना, किंचित अशुभ नहीं होगा,
मेरे आ जाने से घर में, केवल शुभ ही शुभ होगा,
मन की पावन गहराई की, थाह बन्द क्यों करते हो,
पापा मेरे घर.......................

राखी की महिमा बढ़ जाती, मेरे घर में आने से,
रोली की शोभा–बढ़ जाती, माथे तिलक लगाने से,
बहना के त्योहारों वाला, माह बन्द क्यों करते हो,
पापा मेरे घर.......................

अगर तुम्हें डरना है पापा, तो खुद से ही डरना तुम,
मेरी हत्या करने जैसा, पाप कभी मत करना तुम,
मेरे कारण खुशियों का, निर्वाह बन्द क्यों करते हो,
पापा मेरे घर.......................

मिट कर भी पापा मैं सबको, खुशियाँ देकर जाऊँगी,
भैया की खातिर दुनिया में, बलिदानी मैं कहलाऊँगी,
माँ की ममता को पाने का, उत्साह बन्द क्यों करते हो,
पापा मेरे घर......

ज्ञान की बातें

1. पैसों को तिजोरी में बंद करके रखा जा सकता है, पर समय को बंद करके नहीं रखा जा सकता है। अतः अपने अमूल्य समय को व्यर्थ के कामों में खर्च नहीं करना चाहिए।
2. भलों के संग से विष भी अमृत हो जाता है, बुरों के संग से अमृत भी विष में बदल जाता है। गाय मामूली तिनकों से दूध बना देती है और अमृतमय दूध को सांप जहर में बदल देता है।
3. किसी भी देश के नागरिक की भाषा से उसके मूल देश का परिचय मिलता है और उसके द्वारा किए गए आदर, सत्कार से उसके हृदय की उदारता और कृपणता का अनुमान लगाया जा सकता है।
4. जैसे वृक्ष की जड़ सींचने से उसकी सभी शाखायें और पत्ते तृप्त हो जाते हैं, वैसे ही परमात्मा की भक्ति से सारे देवता प्रसन्न हो जाते हैं।
5. आज की तारीख, आज का दिन दोबारा कभी नहीं आयेगा, इसीलिए आज जितना अधिक कर सकते हो, करो। काम को यह सोचकर करो जैसे आपको आज ही मर जाना है, क्योंकि कल शायद आये न आये।

यतेन्द्र कुमार
सरस्वती भवन

Scanned by CamScanner

लोकेश कुमार
बी. एड

ज्ञान महाविद्यालय तेरी अजब निराली शान है।

1. ज्ञान महाविद्यालय,
तेरी अजब निराली शान है।
वैभवशाली भवन शान्तिमय,
नाम तेरा बहुत महान है।।

2. साक्षरता के प्रसार में,
तूने खूब बढ़ाया हाथ है।
लेते तेरा नाम सभी जन,
पूरे यश–गौरव के साथ है।।

3. बच्चे बनें सुयोग्य नागरिक
स्वच्छ, सुडौल, व्यक्तित्व बनाकर।
शिक्षा का देता ज्ञान है,
ज्ञान महाविद्यालय जिसका नाम है।।

4. पशुता और अज्ञान सभी को
झण्डी लाल दिखाता है।
दानव को मानव कर देता,
इसलिये सभी को भाता है।।

5. दिन–दूनी और रात चौ गुनी,
तू नित उन्नति करता जा।
भारत माँ का हृदय सरोवर,
प्रेम ज्ञान से भरता जा।।

6. तकनीकी के आधुनिक प्रकाश में,
तेरी ज्योति अब प्रचण्ड है।
फूले–फले और करे उन्नति
सरस्वती पूजा की कामना अखण्ड है।। ☐

कलयुग की हास्य कविता

हे, प्रभू आनन्द दाता बस यह उपकार हम् पे कीजिए।
सिर्फ मैं जीता रहूँ और मार सबको दीजिए।।
भक्त हूँ मैं आपका अर्जी प्रभू ले लीजिए।
और जितनी अर्जियाँ हों फाड़ सबको दीजिए।।
फूल, तुलसी और चन्दन की माला, आप सब ले लीजिए।
सौ–सौ के नये नोट बस, मेरी जेब में भर दीजिए।।
मुझको अगले जन्म में प्रभू, बेटा बनाना लाट का।
या प्रभू खटमल बनाना सेठ जी की खाट का।।
दब–दबा मेरा रहे स्कूल और कॉलेज पर।
कूद कर मैं बैठ जाऊँ, प्रिन्सिपल की मेज पर।।
सिर्फ मैं चमकू प्रभू, अखबार के हर पेज पर।
आराम से लेटा रहूँ बस, मखमली सी सेज पर।।
श्रीमती जी आपका चरणामृत लेती रहें,
चाय और सिगरेट पीने को, मुझे देती रहें।।
दो मुझे आशीष पूरे, सौ वर्ष जीता रहूँ।
भक्त बनकर रक्त, जनता का सदा पीता रहूँ।।
ब्लैक रिश्वत की कृपा से, ऐश भी करता रहूँ।
नोट देकर वोट लेकर, चोट भी करता रहूँ।।
और मेरा कौन है, सब कुछ हमारे आप हैं।
आप हमारे बाप के भी, बाप के भी बाप हैं।।
जिसको चाहूँ काट खाऊँ, यह अधिकार मुझको दीजिए।
हे प्रभू आनन्द दाता बस, यह उपकार मुझ पे कीजिए। ☐

Scanned by CamScanner

सामाजिक सरोकार

मुख्य अतिथि आर्टिस्ट श्रीमती लक्ष्मी तुरेहा (ए.बी.के., ए.एम.यू.) ने छात्राओं को किया संबोधित

पोस्टर प्रतियोगिता में अतिथिगण के साथ पोस्टर का प्रदर्शन करते हुए बी.टी.सी. के विजेता छात्र-छात्राऐं

वस्त्र वितरण कार्यक्रम 'पहल' के तहत एकत्र दान हेतु पुराने गर्म कपड़ों के साथ छात्र व समिति सदस्य

ठिठुरती ठंड में असहायों को 'पहल' कार्यक्रम के अन्तर्गत ग्राम हाजीपुर चौहट्टा में वस्त्र विवरण

पर्यावरण दिवस पर पडियावली ग्राम में आयोजित जन चेतना रैली में उपस्थित प्राचार्य, ग्राम प्रधान व अन्य

वृक्षारोपण करती हुए बी.एड. की छात्राऐं

वृक्षारोपण दिवस पर मुख्य अतिथि पर्यावरणविद श्री सुबोध नन्दन शर्मा का पर्यावरण महत्व पर संबोधन

वृक्षारोपण करते हुए प्राचार्य, एन.एस.एस. स्वयंसेवक व प्राध्यापक

Scanned by CamScanner

इंटैक (INTACH) द्वारा आयोजित कार्यक्रम/विविधा

वृंदावन शोध संस्थान में आयोजित कार्यशाला में इंटैक की अधिकारी श्रीमती ममता मिश्र को पत्रिका 'ज्ञान पुष्प' भेंट करते हुए श्री दीपक गोयल

ज्ञान महाविद्यालय में 'इंडिया हैरीटेज क्विज' कार्यक्रम में विजेता टीम को प्रमाण पत्र देते हुए श्री दीपक गायेल

नववर्ष पर आयोजित कार्यक्रम में केक काटते हुए मुख्य अतिथि डॉ. सोनकर व श्रीमती मिथलेश यादव

नववर्ष पर प्रस्तुति देते हुए आर्केस्ट्रा के कलाकार

सरस्वती भवन का भ्रमण करते हुए इंटर कॉलेज के छात्र

जन्तु विज्ञान प्रयोगशाला में जानकारी लेते हुए इंटर कालेज के छात्र

ज्ञान भवन का भ्रमण करती हुईं इंटर कॉलेज की छात्राएं

इंटर कॉलेज के छात्रों ने आर्ट एण्ड क्राफ्ट कक्ष में कलाकृतियाँ देखी

Scanned by CamScanner

विद्यार्थियों को उपहार व ज्ञान पुष्प भेंट

छात्राओं को नववर्ष पर कलैण्डर भेंट

चाबी के गुच्छे के साथ उत्साही छात्र

'ज्ञान पुष्प' वार्षिक पत्रिका की प्रति
प्राप्त कर रोमांचित छात्र

प्रथव वर्ष के नवागत छात्रों को यूनीफार्म भेंट

विभिन्न दिवसों का आयोजन

विश्व उद्यमशीलता दिवस पर सिम्पोजयम
में विचार करती हुई बी.बी.ए. की छात्रा

हिन्दी दिवस पर हिन्दी की महत्वता पर प्रकाश
डालती बी.एड. छात्रा

विश्वकर्मा जयंती पर ज्ञान आई.टी.आई. में हवन व पूजन के
आयोजन में उपस्थित सचिव, निदेशक व प्राचार्य

इंटरनेशनल हैण्ड वाश डे पर बी. टी. सी.
की छात्रा विचार प्रकट करते हुए

Scanned by CamScanner

ज्ञान निजी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (ITI)

ज्ञान निजी आई. टी. आई. भवन

ज्ञान निजी आई. टी. आई. के निदेशक
डा. गौतम गोयल व प्राचार्य के साथ स्टॉफ

QCI पर्यवेक्षक द्वारा कम्प्यूटर कक्ष का अवलोकन

QCI पर्यवेक्षक द्वारा पुस्तकालय कक्ष का अवलोकन

सौर उर्जा उपकरणों का अवलोकन करते हुए
QCI पर्यवेक्षक व डा. गौतम गोयल

इलैक्ट्रीशियन कार्यशला में अवलोकन

मोटर जेनरेटर सेट का परीक्षण

फिटर कार्यशाला में प्रशिक्षु

Scanned by CamScanner

माँ

जितेन्द्र कुमार
बी.कॉम. प्रथम वर्ष

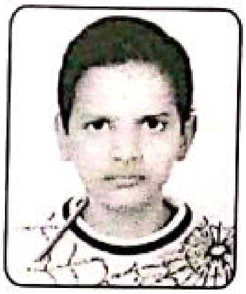

माँ संवेदना है, भावना है, अहसास है,
माँ जीवन के फूलों में खुशबू का वास है,
माँ रोते हुए बच्चे का खुशनुमा पलना है,
माँ मरूस्थल में नदी या मीठा सा झरना हैं,
माँ लोरी है, गीत है, प्यारी सी थाप है,
माँ पूजा की थाली है, मन्त्रो का जाप है,
माँ औरतों का सिसकता हुआ किनारा है,
माँ गालों की पप्पी है, ममता की धारा है,
माँ झुलसते दिनों में कोयल की बोली है,
माँ मेहंदी है, कुमकुम है, सिंदूर है, रोली है,
माँ त्याग है, तपस्या है, सेवा है,
माँ फूँक से ठंडा किया कलेजा है,
माँ कलम है, दवात है, स्याही है,
माँ परमात्मा की स्वयं एक गवाही है,
माँ अनुष्ठान है, साधना है, जीवन का हवन है,
माँ जिन्दगी के मौहल्ले में आत्मा का भवन है,
माँ चूड़ी वाले हाथों के मजबूत कंधों का नाम है,
माँ काशी है काबा है, और चारों धाम है,
माँ चिंता है, याद है, हिचकी है,
माँ बच्चे की चोट पर सिसकी है,
माँ चूल्हा, धुआँ, रोटी और हाथों का छाता है,
माँ जीवन की कड़वाहट में अमृत का प्याला है,
माँ पृथ्वी है, जगत है, धुरी है,
माँ बिना इस सृष्टि की कल्पना अधूरी है,
माँ का महत्व दुनिया में कम नहीं हो सकता,
तो मैं कविता की ये पंक्तियाँ माँ के नाम करता हूँ,
मैं दुनिया की सब माताओं को प्रणाम करता हूँ।

माँ

सुमित सक्सेना
सप्रशासनिक भवन

आसमान ने कहा	–	माँ एक इन्द्रधनुष है, जिसमें सभी रंग समाये हैं।
शायर ने कहा	–	माँ एक ऐसी गजल है, जो सभी के दिलों में उतरती है।
माली ने कहा	–	माँ एक ऐसा फूल है, जो पूरे गुलशन को महकाती है।
सन्तान ने कहा	–	माँ ममता का अनमोल खजाना है।
वाल्मीकि ने कहा	–	माता और मातृभूमि का स्थान स्वर्ग से भी ऊँचा है।
वेद व्यास ने कहा	–	माता के समान दूसरा कोई गुरू नहीं है।
पेगम्बर मौहम्मद साहब ने कहा	–	माँ हस्ती है जिसके कदमो में जन्नत है।

Scanned by CamScanner

आशा का दीपक

चेतन अग्रवाल
बी.कॉम. तृतीय वर्ष

वह दीपक जो दीख रहा है, अब झिलमिल दूर नहीं है।
थक कर बैठ गये क्यों भाई, अब मन्जिल दूर नहीं है।।
चिंगारी बन गयी लहू की, बूँद गिरी जो तुम्हरे पग से।
चमक रहे पीछे मुड़ देखो, चरण चिह्न जगमग से।।
बाकी होश तभी तक, जब तक जलता तूर नहीं है।
थक कर बैठ गये क्यों भाई, अब मन्जिल दूर नहीं है।।
अपनी हड्डी की मशाल से, ह्रदय चीरते तम का।
सारी रात चले तुम, दुख झेलते कुलिश का।।
एक खेय है शेष किसी विध, वार उसे कर जाओ।
वह देखो उस पर चमकता है, मन्दिर प्रियतम का।।
आकर इतना पास फिरे, वह सत्ता शूर नहीं है।
थककर बैठ गये क्यों भाई, अब मंजिल दूर नहीं है।।
दिशा दीप्त हो उठी प्राप्त कर, पुण्य–प्रकाश तुम्हारा।
लिखा जा चुका अनल–अक्षरों में, इतिहास तुम्हारा।।
जिस मिट्टी ने लहू पिया, वह फूल खिलाएगी ही।
अम्बर पर घन बन छाएगा, हो उच्छवान तुम्हारा।।
और अधिक ले जाँच देवता, इतना क्रूर नहीं है।
थककर बैठ गये क्यों भाई, अब मंजिल दूर नहीं है।। ❑

उत्तम बातें

1. जो काम अपने लिए खराब है, उन्हें दूसरों के लिए न करो।
2. अच्छे लोगों की संगति हमारा उपकार कर देती है।
3. दूसरों की बुराइयाँ मत ढूढ़ते फिरो, न किसी भी पीठ पीछे बुराई करो।
4. अपने शत्रु से प्रेम करो।
5. बुरे बचन पशुओं तक को अप्रिय लगते हैं।
6. माता–पिता अपनी सन्तानों के लिए जितने कष्ट सहते हैं, उनका बदला सौ वर्ष में भी नहीं चुकाया जा सकता है।
7. सत्सम्पर्क से लोहा भी सोना बन जाता है।
8. सबसे बड़ा तीर्थ अपना मन होता है।
9. अपने स्वार्थ के लिए कभी किसी का बुरा मत सोचों।
10. अपने अन्दर जो बुराइयाँ हैं उन्हें सुधारो और अपनी जिन्दगी से प्यार करो" ❑

Scanned by CamScanner

ओट

भारती
बी.ए. प्रथम वर्ष

इस ओट की पहेली,
तू जाने न सहेली।
इस ओट में जो देखा,
वो पल था कैसा अनोखा,
वो कल भी था अनदेखा,
वो अब भी है अनदेखा।
हम भूले क्यों न जाने, ये रिश्ते है बेमाने,
जो करते हैं बहाने, वो पल है क्यों अनजाने।
इक बगिया में जब आई तितली,
तो मन में क्यों चमकी थी बिजली।
इस ओट में जो देखा, वो पल था बड़ा अनोखा,
मैं सोचती थी कि इस तितली को,
मैं पंख अपने दूँगी, उड़ान अपनी दूँगी,
मुस्कान अपनी दूँगी, पहचान अपनी दूँगी,
दुलार अपना दूँगी, सानिध्य अपना दूँगी।
पर इक पीढ़ा बड़ी विचलित सी थी जब,
इस ओट मैं मैंने देखा,
वो पल था बड़ा अनोखा,
वो कल भी था अनदेखा,
वो अब भी है अनदेखा।

भ्रष्टाचार मिटाओ देश को बचाओ

कोमल अग्रवाल
बी.एड

भ्रष्ट आचरण से बना यह भ्रष्टाचार,
हर जगह फैली एक बीमारी की भाँति है।
हर दफ्तर और हर कार्यालय में,
रहता है किसी न किसी अवतार में।
बिना रिश्वत और बिना चापलूसी के,
नहीं होता अब किसी गरीब का काम है।
शिक्षा हो या हो कोई सरकारी काम,
बेईमानी तो हर क्षेत्र में समाई है।
ईमानदारी की तो बात कौन करता यहाँ,
चापलूसों की तो खूब कमाई है।
अगर नहीं जागी आज की युवा पीढ़ी,
पछतायेगी जिन्दगी की हेर फेर में।
इतनी भ्रष्ट हो गई है दुनिया,
कि हर कोई रोता इसके खेल में।
भ्रष्टाचार हटाने के प्रयासी को,
भ्रष्ट बताता यह भ्रष्ट तन्त्र है।
ऐसे प्रयासी हैं अन्ना हजारे जी,
जिन पर उँगली उठाती ये सरकार है।
अगर नहीं भागा देश से भ्रष्टाचार,
देश को अनर्थ से बचा नहीं पाओगे।
देश की अवनति देखते जाओगे,
फिर भी इसमें सुधार न कर पाओगे।
अब बस यही अनुरोध है मेरा,
कि भ्रष्टाचार के इस मार्ग को छोड़िये।
अगर नहीं छोड़ सकते इस मार्ग को,
तो देश की उन्नति का विचार अब छोड़िये।

चुटकुले

मालिक नौकर से	–	पहले तुमने कितने साल काम किया है।
नौकर	–	जी 50 साल।
मालिक	–	तुम्हारी उम्र क्या हैं ?
नौकर	–	जी 30 साल
मालिक	–	आश्चर्य से, भई उम्र 30 साल है तो 50 साल कैसे काम किया ?
नौकर	–	साहब पहले मेरा ओवर टाईम भी तो था।

Scanned by CamScanner

भारत के भविष्य की कल्पना

अतुल
बी.कॉम. प्रथम वर्ष

काश ऐसा भी दिन आये,
भ्रस्ट भी श्रेष्ठ बने,
हिंसा भी अहिंसा बने
धर्मों के बन्धन टूटें,
अखण्डता का परचरम लहराये,
काश ऐसा भी दिन आये।
यूँ तो मुश्किल है,
ये कारनामा कर दिखाना,
पर कोशिश करोगे तो साथ देगा जमाना,
गरीब अमीर का भेद मिटे,
ऊँच नीच का बन्धन कटे,
आतंकवाद के काले बादल छटें,
इंसानियत भाईचारे का परचम लहराये,
काश ऐसा भी दिन आये।
देश में जागरूकता की क्रान्ति हो,
हर घर में शांति हो,
हर घर में चूल्हा जले,
भारत का हर बच्चा स्कूल जाये,
काश ऐसा भी दिन आये।
चारों तरफ हरियाली हो,
हर घर में खुशहाली हो,
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई का भेद मिटे,
प्रत्येक व्यक्ति भारतीय कहलाये,
काश ऐसा भी दिन आये।
एक ही परेशानी में क्यों गुजारते हो जिन्दगी सारी,
अभी तो है भारत भविष्यों को उज्जवल बनाने की बारी।

मैं भी शहीद हो जाऊँगी

नीलम भास्कर
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

हिन्द की मैं वासी हूँ, वीर मैं कहलाऊंगी,
जान को कर फिदा, अमर मैं हो जाऊँगी।
कफन तिरंगे का ले, नाम शहीदों मैं पाऊंगी,
गुरू ने मुझसे कह दिया, महान हस्तियों में जानी जाऊँगी।।
ऐसा कुछ मैं भी कर जाऊँगी,
रानी लक्ष्मीबाई, मदर टैरेसा में, मैं जानी जाऊँगी।
हँसते–हँसते प्राण वतन को दे जाऊँगी,
गुरू ने मुझसे कह दिया, महान हस्तियों में मैं पहचानी जाऊँगी।।
छोड़ के पीछे दुनिया सारी, मैं आगे बढ़ जाऊँगी,
मैं अपना देश बनाऊँगी, सबको गले लगाऊँगी।
कुछ ऐसा कर जाऊँगी।
एक शेरनी मैं भी बन जाऊँगी,
एक वीर मैं भी कहलाऊँगी।

Scanned by CamScanner

सफर

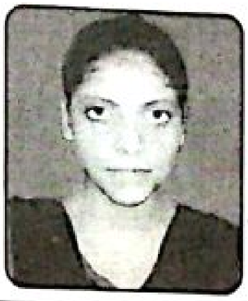

पूनम भारद्वाज
बी.कॉम. प्रथम वर्ष

किस्मतों में ऐसा कोई लिख गया सफर,
पाँव में है आँवले और पर्वतों पे घर।
आसमाँ ही आसमाँ का सौंप के सफर,
कौन जाने आज मेरे पर गया कतर।
हाथ की मुट्ठी खुली तो पल फिसल गये,
जिन्दगी ने ये कहा कि मौत से न डर।
जंगलों की आग शहर तक भी आ गई,
जल गया है प्रति का एक आखिरी शजरा।
तार–तार तन हुआ है जार–जार मन,
स्वप्न चूर–चूर हुये कैसे हो बसर।

दुआ

लव पे आती है दुआ बनके तमन्ना मेरी,
जिन्दगी शम्मा की सूरत ही खुदाया मेरी।
दूर दुनिया का मेरे दम से अँधेरा हो जाये,
हर जगह मेरे चमकने से उजाला हो जाये।
हो मेरे दम से यूँ ही मेरे वतन की जीनत,
जिस तरह फूलों से होती चमन की जीनत।
जिन्दगी हो मेरी परवाने की सूरत या रब,
इल्म की शम्मा से हो मुझ को मुहब्बत या रब।
हो मेरा काम गरीबों की हिमायत करना,
दर्द मन्दों से जईकों से मुहब्बत करना।
मेरे अल्लाह बुराई से बचाना मुझको,
नेक जो राह है उस राह पे चलाना मुझको।

लड़कियाँ बोझ नहीं हैं

दिनेश कुमार
बी.कॉम. प्रथम वर्ष

मैं आयी हूँ आपके घर,
खुशियाँ तो मनाओ पापा,
मुझे गोद में उठाओ, झूला झुलाओ,
लाड़, प्यार दिखाओ पापा,
मै पढ़ना चाहती हूँ,
स्कूल में दाखिला दिलाओ पापा,
मम्मी तो सारा काम करती हैं,
आप ही स्कूल छोड़ आओ पापा,
शाम हो गयी,
घूमने चलो पापा,
चलते–चलते थक गयी,
कन्धे पे बिठाओ पापा,
अन्धेरे से ड़र लगता है,
सीने से लगाओ पापा,
मम्मी तो सो गयी,
आप ही थपकी देकर सुलाओ पापा,
स्कूल तो पूरी हुयी,
कॉलेज जाने दो पापा
कॉलेज में छोटी सी गलती हो गयी,
माफ कर दो पापा,
छोटी सी भूल की इतनी बड़ी सजा,
जब डोली में बिठा ही दिया तो
आँसू तो मत बहाओ पापा,
आपकी मुस्कुराहट अच्छी है,
इक बार मुस्कुराओ पापा,
आपने मेरी हर बात मानी,
इक बात और मान जाओ पापा,
इस धरती पे बोझ नहीं हूँ मैं
दुनिया को समझाओ पापा।

Scanned by CamScanner

मेरे पापा मेरी सोच मेरी दिशा

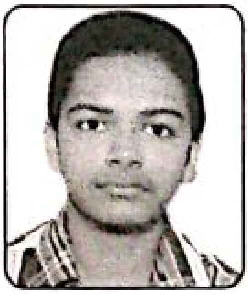

फिर पकड़ कर चलना सिखाया,
मुश्किलों में सँभलना सिखाया,
राहों को मेरी आसान बनाया,
मेरे सभी सपनों को सजाया,
कभी दोस्त तो कभी गुरू बनकर,
मुझे मेरी मंजिल से मिलाया।
सच को दिशा देकर, मुझे सफल बनाया।
समझा मुझे करीब से मेरी सभी बातों का,
रखा ख्याल, हर दिन रूप बदल कर,
मुझे चौकाया, हँसाया जीना सिखाया।
मुश्किल रास्तों में मेरे कदम बनकर।
मंजिलों तक पहुँचाया।
काबिल बनाया मुझे हर खुशी देकर रखा,
एक राज कुमार की तरह।

DISCIPLINE CALCULATION

If A=1, B=2, C = 3 etc.

Then we know that discipline is cent percent correct in our life, You can rank yourself.

D	:	04	L	:	12
I	:	09	I	:	09
S	:	19	N	:	14
C	:	03	E	:	05
I	:	09	Total	:	100
P	:	16	100% Correct		

Always Ought to be followed,

मोहित वार्ष्णेय
बी.कॉम. प्रथम वर्ष

चौखट

रजनी कुमारी
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

कह रहे हैं सब,
बदल रही है दुनिया,
बदल रही है औरत,
और उसकी नियति,
बदल रहा है घर,
और उसकी रूपरेखा,
बहुत–सी सुविधाओं से,
भरी पूरी हो गई है, उसकी दुनिया,
मगर देखते ही नहीं हैं लोग,
घर की ऊँची चौखट,
जिसे लाँघती औरत आज भी
हो रही है लहूलुहान,
बदल गई है दुनिया,
बदल गया है घर भी,
मगर बदली नहीं है,
चौखट घर की।

चुटकुले

शिक्षक - छात्रा से, बताओ कुतुबमीनार कहाँ है?
छात्रा - पता नहीं, सर
शिक्षक - बैंच पर खड़े हो जाओ।
छात्रा - बैंच पर खड़ा होकर बोला, सर कुतुबमीनार तो अब भी नहीं दिख रही।

Scanned by CamScanner

देश भक्ति

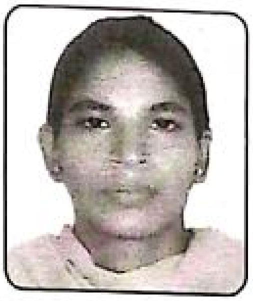

जो मेरे देश को आजादी दे गये,
उन शहीदों को मेरा नमन,
उन वीरों को मेरा नमन।

1. देह से जान तक जख्म खाते गये,
उन घड़ी में भी वो मुस्कराते गये,
सर कफन बाँधकर, देश अमन मानकर,
कर गये देश मेरा चमन,
उन शहीदों को मेरा नमन।

2. जिनकी होली हुयी खून के रंग से,
और दिवाली पर गोली से छलनी हुयी,
राह तकती रही राखियाँ बहनो की,
पर हुआ न दुवारा मिलन,
उन शहीदों को मेरा नमन।
जो मेरे देश को आजादी दे गये,
उन शहीदों को मेरा नमन,
उन वीरों को मेरा नमन।

प्रीति कुमारी
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

आज की दुनिया

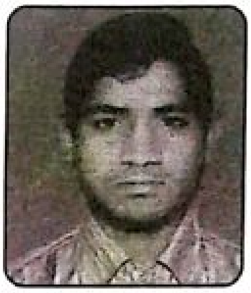

नयी सदी से मिल रही है, दर्द भरी सौगात।
बेटा कहता बाप से, तेरी क्या औकात।।
अब तो अपना खून भी, करने लगा कमाल।
बोझ समझ माँ बाप को, घर से रहा निकाल।।
पानी आँखों का मरा, मरी शर्म और लाज।
कहें बहू सास से, घर में मेरा राज।।
भाई भी करता नहीं, भाई पर विश्वास।
बहन पराई हो गयी, साली खासम खास।।
मन्दिर में पूजा करें, घर में करें कलेश।
बापू तो बोझ लगे, पत्थर लगे गणेश।।
बचे कहाँ अब शेष हैं, दया धरम ईमान।
पत्थर के भगवान हैं, पत्थर दिल इंसान।।
पत्थर के भगवान को, लगते छप्पन भोग।
मर जाते फुटपाथ पर, भूखे प्यासे लोग।।
फैला है पाखण्ड का, अन्धकार सब ओर।
पापी करते जागरण, मचा–मचा के शोर।।
पहन मुखौटा धर्म का, करते दिन भर पाप।
भंडारे करते फिरें, घर में भूखा बाप।।

शिशुपाल
बी.ए. तृतीय वर्ष

चुटकुले

एक पति–पत्नी में लड़ाई हो गयी जिसके बाद पति दिन भर घर से बाहर रहा शाम को भूख लगी तो समझौता करने के विचार से उसने घर पर फोन किया और पूछा आज रात खाने में क्या बनाया है?

पत्नी – गुस्से से बोली – जहर बनाया है।
पति – ठीक है, मैं जरा देर से लोटूँगा, तुम खा लेना।

शेखर (समीर से) यार तुम्हारा पेपर कैसा हुआ?
समीर – क्या बताऊँ यार, मुझे तो किसी सवाल का जबाब नहीं आता था, इसलिए मैं तो खाली कॉपी छोड़कर चला आया।
शेखर – अरे ये तुमने क्या किया मैं भी खाली कॉपी छोड़कर आया हूँ। हम पर एक दूसरे की नकल का आरोप लगेगा।

Scanned by CamScanner

मैं हूँ एक लड़की

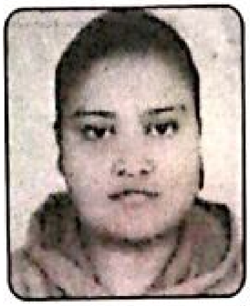

मैं हूँ एक लड़की,
मैं भी एक इन्सान,
मुझे जीने का अधिकार दो,
न आधा न कम,
मुझे पुत्र के समान प्यार दो,
घर का चूल्हा नहीं न ही झाड़ू मटका,
मुझे पढ़ने का अधिकार दो,
मै हूँ एक लड़की,
मैं भी एक इन्सान।
मुझे कल्पना चावला बनकर नीले गगन को छूने दो,
मुझे इन्द्रिरा गाँधी बनकर देश को चलाना है,
एक सफल भारी क्रान्ति को लाना है,
केवल भोग विलास का साधन नहीं हूँ मैं,
जिस देवी, दुर्गा, लक्ष्मी को पूजते हो,
उसी का करते हो अपमान,
लड़की को लक्ष्मी कहते हो,
तो फिर क्यों लक्ष्मी को बोझ समझते,
नहीं बढ़ेंगे पुरूषों से आगे,
केवल साथ चलने का तो अधिकार दो,
मैं हूँ एक लड़की
मै भी एक इन्सान,
मुझे जीने का अधिकार दो,
मुझे पढ़ने का अधिकार दो।

❑

कविता कुमारी
बी.एस-सी. तृतीय वर्ष

"बेटी की आवाज"

बेटा का सम्मान है घर में,
बेटी का कोई मान नहीं,
ए प्यारे इन्सान बता दे,
बेटी क्या सन्तान नहीं।
क्या लेकर जन्मा है बेटा
बेटी ने क्या खोया है।
पैदा होते ही जीवन में,
उसने क्या कुछ बोया है,
तूने लाल को दूध पिलाया,
बेटी को दी छाछ नहीं
ऐ प्यारे इन्सान..........................
लाल तेरा कॉलेज में पढ़ता,
बेटी को अक्षर ज्ञान नहीं,
वाल काल में विवाह रचाया,
जीवन के अरमान नहीं,
बेटी का पैदा होना,
है कोई अभिशाप नहीं,
ऐ प्यारे.....................
बेटी पढ़ लिख कर देखो,
बनती बड़ी महान है,
दोनों कुल की लाज रखेगी,
जिसको अक्षर ज्ञान है।
बेटा बेटी में भेद न मानो
इससे बड़ा कोई पाप नहीं
ऐ प्यारे इन्सान बता दे,
बेटी क्या सम्मान नहीं।।

❑

प्रियंका वशिष्ठ
बी.एस-सी. तृतीय वर्ष

Scanned by CamScanner

सफल लोगों की सात अच्छी आदतें

रिशु गुप्ता
बी. कॉम तृतीय वर्ष

पहल करो– कई लोग काम से बचते हैं। कुछ बहाने बनाते हैं कि करना ना पड़े। पर कुछ लोग होते हैं जो पहल करते हैं। जब काम करते हैं तो मुस्कुराते हुए उत्साह से करते हैं।

मंजिल सामने रखो – इसका अर्थ है मंजिल अच्छी तरह समझकर ही कार्य प्रारंभ करना चाहिए। हम कहाँ जा रहे हैं, अभी कहाँ हैं, हमारा हर कदम सही दिशा में व मंजिल प्राप्त करने में लगे।

जरूरी काम पहले – अर्थात् पहले क्या जरूरी है उसे करना। काम की Priorities होती है। अपने सारे कामों की सूची बनाना। फिर इसमें ज्यादा जरूरी है, उसे पहले लिखना और उसी अनुसार करना।

अच्छी बातों का लेन–देन – कुछ लोग तुम्हारे अच्छे सुझाव भी लेंगे व अपने भी अच्छे सुझाव देंगे और सफलता प्राप्त कर लेंगे। कई लोग दूसरों की बात या सुझाव सुनते ही नहीं। यह ठीक नहीं है।

दूसरों को सुनो व समझो – कुछ लोग दूसरे की सुनते ही नहीं हैं। उनकी Listening की आदत नहीं रहती। इससे आपसी सम्बन्ध बिगड़ जाते हैं। पहले उनकी बात समझो, तोलो फिर बोलो।

मिलकर करें – जब दो या ज्यादा लोग आपस में स्नेह व मन से टीम बनाकर काम करते हैं तो काम कई गुना अधिक तेजी से हो जाता है। ऐसे काम की क्वालिटी भी ज्यादा अच्छी होती है। एक और एक ग्यारह बनो।

धार पैनी करें– जो लकड़ी काटते हैं वे पहले कुल्हाड़ी की धार पैनी करते हैं, फिर कुल्हाड़ी चलाते हैं। इसी तरह आप अपनी बुद्धि शक्ति व अध्यात्म को खेल, योग, ध्यान व स्वास्थ्य व मैनेजमेंट ट्रेनिंग से बढ़ाओ। पहले स्वयं का व्यक्तित्व विकसित करो, फिर जो भी करोगे अच्छा करोगे। सोचो फिर करो।

❑

अपने अन्दर देख

पूजा वार्ष्णेय
बी. कॉम प्रथम वर्ष

बोल सको तो मीठा बोलो,
झूठ बोलना मत सीखो।
लगा सको तो बाग लगाओ,
आग लगाना मत सीखो।
जला सको तो दीप जलाओ,
दिलों को जलाना मत सीखो।
बिछा सको तो फूल बिछाओ,
शूल बिछाना मत सीखो।
दुनिया एक कसौटी है,
इस पर खुद को कसकर देख।
अपने घर का मंजर देख,
फिर दुनिया के अन्दर देख।
सबसे यह महफूज जगह,
अपने अन्दर छिपकर देख। ❑

Scanned by CamScanner

नीति

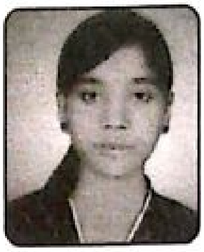

प्रीती गोस्वामी
बी.ए. द्वितीय वर्ष

तन उजला मन गांधला, कम न होय कुछ गंद,
जब उजियारा होय मन, तब कटे जगत के फंद।
जग छीना तू रो रहा, क्या पागल तेरा जाये,
जग का जग ने ले लिया, तेरा कहा लगाय।
आयो जग लायो ना कुछ, ना जग से लेजाय,
सब कुछ है, इस जगत का, जग में सब रह जाये।
जग का जग को बाँट जा, दोनों हाथ बढ़ाए,
तू सब अपना मानता कैसो गयौ पगलाए,
सब जग का जग में रहे, गया तो क्यों पछताए।

❑

जिन्दगी का गुलदस्ता

अजय कुमार मौर्य
बी.एड

"जीवन सौन्दर्य है – इसकी प्रशंसा करो
जीवन आनन्दमय है – इसे अनुभव करो
जीवन एक सपना है – इसे महसूस करो
जीवन एक चुनौती है – इसका सामना करो
जीवन एक कर्त्तव्य है – इसे पूरा करो
जीवन एक पहेली है – इसे हल करो
जीवन प्रेम है – इसका लुफ्त उठाओ
जीवन साहस भरा खेल है – हिम्मत करो
जीवन एक माला है – इसे पूरा करो
जीवन एक उपहार है – इसे स्वीकार करो
जीवन एक दुःख है – इस पर विजय पाओ
जीवन एक दुर्घटना है – मुकाबला करो
जीवन एक सौभाग्य है – इसका निर्माण करो
जीवन बेहद कीमती है – इसे नष्ट मत करो
जीवन जीवन है – इसके लिये संघर्ष करो

❑

जीवन के रंग

तनु रानी
बी.ए.

जीवन के रंग निराले हैं,
कहीं जिन्दगी सुख भरी तो
कहीं दुःख भरे नाले हैं।
पेड़ों की हलचल,
नदियों की कल–कल,
हवा के साथ सभी चलने वाले हैं,
जीवन के रंग निराले हैं।
बादल की गर्जन,
कोयल की कूकन,
चाँदनी रात पूनम,
अन्धेरी रात में तारों के उजाले हैं,
जीवन के रंग निराले हैं।
आसमान ऊपर है तो,
जमीं नीचे है,
मानव के बिना,
सब फीके हैं,
प्रकृति के ये रंग अद्मुत निराले हैं,
जीवन के रंग निराले हैं।

❑

Scanned by CamScanner

मैं हूँ कि उठती जाती हूँ

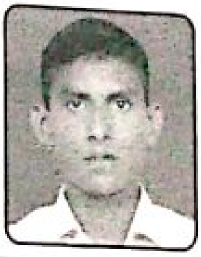

अरविन्द सागर

बी.ए. द्वितीय वर्ष

तुम मुझे अपने तीखे और विकृत झूठों के साथ,
इतिहास में शामिल कर सकते हो,
तुम मुझे धूल की तरह कुचल सकते हो,
लेकिन फिर भी मै धूल की तरह,
उठती जाऊँगी।

क्या मेरी बेवाकी तुम्हें परेशान करती है,
क्यों घिरे बैठे हो उदासी में,
क्योंकि मैं इस तरह इतराती चलती हूँ,
जैसे मेरे कमरे में कोई तेल का कुआँ,
तेल उगल रहा हो।

जैसे चाँद और सूरज उगते हैं,
ज्वार की निश्चितता की ओर उछलती है,
उसी तरह मैं भी उठती जाऊँगी,

क्या तुम मुझे झुके सिर और नीची
निगाहों के साथ टूटा हुआ देखना चाहते हो,
मार्मिक सदन से कमजोर हो चुके,
ढुलकते कन्धों के साथ।

क्या मेरी अकड़ से ठेस पहुँचती है तुम्हें,
क्या तुम्हें मुझे इस तरह से कहकहें
लगाते हुये देखना कठिन लगता है।

जैसे मुझे अपने घर के पिछवाड़े
सोने की खदान मिल गई हो,
तुम अपने शब्दों से मुझे मार सकते हो,
चीर सकते हो, मुझे अपनी निगाहों से,
अपनी नफरत से कर सकते हो मेरी मृत्यु,
फिर भी हवा की तरह
मै उड़ती जाऊँगी।

क्या मेरी कामुकता परेशान करती है तुम्हें,
क्या तुम्हे ताज्जुब होता है कि,
मैं यूँ नाचती फिरती हूँ,
जैसे हीरे जड़े हों मेरे टखनों पर

इतिहास के शर्म के छप्परों से बाहर मैं उड़ती हूँ
अतीत में निहित दर्द की जड़ों से ऊपर मैं उठती हूँ।

मैं एक स्याह—उछलता हुआ और
लहरों के गिरने—उठने को
जज्ब करता हुआ विस्तृत समुन्दर हूँ,
डर और आतंक की रातों को पीछे छोड़ मैं उड़ती हूँ,
आश्चर्यजनक रूप से एक साफ सुबह से मैं उड़ती हूँ,
उन तोहफों के साथ,
जो मेरे पुरखों ने मुझे सौंपे थे मैं उठती हूँ,
मैं ही गुलामों का सपना और उम्मीद हूँ
मैं उठती हूँ......... मैं उठती हूँ......... मैं उठती हूँ।

Scanned by CamScanner

घर आयेगी नई हवा

गोपाल सिंह
बी.ए. द्वितीय वर्ष

खोल दिये सब द्वार खिड़कियाँ,
घर आयेगी नई हवा,
बहुत दिनों के बाद खिला है,
फूल मोगरे का मन में,
लहक भर गई है खुशबू की,
मुरझाय से यौवन में,
सतिये जैसी शुभ आकृतियाँ
रच जायेगी नई हवा।
दूर क्षितिज पर एक दूजे से,
धरा गगन बुदबुदा रहे,
इन्द्र धनुष के रंग बावरे,
बादल को गुदगुदा रहे,
छंद भरी एक नई तिजोरी,
भिजवायेगी नई हवा।
महक उठी दीवारें कच्ची,
बूँदें बारिश की पीकर,
शब्दों के पुल बाँध दिये,
हमने होठों को सीकर,
नदिया सी बह रही बदन में,
इठलायेगी नई हवा। ❑

चुटकुला

1. रमन व सुरेश नाव में कहीं घूमने जा रहे थे। जब नाव डूबने लगी तो–
सुरेश – अरे रमन यह नाव तो डूब रही है।
रमन – चिल्लाता क्यों है ? नाव अपनी नहीं है। यह तो किराये की है।
2. शिक्षक – सर्दियों में दिन छोटे और गर्मियों में दिन बड़े क्यों होते हैं ?
छात्र– सर, ठण्ड से चीजें सिकुड़ती और गर्मी से फैलती हैं।

माँ बेटी

दीपिका शर्मा
बी.ए. तृतीय वर्ष

क्या हुआ जो मैं लड़की हूँ,
क्यों मैं तेरा अंश नही,
क्या मुझसे तेरा वंश नहीं ?
सोच के लड़की हूँ मैं माँ,
क्या तू इतना घबराती हैं,
कौन सा ऐसा काम है जिसमें,
लड़कियाँ लड़कों से मात खाती हैं ?
मैं भी पढ़–लिखकर एक दिन,
पैरों पर खड़ी हो जाऊँगी,
नाम करूँगी तेरा रोशन,
सम्मान तेरा मैं बढ़ाऊँगी।
तेरी जिम्मेदारी अपने,
कन्धों पर मैं उठाऊँगी,
नहीं हूँ बेटा पर तेरे,
सुख–दुःख में साथ निभाऊँगी।
माँ मुझसे ही तो चलती है,
ये सृष्टि और ये दुनिया,
फिर क्यों मुझको कमतर समझे,
ओ मेरी प्यारी मैया। ❑

Scanned by CamScanner

गजलीयात और अशआर

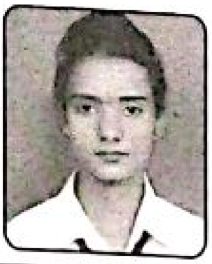

प्रियंका शर्मा
बी.बी.ए. चतुर्थ

हर समय प्यार की बात होती नहीं,
रोज तो चाँदनी रात होती नहीं,
जाग उठने से ही दिन निकलता नहीं,
नींद आने से ही रात होती नहीं।
प्यार में एक ऐसी अवस्था भी है,
होंठ हिलते हैं पर बात होती भी है,
इधर रूप की धूप ऐसी खिली,
दिन ढला है, मगर रात होती नहीं।
आँख की बात दिल जब समझने लगे,
बात ये है कि फिर बात होती नहीं,
दिल किसी धर्म में कैद करता नहीं,
आशिकों की कोई जात होती नहीं।
बात बन जाए,जो बात ही बात में,
इससे बढ़कर कोई बात होती नहीं।
शीशा कहा गया, कभी–पत्थर कहा गया,
दिल जैसी चीज को क्या–क्या कहा गया,
शेरों में उसके हुस्न को क्या–क्या कहा गया,
बादल को जुल्फ, फूल को चेहरा कहा गया।

❑

हास्य व्यंग

00 मैडम– बताइये कि हवा और पानी की क्या उपयोगिता है।
रीतू– मैडम हवा टयूब में भरने के काम आती है, जबकि पानी से यह पता चलता है कि टयूब में पंचर कहाँ हुआ है।

00 एक महिला अपने बच्चे के साथ बस में चढ़ी और एक टिकट लिया।
कंडक्टर ने बच्चे से पूछा– तुम्हारी उम्र कितनी है?
बच्चा– मैं चार साल का हूँ।
कंडक्टर– तुम पाँच साल के कब होगे?
स्टेशन आने पर– कंडक्टर की तरफ देखकर बच्चे ने कहा, जब मैं बस से उतर जाऊँगा।

मैंने सुना है

मैंने सुना है, जादू होता है,
चंदा में, तारों में,
बादलों में कुहासों में,
बगिया के फूलों में,
कल–कल बहती,
नदियों और झरनों में,
जो इस धारा को,
सुंदरता प्रसन्नता से भर देता है।
आपको ये भी मालूम होगा,
आँसुओं में भी जादू होता है,
जादू होता है आह में भी
पिघलाकर रख देते हैं
जो लोहे की भी।

❑

प्यार की अनुभूति

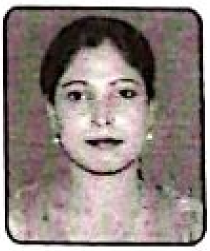

भारती कुमारी
बी.ए. प्रथम वर्ष

प्यार ईश्वर का दिया गया अनमोल उपहार है, जो हम सब में समाहित है।

प्यार से जिन्दगी सँवर जाती है, प्यार जिस हृदय में बसता है,

वह हृदय ईश्वर का घर होता है। प्यार दिलों को जोड़ता ही नहीं, बल्कि उन्हें सबके साथ जोड़ता है।

प्यार जरूरी नहीं कि सिर्फ मनुष्य का मनुष्य से हो जबकि प्यार तो किसी प्राणी मात्र से भी हो सकता है।

प्यार की अनुभूति जहाँ होती है, वहाँ सकारात्मकता होती है।

Scanned by CamScanner

एक से दस अंकों का भारतीय समाज में स्थान

सीनेश जैन
बी.टी.सी.

एक – परमात्मा
दो पक्ष – शुक्ल पक्ष, कृष्ण पक्ष
तीन ऋण – मातृ–पितृ ऋण, गुरू ऋण कृषि– मुनि ऋण।
तीन लोक – स्वर्ग लोक, पाताल लोक, मृत्यु लोक
तीन गुण – सतोगुण, तमोगुण, रजोगुण
तीन ताप – दैहिक, दैविक, भौतिक
चार आश्रम – ब्रह्मचर्य, ग्रहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास
चार वेद – ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद
चार नीतियाँ – साम, दाम, दण्ड, भेद
चार फल – धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष
चार दिशायें – पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण
पाँच पंचामृत – दूध, दही, घी, शक्कर, शहद
पंचतत्व – अग्नि, पृथ्वी, आकाश, वायु, जल
छः दर्शन – न्याय, वैशेषिक, साँख्य, योग, मीमांसा, वेदान्त
छः ऋतुये – बसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर
छः रस – खट्टा, मीठा, कसैला, कड़वा, अम्लीय, नमकीन
सात स्वर – षड्ज, ऋषभ, गंधार, मध्यम, पंचम, धैवत, निषाद
अष्ट धातु – सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा, जस्ता, रांगा, शीशा पारा
अष्ट सिद्धियाँ – अणिमा, गरिमा, महिमा, लघिना, प्रकाम्य, ईशित्व, वशित्व, प्राप्ति
नव रत्न – हीरा, मोती, पन्ना, गोमेद, पुरूराज, लहसुनिया, नीलम, मूँगा, माणिक।
नव काव्य रस – श्रृंगार रौद्र, वीर, वीभत्स, अद्‌भुत, हास्य भयानक, करूणा, शांत।
नव निधियाँ – पद्‌म, महापद्‌म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुंद, नील, सर्व।
दस अवतार – मत्स्यं, कूर्म, वराह नृसिंह, तामन, परूशराम, राम, कृष्ण, बुद्ध, कल्कि
जैन धर्म के दस लक्षण – उत्तम क्षमा, उत्तम मार्दव, उत्तम आर्जव, उत्तम शौच, उत्तम सत्य, उत्तम संयम, उत्तम तप, उत्तम त्याग, उत्तम अकिंचन, उत्तम ब्रह्मचर्य।
धर्म के दक्ष लक्षण – घृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय, निग्रह, विद्या, सत्य, अक्रोध

विमर्श

संजीव कुमार
बी.टी.सी. चतुर्थ सत्र

कर्म श्रेष्ठ यदि धर्म कर्म से सम्पादित होता है।
दीन–हीनता की सँकुल में कर्म–हीन रोता है।।
अपना कर्म मात्र परहित ही जो करता मुस्काता।
वही श्रेष्ठ जो त्याग भाव से सबको सुखी बनाता।।
उठा पवन सुत परहित गर्जा, सिंधु लाँध गिरि लाया।
जो उठ गया सदा परहित में स्वर्ग धरा पर आया।।

मैं दीपक हूँ

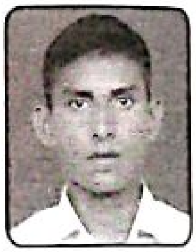

अरविन्द सागर
बी.ए. द्वितीय वर्ष

मैं दीपक हूँ,
जलना मेरा काम है,
रातों के घर,
मेरी उम्र गुलाम है।

मैं माटी का राजकुँवर,
माटी में मिल जाऊँगा,
लेकिन जब तक साँस चलेगी,
बस उजियारा गाऊँगा,
मेरी बाती सूरज का विश्राम है।

मैं सूरज का वंशज,
कुल को दाग न लगने दूँगा,
ड्योढ़ी पर रहते मैं तम के,
पाँव न जमने दूँगा,
राह कठिन है मेरी पर निष्काम हैं।

मैं हूँ तो यह चहल पहल है,
जगमग दीपावलियाँ,
शंख, आरती, पूजन, अर्चन,
नभ पर तारावलियाँ।

Scanned by CamScanner

माँ-बाप

रूचि शर्मा
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

माँ–बाप जब बूढ़े हो जाते हैं,
उनके बच्चे उन्हें छोड़ जाते हैं,
छोड़कर बनाते है फिर नया आशियाँ,
भूल जाते हैं वे उनकी कुर्बानियाँ।

छोड़कर अकेला मनाते हैं, पिकनिक, दीवालियाँ।
जबकि माँ–बाप याद करते हैं, उनकी किलकारियाँ।
कोई जाकर के कह दे उनसे जरा,
कि माँ–बाप को चाहिए उनका आसरा।

वो चाहते हैं बच्चे रहें साथ में,
इस बुढ़ापे में हाथ उनका रहे हाथ में।
जैसे थामी थी उँगली तुम्हारी कभी,
तुम भी थाम लो जाकर उनको अभी।

जीवन भर जिये वो जिनके लिये,
आज कर दिया लापता तुमने उनके लिये।
माँ–बाप के बिना वो घर वीरान है,
वो घर जिस घर में न माँ–बाप का सम्मान है।

बन जाता है श्मशान है।
जिस घर में होता उनका अपमान है।
जो सोचते हैं हमें फूल सा,
उन्हें भी दीजिए प्यार का हौसला।

सच कर दो उनके सपने सभी,
बैठकर उनके चरणों में जाकर अभी। ❑

परोपकार

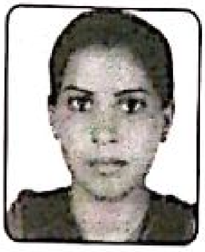

प्रियंका कुमारी
बी.ए. प्रथम वर्ष

पेड़ सहते धूप खुद,
देते सभी को छाँह अपनी,
मदद करने को बढ़ाते,
डालियों–सी बाँह अपनी।
खींचते रहते निरतर,
ये हवा गंदी हमारी,
हमें मिलती है इन्हीं से,
प्राण वायु शुद्ध सारी।
सींचते धरती हमारी,
बादलों को भी बुलाते,
जल बरसता खेत उपवन,
वन सभी हैं लहलहाते।
जाएँ उनको काटते ही,
तो मिलेगी छाँह कैसे,
मदद करने को बढ़ेंगी,
डालियों–सी बाँह कैसे।
और लेते साँस–भी फिर,
प्राण–वायु कहाँ मिलेगी,
प्राण–वायु नहीं मिली,
तो जिंदगी कैसे चलेगी। ❑

Scanned by CamScanner

भ्रष्टाचारी

रिचा गौतम
बी.एस-सी. तृतीय

मौका मिला है तो हम बताते हैं,
कि कितने भ्रष्टाचारी हैं इस देश में,
पोल इनकी खोलकर हम बताते हैं
कि कितने भ्रष्टाचारी हैं इस देश में।

डॉक्टर ये बन जाते हैं,
टेस्टिंग पर टेस्टिंग कराते हैं,
किडनी निकाल कर बेच देते हैं,
कि इतने भ्रष्टाचारी हैं इस देश में।

वकील ये वन जाते हैं,
तारीख पर तारीख डलवाते हैं,
जान बूझकर केस हार जाते हैं,
कि इतने भ्रष्टाचारी हैं इस देश में।

पुलिस ये बन जाते हैं
लोगों को ये सताते हैं,
रिश्वत के पैसे खाते हैं,
कि इतने भ्रष्टाचारी हैं, इस देश में।

मौका मिला है तो हम वताते हैं,
कि कितने भ्रष्टाचारी हैं इस देश में,
पोल उनकी खोलकर हम वताते हैं,
कि कितने भ्रष्टाचारी है इस देश में।

तुम्हें जीतना होगा

जीत की पहली सीढ़ी वो है,
जिसका नाम है हार,
हार से जीत शुरू होती है,
समझ भी लेना यार।

लम्बा जीवन उम्र है बाकी,
क्यों होते हो मायूस,
छेद बना दे पत्थर पर भी
पानी की बस एक धार।

गलती से भी नहीं सोचना,
हार नहीं है अपमान,
छिपी सफलता कोशिश में है,
कर तू थोड़ा इन्तजार।

ये समय सरकता जाएगा,
फिर होगा जो पछतावा,
मत ठुकराओ इस पल को,
आगे होंगे अच्छे आसार।

मन की शक्ति बनाये रखना,
तुम्हें जीतना होगा,
जीत का हार भी तुम्हें,
पहनाएगा ये संसार।

कटु सत्य

सत्य में कोई विश्वास नहीं करता है, झूठ में सब विश्वास करते हैं।

शराब बेचने वाले को कहीं नहीं जाना पड़ता, लोग खुद उसके पास चले आते हैं। परन्तु दूध बेचने वाले को गली-गली घूमकर दूध बेचना पड़ता है।

इसी प्रकार सत्य को बार-बार परीक्षा देनी पड़ती है।

अनमोल वचन

भगवान की भक्ति करने से शायद हमें माँ न मिले, लेकिन माँ की भक्ति करने से भगवान अवश्य मिलेंगे।।

जिन्दगी में अच्छे लोगों की तलाश मत करो, केवल 'स्वयं अच्छे बन जाओ' आपसे मिलकर किसी अन्य की तलाश पूरी हो जावेगी।

Scanned by CamScanner

निर्मल गंगा

स्वीटी कुमारी
बी.एड

शिव की जटा से उत्पन्न पर्वतों को चूमती हुई,
घाटियों में अठखेलियाँ करती,
दूध की तरह धवल, अग्नि की तरह पवित्र है जो,
सैकड़ों गुणों की खान है, और मासूमियत से भरी है वो,
सबकी आवश्यकताओं को पूरा करती,
सर्वत्र अपनी पवित्रता फैलाती।
कभी इठलाती कभी बलखाती, अपनी ममता को दर्शाती,
माँ की तरह आँचल में समेटे हुए सैकड़ों सौगातें वितरित करते हुए,
प्रयाग में यमुना और सरस्वती के साथ अद्भुत मिलन करते हुए।
हर की पौड़ी पर लोगों को आशीर्वाद दिया है जिसने
न जाने कितने लोगों को मोक्ष प्रदान किया है इसने,
स्वभाव से है तो सरल, सादगी से है वो भरी हुई,
लाखों श्रादालुओं की श्रद्धा से सराबोर हुई,
ऐसी निर्मल थी हमारी माँ गंगा।
आज शिव की गंगा मैली हो गई है,
देखकर यह विकृत रूप उसका
देवनागरी बनारस भी शर्मसार हो गई है,
वह अबला, दरिद्रता रूपी, दु:खों से भरी है,
और अपने इस रूप पर स्वयं अश्रु बहा रही है,
और उसकी पवित्रता पर लाखों सवाल खड़े हैं,
कल भी उसका ह्रदय निर्मल था, आज भी निर्मल हैं।
बस बाह्य सौन्दर्य हमने कर दिया तार–तार है,
हम सबको मिलकर अथक प्रयास करना होगा,
गंगा को निर्मल कर उसकी आत्मा को जिंदा करना होगा।
और फिर न परिवेश में गंगा का श्रृंगार करना होगा,
हर कुदृष्टि से माँ को बचाना होगा।
वह दिन दूर नहीं, जब अच्छे दिन आऐंगे।
और हम स्वच्छ पारदर्शी गंगाजल अवश्य पाएँगे।

❑

सच्चा सौन्दर्य

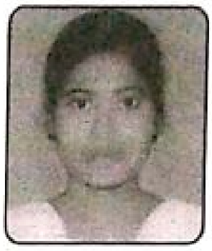

रश्मि वार्ष्णेय
बी.एड

तुम इतने सुन्दर लगते हो, जितना सुन्दर यह नील गगन।
जितना सुन्दर सूर्य–चन्द्र का मुख है, जितना सुंदर यह तारागण।।

सुन्दरता वो जो हो उदार, सुन्दरता वो जो करे प्यार।
जग की सुन्दरता की खातिर, जो जीती बाजी जाये हार।।
तुम इतने सुंदर लगते हो, जितना सुंदर खुद आकर्षण।
जितना सुंदर यमुना का तट है, जितना सुंदर है नंदन वन।।

कोई देखे इन आँखों से, ये सारा जग ही सुंदर है।
जग जिसे खोजता है बाहर, वो मोती दिल के अंदर है।

तुम इतने सुंदर लगते हो, जितना सुंदर है देव चरण।
जितना सुंदर देवालय है, पूजा अर्चन आरती हवन।।

दिल में हो घाव नहीं सुंदर, बदले का भाव नहीं सुंदर।
आँगन को बाँटे दीवारें, ऐसा अलगाव नहीं सुंदर।।

तुम इतने सुंदर लगते हो, जितना सुंदर खुद अनुशासन।
सम आदर वृद्धों की सेवा है, जितना सुंदर अपनापन।।

तुम इतने सुंदर लगते हो, जितना सुन्दर यह नील गगन।।

❑

व्यंग

1. पहला कैदी (दूसरी कैदी से) : यहाँ तुम्हारे से कोई मिलने नहीं आता, क्या तुम्हारा कोई रिश्तेदार नहीं है।
   दूसरा कैदी– हैं तो बहुत सारे, मगर सारे रिश्तेदार यहीं जेंल में बंद हैं।

2. सलोनी– शबाना से लड़कों की माँग क्यों नहीं भरी जाती।
   शबाना– अगर, लड़कों की माँग भरी जाती तो सारे गंजे कुँवारे ही मर जाते।

मोहित कुमार
कम्प्यूटर विभाग

Scanned by CamScanner

गुरु प्रकाश

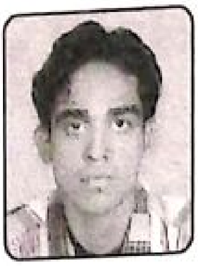

रोहित कुमार शर्मा
ज्ञान आई.टी.आई.

जाने क्या–क्या है, छुपा हुआ–
गुरू तुम्हारी आँखों में,
परलोक लोक का रहता है,
विस्तार तुम्हारी आँखों में,
तुम मार भी सकते हो पल में,
तुम तार भी सकते हो पल में,
ज्ञान और अमृत दोनों का है,
भण्डार तुम्हारी आँखों में,
यह मूर्ति प्रकृति के प्राण की है।
या छवि विराट गुरूओं की है
शिष्यों की आँखों में तुम हो,
और शिष्य तुम्हारी आँखों में।
समुद्र की गहराई से भी ज्यादा, ज्ञान तुम्हारी वाणी में,
जो जमा दे आत्म विश्वास हर प्राणी में ।।
क्या जाति, क्या धर्म, क्या गोरे, क्या काले।
सब समान तुम्हारी आँखों में, ❑

मन की आवाज

नीतू
बी.एस.-सी.
प्रथम वर्ष

माँ पापा की पनाहों में, जब हम जैसे फूल खिलते हैं।
जो अपने लिए नहीं, माँ–पापा के लिए संघर्ष करते हैं।
जब कर देते उनकी ख्वाहिशें पूरी तो,
वह दिल से हमारे लिए दुआ करते हैं।
उनके हौसलों में है उड़ान इतनी,
उस उड़ान को भी वह यादगार कर देते हैं।
माँ–पापा हैं एक ऐसी हस्ती,
जो मुम्बई तो क्या मन्दिर में नहीं मिलते हैं।
उन्हें जानने की जो तुम इच्छा रखो,
फिर देखो बन्द नसीब भी कैसे खिल उठते हैं।
जो कुछ वह दिल से कह देते हैं,
उसी को तो आशीर्वाद कहते हैं।
जो हर मुश्किल में हमारा साथ देते हैं। ❑

जय जवान जय किसान

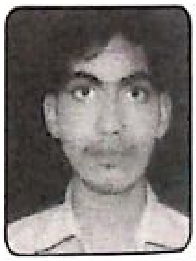

पंकज कुमार
बी.ए. प्रथम वर्ष

भारत माँ के पुत्र महान,
एक जवान, एक किसान।

एक देश की खातिर मरता, नागरिक चैन से सोता
दूजा अपना बहा पसीना, पेट सभी का भरता।।

दोनों के हैं दान महान,
जय जवान, जय किसान। ❑

Scanned by CamScanner

एक मासूम लड़की

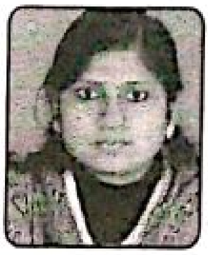

पूजा सिंह
बी.एड.

एक लड़की थी मेरी सहेली
साथ पली और खेली भी,
रेशम् जैसे बाल थे उसके,
फूलों जैसे गाल थे उसके।

हँसती थी और गाती थी वो,
सबके मन को भाती थी वो
एक दिन उसने भोलेपन से,
पूछा अपने पापा से।

अब मैं खुश रहती हूँ जैसे,
सदा ही क्या खुश रहूँगी ऐसे,
तो पापा बोले मेरी बच्ची,
ये बात है बिल्कुल सच्ची।

कल की बात कोई न जाने,
कहते हैं ये सभी सयाने,
ये मत सोचो कल क्या होगा,
जो भी होगा अच्छा होगा।

अब वो लड़की गाती फिरती,
बल खाती लहराती फिरती,
कॉलेज में इठलाती फिरती,
एक दिन एक सुन्दर लड़के ने,

छुप–छुपके उसकी एक तरवीर बनाई,
और यह कहकर उसे दिखाई,
पहले अपना नाम लिखोगे,
छोटा सा पैगाम लिखोगे।

पहले तो लडकी घबराई,
फिर मन ही मन मुस्काई,
अब तो दोनों गाते फिरते,
बल खाते इठलाते फिरते।

एक परदेशी दूर से आया,
लड़की पर अपना हक जताया,
छोड़ के साथी हमसाये,
चल दी लड़की देश पराये।

अब गुमसुम हैरान सी है वो,
मुझसे भी अन्जान सी है वो,
जब भी देखो चुप रहती है,
कहती है तो यह कहती है।

कल की बात कोई न जाने
कहते है ये सभी सयाने,
ये मत सोचो कल क्या होगा,
जो भी होगा अच्छा होगा।

जुनून

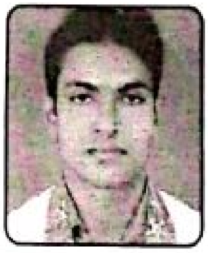

अमित कुमार
बी.टी.सी.

हमारे अन्दर जुनून है, चट्टानों से टकराने का,
हमको नहीं है डर, इस जालिम जमाने का।
हम युवा हैं नई पीढ़ी के, बदलेंगे ये जमाना,
सबको सन्देश देंगे, मोहब्बत के नजराने का।
हम चाहें अगर तो कर दें, गर्म को ठण्डा पानी,
हम फूल नहीं वो जिन्हें, डर हो मुरझाने का।
खामोश रहकर यों, कब तक जीते रहेंगे,
वक्त आ गया है, अधिकार पाने का।
मिटा के भेद मजहब का, मिला के चलें कदम,
आ गया है वक्त, अब इजहार करने का।

Scanned by CamScanner

कौन है भिखारी?

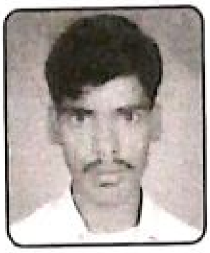

सुखबीर सिंह
बी.ए. द्वितीय वर्ष

कत्थई चार खाने की कमीज में,
अध–छिपी, अध–खुली,
सूखी रोटियों को देखा।
पास में नंगे बदन,
एक छोटे बालक को खडे देखा।
थोड़े बड़े को जमीन पे बैठे,
बड़े बाबू का द्वार साफ करते देखा।

माँगने पर मेहनत उसकी,
बाबू के हाथ से पाँच का सिक्का
उछलते देखा।
बेबस मजबूर बच्चों को,
बेबसी की चादर ओढ़े देखा।

देख इस दृश्य को,
मैंने अपना हृदय मोम बनते देखा।
साथ ही मेरे मन में,
उठी एक प्रश्न रेखा।।
कि कौन है भिखारी?
अमीरों के नाम पे गरीबों को देखा,
रूपयों का जामा पहने अमीरों को देखा। ❑

गुरु की महिमा

नरेन्द्र शर्मा
ज्ञान आई.टी.आई.

श्री गुरू चरण सरोज रज, धारण करता शीश,
पार लगा दे नाव को, डूब रहा प्रभू मैं।

गुरू तुम्हारे चरण कमल का, मुझको आशीर्वाद मिले।
तर जाऊँ मैं भव सागर से, ऐसा आशीर्वाद मिले।।

नहीं जानता कैसा ईश्वर, क्या उसका आकार है।
कहाँ रहता है क्या करता है, कैसे वह साकार है।।

सूरज चाँद सितारों में क्या, चमक रही उसकी सत्ता,
क्षिति जल पावक बता रहे, क्या हम है उसकी सत्त।
सत्ता का आभार कराना, यही गुरू से ज्ञान मिले।।

गुरू तुम्हारे चरण कमल का मुझको आशीर्वाद मिले।
तर जाऊँ मै भव सागर से, ऐसा आशीर्वाद मिले।।

संसार वृक्ष पर चढ़े हुये नर, क्या उसकी छाया जाने।
कैसा फल लगता है उस पर खट्टा मीठा क्या जाने।।

संसारी माया के तूफान विकट जब चलते हैं।
दिशा भूल हो जाते हैं प्राणी दोनों हाथ मलते हैं।।

भौतिकता को दूर हटाकर परम तत्व का ज्ञान मिले।
गुरू तुम्हारे चरण कमल का मुझको आशीर्वाद मिले।
तर जाऊँ मैं भव सागर से ऐसा आशीर्वाद मिले।।

विविध ताप की अग्नि से जब अशान्त होगा प्राणी।
कर्तव्य विमूढ़ हो जाता है निष्क्रिय हो जाता है प्राणी।।
गंगा की जल धारा बनकर, तुम ही शान्त कराते हो।
सदमार्ग पर चलने की, तुम ही राह बताते हो।।

गुरू तुम्हारे चरण कमल का मुझको आशीर्वाद मिले।
तर जाऊँ मैं भव सागर से, ऐसा आशीर्वाद मिले।। ❑

ओस की बूंद होती है बेटियाँ,
स्पर्श खुरदरा हों तो रोती हैं बेटियाँ।
एक घर की लाज होते हैं बेटे,
दो-दो घर की लाज होती हैं बेटियाँ।।

मोती हैं बेटे तो हीरा हैं बेटियाँ,
विधि के विधान से होती हैं बेटियाँ।
इनका न कभी करो तिरस्कार,
क्योंकि भाग्यवान के ही होती हैं बेटियाँ।।

Scanned by CamScanner

सीख

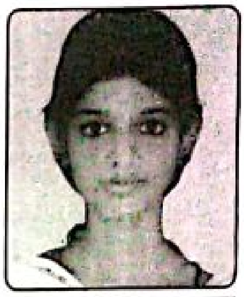

साक्षी सक्सैना
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

एक छोटा सा परिवार था। माता–पिता व उनके दो बच्चे थे, जिनमें एक लड़की थी, जिसका नाम माही था और एक लड़का था, जिसका नाम रोहन था। लड़की बचपन से ही नानी के घर रही थी व लड़का माता–पिता के साथ। भाई–बहन कभी आपस में मिले नहीं थे। न कोई तस्वीर देखी। नानी जी का देहान्त हो जाने के बाद लड़की इक्कीस साल बाद अपने घर आ रही थी और उसी दिन उस लड़की का भाई कॉलेज से घर आ रहा था। उसने एक लड़की को वाहन के इंतजार में खड़ा देखा तो वह उस लड़की को परेशान करने लगा, उसने कुछ अपशब्दों का भी इस्तेमाल किया।

कुछ समय बाद जब वह घर आता है और अपनी बहन से मिलता है तो वह चौंक जाता है। क्योंकि यह वही लड़की है जिसको उसने परेशान किया था।

उस दिन से उसने कसम खायी कि वह आज से हर लड़की का सम्मान करेगा।

खुशी और दर्द

एक बार खुशी ने दर्द से कहा– तू सबकी जिन्दगी में क्यों आता है?

दर्द बोला– मैं नहीं आता तो तेरा इन्तजार कौन करता?

तो खुशी ने कहा, मैं हमेशा उनकी जिन्दगी मैं रहता.........

दर्द ने कहा– तो तेरी कदर कौन करता?

माँ और पत्नी

स्वीटी कुमारी
बी. एड

उस दिन मैं ऑफिस से लौटा तो काफी थका हुआ था। घर आकर जैसे तैसे कपड़े बदले और बैड पर आँख बंदकर लेट गया। लेटते ही नींद आने लगी, तभी पत्नी बाजार से लौटी। गेट खुला तो सामने बेटे को देख सवाल किया, 'पापा अभी नहीं आए? तुम्हारे मामा के घर पर जाना था। वह काफी समय से बुला रहे थे।'

बेटे ने बताया, 'पापा तो आते ही अपने कमरे में चले गए। मैंने पूछा तो कह रहे थे, ऐसे ही कुछ उलझन हैं। इतना सुनते ही पत्नी जोर से बोली, जब भी कहीं जाने का प्रोग्राम बनाओ, पापा की तबियत खराब हो जाती है। अभी मेरे भाई के बजाए अपने भाई के यहाँ जाने की बात होती तो आते ही जल्दी से तैयार होकर बोलते, अब जल्दी करो, वहाँ भाभी चाय पर इंतजार कर रही होंगी।

पत्नी की तेज आवाज कानों में पड़ी तो नींद खुल गई। पहले तो तेज गुस्सा आया कि मेरी तो तबियत खराब है और इन्हें अपने भाई के यहाँ जाने की पड़ी हैं। मुझे माँ की याद आ गई। जैसा आज हुआ, वैसा पहले भी होता था, किंतु तब माँ थी जो बिना कुछ कहे ही सब कुछ समझ जाती थीं। ऐसी स्थिति में माँ पूछती थी कि क्या बात है आज कुछ परेशान हो? हाँ–ना का इंतजार किए बिना ही वह चुपचाप ठंडे तेल की शीशी हाथ में लिए बैड के पीछे कुर्सी लगाकर बैठ जाती थीं और सिर पर धीरे–धीरे तेल मलकर मेरी परेशानी को अपनी परेशानी बनाने की कोशिश करती थीं। आँखें बंदकर मैं ऐसा सोचता रहा और आँखों से कुछ आँसू न चाहते हुए भी बाहर निकल आए।

Scanned by CamScanner

अंतिम सत्य

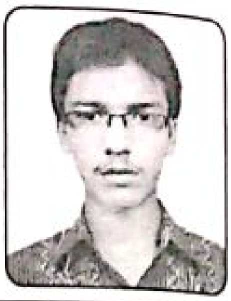

मयंक वार्ष्णेय
बी.कॉम द्वितीय वर्ष

था मै नींद में और मुझे सजाया जा रहा था,
बड़े प्यार से मुझे नहलाया जा रहा था।
न जाने कौन सा वो खेल मेरे घर में,
बच्चों की तरह मुझे कंधे पर उठाया जा रहा था।
था पास में हर अपना उस वक्त,
फिर भी मैं हर किसी के मन से भुलाया जा रहा था।
जो कभी देखते भी न थे मोहब्बत की निगाहों से,
आज उन दिलों से भी प्यार मुझ पर लुटाया जा रहा था।
मालूम नहीं क्यों हैरान था हर कोई, मुझे सोते हुए देख कर।
जोर–जोर से रोकर मुझे जगाया जा रहा था।।
काँप उठी मेरी रूह वो मंजर देखकर,
जहाँ मुझे हमेशा के लिए सुलाया जा रहा था।
मोहब्बत भी थी जिन लोगों के दिलों में मेरे लिए,
उन्हीं लोगों के हाथों आज मैं जलाया जा रहा था। ❑

देर तो लगती है

यादों को भुलाने में कुछ देर तो लगती है,
आँखों को सुलाने में कुछ देर तो लगती है।
किसी भी शख्स को भुला देना इतना आसान नहीं होता,
इस दिल को समझाने में कुछ देर तो लगती है।
महफिल में जब कोई अचानक अपना याद आ जाए,
तो आँसुओं को छुपाने में कुछ देर तो लगती है।
जो इंसान जान से प्यारा हो और अचानक दूर हो जाए,
इस दिल को यकीन दिलाने में कुछ देर तो लगती है।
लोग कहते हैं कि मोहब्बत एक बार होती है,
पर इस बात को जताने में कुछ देर तो लगती है।

Scanned by CamScanner

मँहगाई

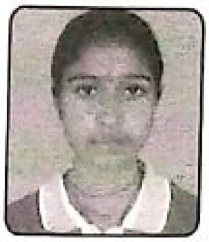

अर्चना
बी.टी.सी.

एक दिन मुझे मँहगाई मिली,
इसका इठलाता यौवन,
उफान पर जवानी देखकर,
मैं दंग रह गई।
मैंने उसे कभी बचपन में देखा था,
जब मैं बीस रूपया लीटर दूध,
पच्चीस रूपया किलो,
सेब लाया करती थी।
लेकिन
आज हर कोई,
इसे अवाक देखता है,
यदि कोई मँहगाई की,
जवानी का राज,
जानना चाहता हो तो,
उन अमीरों की कोठियों में जाओ,
जहाँ मैं नाचती हूँ,
हर रोज नई जवान बनकर,
निकलती हूँ।
तुम जैसे,
मुझे छूना तो दूर,
देखना भी पसंद नहीं करते,
इसलिए तुम्हें मैं,
जवान नजर आती हूँ,
गरीबों को तो मैं,
बिलकुल नहीं भाती हूँ,
मैं उसका,
उत्तर सुनकर,
चुप रह गई,
सोचती रह गयी, सोचती रह गयी।

बस एक कदम और...

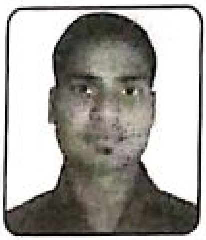

सुनील कुमार
बी.टी.सी.

बस एक कदम और इस बार किनारा होगा,
बस एक नजर और इस बार इशारा होगा।
अम्बर के नीचे उस बदली के पीछे कोई तो किरण होगी,
इस अन्धकार से लड़ने को कोई तो किरण होगी।
बस एक पहर और इस बार उजाला होगा,
बस एक कदम और इस बार किनारा होगा।
जो लक्ष्य को भेदे वो,कहीं तो तीर होगा
इस तपती भूमि में कही तो नीर होगा।
बस एक प्रयास और अब लक्ष्य हमारा होगा,
बस एक कदम और इस बार किनारा होगा।
जो मंजिल तक पहुँचे वो कोई तो चाह होगी,
अपने मन को टटोलो कोई तो चाह होगी।
जो मंजिल तक पहुँचे वो कदम हमारा होगा,
बस एक कदम और इस बार किनारा होगा।
बस एक नजर और इस बार इशारा होगा।.....

Scanned by CamScanner

विज्ञान के दोहे

हिना चौधरी
बी.टी.सी.

1. मटर उगाकर खेत में दिया नया विज्ञान।
   आनुवांशिकी के पिता, मेंडल हुये महान।।
2. कौन किसका पूर्वज है, इसका मिला प्रमाण।
   डार्विन के कारण हुई, विकास की पहचान।।
3. खूब बनायी तालिका, तत्वों की क्रमवार।
   मेंडलीफ श्रीमान का, हम पर यह उपकार।।
4. कैसी तारों की बस्ती, कैसा उनका आलोक।
   गैलीलियो दिखा गये, देकर टेली स्कोप।।
5. फिल्म देखने के लिए, सचमुच में हो शोक।
   एडीसन ने पेश किया, उनको बाइस्कोप।।
6. कम्प्यूटर का आविष्कार कर, करी गणना आसान।
   जानो सव उनको, चार्ल्स बैबेज था नाम।।
7. नहाते–नहाते टब में से, जब गिर गये श्रीमान।
   आर्किमिडीज ने दे दिया, उत्प्लावन बल का ज्ञान।।

❑

वचन

तुलसी भरोसे राम के निर्भय हो के सोय
अनहोनी होनी नही होनी हो सो होय

तुलसी मीठे बचन से मुख उपजत चहु ओर
वशीकरण एक मंत्र है तज दे बचन कठोर

देह धारे का दंड है सब काहू को होय,
ज्ञानी भुक्ते ज्ञान से अज्ञानी भुक्ते रोए

धीरे धीरे रे मना धीरे सब कुछ होए
माली सींचे सौ घड़ा फल फूल ऋतु होए

माँ

तृप्ति सिंह
बी.टी.सी.

दिल से जुड़े रिश्ते को, होले से छूते हुए,
प्यारी–प्यारी भावनाओं की खास खुशबू से भीगे हुए,
माँ तुमसे ही जन्मे हैं, ये मेरे शब्द.........

तुमने दिया है आकार मेरे अस्तित्व को।
तुमसे ही मैंने जाना कि क्या होती हैं भावनाएं,
तुम ही लेकर आयीं, मुझे इस जहाँ में,
तुमने ही मेरे जीवन को दी नई दिशायें।

हर स्नेह, हर प्यार को, मैंने तुमसे ही महसूस किया।
हर रिश्ते–नाते से, तुमने ही मेरा परिचय कराया।।
इस सारे शब्दों को भी तो, मैंने तुम्हीं से है पाया।

तुम्हारे लिए तो जैसे,
मेरी खुशियाँ ही हैं सब कुछ।
मेरी मुस्कराहट से हमेशा ही,
होती हो तुम खुश।।

मुझे कब क्या चाहिए,
तुम्हें ध्यान रहता है हमेशा।
मेरे दिल की हर बात का,
तुम्हें बिना कहे चलता है पता।।

मेरी ख्वाहिशें पूरी करने के लिए,
तुम कुछ भी कर गुजरती हो।
और कभी नाराज हुई भी तो,
सिर्फ दिखावे के लिए हुआ करती हो।।

तुम्हारा ये स्नेह, ये प्यार, तुम्हारा ये आशीर्वाद,
मुझे हमेशा ऐसे ही मिलता रहे।
तुम्हारी हर मुराद पूरी होती रहे,
चेहरा हरदम खुशी से खिलता रहे।।

❑

Scanned by CamScanner

बच्चे

शिव कुमारी
बी.एड

कक्षा शांत थी, बच्चे चुपचाप थे।
उनकी शिक्षिका के आने के क्षण पास थे।।
थोड़ी ही देर में शिक्षिका पधारी।
बच्चों की अटेंडेंस होने की थी बारी।।
तभी एक छात्र ने अपना मुँह खोला।
बड़े अदब के साथ शिक्षिका से बोला।।
"मैडम स्विच आन कीजिए पंखा चलाइये।
हम लोगों को गर्मी से राहत पहुँचाइए।।"
शिक्षिका का पारा आसमान पर चढ़ा।
बोली ये अजीव तो मेरे सिर पर ही आ चढ़ा।।
क्या तुम्हारी नौकर हूँ जो पंखा चलाऊँ?
कहो तो अभी दो थप्पड़ लगाऊँ।।
सभी बच्चे जिद पर अड़ गये।
मैडम के जैसे पीछे ही पढ़ गये।।
आखिर मैडम ने स्विच ऑन किया।
पंखा सर–सर सर–सर चल दिया।।
पंखे पर रखे गुलाब के फूल बिखर गये।
कक्षा के वे पल खुशबू से भर गये।।
बच्चों ने मिल जुलकर ताली बजाई
बोले मैडम जी जन्म दिन की बधाई।।
शिक्षिका को तालियों का जवाब देते न बना।
वह हो गई उदास, मन हो गया अनमना।।
उनकी आंखों से, झर चला मेह था।
अहसास के समन्दर में, उमड़ रहा स्नेह था।।
बच्चे भी कभी--कभी ऐसा कर जाते हैं।
शिक्षक के मन में ही घर कर जाते हैं।

राष्ट्रीय प्रतीक चिन्ह

राष्ट्रीय ध्वज	–	तिरंगा
राष्ट्रीय गान	–	जन गण मन
राष्ट्रीय गीत	–	वंदे मातरम्
राष्ट्रीय चिन्ह	–	अशोक स्तम्भ
राष्ट्रीय वाक्य	–	सत्यमेव जयते
राष्ट्रीय पंचांग	–	शक, संवत्
राष्ट्रपिता	–	महात्मा गाँधी
राष्ट्रीय खेल	–	हॉकी
राष्ट्रीय मुद्रा	–	रूपया
राष्ट्रीय नदी	–	गंगा
राष्ट्रीय योजना	–	पंचवर्षीय योजना
राष्ट्रीय नारा	–	श्रमेव जयते
राष्ट्रीय पर्व	–	15 अगस्त, 26 जनवरी, 2 अक्टूबर
राष्ट्रीय लिपि	–	देव नागिरी
राष्ट्रीय विदेश नीति	–	गुट निरपेक्ष
राष्ट्रीय पुरस्कार	–	भारत रत्न
राष्ट्रीय वृक्ष	–	बरगद
राष्ट्रीय फूल	–	कमल
राष्ट्रीय भाषा	–	हिन्दी
राष्ट्रीय पक्षी	–	मोर
राष्ट्रीय पशु	–	बाघ

हास्य मञ्जूषा

एक अंग्रेजी (एक आदमी से)– तुम अपनी इन बड़ी-बड़ी मूछों को बेचेगा हम इन मूछों के बदले एक हजार रूपये देगा।
आदमी अपने सिर के बाल पैक करके दे देता है।
अंग्रेजी (गुस्से से) धोखा हमने तुम्हारी मूछों का सौदा किया था यह सिर के बाल का नहीं।
आदमी (मुस्कराकर)– माल हमेशा गोदाम से दिया जाता है, शोरूम से नहीं।

Scanned by CamScanner

प्रेरणा गीत

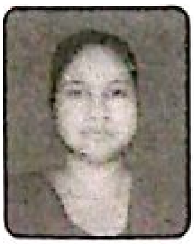

निशा रावत
बी.एड

भारत में नव चेतन के नवयुग का सवेरा लाना है।
जन–जन के जीवन स्तर को हमको आज उठाना है।।

हर घर में जहाँ खुशहाली हो,
हर रोज जहाँ दीवाली हो,
हर चेहरे पर जहाँ मुस्कान रहे,
हर दिल में जहाँ सम्मान रहें,
अपने भारत के परचम को, दुनिया पर लहराना है,
जन–जन के जीवन स्तर को, हमको आज उठाना है।

घर–घर में शिक्षा की ज्योति जगे,
हर किसी में ऐसी लगन लगे,
इतनी अपनी तैयारी हो,
दूर सभी बीमारी हो,
आलस में सोये भारत को, हमको आज जगाना है,
जन–जन के जीवन स्तर को, हमको आज उठाना है।

हर कोई हमारे साथ चले,
हर राही अपनी मंजिल से मिले,
विकसित हर एक नगर बने,
आसान सभी का डगर बने,
अपनी वाणी की ताकत को, कौने–कौने में पहुँचाना है,
जन–जन के जीवन स्तर को हमको आज उठाना है।

हर ओर जहाँ उजियारा हो,
सबसे सुंदर देश हमारा हो,
कल की बात पुरानी हो,
हम लिखें वो नयी कहानी हो,
अपने भारत को फिर से सोने की चिड़िया बनाना है,
जन–जन के जीवन स्तर को हमको आज उठाना है। ❑

जीवन का सार

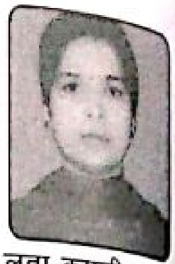

लता कुमारी शर्मा
बी.एड

क्रोध मूर्खता से शुरू होता है और पश्चाताप पर खत्म होता है।
नम्रता से देवी देवता भी मनुष्य के वश में हो जाते हैं।
सम्पन्नता मित्रता बढ़ाती है, विपदा उनकी परख करती है।
एक बार निकले बोल वापस नहीं आ सकते, इसलिए सोचकर बोलो।
तलवार की चोट उतनी तेज नहीं होती, जितनी जिह्वा की।
तीन सच्चे मित्र है– वृद्धा पत्नी, पुराना कुत्ता, और पास का धन।
मनुष्य के तीन सदगुण हैं– आशा, विश्वास और दान।
घर में मेल होना पृथ्वी पर स्वर्ग के समान है।
भूत से प्रेरणा लेकर वर्तमान में भविष्य का चिन्तन करना चाहिए।
मनुष्य के रूप में परमात्मा सदा हमारे सामने है, उनकी सेवा करो।
चिन्ता से रूप बल और ज्ञान का नाश होता है।
दूसरे को गिराने की कोशिश में तुम स्वयं गिर जाओगे।
प्रेम मनुष्य को अपनी ओर खींचने वाला चुम्बक है।
अन्धा वह नहीं जिसकी आँखें नहीं, अन्धा वह है जो अपने दोषों को ढकता है।
धीरज के सामने भयंकर संकट भी धुएँ के बादलों की तरह उड़ जाते हैं।

सपने

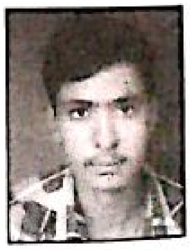

सुदेश कुमार
बी.ए. प्रथम वर्ष

"सपनों वो नही होते जिन्हें,
हम सोते समय देखते हैं,
सपने वो होते हैं,
जो हमें सोने नहीं देते।" ❑

Scanned by CamScanner

Voluntary Management and Empowerment : A case study of Gujarat Earthquake

Dr. Ratna Prakash
Deptt. of Economics

ABSTRACT

Although volunteering to help the needy is in the blood of Indians. yet it comes to the fore at the time of disaster like earthquake, flood, cyclone and fire when a practical demonstration of volunteering is seen. on January 26, 2001, kutch district of western Indian state of Gujarat was rocked by a devastating earthquake. According to Government figures, approximately 15,000 people lost their lives, 55,000 their limbs,10,000 children were rendered orphan and property worth billions of rupees (Indian currency) was lost. Nothing in this world can make up the loss of life. At the same time, monetary help gives some financial relief in the immediate aftermath of a disaster.

Soon after the earthquake. our institute's team went to the site of most affected district kutch to help in relief work. I was one of the members of the team which contributed its mite to the relief effort with other volunteers. In Nilpar village of Rapar Taluk (a unit of administration in India between the village and the district), a Gandhian organization, Gram Swarajya Sangh has an Ashram. It was coordinating relief operations in the area. It was from here that the volunteer groups and independent volunteers reached out to the needy.

In Rapar, Bhachau, Samakhyali, Aghoi, Tarania, Kanthkot, Ramvav and Bhasvav villages, we saw that individual volunteers belonging to different castes and religions having no party affiliation whatsoever working among the earthquake victims without any discrimination. Much before any outside help could reach the victims, these local volunteers rescued thousands of people from the debris of buildings. Indeed it was due to their effort that so many precious lives could be saved. Organised groups like Indian Red Cross Society, R. S. S., Vishwa Hindu Parishad , Bajrang Dal, Jamayat-e-Islami Hind, Shiv Sena, Congress Sewa Dal, N.C.C., N.S.S.. Army, Air force and groups belonging to various religions and sects came much later.

The fervor which was discernible during the relief phase of earthquake in Gujarat was missing in the rehabilitation phase. If this could somehow be sustained, much long term good could have been done for the victims.

INTRODUCTION

The devasting earthquake in the kutch district of Gujarat in Western India on January 26, 2001 was one of the biggest tragedies to hit the country. Although the earthquake, measuring 6.9 on the richter scale, destroyed about 900 villages in 10 talukas encompassing kutch, Rajkot, Surendra Nagar, Jamnagar and Ahmedabad districts, the main damage took place in kutch district where property in more than 400 villages was damaged severely and 170 villages were razed to the ground. According to government figures, almost, 15,000 people lost their lives, 55,000 their limbs and approximately10,000 children were rendered orphans. property worth billions of rupees was lost.

Soon after the earthquake, our Institute's team went to the site of devastation to give a helping hand to the relief operations. I was also one of the member of this team which went to the most affected area of kutch district like Rapar, Bhachau, Samakhyali, Aghoi, Tarania, Kanthkot, Ramvav and Bhasvav. Words fail to express the extent of suffering which we witnessed, but the saving grace amidst all the devastation was the effort by volunteer groups organized and unorganized to mitigate the suffering which were successful to a large extent. An estimated 500 organized volunteer groups participated in relief efforts. The more prominent among them being the Indian Red Cross Society, R.S.S, Vishwa Hindu Parishad, Bajrang Dal, Jamayat-e-Islami Hind, Shiv Sena, Congress Sewa Dal, N.C.C., N.S.S., Army, Air

Scanned by CamScanner

force and several religious institutions represented by groups of Sadhus and Sanyasins (God Men). The number of individual unorganized volunteers ran into thousands.

ROLE OF GRAM SWARAJ SANGH (G.S.S)

Gram Swaraj Sangh, a Gandhian organization working at Nilpar, Taluk Rapar, district kutch was acting as the co-ordinator of voluntary relief efforts. Its building was also destroyed in the earthquake, but this was not allowed to hamper relief operations which were taken up from hurriedly erected tents. The G.S.S. has committees in most of the villages of the district which surveyed their areas and communicated their needs to the camp management where volunteers were coming in large numbers. They included doctors and engineers, men and women, young and elderly, general, O.B.C., S.T. and S.C, Hindus, Muslims, Christians, Sikhs, Jains and Buddhists. There was no caste creed and religion. Professionals could he seen rubbing shoulders with the non -professionals. They came from the north , south, and the west, the Theatre of the disaster itself, and they also came from the east. Service of the needy was the motto of all volunteers.

We saw that relief materials including clothes, eatables and water bottles, medicines diagnosis kits for make-shift hospitals and dispensaries were pouring in from all corners of the country and abroad. The world community was standing in unison with India in this hour of need. International help was most discernible in removing the debris and use of concrete cutting machines to save lives. During the day, the volunteers worked in the far-off villages. The night was used for planning for the next day. What is needed where, how to take the relief material to the far-flung, inaccessible villages was decided during the night. There was no time for rest. The only concern was to take relief to the needy as fast as possible so that precious lives could be saved.

VOLUNTEER SPIRIT COMES TO THE FORE

The spirit of volunteering is always there in human being. Man being social animal, always wants to help his fellow being. Yet most of the times, the spirit of volunteering lies dormant. During the. times of disaster, it comes of the fore. People get mental and inner satisfaction from helping the needy. In times of disasters-earthquake, fires, floods, cyclones, droughts and famines-work of the volunteers even changes the heart of evil doers. One forgets his own suffering and discomfort when he sees the suffering of others and sometimes is able to do those things which he can not even dream of the normal course of his life. In the aftermath of his deeds, when he realises that he has done the unimaginable, his level of self-esteem and confidence goes up several notches.

The role of local unorganised volunteers is crucial in the initial period of disaster. Relief-from far-off places takes time to reach the needy. This was indeed the case with the victims of kutch earthquake also. We saw that thousands of persons were excavated from the debris of buildings by the local people before any help could arrive. The last rites of the dead, the most painful and heart-rending work, was done by the local volunteers. Even the Indian Army and the Air force, with the most competent and trained personnel to fight the disaster of this magnitude, took one to two days to reach the site of disaster. If the locals were not there, many more people could have died.

The role of local volunteers is significant in another way. During such crisis, anti-socials elements try to take advantage and loot whatever they can. In this situation, the local volunteers prove to be a bulwork against them. The anti-social are afraid that since they are known to the local volunteers, they can be caught red handed. Therefore, they desist from doing what they could have done naturally-looted the helpless victims of disaster.

Since the local volunteers are conversant with the topography of the area and know it like the inside of their palm, they are helpful in taking medical help to the injured, taking eatables and cooking materials to them and arranging temporary shelters. They also guide outstation volunteers. Soon after the earthquake when voluntary agencies from all over the country and abroad sent men and materials in large number to the site of disaster, They could take relief material only to the road side

Scanned by CamScanner

villages and were unaware about the suffering in the far-flung villages in the interior. The local volunteers proved to be very helpful to them in reaching out in the far away areas.

We saw that even if the relief material is freely available, there is a section of people even in a poor country like India that does not like to stand in the queues for free ration and rub shoulders with others. Their self esteem prevent them from doing so. yet their need is no less urgent and overpowering. They have to be provided for. Here too, local volunteers have a big role. As they belong to the area, they can take help to these people and persuade them to take it, saving them and their families from a certain death in case they failed to see the reality.

At a number of places, we saw doctors working in tented hospitals. Here, too local volunteers contributed a lot. They were seen sitting in front of hospital entrance with resisters collecting information about the people undergoing treatment, their disability, prescription etc. If, in any case, some of the injured persons has some relative else where and he could come to the hospital for help and take him away, he was informed telephonically by the local volunteers. Local shopkeepers also came up with help and left packets of biscuits with relief agencies for distribution to the victims.

Most of relief agencies erected tents on the roadsides and had stocks of medicines, edibles and tent. Member of some of the poorer sections of the society were seen to be busy with the collection of as much relief material as possible. They came to the tents again and again and were able to collect more material than was needed by them. On the other hand, a number of persons did not go to the relief agencies for relief material and were sitting near the rubble of what were their houses till sometime back. The local volunteers took the representatives of voluntary agencies to these people and persuaded the needy to take material help.

Although more than 500 organised volunteer group from all over the country participated is the relief operations, every group had only a few volunteers. The man power for their work was provided by the local volunteers. The army personnel too, drawn from all over India did not know the local lingo, and needed help from the local volunteers to work which was readily forth coming. We saw that in the earlier phase, the local volunteers worked in a self-organised way, but in the latter phase, when voluntary organizations and thy Army appeared on the scene, they had no reservation in working with the better organized groups without any consideration of caste and religion. We saw Muslims and Christians working with Hindu organizations like the R.S.S., Shiv Sena and Hindus with Muslim organizations like Jamayat-e-Islami.

THE EFFECTED PEOPLE

The earthquake affected different strata of people differently. People belonging to well-to-do sections of society had relatives in different parts of the state. As soon as they learnt about the tragedy, they came to the area and tried to provide every type of help to their suffering relatives. As they did not lack resources they took their injured relative out of the area for better treatment. Thus a number of precious lives were saved. secondly, the victims were also spared the trauma and psychological effects of disaster. They were able to retrieve valuables from the rubble. They did not care for relief material and money.

But the people belonging to the middle classes were not so lucky. In most of the cases, they had all their property- house, land, animals etc -at one place. All of them were lost at the time of disaster. Their relatives, even if living outside the area of disaster, were also like them-middle class. They did not have much to spare for helping them. Help made available by way of relief money and material was often not enough. A number of persons belonging to this section of society died due to the lack of treatment. They did not have resources to go away from the theatre of disaster and were condemned to live in the area and continue to suffer from a number of psychological and physiological diseases. Even If avenues were available to them to go away from the area, they would not go for the fear that they might lose whatever little they have . They often did not like to take help from the relief agencies due to one reason or other, self esteem being the

Scanned by CamScanner

most prominent.

The poor people, on the other hand, had very little to loss. their houses were generally made of mud. They generally lived in hamlets adjoining village. since they lived in shanties, very few of them died due to earthquake. Due to over powering nature of their poverty, they did not move far away from the area of disaster and depended on relief material provided by the government and other agencies. They faced uncertain future, and therefor, tried to collect as much relief material as they could. As a result, sometimes they got much more than they had lost during the disaster.

Finally, a word about the dead. Nothing in this world can compensate life. If the near and dear ones of the dead are saved with a little luck., they may get some money as compensation, but their misery is compounded many fold. The many thousand orphans left by the earthquake, some minors and other toddlers, have nobody to look after them save orphanages which are hardly fit places to live.

RELIEF AGENCIES

After the Gujarat earthquake, three types of relief agencies were seen working. The first and foremost and the most visible were local, state, national and international non government voluntary organizations, secondly, the military and the central and state government machinery. since service is their creed, the workers of voluntary agencies work with missionary zeal and help the people without differentiating between them. They do not depend on the government for help and come forward of their own accord to help people in distress. The role of these agencies was commendable in the aftermath of earthquake.

Military's role in earthquake relief was also exemplary. As in war, so in peace, they are a disciplined lot. They are trained to work in difficult areas and conditions at great speed. A number of lives were saved because of the timely help form the Army and Air Force. They provide a role model to other coming to the help of the victims of disasters like earthquake and provide inspiration to them.

The government functionaries and officers, whether coming from inside the state or outside, have their own set of rules. on reaching the area of disaster, they first of all, contact the local administration and like to work on the direction of the local administration. In spite of their short-comings, they often perform important functions, but at the same time, they fall short of the spirit which is so characteristic of volunteers and voluntary agencies.

CONCLUSION

In spite of the participation of a number of agencies in relief work at the time of disaster like earthquake, flood, cyclone, fire, bus and train accidents, local people play the most crucial role in saving the life and property of the victims. They reach the theatre of accident at the earliest and are in a position to help the most. The earthquake in kutch has shown most conclusively the role of local volunteers in mitigating disaster. Therefore, development of volunteering at the local level is the key to success of volunteer effort. We should adopt the motto of 'Think globally and act locally' for successful volunteering.

Before I conclude, I would like to state one more important point. That it is only in the times of severe crises that the people get self organized and this organization is valid only till the relief phase continues since the objective is to save precious lives and property. Once this phase is over, the fervor does not remain so overpowering and other considerations come into play. It is precisely for this reason that not much is often heard about rehabilitation phase, although this phase is no less important yet more drawn out and time consuming.

Thus there is a case of developing volunteering at the local level and volunteering for rehabilitation work. If this can be done, volunteering will get a fillip and local volunteering in conjunction with state, National and International volunteering will be able to play its role in providing relief to the people in need. ❑

Paper selected for presentation at the17th. IAVE World Volunteer Conference held in Seoul, Korea from November 11 to15, 2002.

Scanned by CamScanner

Fiscal Policy and Social Welfare

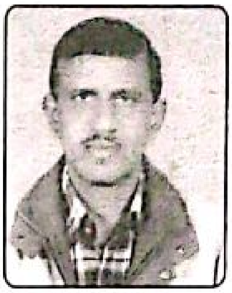

Dr. D.N. Gupta
Economics Deptt.

In considering the Impact of fiscal policy on social welfare we shall take income and tax structure. Let us first see the impact of Income distribution.

Impact of Income Distribution on Social welfare : It is generally believed that more even distribution of Income promotes social welfare. We assume that monetary income is an index of real income. Although price variations can not be ignored altogether. Price variable may be kept constant assuming that the state Assures an optimum distribution goods through a public distribution or other policy measures. Subject to these assumptions. We may say that optimum distribution of money income is conductive to maximization of social welfare. Take a situation a with a given income distribution and level of satisfaction. Any change in this situation world be undesirable if (a) it makes some people more worse off than those whom it make better off, and (b) if the losses of the loser and the gains of the gainers balance with each other leaving the society at a level, Which in totally is not better off than the situation A. On the other hand, if a change in money Income distribution makes at least some people better off without making any one worse off. It may be considered a desirable change on welfare grounds.

We can make use of the law of diminishing marginal utility of income in determining the effect of a shift in income distribution on social welfare. From the point of view of social welfare, we have to see that in any redistribution of money income the marginal utility of gainers is higher than the marginal utility of the losers. Until that happens income redistribution would be desirable for promoting social welfare.

However, it is not certain that equilisation of marginal utilities of all the individuals would lend to maximize the total satisfaction and hence welfare of society. We may have to be content with the maximization of the probable total satisfaction with an egalitarian distribution of income. In other words, for the purpose of maximization of social welfare it is desirable that there should be income distribution from the those with less marginal utility to those with higher marginal utility.

Examination

Pinkey
B.T.C.

I am in tension
Because of my examination,
In Language there is composition,
In English there is comprehension,
In Math there is application,
In Physics there is derivation,
In Chemistry there is equation,
In Botany there is respiration,
In Zoology there is reproduction,
In History there is civilization,
In Civics there is Administration,
In Geography there is occupation,
In Economics there is consumption,
Because of my confusion,
You don't miss your examination,
Because you are all the back bone of our Nation.

Scanned by CamScanner

Save the Earth, It' our turns to lead

Mohd. Wahid
Assit. Prof. Dept. of Geography

2015 - Earth Day's 45th anniversary - could be the most exciting year in environmental history. The year in which economic growth and sustainability join hands. The year in which world leaders finally pass a binding climate change treaty. The year in which citizens and organizations divest from fossil fuels and put their money into renewable energy solutions. These are tough issues but we know what's at stake is the future of our planet and the survival of life on earth. On Earth Day we need to take a stand so that together, we can show the world a new direction. It's our turn to lead.

Today, We are together celebrating World Earth Day, Millions around the world will deliberate on local and global environmental problems on this occasion. As we know, the problems of global warming are threatening the future of biological existence. The issue of protecting our planet from negative sources is still being debated while the atmosphere continues to be polluted. If steps are not taken well in time all the biological species of the Earth may be destroyed. As we know that the Earth is the only planet where the life is possible, where the human, animals and plants can survive. Life in our planet can be found in a myriad of shapes and sizes from single celled bacteria to the giant dinosaurs. Processing exiting knowledge about our planet is not enough. We need to use this to make our Earth a safer, healthier and richer place for everyone. We will have to make concentrated efforts to save our planet.

Humanity is sitting on a ticking time bomb. If the vast majority of the world's Scientists are right, we have just 10 years to avert a major catastrophe that could send our entire planet into a tailspin of epic destruction involving extreme weather, floods, droughts, epidemics and killer that waves beyond that we have ever experienced. If that sounds like a recipe for serious gloom and doom, think again. Global Warming is an urgent crisis; it needs to be tackled now.

It is important that learning leads to action. In 1970, a group of people in U.S. got together and marked 22nd April as Earth Day to draw the attention to increasing environmental problems caused by humans. Since then, every year events to mark Earth Day are held all over the world.

On the other hand, the concept " Conservation is development" is still not widely appreciated. It is only through the sustainable use of land, water, flora, fauna & atmosphere that we can achieve livelihood security for all. The basic life supporting system has to be viewed as an integrated whole. Damage to one component, such as forest leads to the loss of associated flora and fauna, which destruct our environment, while human-beings are mortal, genes be immortal. We should take steps to conserve them.

In nature, it takes centuries to make a centimeter on top soil. Human interference can lead to the loss of such a precious endowment within days. B.F. Skinner, a famous scientist, made the following statement:

"every new source from which man has increased his power on earth has been used to diminish the prospects of his successors. All his progress is being made at the expense of damage to the environment which he cannot repair and cannot foresee"

Developing countries in particular, face

Scanned by CamScanner

serious problems of denudation forests, loss of genetic resources, and loss of cropland, soil erosion and desertification. Serious environmental degradation and depletion of natural resources have also tended to uproot the rural poor, particularly, landless labourers and families from their traditional homes. While well deserved attention is given to political and environmental refugees, who are the victims of breakdown in the balance between human population and life supporting system in their native habituated, who receive neither recognition nor attention.

To save earth's climate, environment, forest, wildlife and the whole nature, some efforts are ongoing every year. In the year 2008, Professor M.S. Swaminathan, Chairman of Chennai based MS SWAMINATHAN RESEARCH FOUNDATION, who expressed his views and thoughts on Global Warming and how is affecting our agriculture and hence food security. He advised to common man to safeguard the environment and emphasized that climate literacy should be made mandatory in schools and colleges. Finally, he said, "Climate management is an individual responsibility & it is upon each one of us to take on the task of contributing to conserve and preserve the environment."

Former US Vice President Al-Gore discussed the possibility of the collapse of a major ice-sheet in Greenland, or in West Antarctica, either of which could rise of global sea levels by around 20 feet, flooding coastal areas and producing 100 million refugees in Kolkata, India. The map of the world would be made again, he observed. Melted water from Greenland because of its lower salinity could then halt the currents that keep Northern Europe warm and quickly trigger dramatic local cooling there.

So, by talking the above issues, which come today, let us join hands and resolve that we will use only environment-friendly material and technology in our homes, offices, industries and institutions to protect our earth for a better & safer future. To fulfill this goal, we can use energy efficient equipments in our homes and save energy. Industries can contribute greatly to the solution of the problem by using environment friendly technologies in manufacturing their products. It is our responsibility to save the earth. We can make this earth greener by planting more trees we should follow and contribute to save & serve it by...

- Planting trees can help in fighting climate change, global warming and imbalance ecological system.
- We should conserve water, electricity and reduce, reuse, recycle all resources.
- Choosing energy efficient appliances, when making new purchases. It could help to eliminate 175 million tones of carbon dioxide emissions every year.
- Rain water harvesting is a key to a satisfied earth and safe life.
- Using less hot water, as it takes a lot of energy to heat it.
- Use a clothes line instead of a dryer to dry clothes to save up to 700 pounds of carbon dioxide.
- Use a bicycle for short distance travelling, as it save energy and minimizes pollution.
- Turning off electronic devices like TVs, DVD Players, Stereos and computers, when not in use.
- Unplugging electronic gadgets like hair dryers, cell phone chargers, when not in use.
- Recycling at home to save up to 2400 pounds of carbon dioxide a year.
- Buying recycled paper products, as it takes less than 70-90 % energy to make it and prevents than loss of forests world-wide.
- Planting a tree as one single tree absorbs 1 tones of CO_2 over its life time. And, the shade provide by them reduces AC bills by 10 to 15 %.

Buying fresh food instead of frozen, as it uses ten times more energy

❑

Scanned by CamScanner

A Teacher's Survival Kit For Everyday Living

Dr. V. C. Gupta
H.O.D., Phychology

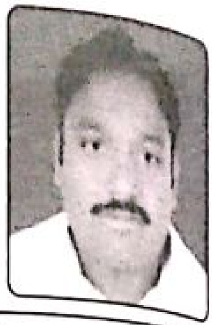

Toothpick : Reminds us to look for the good qualities in our students. You may be the only teacher who says something positive to them that day.

Rubber Band : Reminds the teacher that they have to be flexible. Things do not always go the way we plan, but flexibility by will help to work it out.

Band Aid : Reminds the teacher that some times we do more than teach that we help heal hurt feelings, broken dreams and lend and lar to a problem.

Pencil : Reminds us to be thankful and we should list our blessings daily but also encourage our students to list their blessings and to be proud of their accomplishments.

Fraser : Reminds us to allow students to know we are human and make mistakes just like they do and it's ok. we must all be able to learn from our mistakes.

Chewing Gum : Reminds us to stick with it and encourage our students to do like wise Even the impossible task can be accomplished by sticking to it.

Candy Kiss : Reminds us that everyone needs a hug. Kiss or warm fuzzy every day. (All teachers, students, Parents and even administrators.)

Tea Bag : Reminds us we need time to relax, go over our blessing and take time for others. Family husbands, wives, friends, children need quality time together. A teacher must be willing to show their students now much they care !

Test Your Knowledge About Computer!

1. What do computers like to eat. **Ans.** : Chips.
2. What is computer's first sign of old age ? **Ans.** : Loss of memory.
3. What happens when computer falls on the floor ? **Ans.** : It slips a disk.
4. What is a computer virus ? **Ans.** : A terminal illness.
5. How does tree get on the internet ? **Ans.** : It logs in.
6. Which is the favourite key of astronaut on keyboard ? **Ans.** : Space bar.
7. What kind of doctor fixes broken web sites ? **Ans.** : AUR Logist.
8. Why is there a bug in the computer ? **Ans.** : It may be looking for a byte to eat.

Scanned by CamScanner

Live, Life, Like A Lotus

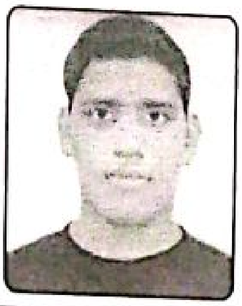

The correct way is to perform worldly duties and obligations to the best at your ability while being vigilant that the supreme being is your real destination. Your love and loyalty to God is a reliable insurance against odds at any Intensity. It is a cheque which does not bounce. If you live throughout your life without forgetting the almighty even for a moment. God will never let you to be carried away by the delusions at this world. It is then that you will live life like a lotus flower, when you will live in the world but get drowned in the world.

Therefore, dear readers, step ahead to awaken your divine personality. It is the real and ultimate goal of your life. Striking a judicious balance between mundane and the life is an ideal way of living. None has taken along. the worldly possessions into the life here after, but time attributes acquired while pursing the divine path cling to the soul and take one to the higher ladder of evaluation.

This journey from human personality to a divine personality is accomplished through regular meditations on effluent light of our Real self. This esoteric meditations teaches one to Subjugate desires of the mind, dissolve the ego. Attune with pure self and get settled in wisdom. To tread this path all you require is to perceive the Divine light of the through the eternal technique of Divine knowledge.

❑

Neeraj Agarwal
B. Com. IIIrd Year

Make Yourself Beautiful

Follow these tips to make yourself beautiful from inside :

1. **To make your eyes beautiful :** Always See beautiful things and show others.
2. **To make your lips beautiful :** Always speak good to others, never hurt others.
3. **To make your cheeks beautiful :** Always be happy and make others happy by smiling forever.
4. **To make your ears beautiful :** Always hear good for others.

   If anybody says bad for others. Don't listen to her\him.
5. **To make your neck beautiful :** Never bent yourself in front of anyone instead of god.
6. **To make your hands beautiful :** Always do good for others by helping and caring them.
7. **To make your legs beautiful :** Always choose right path and also show the right path to others.
8. **To make your heart beautiful :** Always love others, never hate them.

   When you bear all these qualities. you will be the most loving and beautiful person on earth.
9. "Don't make yourself beautiful from outside, make yourself beautiful from inside.

❑

Monika
B. Ed.

Humankind has not woven the web of life. We are but one thread within it. Whatever we do to the web, we do to ourselves. All things are bound together. All things connect.

- Chief Seattle

Scanned by CamScanner

What ? Why ? How ?

1. All living beings except for plants face the condition of fever at least once in their lifetime, but is this fever a disease?
   - The temperature of the body rises from its normal body temperature of 98.6° F. as in case of humans, whenever we face any malfunctioning or disturbance in the body. In reality fever is nothing but an alarm which indicates that something wrong is happening in our body. Hence, fever is not a disease, but an indication.
2. Have you ever noticed a doctor sprinkling a drop of injection before injecting to a patient?
   - It is just to remove the air present in the injection. As the air injected into blood veins can be fatal and even lead to death of the patient.
3. Cats and owls generally prey at night only because of the special Red cells present in their eyes. The high number of red cell enables them with the night vision.
4. Cooking gas (LPG) is odour less but it can be identified when a gas is leaked from a cylinder.
   - The LPG is mixed with Ethyl Mercaptan; a smelling agent which, if mixed can make any gas leaks detectable.
5. Danger signals are Red and not green in colour.
   - The danger signs are usually red coloured because the red colour has the longest wavelength compared to all other colour and could be easily observed through a naked eye from large distances.

❑

Param Jyoti Singh
B.T.C.

SOCIOLOGICAL / PSYCHOLOGICAL FACTS

1. Marrying your best friend eliminates the risk of divorce by over 70%. These marriages are more likely to last a lifetime.
2. Men and Women who listen to similar music tend to be better communicator and have long lasting relationships.
3. Dreams often reveal feelings that we have hidden or repressed, because dreams are a reflection of our unconscious mind, our emotional truth.
4. Too much stress literally causes the human brain to freeze and shut down temporarily.
5. A women will only argue with someone she truly cares for less arguing occurs when she is least, interested.
6. 91% people skip the first slice of bread, just because it's ugly.
7. Drinking milk actually gives you a healthy dose of calcium, which helps strengthen your bones and teeth.

❑

Manoj Kumar Gupta
B.A. IIIrd Year

Scanned by CamScanner

NUCLEAR ENERGY FOR INDIA

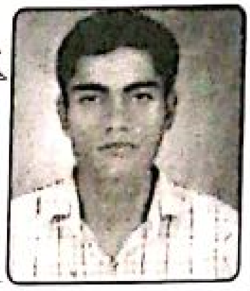

Pramod Attri
B.T.C.

The talk of nuclear energy has once again come up after PM's visit to Australia. Where a historic breakthrough has been made where by India has been recognized as a de-facto nuclear power by the powerful nation, i.e. Australia. It has brightened the chances of India to produce electricity from nuclear energy. 17% of the total electricity in the world is being produced from nuclear energy. India produces less than 3% of nuclear energy for peaceful purposes.

India's main source of energy is coal. 55% of the total energy is produced from coal. Next in the line is oil and gas with 36%. The quality of coal is poor. Only 20% of the coal is acceptable in quality.

Nuclear energy contributes just less than 3% of the total energy from 14 plants which are generating 2720 MW of energy. If India has to become a major economic power in the world, this energy scenario is not good. If we have to maintain a growth of 7% of our GDP, we have to plan for a cost effective source of energy which is clean and certain.

Why nuclear energy ?

India has abundant stock of coal reserves but the quality is not so good. It is polluting the atmosphere. Regarding oil, we are importing 70% of our consumption basically from the Gulf. As the demand for the oil increases with the development of economy, both for industry and automobile sector, the figure may touch 80%. We have the crude oil that is coming by ships, and planning to get the gas through pipelines. Majority of oil is coming from middle east whereas we are trying our gas from Iran, Central Asia and Myanmar. All these areas are Conflict Zones with uncertainties. If there is a stoppage of oil and gas, the Indian economy will going to suffer.

Many developed countries of the world are producing electricity from nuclear energy for peaceful purposes.

These are :

:

1.	Lithuania	-	80%
2.	France	-	78%
3.	Sweden	-	50%
4.	S. Korea	-	40%
5.	Germany	-	25%
6.	U. K.	-	25%
7.	U. S. A.	-	20%
8.	India	-	2.8%

Problems of India :

India is a nuclear power state after nuclear explosion in 1998. As we are not signatories to the N.P.T., we were barred from getting any nuclear fuel from the nuclear suppliers group, a group of 44 Countries which control nuclear fuel it is a fissile material that is capable of sustaining a chain reaction in a split second. The important material are Uranium 233, Uranium 235 and Platinum 239. As there is a scarcity of these metals.

Indian plans to use thorium as fission fuel. India has 32% of the world known Thorium reserves.

Security of energy :

Oil and gas are being imported from the Middle East and Central Asia. This is a hung import expenditure and full of uncertainties. Middle east has its own problem of Iraq, Iran, Lebanon and Israel - Palestine conflicts. so overall, these are uncertainties due to geopolitical reasons. Considering all these factors, nuclear energy plants are costly to install but the cost comes down as the production starts. The availability of electricity is assured, and our economy wants un-interrupted power to boost the industry and transport system.

Scanned by CamScanner

Girl's Imagination

A girl dreaming high
wanted to reach up to the sky
Without letting the world know, why
Where there were no boundaries
no limitations.
Only-Only............ fantasy & fascinations.

A world full of wonder, Like fairy tales,
Where things cannot be distinguished
from nail to nail.
It filled her with joy
to think that she had reached the sky.

But all of them came shattering down.
When she was roused from her slumber
with her mother moving around.
Making the dream in her head
to go to launder.

She thought that the world
had come to an end.
But once for a white, she was wrong.
It was just the ending of
a dream she had dream.

Surabhi Jain
B.Com. III Year

God and Devil

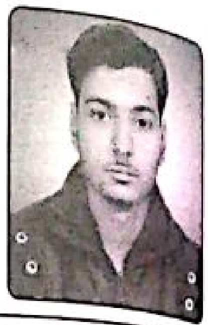

I have seen God, He is within me.
Whenever I act generously,
forgive someone genuinely,
I feel Him in me.
I have seen the devil, He is within me.
whenever I get angry,
I speak things should n't act
like I must n't.
I feel Him in me.
I have seen God, He is within me,
Wherever I go out of my way
to help some one.
Make some one happy and feel the
some happiness enchant me.
I feel Him in me.
I have seen the devil, He is within me.
Whenever I hurt some one in intentionally.
Want to make some one miserable & weak.
I feel Him in me.
Yes, I have seen God,
And I have seen the devil,
Both are inside me.
It's up to me to choose what to become,
How to act, how to feel ?
To awaken the God or the devil in me.

Ankur Verma
B.Com. III Year

Scanned by CamScanner

महाविद्यालय का इतिहास एवं प्रगति

'कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेपु कदाचनः'

ज्ञान महाविद्यालय की स्थापना 11 सितम्वर, 1998 में स्व. डॉ. ज्ञानेन्द्र गोयल जी द्वारा वाणिज्य संकाय के साथ की गई थी। डॉ. ज्ञानेन्द्र गोयल जी पेशे से डॉक्टर थे, वह एक लेखक, समाजसेवी के साथ-साथ अच्छे शिक्षाविद् भी थे। इसीलिए सब शिक्षित हों, इस प्रबल इच्छा के कारण उन्होंने ज्ञान महाविद्यालय की स्थापना शहर के कोलाहल से दूर एक निर्जन स्थान में की थी। **'कार्य ही पूजा है'** यह उनके जीवन का सिद्धान्त था। वर्ष 2002 में उनके अन्तिम श्वांस लेने के उपरांत महाविद्यालय की बागडोर उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री दीपक गोयल जी द्वारा संभाली गयी। लोग मिलते गये, कारवाँ बढ़ता गया और उन्होंने अपने महाविद्यालय की टीम के साथ ज्ञान महाविद्यालय को एक नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया और आज यह अलीगढ़ में प्रतिष्ठित महाविद्यालय के रूप में प्रसिद्ध है। वर्तमान में महाविद्यालय में पाँच संकायों में स्नातक कोर्स बी.एड., बी. टी. सी., बी.एस-सी., बी.कॉम, बी. ए., बी.बी.ए. व बी.सी.ए., संचालित हैं तथा परास्नातक स्तर पर एम.कॉम का कोर्स सफलतापूर्वक चल रहा है। डॉ. गौतम गोयल के निर्देशन में ज्ञान आई. टी. आई. कोर्स की भी मान्यता दो ट्रेडों (इलैक्ट्रिशियन व फिटर) में प्राप्त हो चुकी है।

सचिव महोदय के प्रयासों द्वारा अलीगढ़ जिले में सर्वप्रथम बी.टी.सी. कोर्स की मान्यता प्राप्त हुई। महाविद्यालय के शिक्षा विभाग में आज 200 सीटें हैं। यह बहुत ही गौरव की बात है कि शिक्षा संकाय को 'A' ग्रेड से नवाजा गया था। यह आगरा विश्वविद्यालय का प्रथम कॉलेज है, जिसने सबसे अधिक अंकों के साथ 'A' ग्रेड प्राप्त किया। हर्ष का विषय है कि ज्ञान महाविद्यालय आगरा विश्वविद्यालय का प्रथम स्ववित्त पोषित कॉलेज है, जिसे इस वर्ष NAAC द्वारा विज्ञान, वाणिज्य, कला एवं प्रवन्धन संकायों को 'B' ग्रेड से नवाजा गया है।

महाविद्यालय में चार भवन डॉ. रघुनन्दन प्रसाद प्रशासनिक भवन, सरस्वती भवन, ज्ञान भवन व स्वराज्यलता भवन हैं। सरस्वती भवन जहाँ जन्तु, वनस्पति, रसायन, भौतिकी, भूगोल व मनोविज्ञान की प्रयोगशालाओं से सुसज्जित है। वहीं पर ज्ञान भवन में मनोविज्ञान, भाषा, कला व शिल्प, शारीरिक व स्वास्थ्य, विज्ञान एवं संगीत आदि के रिसोर्स सेंटर हैं तथा सुसज्जित आई. सी. टी. प्रयोगशाला है, जहाँ पर सभी कम्प्यूटर पर वाई.फाई. सिस्टम लगे हुए हैं। दोनों ही भवनों में पूरी तरह से कम्प्यूटरीकृत पुस्तकालय है, जहाँ पर लगभग 22,000 Text Books हैं। इसके अतिरिक्त जर्नल, न्यूज लैटर, पत्रिका तथा समाचार पत्रों की भी पुस्तकालय में सुविधा है। इसके अतिरिक्त सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए पूरा कैम्पस सी.सी.टी.वी. कैमरों से सुसज्जित है।

आगरा विश्वविद्यायल में पहला एकमात्र स्व-वित्त पोषित कॉलेज है, जिसमें राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम चल रहा है। इस वर्ष सात दिवसीय कैम्प नजदीक के ग्राम रुस्तमपुर सकत खाँ, मन्दिर नगला में आयोजित किया गया था।

महाविद्यालय द्वारा ग्राम बढ़ौली फतेहखाँ को सत्र 2012-13 में शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु गोद लिया गया था। इसके अन्तर्गत 12 लड़कियों को महाविद्यालय में निःशुल्क शिक्षण सुविधा दी गई थी सत्र 2014-15 से इस योजना के अन्तर्गत एक गाँव के स्थान पर 14 गाँवों में यह सुविधा दीजा रही है, जिसके अन्तर्गत प्रवेश लेने वाली छात्राओं को शिक्षण शुल्क में 50% की छूट छात्रवृत्ति के रूप में प्रदान की जाती है। तथा **''स्वराज्य स्वावलम्बी योजना''** के अंतर्गत 29 सिलाई मशीनों का वितरण गाँव की कन्यायों (महाविद्यालय की पूर्व या वर्तमान छात्रा) की शादी के शुभ अवसर पर प्रवन्धतन्त्र द्वारा किया जा चुका है। इसी क्रम में **''स्वराज्य स्वावलम्बी योजना''** के अन्तर्गत गोद लिए गए 14 गाँवों के छात्रों को ज्ञान आई. टी. आई में प्रवेश लेने पर पूरे शुल्क में 4,000 रु. की छूट छात्रवृत्ति के रूप में प्रदान की जाती है। रक्तदान, भ्रष्टाचार रैली, पॉलीथिन हटाओ-पर्यावरण बचाओ आदि सामाजिक कार्य भी समय-समय पर आयोजित होते रहते हैं।

महाविद्यालय में विभिन्न समितियाँ हैं, जिनके अन्तर्गत वर्ष भर में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त एक अनुशासन समिति है, जिसकी देख-रेख में ही महाविद्यालय के छात्र अनुशासित रहते हैं। आगरा विश्वविद्यालय में पहली बार छात्र/छात्राओं की उपस्थिति के लिए Biometric Machine भी लगी हुई है।

वर्तमान में महाविद्यालय में लगभग 2,200 छात्र/छात्राएं अध्ययनरत् है तथा 70 टीचिंग स्टाफ व 50_नॉन टीचिंग स्टाफ है। अत: महाविद्यालय में शिक्षक-शिक्षार्थी का अनुपात लगभग 1 : 30 है जोकि सेल्फ फाइनेंस संस्था में एक

Scanned by CamScanner

बहुत ही गौरव की बात है। सत्र 2014-15 से इण्टरमीडिएट में प्रथम श्रेणी प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को 25 प्रतिशत व द्वितीय श्रेणी पास करने वाले विद्यार्थियों को 15 प्रतिशत का शिक्षण शुल्क में लाभ छात्रवृत्ति के रूप में दिया जाता है। इसके अतिरिक्त उन्हें एक यूनीफार्म भी प्रदान की जाती है, जिससे छात्रों में एकरूपता की भावना उत्पन्न हो तथा द्वितीय एवं तृतीय वर्ष के छात्रों के लिए एक कलाई घड़ी उपहार स्वरूप दी जाती है, जिससे वे समय की महत्वता को ध्यान में रख सकें।

महाविद्यालय में सेवायोजन प्रकोष्ठ व पुरातन छात्र समिति भी है। सेवायोजन प्रकोष्ठ के अंतर्गत छात्र/छात्राओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जाते हैं। कई छात्र/छात्रायें सरकारी सेवाओं में चयनित हो चुके हैं। पुरातन छात्र समिति के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव व कोषाध्यक्ष पदों के पदाधिकारियों के चयन हेतु प्रत्येक वर्ष पुरातन छात्र/छात्राओं से चुनाव कराया जाता है। इस वर्ष भी पुरातन छात्र समिति द्वारा एक पत्रिका **'ज्ञान दीप'** का प्रकाशन किया गया। इसके अतिरिक्त प्रत्येक वर्ष 16 दिसम्बर को पुरातन छात्र/छात्राओं के लिये **'ज्ञान दिवस'** का आयोजन किया जाता है, जिसके अंतर्गत सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी होता है।

महाविद्यालय का **''Vision to be a Center of Excellence''** है। इस श्रृंखला में शिक्षण गुणवत्ता बनाये रखने हेतु Internal Quality Assurance Cell (IQAC) भी कार्यरत है। इसके अंतर्गत शिक्षकों को सेमिनार, कार्यशालाओं व Orientation Programme में सम्मिलित होने का अवसर प्रदान किया जाता है। महाविद्यालय के लगभग 80 प्रतिशत प्राध्यापकों को ए.एम.यू. में Orientation Programme के लिए भेजा गया और इसी तरह से कई प्राध्यापकों को Refresher Course के लिए भी भेजा गया। शिक्षण में नवीनता लाने हेतु शिक्षकों को Computer Note Book उपलब्ध कराये गये हैं। महाविद्यालय में समय-समय पर अध्ययन- अध्यापन की गुणवत्ता व उसमें नवीनता लाने के लिये अतिथि व्याख्यानों का आयोजन किया जाता है।

महाविद्यालय **'ज्ञान पुष्प'** के नाम से वार्षिक पत्रिका व चतुर्थ मासिक पत्रक **'ज्ञान दर्शन'** का भी सफल प्रकाशन कर रहा है। **Gyan Bhav** नामक जर्नल का पंचम संस्करण भी प्रकाशित करने जा रहा है तथा इसी क्रम में विज्ञान संकाय से **Gyan Vigyan** व वाणिज्य संकाय से **Gyan Arth** नामक जर्नल इस वर्ष से प्रकाशित किए जा रहे हैं। गौरव का विषय है कि इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU) द्वारा महाविद्यालय में एक विशेष अध्ययन केन्द्र की स्थापना की गई है जिसमें 10 कोर्सो के साथ जनवरी 2015 से प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं। महाविद्यालय को डोयेक सोसायटी (भारत सरकार द्वारा संचालित) द्वारा **बी.सी.सी** तथा **सी. सी.सी.** कम्प्यूटर कोर्स के संचालन की मान्यता प्रदान की गई है।

कमजोर छात्रों हेतु अतिरिक्त कक्षाओं की व्यवस्था की जाती है। वर्तमान समय प्रतिस्पर्धा युक्त होने के कारण छात्रों को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु सत्रीय परीक्षाओं को **ओ. एम.आर. शीट** के माध्यम से कराया जाता है।

छात्रों के लिए खेल में प्रोत्साहन हेतु सभी प्रकार के खेलों का आयोजन होता है तथा छात्रों के लिए अन्तर्महाविद्यालयी प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है एवं उसमें भाग लेने वाले छात्रों के आने जाने का व्यय महाविद्यालय द्वारा किया जाता है तथा प्रतिभाशाली खिलाड़ी छात्रों के लिए **'ज्ञान गौरव'** व **'ज्ञान केसरी'** पुरस्कार भी प्रदान किए जाते हैं।

महाविद्यालय की छात्राओं के लिए बस सुविधा का भी प्रावधान है। बस स्टैण्ड चौराहे से महाविद्यालय तक बस सेवा उपलब्ध करायी जा रही है। छात्र/छात्राओं के लिए शैक्षिक भ्रमण का आयोजन भी किया जाता है।

ज्ञान परिवार नई पीढ़ी के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए प्रतिबद्ध है, जिसके अंतर्गत युवा वर्ग के रुझान के अनुरूप फेसबुक पर भी **'ज्ञान वाटिका'** नामक ग्रुप के साथ छात्र/छात्राओं एवं प्राध्यापकों से जुड़ा हुआ है।

महाविद्यालय भविष्य के लिए अनेक योजनायें बना रहा है, जिनमें मुख्य हैं :

1. महाविद्यालय को स्वायत्त (Autonomous) संस्था बनाना।
2. सभी विभागों में सेमिनार व कार्यशालाओं का आयोजन कराना।
3. एम. एड. एवं एम. एस-सी. की मान्यता प्राप्त करना।
4. कला संकाय में अतिरिक्त विषयों की मान्यता प्राप्त करने का प्रयास करना।

अंत में जिस तरह से ज्ञान महाविद्यालय ऊँचाइयों की तरफ अग्रसर है। हम सभी ज्ञान परिवार के सदस्य मिलकर इसकी उन्नति हेतु प्रयत्नशील रहने के लिए प्रतिबद्ध हैं। ❖

डॉ. वाई के. गुप्ता
प्राचार्य

Scanned by CamScanner

महाविद्यालय के विभिन्न संकायों की प्रगति रिपोर्ट

वाणिज्य संकाय

वाणिज्य संकाय इस महाविद्यालय का एक आधारभूत एवं प्रतिष्ठित संकाय है। महाविद्यालय का शुभारम्भ सन् 1998 में बी.कॉम. कक्षाओं से शुरू हुआ और यह गौरव की बात है कि पिछले 17 वर्षों से संकाय निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रणी है। महाविद्यालय के प्रबन्धन के प्रस्ताव पर डा. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय द्वारा सत्र 2009-10 में एक अतिरिक्त सैक्शन की भी वृद्धि की गई।

महाविद्यालय प्रबन्धन के प्रयासों से परास्नातक स्तर पर सत्र 2009-10 से दो समूहों (व्यवसाय प्रशासन तथा लेखा एवं विधि) में एम. कॉम. पाठ्यक्रम प्रारम्भ हुआ।

इस संकाय ने पिछले सत्र 2013-14 में बी.कॉम. एवं एम. कॉम के परीक्षा परिणामों में लगभग शत-प्रतिशत सफलता प्राप्त की है। विभागाध्यक्ष डॉ. जुगेन्द्र कुमार शर्मा के कुशल निर्देशन में कार्यरत था, अब डॉ. राजेश कुमार कुशवाहा के निर्देशन प्रगतिपथ पर अग्रसर है। विभाग में डॉ. समर रजा, डॉ. हीरेश गोयल, श्री गिरीश कुमार गुप्ता व डॉ. संध्या सैंगर हैं। इस सत्र में डा. सत्येन्द्र कुमार दीक्षित की नव नियुक्ति हुई है। वर्तमान सत्र में वी.कॉम. में लगभग 650 छात्र/छात्राएं एवं एम.कॉम. में लगभग 80 छात्र/छात्राएं अध्ययनरत हैं। संकाय के लगभग सभी प्राध्यापक यू.जी.सी. एकेडेमिक स्टाफ कॉलिज से प्रशिक्षित हैं।

विभागीय प्राध्यापकों ने महाविद्यालय के अनेक कार्यों में उत्कृष्ट भूमिका निभायी है। डॉ. समर रजा (प्रवेश समिति प्रभारी), डॉ. हीरेश गोयल (सहायक अनुशासन अधिकारी), गिरीश कुमार गुप्ता (क्रीड़ा समिति सदस्य) एवं डॉ. संध्या सैंगर (साहित्यिक समिति सदस्य) की भूमिका बखूवी निभा रहे हैं। वर्तमान सत्र 2014-15 से वाणिज्य संकाय द्वारा छमाही **'ज्ञान अर्थ'** नामक जर्नल प्रकाशित किया जा रहा है।

सभी प्राध्यापक राष्ट्रीय सेमीनारों, संगोष्ठियों में यथा सम्भव सहभाग कर अपने पेपरों को प्रकाशित कराते हैं, जिससे वे समय की चुनौतियों को स्वीकार करते हुए अपने को अद्यतन रख सकें।

10 नवम्बर, 2014 को एक अतिथि व्याख्यान डॉ. डी. के. अस्थाना, पूर्व प्रबन्धक, इण्डियन ओवरसीज बैंक, अलीगढ़ द्वारा ''वस्तु विनिमय से इण्टनेट बैंकिंग की यात्रा'' विषय पर किया गया।

प्रथम वर्ष के सभी विद्यार्थियों का प्रवेश उपरान्त पूरे कालिज का भ्रमण कराया गया तथा सभी विभागों से परिचय कराया गया। विभाग के सभी विद्यार्थी महाविद्यालय की सभी सहगामी गतिविधियों में भाग लेते हैं।

विज्ञान संकाय

महाविद्यालय में विज्ञान संकाय डॉ. एस.एस. यादव प्रभारी के कुशल नेतृत्व में प्रगति पथ पर लगातार अग्रसर है। विज्ञान संकाय में छात्रों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। यह उपलब्धि प्राध्यापकों की कड़ी मेहनत, कर्मठता, ईमानदारी एवं कार्यकुशलता से ही सम्भव हुई है। महाविद्यालय के प्राध्यापक अति व्यस्तता के बावजूद राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में पेपर भेजते हैं तथा सेमीनार, कार्यशाला एवं गोष्ठियों में सहभाग करते रहते हैं। विज्ञान संकाय की समस्त प्रयोगशालाएं (रसायन विज्ञान, जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, भौतिक विज्ञान) नवीन उपकरणों से सुसज्जित हैं। समस्त विभागों का परीक्षाफल उत्साहवर्धक रहा है। संकाय के प्राध्यापक डॉ. एस.एस. यादव समन्वयक-रोजगार समिति, प्रभारी-परीक्षा समिति, समन्वयक-पुरातन छात्र समिति के साथ-साथ उप प्राचार्य का कार्य भी देख रहे हैं। इस वर्ष विज्ञान संकाय द्वारा एक अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल **'ज्ञान विज्ञान'** के नाम से प्रकाशित किया जा रहा है, जिसका प्रभार भी डा. एस. एस. यादव संकाय के समस्त साथियों के सहयोग से देख रहे हैं। यह बहुत ही हर्ष की बात है कि इस वर्ष डा. अन्तिमा कुलश्रेष्ठ का चयन भी सरकारी विद्यालय में हो गया है।

<u>रसायन विज्ञान विभाग :</u>

महाविद्यालय का रसायन विज्ञान विभाग प्रभारी, डॉ. एस.एस. यादव एवं विभाग के साथी प्राध्यापक डॉ. कविता सिंह, डा. रेहान जहीर, श्री प्रवीन कुमार के सहयोग से प्रगति कर रहा है। समस्त प्राध्यापक उच्च शिक्षा के मानकों को पूर्ण कर रहे हैं। इस वर्ष छात्र/छात्राओं को सामान्य ज्ञान, निबन्ध, विषय टेस्ट, शैक्षिक भ्रमण एवं मेन्टोर के द्वारा उनकी समस्याओं का निराकरण कराया गया। सभी छात्र-छात्राएं पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग ले रहे हैं तथा सांस्कृतिक एवं

Scanned by CamScanner

साहित्यिक कार्यक्रमों (जैसे डाण्डिया, दिवाली मेला, हवन, 15 अगस्त, 2 अक्टूबर, 26 जनवरी, वार्षिकोत्सव आदि) में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं। संकाय का छात्र कैलाश बघेल अपनी पहचान विश्वविद्यालय स्तर पर बनाने में कामयाब रहा है।

भौतिक विज्ञान विभाग :

महाविद्यालय का भौतिक विज्ञान विभाग श्री वीरेन्द्र पाल सिंह यादव प्रभारी के कुशल निर्देशन में निरन्तर कार्यरत है। इस वर्ष विभाग में सेशनल टेस्ट, निबन्ध प्रतियोगिता, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया गया। विभाग की प्रयोगशाला आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित है। गत वर्ष की परीक्षाओं में विभाग का परीक्षाफल भी सराहनीय रहा है।

जन्तु विज्ञान विभाग :

महाविद्यालय का जन्तु विज्ञान विभाग डॉ. प्रमोद कुमार प्रभारी डा. प्रमोद कुमार एवं सहकर्मी डॉ. फैसल सिद्दकी के साथ लगातार लगातार प्रगति के पथ पर अग्रसर है। संकाय के छात्र/ छात्राओं का शैक्षणिक भ्रमण कार्यक्रम का प्रभार भी विभाग ने संभाला है। यह भ्रमण आगरा की विश्व प्रसिद्ध इमारत ताजमहल व फतहपुर सीकरी को देखने के लिए हुआ था। छात्र/ छात्राओं को ऐतिहासिक जानकारी दी गई। विभाग में एक अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसकी मुख्य वक्ता डॉ. पारुल यादव, एसोसिएट प्रोफेसर, प्राणि विज्ञान विभाग, डी. एस. कालेज, अलीगढ़ थीं। व्याख्यान का विषय **''बायोलुमिनीसेन्स (जुगनू)''** पर था। विभाग के प्राध्यापक अपने शोध पत्र भी भेजते रहते हैं। डा. प्रमोद कुमार एन्टी रेगिंग समिति का कार्य सराहनीय तरीके से देख रहे हैं।

वनस्पति विज्ञान विभाग :

महाविद्यालय का वनस्पति विज्ञान विभाग की अध्यक्षा डा. अन्तिमा कुलश्रेष्ठ थीं, उनका सरकारी विद्यालय में चयन होने के कारण अब डॉ. सुहैल अनवर अध्यक्षा हैं, जिनके कुशल संचालन में विभाग प्रगति पथ पर अग्रसर है। इस वर्ष विभाग द्वारा **''जीन, क्लोन इन प्लाण्ट''** विषय पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसके मुख्य वक्ता डॉ. मुकेश कुमार भारद्वाज एसोसिएट प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग, धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़ थे। डा. सुहैल अनवर के कई शोध पत्र विश्वस्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं।

गणित विभाग :

विज्ञान संकाय का गणित विभाग प्रभारी श्री अमित कुमार वार्ष्णेय के कुशल निर्देशन में प्रगति कर रहा है। विभाग का सहयोग छात्रों के छात्रवृत्ति फार्म भरवाने, विश्वविद्यालय के परीक्षा फार्म भरवाने आदि कार्यों में रहता है। विभाग का परीक्षाफल भी सन्तोषजनक रहा है। गणित विभाग में एक अतिथि व्याख्यान का आयोजन कराया गया, जिसकी मुख्य वक्ता डॉ. सतीश चन्द्र तिवारी एसोसिएट प्रोफेसर, गणित विभाग, श्री वार्ष्णेय कालेज, अलीगढ़ थे। व्याख्यान का विषय ''फण्डामेन्टल ऑफ मैथमेटिक्स'' पर आधारित था।

कला संकाय

उ० प्र० सरकार व डा. भीमराव अम्बेदकर विश्वविद्यालय, आगरा द्वारा सत्र 2010-11 में ज्ञान महाविद्यालय को सात विषय हिन्दी, अंग्रेजी, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, भूगोल, मनोविज्ञान तथा शिक्षाशास्त्र के साथ बी. ए. की कक्षाएं प्रारम्भ करने की मान्यता प्रदान की गई। सत्र 2013-14 में बी. ए. तृतीय वर्ष का दूसरा बैच उत्तीर्ण होकर निकल चुका है, जिसका परीक्षा परिणाम लगभग शत-प्रतिशत रहा। सत्र 2014-15 में कला संकाय में 748 छात्र-छात्राएं शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। डॉ. विवेक मिश्रा प्रभारी की भूमिका निभा रहे हैं।

- संकाय में प्रत्येक प्राध्यापक एक आदर्श 'Mentor' की भूमिका निभा रहे हैं, जिसमें प्राध्यापक छात्र-छात्राओं से उनकी समस्याओं आदि के बारे में जानने का प्रयास कर समाधान करने का प्रयत्न करते हैं।
- 22.01.2015 को कला संकाय के सभी छात्र-छात्राओं का ओ.एम.आर. सीट से एक बहुविकल्पीय टेस्ट कराया गया, जिससे छात्र-छात्राओं में ओ.एम.आर. सीट द्वारा बहु-विकल्पीय प्रश्नों को हल करने की योग्यता आए।
- कला संकाय के छात्र-छात्राओं का शैक्षिक भ्रमण भी समय-समय पर कराया जाता है।
- कला संकाय के प्राध्यापक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में अपने पेपर भेजते हैं एवं सेमीनार, कार्यशाला में भाग लेते रहते हैं।

संकाय के बी.ए. द्वितीय वर्ष के छात्र सचिन सैनी ने कुश्ती प्रतियोगिता में कुश्ती प्रतियोगिता में विजय हासिल कर जिला केसरी का खिताब जीता।

हिन्दी विभाग :

हिन्दी विषय में डॉ. बीना अग्रवाल एवं डा. नरेन्द्र सिंह प्राध्यापक हैं। डॉ. बीना अग्रवाल महाविद्यालय की साहित्यिक

Scanned by CamScanner

कार्यक्रम समिति एवं सांस्कृतिक समिति में सदस्या हैं। तथा डा. नरेन्द्र सिंह अनुशासन समिति के सदस्य हैं। हिन्दी का अतिथि व्याख्यान डॉ. प्रेम कुमार (एसो. प्रोफेसर) डी. एस. कालेज, अलीगढ़ द्वारा दिया गया, जिसका विषय "**कहानी पाठ : लेखन एवं प्रक्रिया**" रखा गया।

अंग्रेजी विभाग :

अंग्रेजी विषय में डॉ. कुंवरपाल सिंह प्राध्यापक हैं। आप महाविद्यालय की अध्यापक कल्याण समिति, प्रवेश समिति, ज्ञान रोजगार एवं सलाहकार समिति के सदस्य हैं। अंग्रेजी का अतिथि व्याख्यान डॉ. वी. पी. सिंह (एसो. प्रोफेसर) डी. एस. कालेज, अलीगढ़ द्वारा किया गया, जिसका विषय- **'Significance of Romantic Poets in English lit.'** रखा गया।

समाजशास्त्र विभाग :

समाजशास्त्र विषय में डॉ. विवेक मिश्रा एवं डॉ. ललित उपाध्याय प्राध्यापक हैं। डॉ. विवेक मिश्रा महाविद्यालय की ज्ञान सामाजिक सरोकार समिति (सामाजिक दायित्व कार्यक्रम) के प्रभारी की भूमिका निभा रहे हैं तथा छात्र कल्याण समिति, अनुशासन समिति एवं परीक्षा समिति के भी सदस्य हैं। डॉ. ललित उपाध्याय महाविद्यालय में मुख्य अनुशासन अधिकारी, कार्यक्रम अधिकारी, राष्ट्रीय सेवा योजना ईकाई के प्रभारी के साथ-साथ अध्यापक कल्याण समिति के सदस्य हैं। डॉ. ललित उपाध्याय महाविद्यालय की मीडिया व सोशल मीडिया समन्वय सम्बन्धी कार्यों का भी बखूबी निर्वहन कर रहे हैं। इस वर्ष डा. विवेक मिश्रा एवं डा. ललित उपाध्याय ने 3 सितम्बर, 2014 से 5 सित. 2014 तक वृन्दावन रिसर्च इंस्टीट्यूट, वृन्दावन में INTACH CONSERVATION INSTITUTE द्वारा आयोजित तीन दिवसीय वर्कशाप में भाग लिया गया, जिसका विषय PREVENTIVE CONSERVATION OF LIBRARY & ARCHIVAL COLLECTION रखा गया। इस वर्कशाप में पुस्तकों, अभिलेखों एवं पाण्डुलिपियों को संरक्षित करने के बारे में बताया गया। समाजशास्त्र का अतिथि व्याख्यान डॉ. एच. एन. सिंह (एसो. प्रोफेसर, डी. एस.कालेज, अलीगढ़) द्वारा दिया गया, जिसका विषय "**अनुसूचित जातियों की समस्या एवं समाधान**" रखा गया।

भूगोल विभाग :

भूगोल विषय में डॉ. सोमवीर सिंह एवं मौ. वाहिद प्राध्यापक हैं। डॉ. सोमवीर सिंह महाविद्यालय की रैगिंग नियन्त्रण समिति, अनुशासन समिति, खेलकूद समिति एवं परीक्षा समिति के सदस्य हैं। मौ. वाहिद महाविद्यालय की अनुशासन समिति में सदस्य हैं। आप दोनों ही प्राध्यापक यू. जी. सी. की राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (NET) परीक्षा उत्तीर्ण की है। भूगोल की सुसज्जित प्रयोगशाला है।

अर्थशास्त्र विभाग :

अर्थशास्त्र विषय में डॉ. दीनानाथ गुप्ता, डॉ. रत्न प्रकाश एवं डा. दीप्ति माहेश्वरी प्राध्यापक हैं। डॉ. दीनानाथ गुप्ता एवं डा. दीप्ति माहेश्वरी रोजगार प्रकोष्ठ के सदस्य हैं। डॉ. रत्न प्रकाश शोध एवं प्रकाशन समिति के सदस्य हैं।

मनोविज्ञान विभाग :

मनोविज्ञान विषय में डॉ. विकेश चन्द्र गुप्ता प्राध्यापक हैं। आप महाविद्यालय की छात्र कल्याण समिति के प्रभारी हैं। इसके साथ ही पुरातन छात्र समिति, चिकित्सा प्रकोष्ठ एवं मनोवैज्ञानिक सलाहाकार समिति के सदस्य हैं। मनोविज्ञान विभाग की उपकरणों से युक्त सुसज्जित प्रयोगशाला है।

शिक्षा शास्त्र विभाग :

- शिक्षाशास्त्र विभाग में श्रीमती सरिता याज्ञनिक, श्रीमती रंजना सिंह एवं सुश्री भावना सारस्वत प्राध्यापिका हैं। श्रीमती रंजना सिंह उप मुख्य अनुशासन अधिकारी की भूमिका का बखूबी निर्वहन कर रही हैं।

DEPTT. OF MANAGEMENT

- In the Proposition of Management, Gyan Mahavidyalaya started BBA Dept. which is affiliated Dr. B. R. Ambedkar University, Agra in year 2010 with 60 seats capacity.
- BBA Dept. professionally qualified faculties are working inthe supervision of Mr. Tumul Kumar with Dr. Hemkant Kulshrestha and Miss Sweta Varshney.
- There are so many facilities such as ICT lab, Computer lab, e-learning library, guest lecture facility, personality development, sessional test in O. M. R. Sheet etc.
- Department also organised special training programme to improve soft skills like as Communication skills, presentation skills, time management, resume writing, group discussion, mock interview etc.
- Department organised education tour for Agra by college bus from which students gained valuable experience.
- Department are actively participated in curricular activities like as cultural, literary and games.
- In this department students Babita, Vaishali,

Scanned by CamScanner

Nidhi participated in cultural activities by performing dance college programme.

❑ Department is dedicated to provide a quality education by using latest technology as per the modern concern by which student can match up with the demand of corporate world in this typical competition.

❖

DEPTT. OF TECHNOLOGY

❑ In the dimension of computer education Gyan Mahavidyalaya started B.C.A. Department in 2010 with 60 seats which is affiliated to Dr. B.R. Ambedkar University, Agra & Approved by AICTE.

❑ Professionally qualified faculties are working, these are Ritvija Mittal, Rachna Sharma and Akhilesh Kaushik.

❑ Now B. C. A. Department is growing at rapid rate continuously day by day. B.C.A. Department also provides a training programme to spread computer literacy for other department's students.

❑ B. C. A. Department is dedicated to provide a quality education by including a latest technology day by day as the requirement of corporate sector by which students can build up themselves as the demand of IT Industry in this cut throat competition.

❑ There are so many faculties such as well equipped computer lab. where students learn & perform programs based subjects,, well managed library and so on.

❑ Department also organizes a special training program to improve the soft skills (Communication skill, Presentation skill, Personality Development & Time Management etc.) of the students to fulfill the requirement of the industry.

❑ BCA first sem student Vikas Singh participated in "Yuvotsav-14" organised by Dr. B. R. Ambedkar University in Agra.

❑ Department teachers are working well in their respective committees like literary and alumni etc.

❑ Department is dedicated to provide quality education by including latest technology as per the requirement of corporate sector via which student can build themselves as demand of IT industry.

❑ Department students have actively participated in the co-curricular activities such as cultural, literary etc.

❑ Now, this department is growing rapidly appropriate direction in continuous way.

❖

शिक्षक-शिक्षा विभाग

(NAAC Grade 'A')

महाविद्यालय को शिक्षक-शिक्षा विभाग की मान्यता 2004-05 में 100 सीटों के साथ प्राप्त हुई। तत्पश्चात 2008-09 में 100 अतिरिक्त सीटों की मान्यता प्राप्त हुई। इस प्रकार वर्तमान में विभाग में 200 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। सन् 2011-12 में इस विभाग को NAAC द्वारा 'A' ग्रेड से नवाजा गया। वर्तमान में विभाग के प्राध्यापक श्री लख्मी चन्द्र तथा श्रीमती सरिता याज्ञनिक नैट की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है। संकाय के प्राध्यापक श्रीमती आभाकृष्ण जौहरी, श्रीमती सरिता याज्ञनिक, श्रीमती रंजना सिंह, श्रीमती मधु चाहर, श्री गिर्राज किशोर, कु. शालिनी शर्मा, मिस भावना सारस्वत आदि पी-एच. डी. कर रहे हैं।

विभाग हेतु सुसज्जित पुस्तकालय है, जिसमें अनुशीलन केन्द्र भी है। इसके साथ ही आर्ट एण्ड क्राफ्ट संसाधन केन्द्र, मनोविज्ञान संस्थान केन्द्र, विज्ञान एवं गणित संसाधन केन्द्र, भाषा लैव, आई.सी.टी. एवं ई.टी. संसाधन केन्द्र, शारीरिक शिक्षा संसाधन केन्द्र तथा कार्यानुभव कक्ष हैं। गत वर्षों में बी.एड. की विश्वविद्यालय स्तर की परीक्षा में छात्र- छात्राएं शत-प्रतिशत उत्तीर्ण हुए हैं। सत्र 2014-15 में विभागीय क्रियाकलाप निम्नांकित हैं :

1. 14-16 जुलाई, 2014 बी.एड. के विद्यार्थियों का मनोवैज्ञानिक परीक्षण मनोविज्ञान संसाधन केन्द्र की प्रभारी श्रीमती शिवानी सारस्वत की देख-रेख में हुआ।
2. 26 जुलाई को पर्यावरण संरक्षण विषय पर पोस्टर बनाने की प्रतियोगिता श्रीमती आभाकृष्ण जौहरी के संयोजन में आयोजित की गयी।
3. 28 जुलाई, 2014 को महाविद्यालय में मेंहदी व थाल-सज्जा प्रतियोगिता का आयोजन किया। यह प्रतियोगिता डा. रेखा शर्मा, उप प्राचार्या तथा श्रीमती सरिता याज्ञनिक विभागाध्यक्ष के निर्देशन में एवं प्रतियोगिता का संयोजन श्रीमती मधु चाहर ने किया।
4. 31 जुलाई, 2014 को महाविद्यालय के स्वराज्य सभागार में वृक्षारोपण दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित

Scanned by CamScanner

कार्यक्रम में चिपको आन्दोलन के प्रणेता श्री सुन्दरलाल बहुगुणा के निकटम सहयोगी श्री सुबोध नन्दन पर्यावरणविद ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया।

5. 2 अगस्त, 2014 Introduction Day में मुख्य अतिथि डा. बीना शर्मा, शिक्षा विभाग, डा. सुनीता गुप्ता, कला विभाग, डी. एस. महाविद्यालय ने भाग लिया तथा विद्यार्थियों को संबोधित किया

6. 4 अगस्त, 2014 को भारत सरकार के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय की आगरा स्थित एम. एस. एम. ई. विकास संस्था के सहायक निर्देशक शकील अहमद तथा इन्वेस्टीगेटर श्री सुशील यादव ने कार्यक्रम का आयोजन किया।

7. 14 अगस्त को **'आजाद भारत में शैक्षिक चुनौतिया'** के विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता श्रीमती आभा कृष्ण जौहरी के संयोजन में आयोजित की गयी।

8. 12 अगस्त को कालीकट विश्वविद्यालय, केरल की पूर्व, कुलपति प्रोफेसर अनवर जहां जुबैरी ने **'शिक्षक-शिक्षा के मुद्दे'** विषय पर अतिथि व्याख्यान दिया।

9. सितम्बर माह में ज्ञान भवन में चल रहे सभी अन्य विभागों के प्राध्यापकों के साथ बी. एड. के प्राध्यापकों का भी मनोवैज्ञानिक परीक्षण कराया गया।

10. महाविद्यालय द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों जैसे - शिक्षक दिवस, काव्य कोष्ठी, हास्य व्यंग, संस्थापक दिवस, हिन्दी दिवस, माता की भेंट एवं डांडिया, बाल दिवस, ज्ञान दिवस आदि में बी. एड. के विद्यार्थियों ने बढ-चढ़कर भाग लिया।

11. महाविद्यालय में बी.एड. सत्र 2014-15 की प्रथम सत्रीय परीक्षा 15/09/2014 से 17/09/2014 तक हुई, जिसमें सर्वाधिक अंक पाने वाले विद्यार्थियों को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार दिये गये।

12. 19 सितम्बर 2014 को अलवरकात इंस्टीटयूट ऑफ एजूकेशन अलीगढ़ की प्राचार्य डा. समीना फैजली ने सूक्ष्म शिक्षण पर अतिथि व्याख्यान दिया।

13. 26/09/2014 को शिक्षा विभाग का शैक्षिक टूर फतेहपुर सीकरी गया।

14. 9 जनवरी, 2015 को शिक्षा विभाग में डा. अंजना गुप्ता, डी. एस. कालिज की प्रवक्ता द्वारा **'वृहद शिक्षण'** पर अतिथि व्याख्यान दिया। 19 जनवरी से विभाग के विद्यार्थियों को वृहद शिक्षण हेतु शहर के विभिन्न इण्टर कालिजों में ले जाया गया। तथा इसी दौरान डा. रेखा शर्मा के निर्देशन में विभिन्न इण्टर कालेजों जैसे- बाबू लाल इण्टर कालेज, पालीवाल इण्टर कालेज, चिरंजी लाल इण्टर कालेज, हिन्दू इण्टर कालेज, एस.एम.बी. इण्टर कालेज, चम्पा इण्टर कालेज तथा डी.एस. इण्टर कालेज, माहेश्वरी गर्ल्स इण्टर कालेज के छात्र-छात्राओं को ज्ञान महाविद्यालय परिसर का भ्रमण कराया गया। इनका सहयोग शिक्षा विभाग की प्रवक्ता श्रीमती मधु चाहर, श्रीमती रंजना सिंह, श्री लखमी चन्द्र, श्री गिर्राज किशोर व महाविद्यालयके प्रबंधक श्री मनोज यादव ने किया।

16. **साहित्यिक कार्यक्रम :** निबन्ध प्रतियोगिता, पोस्टर बनाना प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता तथा भाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

17. **खेल-कूद कार्यक्रम :** छात्रों के स्वास्थ्य एवं शारीरिक विकास के लिए इण्डोर एवं आउटडोर खेल समय-समय पर आयोजित कराये गये।

18. **विश्वसनीय सलाहकार समिति :** छात्रों व छात्राओं की शैक्षिक नौकरी प्रतियोगिता की तैयारी, सामाजिक परिवेश में समायोजन की समस्याओं व व्यक्तिगत समस्याओं का सामना करने एवं समाधान के लिये सभी विद्यार्थियों को 20-20 के समूह में विभाजित कर एक-एक प्राध्यापक विश्वसनीय सलाहकार के निर्देशन में रखा गया।

19. शिक्षा विभाग एक अर्धवार्षिक अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल **ज्ञानभव** (ISSN-2319-8419) प्रकाशित करता है।

❖

बी.टी.सी. विभाग

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद उ.प्र. लखनऊ से 24 जनवरी 2010 और बी.टी.सी द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में (50 सीट) प्रारम्भ करने की मान्यता ज्ञान महाविद्यालय को प्राप्त हुई। बी.टी. सी. 2010 का बैच 24 जनवरी, 2013 को 100 प्रतिशत परीक्षा परिणाम के साथ पूर्ण हो चुका है, साथ ही 100 प्रतिशत प्रशिक्षुओं को सरकारी नौकरी भी मिल चुकी है। इस वर्ष बी.टी.सी. 2012 का तृतीय व चतुर्थ तथा बैच 2013 का द्वितीय सेमेस्टर चल रहा है।

विभाग में पाठ्यक्रम के साथ-साथ अनेक स्मरणीय कार्यक्रमों का आयोजन वर्ष भर किया जाता है, जिसमें विभिन्न समितियाँ विभाग के प्राध्यापकों के निर्देशन में अपना काम सुचारू रूप से कर रही हैं। विभाग प्रभारी श्री रामकिशन शर्मा सांस्कृतिक समिति

Scanned by CamScanner

प्रभारी श्रीमती शोभा सारस्वत, साहित्यिक समिति प्रभारी श्रीमती वैशाली अग्रवाल, परीक्षा समिति प्रभारी श्री पुष्पेन्द्र सिंह, अनुशासन व उपस्थिति (बैच 2012) प्रभारी श्री रवि कुमार, समय–सारणी प्रभारी श्री वीरेन्द्रपाल सिंह तथा प्रार्थना व उपस्थिति प्रभारी (बैच 2013) श्री कुलदीप कुमार अपना कुशल नेतृत्व एवं सहभागिता प्रदर्शित कर रहे हैं, जिसमें विविध प्रतियोगिताएं, अतिथि व्याख्यान, सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेलकूद प्रतियोगिताएं, काव्य गोष्ठी, निबन्ध प्रतियोगिता, वाद–विवाद प्रतियोगिता, मेंहदी, रंगोली, थाल–सज्जा, राखी प्रतियोगिता आदि के द्वारा प्रशिक्षुओं का ज्ञान–वर्धन किया जाता है। साथ ही उनकी सक्रिय भागीदारी के माध्यम से छिपी प्रतिभाओं को अभिव्यक्त का अवसर प्रदान किया जाता है। इससे प्रशिक्षुओं के कौशल, अभिव्यक्ति एवं व्यक्तित्व में धनात्मक परिवर्तन हुए हैं। विभाग मे निम्नलिखित गतिविधियाँ हुई–

❑ 10 मई, 2014 को मातृ दिवस के उपलक्ष्य में एक प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता में चन्द्रवीर सिंह प्रशिक्षु ने प्रथम, प्रगति ने द्वितीय एवं संजीव ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

❑ 4 जून, 2014 को पर्यावरण संरक्षण विषय पर पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रशिक्षु संजीव कुमार व ललित मोहन ने प्रथम, प्रतीक कुमार व ममता ने द्वितीय, स्वीटी तेवतिया व रजनी शर्मा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता की मुख्य अतिथि श्रीमती लक्ष्मी तुरेहा (अध्यापिका, बी.के., अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय) थीं।

❑ 5 जून, 2014 को 'विश्व पर्यावरण दिवस' के अवसर पर ग्राम रूस्तमपुर सकतखाँ और पडियावली में जन–चेतना रैली निकाली गई।

❑ 28 व 30 जुलाई को बी.टी.सी. बैच 2012 के प्रथम व द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षा आयोजित की गई, जिसमें प्रथम स्थान अवनीत कुमार (प्रथम सेमेस्टर) तथा द्वितीय सेमेस्टर के अशोक कुमार ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

❑ 31 जुलाई, 2014 को 'वृक्षारोपण दिवस' के अवसर पर वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसके मुख्य अतिथि डाइट अलीगढ़ के कार्यवाहक प्राचार्य श्री राजेश विद्यार्थी थे। सुबह 10 बजे एक संगोष्ठी भी आयोजित की गयी जिसमें श्री राजेश विद्यार्थी ने प्रशिक्षुओं को आशीष वचन देकर उनका उत्साह बढाया।

❑ 14 अगस्त, 2014 को बी.टी.सी. विभाग में अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता 'श्री रामचन्द्र मिशन एवं संयुक्त राष्ट्र सूचना केन्द्र द्वारा आयोजित की गयी जिसका विषय था– "सत्यनिष्ठ होना, मानवीय होना है" इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान वन्दना (बैच 2012) एवं द्वितीय स्थान अर्चना सिंह (बैच 2013) ने प्राप्त किया।

❑ 19 अगस्त, 2014 को 'प्रभावशाली शिक्षण की विधियाँ' विषय पर एक अतिथि व्याख्यान हुआ, जिसके मुख्य वक्ता डॉ. गिर्राज किशोर (पूर्व डीन डॉ. भीमराव अम्बेडकर आगरा विश्व विद्यालय) थे।

❑ 9 अगस्त, 2014 मेंहदी, थाल सज्जा एवं राखी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसके निर्णायक बी.एड. संकाय की श्रीमती आभा कृष्ण जौहरी एवं श्रीमती मधु चाहर थीं। मेंहदी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान क्रान्ति, द्वितीय स्थान प्रीती शर्मा व तृतीय स्थान अहमद खान ने प्राप्त किया। थाल सज्जा में प्रथम स्थान निशा परवीन, द्वितीय प्रीती शर्मा व तृतीय स्थान नीरज कुमार, राखी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान शान अहमद खान, द्वितीय स्थान परम ज्योति तथा तृतीय स्थान संजीव ने प्राप्त किया।

❑ 26 अगस्त, 2014 को एक शैक्षिक प्रदर्शनी आयोजित की गई जिसके मुख्य अतिथि डॉ. महेश चन्द्र वार्ष्णेय, विभागाध्यक्ष फाइन आर्टस, एस.वी. कॉलेज, अलीगढ़ थे।

❑ 19 सितम्बर, 2014 एक वॉलीवाल मैच बी.टी.सी. प्रशिक्षुओं व डाइट (अलीगढ़) प्रशिक्षुओं के बीच आयोजित हुआ, जिसके मुख्य अतिथि डाइट के प्रवक्ता श्री मुनीश अहमद थे।

❑ 19 व 20 सितम्बर, 2014 को SCERT पैटर्न पर बी.टी.सी. बैच 2013 के प्रथम सेमेस्टर की प्रथम सत्रीय परीक्षा आयोजित की गयी। 20 सितम्बर की परीक्षा OMR पद्धति पर सम्पन्न कराई गयी।

❑ 7, 9, 10 व 12 अक्टूबर, 2014 को बी.टी.सी. बैच 2012 के द्वितीय सेमेस्टर एवं बी.टी.सी. बैच–2013 के प्रथम व द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षा SCERT पैटर्न पर आयोजित कराई गई।

❑ 7, 8 व 9 नवम्बर 2014 को युवा महोत्सव का आयोजन डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय द्वारा खन्दारी कैम्पस में किया गया, जिसमें बी.टी.सी. विभाग से पोस्टर मेकिंग में संजीव कुमार, कोलाज पेन्टिंग में ममता रानी, क्विज प्रतियोगिता में प्रमोद कुमार अत्री, प्रमोद कुमार, अनिल कुमार, वाद–विवाद प्रतियोगिता में चन्द्रवीर ने भाग लिया।

❑ 29 नवम्बर, 2014 को शैक्षिक भ्रमण हेतु बी.टी.सी. बैच 2012 के प्रशिक्षुओं को मथुरा, वृन्दावन ले जाया गया। वहाँ प्रशिक्षुओं को रंगराज मन्दिर, बाँके बिहारी मन्दिर, अंग्रेजों का मन्दिर, प्रेम मन्दिर व श्री कृष्ण जन्म भूमि के दर्शन कराए गए।

पुस्तकालय

वर्तमान समय में शिक्षा के लिए पुस्तकालय का विशेष महत्व है। शिक्षा ही राष्ट्र की नींव है। नींव जितनी मजबूत होगी, उतना ही सुदृढ़शाली राष्ट्र रूपी महल का निर्माण होगा। पुस्तकालय एक सार्वजनिक संस्था होती है। सन् 1930 में भारत में पुस्तकालय विज्ञान के जनक श्री एस. आर. रंगनाथन ने ग्रथालय विज्ञान के पाँच नियमों को बनाया तथा **श्री रंगनाथन जी ने अपनी पुस्तक The Five laws of Library Science** प्रकाशित की, उस पुस्तक में श्री रंगनाथ जी ने पाँच सूत्र बतलाए, जो निम्नांकित हैं:

1. पुस्तकें सभी के उपयोग के लिए है।
2. प्रत्येक पाठक को उसकी पुस्तक मिले।
3. प्रत्येक पुस्तक को उसका पाठक मिले।

Scanned by CamScanner

4. पाठक के समय की बचत हो।
5. पुस्तकालय एक वर्धनशील संस्था है।

संक्षिप्त विवरण

महाविद्यालय में पुस्तकालय की स्थापना सन् 1998 में लघु रूप में हुई, जो आज समृद्ध एवं आधुनिक तकनीक से युक्त है। पुस्तकालय पूर्ण रूपेण computerised है तथा Library Management Software Autosis 1.1 नामक नवीनतम प्रोग्राम से संचालित है। वर्तमान में पुस्तकालय में लगभग 22,000 पुस्तकें हैं, महाविद्यालय में पुस्तकों की संख्या विश्वविद्यालय एवं शासन के नियमों के अनुरूप है। महाविद्यालय में प्रतिवर्ष विभिन्न कोर्सो के अलग–अलग विषयों से सम्बन्धित अद्यतन संस्करण तथा अनुभवी एवं ख्याति प्राप्त लेखकों की पुस्तकें सम्बन्धित संकायों प्राध्यापकों एवं प्रबन्धकों द्वारा तैयार की गयी सूची के अनुसार क्रय करना प्रबन्धन की विशेषता है।

महाविद्यालय में Library Advisory Committee की समय–समय पर मीटिंग होती है, जिसमें पुस्तकालय से सम्बन्धित आवश्यकताओं एवं समस्याओं पर विचार किया जाता है।

महाविद्यालय में U.G.C. की National Assessment of Accredition Council (NAAC) की टीम ने विजिट किया।

पुस्तकालय महाविद्यालय के तीन भवनों सरस्वती भवन, ज्ञान भवन एवं स्वराज्य भवन में अलग–अलग स्थापित है।

अ. माँ सरस्वती पुस्तकालय– इस पुस्तकालय से बी.कॉम., बी.एस–सी., बी.ए., बी.बी.ए., बी.सी.ए. एवं एम.कॉम. विषयों के नवीनतम पाठयक्रमानुसार प्रसिद्ध एवं विद्वान देश एवं विदेश के लेखकों की पुस्तकें शिक्षकों एवं शिक्षार्थियों को उपलब्ध करायी जाती हैं। यह पुस्तकालय आधुनिक फर्नीचर से सुसज्जित पूर्णतया कम्प्यूटरीकृत है। पुस्तकालय में पुस्तकें Glass door Almirah में सुव्यवस्थित तरीके से सुसज्जित हैं, जिससे विद्यार्थी अपनी जरूरत की पुस्तकों को आसानी से खोज सकते हैं अपने इच्छित विषय से सम्बन्धित श्रेष्ठ पुस्तक आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। इस पुस्तकालय में लगभग 10,000 Text Books हैं। इसके अलावा लगभग 3500 Reference Books, Dictionaries, Journals, Encyclopeadia, Periodicals Novels आदि भी पुस्तकालय में उपलब्ध हैं। शोध से सम्बन्धित Research Materials भी पुस्तकालय में उपलब्ध है। इस पुस्तकालय के प्रभारी श्री डी. के. रावत है।

ब. ज्ञान भवन पुस्तकालय– इस पुस्तकालय में बी.एड., बी.टी.सी. के पाठयक्रम से सम्बन्धित विभिन्न लेखों की लगभग 8,500 Text Books उपलब्ध हैं। पुस्तकालय में बी.टी.सी. से सम्बन्धित विभिन्न लेखकों की 2,600 Text Books उपलब्ध हैं। इस पुस्तकालय में Teacher's Guide के नाम से अलग विशाल संग्रह है जिसमें NCERT से सम्बन्धित पुस्तकें उपलब्ध हैं, जो Dr. Gyan Collection के नाम से अलग संग्रहालय है।

❑ Education से सम्बन्धित लगभग 18 Journals एवं 8 Magazines क्रमबद्ध तरीके से मँगायी जाती हैं।

❑ Daily News Papers एवं रोजगार समाचार पत्र नियमित रूप से मंगाये जा रहे हैं।

इसके अलावा इस पुस्तकालय में E-Resource Station के नाम से अलग विभाग है। जहाँ users आकर Internet की सुविधा का लाभ लेते हैं। पुस्तकालय में तीन प्रकार की सीटें उपलब्ध हैं, जिससे पाठक अपनी सुविधानुसार सीटों का चयन कर आसानी से बैठकर पढ़ सकें। पुस्तकालय में Computers से Issue/return का कार्य किया जाता है। पुस्तकालय में सी.सी.टी.वी. कैमरे भी लगे हैं, जिससे विद्यार्थियों पर नजर रखी जा सके। इस पुस्तकालय की प्रभारी कु. सुषमा वर्मा हैं।

स. स्वराज्य पुस्तकालय– इस पुस्तकालय में ITI की Text Books उपलब्ध करायी जाती हैं। पुस्तकालय द्वारा विद्यार्थियों को 14 दिनों के लिए Text Books Issue की जाती है। पुस्तकालय द्वारा users को निम्नांकित सेवाएं प्रदान की जाती हैं :

1. Open Access Service
2. Circulation Service
3. Reference Service
4. Information Display of Notification Service
5. Book Bank Service
6. On line Public Access Catalouge Service
7. Clipping Service
8. E-Resource Station Service

इंडियन नेशनल ट्रस्ट फार आर्ट एण्ड कल्चरल हैरिटेज (इण्टैक), नई दिल्ली ने 03.09.2014 से 05.09.2014 तक प्रभारी वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन (मथुरा) में 'Preventive Conservation of Library & Archival Collection विषय पर कार्यशाला आयोजित की। पुस्तकालय प्रभारी कु. सुषमा वर्मा ने इस कार्यशाला में भाग लिया।

❖

राष्ट्रीय सेवा योजना

ज्ञान महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना का शुभारम्भ सत्र 2007–08 में हुआ। विश्वविद्यालय के नियमानुसार 100 छात्र/छात्राओं की एक यूनिट गठित की गई, इस यूनिट में बी.ए., बी.एस.–सी. एवं बी.कॉम. के छात्र/ छात्राओं से नामांकन फार्म भरवाकर एक यूनिट तैयार की गई। इस यूनिट के संचालन हेतु विश्वविद्यालय द्वारा डॉ. ललित उपाध्याय का अनुमोदन कार्यक्रम अधिकारी पद पर महाविद्यालय की संस्तुति पर वर्ष 2014

Scanned by CamScanner

में किया गया। इससे पूर्व डॉ. बी.डी. उपाध्याय व डॉ. अन्तिमा कुलश्रेष्ठ ने इस पद पर दायित्व को बखूबी निभाया।

❑ **राष्ट्रीय सेवा योजना का मुख्य उद्देश्य समाज सेवा के माध्यम से छात्रों के व्यक्तित्व का विकास करना है।**

राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्य उद्देश्य निम्नांकित हैं :

1. जिस समाज में रहकर कार्य करते हैं, उसे भली–भांति समझना चाहिए।
2. अपने समाज की आवश्यकताओं और कठिनाइयों को पहचानकर उनके समाधान में यथाशक्ति अपनी भूमिका निभाना।
3. स्वयं में सामाजिक एवं नागरिक दायित्व की भावना विकसित करना।
4. व्यक्ति एवं समाज की समस्याओं के समाधान खोजने में अपनी शिक्षा का उपयोग करना।
5. नेतृत्व के गुण एवं प्रजातांत्रिक दृष्टिकोण ग्रहण करना।
6. संकटकालीन एवं दैवीय आपदाओं का सामना करने की क्षमता विकसित करना।
7. राष्ट्रीय एकता एवं सामाजिक समरूपता को क्रियात्मक रूप देना।
8. दूसरों के प्रति सम्मान एवं वैज्ञानिक सोच की भावना विकसित करना और लोगों को कुरीतियों, भ्रष्टाचार, कट्टरता, जातिवाद व साम्प्रदायिकता के विरूद्ध संघर्ष के लिये प्रोत्साहित करना।
9. अनुशासन की भावना जाग्रत करते हुए सृजनात्मक एवं रचनात्मक कार्यों में स्वयं को प्रवृत्त करना।

राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम : राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत दो प्रकार के कार्यक्रम होते हैं :

अ. नियमित कार्यक्रम : इस प्रकार के कार्यक्रमों में स्वयंसेवी अपने पंजीकरण वर्ष के कार्यकाल में 240 घण्टे की विविध गतिविधियों में भाग लेते हैं। अभिग्रहीत बस्ती में एक दिवसीय शिविरों के आयोजन के साथ–साथ महाविद्यालयों में नगर के अनेक सामाजिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्यक्रमों में भाग लेते हैं।

ब. विशेष कार्यक्रम : इस प्रकार के कार्यक्रमों में किसी ग्राम सभा में एक सात दिवसीय रात–दिन आवासीय शिविर का आयोजन किया जाता है। इस शिविर में छात्राओं को प्रतिदिन प्रातः आकर शिविर से शाम को जाने की अनुमति होती है। छात्र कार्यक्रम अधिकारी के साथ रात्रि विश्राम उसी ग्राम में करते हैं। इसका समय–समय पर निरीक्षण विश्वविद्यालय के पदाधिकारियों द्वारा किया जाता है।

❑ राष्ट्रीय सेवा योजना के दूरगामी लाभ बहुत हैं। विविध चयन प्रक्रियाओं में इसके अतिरिक्त अंक निर्धारित हैं। राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के संचालन के लिये कॉलेज के सचिव महोदय लगातार प्रोत्साहित करते रहते हैं। प्राचार्य महोदय समय–समय पर शिविर में निरीक्षण के साथ भाग लेकर छात्र/छात्राओं को समाज सेवा के लिये प्रेरित करते हैं। इसका लाभ आने वाले वर्षों में छात्र/छात्राओं को सार्वजनिक जीवन में प्राप्त होता है।

❑ राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रमों को प्रभावी बनाने के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना समिति का भी महाविद्यालय स्तर पर गठन किया गया है, जिनमें सदस्यों के रूप में डॉ. संध्या सेंगर, डॉ. कविता, श्री अमित कुमार की सक्रिय सहभागिता से सामाजिक कार्य को बेहतर तरीके से विभिन्न स्तरों पर आयोजित किया गया है।

राष्ट्रीय सेवा योजना प्रमुख गतिविधियाँ

राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा मतदाता जागरूकता अभियान, पर्यावरण दिवस, जीव जन्तु रक्षा अभियान, मातृ दिवस, राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस, स्वतंत्रता दिवस, कौमी एकता दिवस, राष्ट्रीय युवा दिवस के साथ–साथ जल संरक्षण हेतु समर्पित ज्ञान गंगा परिचय यात्र, ज्ञान दीप ज्योति कार्यक्रम, ठिठुरती ठंड में असहायों हेतु कम्बल वितरण पहल कार्यक्रम, रक्तदान शिविर एवं संगोष्ठी आदि कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इसके साथ ही ग्राम मंदिर का नगला (रूस्तमपुर सकता खॉ) में एक दिवसीय चार शिविरों का आयोजन दिनांक 10.12.2014, 13.12.2014, 18.12.2014 एवं 13.01.2015 को किया गया। सात दिवसीय आवासीय विशेष शिविर का आयोजन दिनांक 24.12.2014 से 30.12.2014 तक ग्राम मंदिर का नगला (रूस्तमपुर सकत खॉ) के प्राथमिक विद्यालय में आयोजित किया गया। विशेष शिविर का उदघाटन सचिव श्री दीपक गोयल द्वारा किया गया जबकि समापन के मुख्य अतिथि ए. डी. (बेसिक) श्री गिर्राज

Scanned by CamScanner

किशोर रहे। विशेष शिविर के दौरान श्रमदान के अन्तर्गत प्राथमिक विद्यालय परिसर में टूटी बाउण्ड्री वाल का निर्माण व पुताई कार्य, फुलवारी हेतु क्यारियों का निर्माण, पंचायत घर व ग्राम की गलियों व नालियों की साफ–सफाई आदि, सुशासन दिवस पर रैली, नेत्र जांच परीक्षण में 125 से अधिक गरीबों का नेत्र परीक्षण, बौद्धिक व्याख्यान सत्रों के आयोजन में मुख्य वक्ता श्री राजनारायण सिंह (उप सम्पादक, दैनिक जागरण), डा. ज्ञानेन्द्र मिश्रा (अध्यक्ष, उडान सोसायटी एवं परियोजना निदेशक चाइल्ड लाइन 1098) डॉ. रत्न प्रकाश, डॉ. बी. डी. उपाध्याय (प्राचार्य, धर्म ज्योति महाविद्यालय, ताहरपुर) तथा ज्ञान महाविद्यालय के प्राचार्य व उप प्राचार्य सहित अतिथियों का सहयोग स्मरणीय रहा। राजकीय औद्योगिक एवं कृषि प्रदर्शनी, (नुमाइश) के कृष्णांजलि हॉल में हरीतिमा संस्था द्वारा आयोजित **बेटियों से ही बचेगा पर्यावरण** विषयक संगोष्ठी में राष्ट्रीय सेवा योजना की स्वयं सेविकाओं ने भाग लिया। स्वयंसेविका नीलम भास्कर ने इस अवसर पर अपने विचार को काव्य पाठ के द्वारा लोगों तक पहुंचाया। कार्यक्रम में ए. डी. एम. प्रशासन श्री संजय चौहान, ए. डी. एम. सिटी श्री अवधेश तिवारी ने प्रतिभागियों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। स्वयंसेविकाओं को प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम अधिकारी डा. ललित उपाध्याय ने सात दिवसीय प्रशिक्षण ई. टी. आई. सेन्ट जॉन्स कालेज, आगरा में 12 अक्टूबर से 18 अक्टूबर, 2014 तक एन.एस.एस. से जुडे विभिन्न विषयों पर प्राप्त किया। इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना के क्षेत्रीय केन्द्र प्रभारी डा. अशोक श्रोती, प्रशिक्षण समन्वयक डा. सी. एम. जैन व डा. बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय के कार्यक्रम समन्वयक डा. रामवीर सिंह चौहान आदि विशेषज्ञों ने प्रशिक्षित किया।

महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना ईकाई के कार्यक्रम अधिकारी डा. ललित उपाध्याय ने चंडीगढ़ के राजीव गॉधी राष्ट्रीय युवा विकास संस्थान, (अधीनस्थ कौशल विकास, उद्यमशीलता, युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय) में पॉच दिवसीय प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण (टी. ओ. टी.) में दिनांक 20/1/2015 से 24/01/2015 तक विश्वविद्यालय के एकमात्र कार्यक्रम अधिकारी के रूप में प्रतिनिधित्व किया।

विश्व रक्तदाता दिवस पर 14 जून 2014 को जिलाधिकारी श्री अभिषेक प्रकाश, (आई. ए. एस.) ने राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा रक्तदान शिविर आयोजित करने के उल्लेखनीय योगदान के लिए कार्यक्रम अधिकारी डा. ललित उपाध्याय को प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। ❖

छात्र कल्याण समिति

ज्ञान महाविद्यालय में छात्र कल्याण समिति डॉ. वी. सी. गुप्ता के कुशल निर्देशन में निरन्तर रूप से कार्य कर रही हैं। समिति के सदस्यों डॉ. विवेक मिश्रा, डॉ. आर.के. कुशवाहा, श्रीमती मधु चाहर, एवं श्रीमती शोभा सारस्वत का सहयोग प्रशंसनीय एवं सराहनीय रहा है। कालेज प्रवन्धन के सहयोग से छात्र कल्याण समिति द्वारा सत्र 2014–15 में छात्रों को निम्न सुविधायें प्रदान की गई :

- ज्ञान महाविद्यालय की स्नातक प्रथम वर्ष की कक्षाओं में प्रवेशार्थियों को इण्टरमीडियेट में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण छात्र–छात्राओं को 15 प्रतिशत की छूट शिक्षण शुल्क में दी गई।
- महाविद्यालय की स्नातक प्रथम वर्ष की कक्षाओं में प्रवेश पाने वाले प्रत्येंक छात्र–छात्रा को एक–एक यूनीफार्म नि:शुल्क प्रदान की गई, जिसका उददेश्य महाविद्यालय में नियमित रूप से गणवेश में आने के लिये बाध्यता है।
- महाविद्यालय के स्नातक प्रथम व द्वितीय वर्ष के छात्र–छात्राओं को प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने पर 30 प्रतिशत एवं द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण होने पर 20 प्रतिशत की छूट अगले वर्ष की कक्षा में प्रवेश लेने पर शिक्षण शुल्क में दी गई।
- महाविद्यालय के स्नातक द्वितीय व तृतीय वर्ष के छात्र–छात्राओं को एक–एक कलाई घड़ी उपहार स्वरूप भेंट की गई, जिसका उददेश्य छात्रों द्वारा समय के प्रति जागरूक रहकर कार्य करने का है।
- स्वतंत्रता दिवस पर छात्र–छात्राओं को प्रसाद वितरण किया गया।
- हरियाली तीज के अवस्र पर सभी छात्र–छात्राओं को घेवर का वितरण किया गया।
- बी.एड. एवं बी.टी.सी. के छात्र–छात्राओं को को मेक्रोटीचिंग के लिये श्यामपट, डस्टर, पोइन्टर आदि नि:शुल्क वितरण।
- छात्र–छात्राओं के आपसी सौहार्द एवं समझ को विकसित करने के उददेश्य से एक सहभोज कार्यक्रम

Scanned by CamScanner

आयोजित किया गया जिसमें सभी छात्र-छात्राओं, प्राध्यापकों व शिक्षणेत्तर कर्मचारियों ने भाग लिया।

- समिति द्वारा छात्र-छात्राओं के चहुंमुखी विकास के लिये सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, निबन्ध प्रतियोगिता, अनुपयोगी वस्तुओं से नऐं आइटम बनाने की प्रतियोगिता (Best from Waste) का आयोजन इस सत्र के अन्तर्गत कराया गया।
- सभी संकायों में छात्र हित में विभागाध्यक्षों की सहायता से अतिथि व्याख्यान कराये गये।
- लगभग सभी संकायों के विद्यार्थियों को शैक्षिक भ्रमण पर आगरा, मथुरा एवं अन्य स्थानों पर ले जाया गया।
- छात्र-छात्राआं के व्यक्तित्व विकास के अन्तर्गत उन्हें पी.के. फिल्म दिखाने ले जाया गया।
- वी.ए. द्वितीय वर्श के छात्र सचिन सैनी, जिला केसरी ने विभिन्न कुश्ती प्रतियोगिताओं में विजय प्राप्त की एवं बी.एस-सी. द्वितीय वर्ष के छात्र कैलाश बघेल ने भी हॉकी की कई प्रतियोगिताओं में भाग लिया।
- छात्र-छात्राओं की खेल के प्रति रूचि जागृत करने हेतु विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित खेलों में भाग लेने के लिये रजिस्ट्रेशन शुल्क व यात्रा भत्ता भी महाविद्यालय द्वारा प्रदान किया जाता है।
- अपनी शैक्षिक सत्र 2014-15 की रिपोर्ट प्रस्तुत करने के वाद छात्र कल्याण समिति, ज्ञान महाविद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने वाले सभी छात्र-छात्राओं के उज्जवल एवं सफल भविष्य की मंगलकामना करती है। ❖

अध्यापक कल्याण समिति

महाविद्यालय में प्राध्यापकों के कल्याण के लिए एक प्राध्यापक कल्याण समिति का गठन किया गया है। इस समिति में समय-समय पर प्राध्यापकों के साथ बैठकें आयोजित की लाती हैं। उनमें उत्पन्न समस्याओं एवं सुझावों पर प्रबन्ध समिति/प्राचार्य के समक्ष रखकर अन्य सुझाव भी दिए जाते हैं। इस समिति का गठन प्रभारी डा. एस. एस. यादव के नेतृत्व में किया गया है। इस समिति द्वारा प्राध्यापकों के चहुंमुखी विकास हेतु कल्याणकारी कार्य किए जाते हैं, जिसमें निम्नांकित कार्य प्रमुख हैं :

1. महाविद्यालय के प्राध्यापकों के आने-जाने के लिए नि:शुल्क बस सुविधा उपलब्ध करायी जाती है।
2. महाविद्यालय के प्राध्यापकों के लिए सेमिनार, कार्यशालाओं तथा अन्य शिक्षाप्रद कार्यक्रमों में प्रतिभाग करने हेतु सवेतन अवकाश आदि की सुविधा दी जाती है।
3. प्राध्यापकों को कलाई घड़ी की सुविधा इस वर्ष दी गई, जिससे समय का सदुपयोग करें।
4. महाविद्यालय के सभी विभागों में वाहरी विषय विशेषज्ञों द्वारा अतिथि व्याख्यान कराए जाते हैं, जिससे सम्बन्धित प्राध्यापकों का भी ज्ञानवर्धन होता है।
5. महाविद्यालय के प्राध्यापकों को शैक्षिक भ्रमण के लिए भी भेजा जाता है।
5. महाविद्यालय के प्राध्यापकों को संचालित कोर्स वी.सी.सी. व सी.सी.सी. को सीखने की व्यवस्था जिसमें वे अपने को अद्यतन कर सकें।
6. प्राध्यापकों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धि हासिल करने पर उन्हें अतिरिक्त वेतन वृद्धि दी जाती है। ❖

शोध एवं प्रकाशन समिति

इस समिति में बी. एड. विभाग की वरिष्ठ प्राध्यापिका श्रीमती आभा कृष्णा जौहरी वनस्पति विभाग की प्राध्यापिका डॉ. सुहैल अनवर, वाणिज्य विभाग के प्राध्यापक डा. हीरेश गोयल तथा डा. रत्न प्रकाश हैं। पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों से शोध सम्बन्धी नवीनतम प्रकाशित सामग्री महाविद्यालय में लाई गई। विद्यार्थी तथा प्राध्यापक इस सामग्री से लाभान्वित हो रहे हैं। अनेक प्राध्यापक पी-एच. डी. कर रहे हैं। वर्तमान सत्र के दौरान अनेक प्राध्यापकों ने संगोष्ठियों में भाग लेकर अपनी शोध क्षमता को निखारा है।

महाविद्यालय के निम्नांकित छः प्रकाशन हैं :

1. **ज्ञान भव** – यह शिक्षक शिक्षा विभाग का अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल है। इस जर्नल की पंजीकरण संख्या आई.एस.एस. एन-2319-8419 है। यह जर्नल अर्द्ध वार्षिक (फरवरी व अगस्त) तथा द्विभाषीय है। इसमें देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा शैक्षिक संस्थानों के विषय विशेषज्ञों द्वारा हिन्दी तथा अंग्रेजी में लिखे मानक लेख एवं शोध पत्र प्रकाशित किए जाते हैं। इसके मुख्य सम्पादक डॉ. गौतम गोयल हैं।
2. **ज्ञान अर्थ** – यह वाणिज्य तथा अर्थशास्त्र संकाय का अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल है। इसका पंजीकरण संख्या आई. एस. एस. एन. -2349-1310 है। यह जर्नल अर्द्ध वार्षिक

Scanned by CamScanner

(अप्रेल व अक्टूबर) है। इसमें विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा शैक्षिक संस्थानों के विषय विशेषज्ञों द्वारा हिन्दी तथा अंग्रेजी में लिखे मानक लेख तथा शोध पत्र प्रकाशित किए जाते हैं। इसके मुख्य सम्पादक प्राचार्य डा. वाई. के. गुप्ता हैं।

3. **ज्ञान विज्ञान –** यह विज्ञान संकाय का अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल है। इसका पंजीकरण संख्या आई. एस. एस. एन. –2349-2732 है। यह जर्नल अर्द्ध वार्षिक (मई व नवम्बर) है। इसमें विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा शैक्षिक संस्थानों के विषय विशेषज्ञों द्वारा अंग्रेजी में लिखे मानक लेख तथा शोध पत्र प्रकाशित किए जाते हैं। इसके मुख्य सम्पादक उप प्राचार्य डा. एस. एस. यादव हैं।
4. **ज्ञान दीप –** यह महाविद्यालय की पुरातन छात्र समिति तथा सेवा योजना प्रकोष्ठ की संयुक्त वार्षिक पत्रिका है।
5. **ज्ञान दर्शन –** यह ज्ञान महाविद्यालय का चतुर्मासिक समाचार बुलेटिन है, इसका सीमित वितरण ज्ञान परिवार में किया जाता है। महाविद्यालय की प्रायः सभी गतिविधियों का समावेश इस समाचार बुलेटिन में किया जाता है।
6. **ज्ञान पुष्प–** यह महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका है। इसे महाविद्यालय का दर्पण भी कहा जा सकता है। इसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की लेखन कला का विकास करना है।

❖

अनुशासन समिति

किसी भी महाविद्यालयके सफलतापूर्वक संचालन में अनुशासन की महती आवश्यकता होती है। अनुशासन शाब्दिक, मानसिक और नैतिक प्रशिक्षण है। महाविद्यालय में प्रतिवर्ष अनुशासन समिति का गठन पूर्ण औपचारिकताओं के साथ किया जाता रहा है। समिति के मुख्य अनुशासन अधिकारी डॉ. ललित उपाध्याय के नेतृत्व में सदस्यगण उपमुख्य अनुशासन अधिकारी श्रीमती रंजना सिंह, डॉ. विवेक मिश्रा, डॉ. आर.के. कुशवाह, शालिनी शर्मा, श्री मौहम्मद वाहिद खान, श्री लखमी चन्द्र, डॉ. नरेन्द कुमार सिंह, श्री तुमूल कुमार, डॉ. सोमवीर सिंह, सदस्य अनुशासन का कार्य बखूबी अंजाम दे रहे है।

महाविद्यालय में निर्धारित गणवेश में विद्यार्थी नियमित रूप से आते है। नकलविहीन परीक्षा कराने में भी अनुशासन समिति का अहम भूमिका रहती है। छात्र-छात्राओं के गणवेश (यूनीफार्म) एवं परिचय पत्र (आई कार्ड) का समय-समय पर समिति द्वारा आकस्मिक निरीक्षण भी किया जाता है।

विद्यार्थी अनुशासित रहें इसके लिये छात्रों को नेतृत्व कार्य सौंपना, उन्हें प्रेम से समझाना, अनुशासित छात्रों के कार्य की प्रशंसा, निर्णय व सुझाव का सम्मान करना व हर कार्य से छात्रों के प्रति विश्वास उत्पन्न करना अनुशासन का प्रमुख अंग है। विद्यार्थी, गुरूजनों का सम्मान व आदर करें, ऐसी सीख व संस्कार भी महाविद्यालय में दिये जाते है। आत्म संयम व अनुशासन ही जीवन में सफलता को अग्रसर करता है।

❖

स्वराज्य स्वावलम्बी योजना

सामाजिक दायित्वों के अन्तर्गत महाविद्यालय द्वारा सत्र 2012-13 में स्वराज्य स्वावलम्बी योजना का शुभारम्भ किया गया। इस योजना के अन्तर्गत महाविद्यालय के निकटवर्ती ग्राम बढ़ौली फतेह खॉ को गोद लिया गया। इस योजना की शुरूआत 7/08/2012 को माननीय जफर आलम, शहर विधायक अलीगढ़ के कर कमलों द्वारा की गई। महाविद्यालय के सचिव श्री दीपक गोयल जी ने गांव की लड़कियों हेतु शिक्षा में निम्नांकित छूट देने की घोषणा की है।

इस योजना के अन्तर्गत उक्त गांव की जो लड़की बी. ए. एवं बी.एस-सी. (Z.B.C.) में प्रवेश लेती है। उसे शिक्षण शुल्क में 50 % की छूट छात्रवृत्ति के रूप में प्रदान की जाती है तथा जो लड़की हमारे महाविद्यालय में शिक्षा प्राप्त कर रही है या शिक्षा प्राप्त कर चुकी है। उन्हें विवाह के सुअवसर पर एक सिलाई मशीन उपहार स्वरूप भेंट की जाती है। इस योजना के अन्तर्गत अब तक कुल 29 सिलाई मशीन भेंट की जा चुकी है। इस योजना का लाभ लेने के लिये लड़कियों को निम्नांकित कार्यवाही करने की आवश्यकता होती है :

1. ग्राम प्रधान द्वारा संस्तुति किया पत्र।
2. राशन कार्ड की छायाप्रति।
3. वोटर कार्ड की छायाप्रति।
4. शादीका कार्ड

इस योजना के कार्यान्वयन में डा. ललित उपाध्याय, श्री यतेन्द्र शर्मा, डा. रत्न प्रकाश, एवं विनोद कुमार ने प्रभारी डॉ. विवेक मिश्रा को आशातीत सहयोग किया।

Scanned by CamScanner

स्वराज्य ज्ञान योजना

सामाजिक दायित्वों के अन्तर्गत 2013-14 में स्वराज्य ज्ञान योजना का क्रियान्वयन किया गया। इस योजना के अन्तर्गत विकास खण्ड लोधा अलीगढ़ के चौदह गांवों को गोद लिया गया है जो निम्नाकित है :

1. बढ़ौली फतेह खॉ 2. पड़ियावली 3 मुकन्दपुर
4. मईनाथ 5. न्हौटी 6. मडराक
7. सराय हरनारायन 8. सरायबुर्ज 9. मंदिर का नगला
10. हाजीपुर चौहटटा 11. हाजीपुर फतेह खॉ
12. चिरौलिया दाऊद खॉ 13. ईशनपुर 14. कमालपुर

उपर्युक्त चौदह ग्रामों के प्रधानों तथ ग्रामवासियों के साथ उनके गांवों में महाविद्यालय की टीम ने बैठके की। बैठकों में ग्रामीण तथा ग्राम प्रधानों को योजना के बारे में अवगत कराया गया। इन गांवों की जो भी लड़की बी.ए. तथा बी. एस-सी., (Z.B.C.) में हमारे महाविद्यालय में प्रवेश लेती है उन्हें शिक्षण शुल्क में 50 प्रतिशत की छूट छात्रवृत्ति के रूप में प्रदान की जाती है। अब तक चौदह ग्रामों से 37 लड़कियां इस योजना के अन्तर्गत लाभान्वित हुई है। उपर्युक्त चौदह ग्रामों से ज्ञान निजी आई.टी.आई. में प्रवेश लने वाले लड़कों को पूरे शुल्क में 4000 रु. की छूट छात्रवृत्ति के रूप में प्रदान की जाती है। इस योजना में उक्त चौदह ग्रामों से कुल 49 लड़के महाविद्यालय के सहयोगी संस्थान ज्ञान निजी आई.टी.आई. में प्रवेश लेकर लाभान्वित हो चुके है।

इस योजना के उपर्युक्त गांवों में **ज्ञान गंगा परिचय यात्रा** कार्यक्रम चलाया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उददेश्य ग्रामवासियों को गंगा की उपयोगिता, जल संरक्षण तथा वृक्षों की उपयोगिता के बारे में जानकारी देना है। गोद लिये गये गांवों के ग्रामीणों को संबंधित जानकारी दी गयी।

दीपावली के अवसर पर उपर्युक्त गांवो में **ज्ञान ज्योति कार्यक्रम** का आयोजन किया गया, इसके अन्तर्गत ग्राम प्रधानों से सम्पर्क कर गांवों के अति गरीब लोगो को 100-100 दीपक, व तेल भेट किया गया, जिससे गरीब ग्रामवासी भी दीपावली पर अपने घर में रोशनी कर सकें।

01/01/2015 को ज्ञान महाविद्यालय में **कम्बल वितरण** का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री पूरन सिंह राना, उपजिलाधिकारी कोल थे। महाविद्यालय के सचिव श्री दीपक गोयल भी कार्यक्रम में उपिस्थत थे। इसके अन्तर्गत उक्त सभी गांवों के पॉच-पॉच अति निर्धन व्यक्तियों को ग्राम प्रधानों की संस्तुति पर एक-एक कम्बल अतिथि द्वारा भेंट किया गया।

12/01/2015 से 18/01/2015 तक **'पहल कार्यक्रम'** के अन्तर्गत एन.एस.एस. के सहयोग से उक्त गांवों के अतिनिर्धनों को प्रधानों के माध्यम से पुराने गर्म कपड़े वितरित किये गये। इस योजना के अन्तर्गत पर्यावरण दिवस, मातृ दिवस, राष्ट्रीय दिवस, सहभोज कार्यक्रम, ज्ञान गंगा परिचय यात्रा, ज्ञान ज्योति कार्यक्रम एवं पहल आदि कार्यक्रम आयोजित किये गये।

इस योजना के कार्यान्वयन में डॉ. ललित उपाध्याय, डॉ. रत्न प्रकाश, श्री यतेन्द्र शर्मा, एवं विनोद ने योजना के प्रभारी डॉ. विवेक मिश्रा को पूरा सहयोग दिया।

❖

खेल विभाग

शिक्षा में खेल का भी बहुत महत्त्व है क्योंकि बिना खेल के जीवन अधूरा माना गया है। खेल खेलने की प्रथा आदि काल से चली आ रही है। किसी भी विद्यार्थी के लिये खेल का उसके जीवन में बहुत ही उपयोग होता है। शरीर को तनाव, रहित रखने के लिये एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि छात्र जीवन भी बहुत तनावों से भरा होता है। खेलने से वह अपने तनाव को कम कर सकता है। महाविद्यालय द्वारा इसी क्रम में इसको ध्यान में रखते हुये इन्डोर व आउटडोर खेलों की व्यवस्था की गयी है ताकि विद्यार्थी इससे लाभान्वित हो सकें।

खेलों के महत्व को देखते हुए डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय द्वारा भी अब नवीनतम पाठ्यक्रम में शारीरिक शिक्षा के प्रश्नपत्रों को प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों हेतु अनिवार्य किया गया है जिससे कि उनकी खेल के प्रति भी रूचि बढे।

महाविद्यालय द्वारा खेलों में शतरंज, कैरम, खो-खो, भाला फेंक, रस्साकसी, चक्का फेंक, गोला फेंक, लम्बी कूद, दौड़, वालीवाल, क्रिकेट, दौड़ आदि खेलों का आयोजन समय-समय पर कराया जाता है।

❖

Scanned by CamScanner

ज्ञान महाविद्यालय अलीगढ़ में इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU) के विशेष अध्ययन केन्द्र की स्थापना

इग्नू के RSD Notification No. : 00371G/RSD/Estt./LSC/Notification/2014/ 2960 Dated 8 Dec., 2014 के द्वारा ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़ {कोड नं. 47036 (डी)} में निम्नांकित कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के लिए विशेष अध्ययन केन्द्र की स्थापना की गई है :

क्रमांक	कार्यक्रम	प्रवेश हेतु न्यूनतम शैक्षिक योग्यता	अवधि
1.	बैचलर ऑफ प्रोपेटरी प्रोग्राम (B.P.P.)	औपचारिक शिक्षा आवश्यक नहीं, न्यूनतम आयु 18 वर्ष	6 माह
2.	मास्टर ऑफ आर्टस इन सोशियोलॉजी (M.A.) Socio.	स्नातक	2 वर्ष
3.	मास्टर ऑफ आर्टस इन इकोनोमिक्स (M.A.) Eco.	स्नातक	2 वर्ष
4.	मास्टर ऑफ आर्टस इन रूरल डेवलपमेंट (M.A.) R.D.	स्नातक	2 वर्ष
5.	पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन रूरल डेवलपमेंट (P.G.R.D.)	स्नातक	1 वर्ष
6.	डिप्लोमा इन बिजनेस प्रोसेसिंग आउटसोर्सिंग फाइनेंस एण्ड एकाउण्टिंग (DBPOF&A.)	अंग्रेजी विषय सहित कम से कम 50 प्रतिशत प्राप्तांकों से 12वीं पास	1 वर्ष
7.	सर्टीफिकेट इन रूरल डेवलपमेंट (CIRD)	स्नातक	6 माह
8.	सर्टीफिकेट इन टीचिंग इन इंग्लिश (CTIE)	स्नातक या 10+2 (2 वर्ष के अध्यापन अनुभव सहित)	6 माह
9.	सर्टिफिकेट इन एनवायरमेंटल स्टडीज (CEE)	10+2	6 माह
10.	सर्टिफिकेट इन गाइडेन्स (CIG)	मान्यता प्राप्त शिक्षण संस्थाओं के अध्यापक या मैट्रिकलेशन/एस.एस.सी. उत्तीर्ण या इग्नू से बी.पी.पी.	6 माह

महाविद्यालय को विशेष अध्ययन केन्द्र की स्वीकृति देर से मिलने पर भी विलम्ब शुल्क सहित 105 विद्यार्थियों ने विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेकर अपना अध्ययन जनवरी 2015 से शुरू किया है। महाविद्यालय प्रबन्धन ने प्रथम बैच (जनवरी 2015) में प्रवेश लेने वाले विभिन्न पाठ्यक्रमों के सभी विद्यार्थियों को पूरे शुल्क में 30 प्रतिशत की सहायता छात्रवृत्ति के रूप में दी है।

उपर्युक्त कार्यक्रमों में प्रवेश लेने के इच्छुक व्यक्ति विशेष अध्ययन केन्द्र के समन्वयक श्री आर. के. शर्मा (विभागाध्यक्ष बी.टी.सी.) ज्ञान महाविद्यालय, मो. 9219419405 आगरा रोड, अलीगढ़ पर सम्पर्क करें।

मोबाइल : 9837574326 (श्री आर. के. शर्मा), **मोबाइल :** 9219419405 (ज्ञान महाविद्यालय)

श्रद्धा सुमन

स्व. श्री हरस्वरूप शर्मा
(चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी)

स्व. श्री सुरेश चन्द्रा
(उप प्राचार्य, ज्ञान आई.टी.आई.)

स्व. श्री अनुज कुमार शर्मा
छात्र बी.ए. (तृतीय वर्ष)

Scanned by CamScanner

ज्ञान निजी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (I.T.I.) वार्षिक समीक्षा

आगरा रोड़ अलीगढ़ स्थित ज्ञान निजी I.T.I. पिछले पाँच सत्रों से लगातार छात्र–छात्राओं को रोजगार परक प्रशिक्षण प्रदान कर रहा है, जिससे लाभान्वित होकर हजारों छात्र–छात्राओं को देश विदेश की विभिन्न प्रमुख कम्पनियों में रोजगार मिल रहा है। ये अलीगढ जिले का ऐसा निजी I.T.I. है जो लगातार विकास की ओर अग्रसर है। ज्ञान निजी I.T.I. में गत शैक्षिक सत्र 2014–2015 में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। 04 अगस्त 2014 को भारत सरकार के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय के आगरा स्थित एम.एस.एम.ई. विकास संस्थान के सहायक निदेशक श्री शकील अहमद तथा इवेस्टीगेटर श्री सुशील यादव ने ज्ञान महाविद्यालय के सेमीनार हॉल में औद्योगिक अभिप्रेरणा संबंधी कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में ज्ञान I.T.I. में अध्ययनरत इलैक्ट्रीशियन तथा फिटर ट्रेड के सभी प्रशिक्षार्थियों तथा सभी अनुदेशकों ने भाग लिया। श्री सुशील यादव ने वर्तमान परिवेश में उद्यमशीलता की आवश्यकता को स्पष्ट करते हुए सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों को परिभाषित किया और अपने संस्थान के प्रमुख कार्यो से सबको अवगत करने के तरीकों पर प्रकाश डालते हुए मानव मनोविज्ञान के प्रमुख कार्यो का भी उल्लेख किया। श्री शकील अहमद ने भारत में विभिन्न प्रकार के उद्योगों के विकास के बारे में बताया और सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम शुरू करने एवं उसके सफल संचालन के सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक तरीकों पर भी प्रकाश डाला। श्री सुशील यादव ने 'INCUBATOR' के माध्यम से **''उद्यमशीलता तथा प्रबन्धकीय विकास को सहयोग''** के बारे में भी जानकारी दी। ज्ञान महाविद्यालय परिसर स्थित ज्ञान औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (I.T.I.) में 04 अगस्त 2014 से 12 सितम्बर 2014 तक चलने वाले **''बैसिक बैल्डिंग कोर्स''** में प्रवेश के इच्छुक व्यक्तियों को साक्षात्कार कर 25 विद्यार्थियों का चयन किया गया तथा संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन भी सहायक निदेशक महोदय ने किया। ज्ञान I.T.I. के प्रधानाचार्य ने संस्थान की प्रगति से अवगत कराया, इस कार्य में ज्ञान I.T.I. के उप प्रधानाचार्य (स्व.) श्री सुरेश चन्द्र ने प्रधानाचार्य का सहयोग किया। महाविद्यालय द्वारा गोद लिए गए गाँवों के लोगों को बेसिक बैल्डिंग कोर्स के बारे में पहले ही अवगत कराया जा चुका है। उपर्युक्त पूरे कार्यक्रम का संयोजन डॉ. गौतम गोयल ने किया। कार्यक्रम के दौरान महाविद्यालय के रहकर अनुदेशकों तथा प्रशिक्षार्थियों का मनोबल बढ़ाया। अन्त में ज्ञान महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. वाई. के. गुप्ता ने सहायक निदेशक तथा इवेस्टीगेटर का आभर व्यक्त किया और आशा व्यक्त की कि यह कार्यक्रम विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। ज्ञान आई.टी.आई. के प्रशिक्षणार्थियों को C.N.C. मशीनों पर ट्रेनिंग हेतु NSIC, Industrial Estate, Aligarh. भेजा जाता है। Quality control of India, New Delhi की टीम ने 01 सितम्बर 2014 को ज्ञान I.T.I. का निरीक्षण किया जिसमें टीम को सभी मूलभूत सुविधाएं मानक के अनुसार मिली। प्रशिक्षणार्थियों को दी जाने वाली ट्रेनिंग सुविधाओं को भी टीम ने सराहा तथा संस्थान को इलैक्ट्रीशियन ट्रेड की 84 अतिरिक्त सीटें प्रदान की। 17 सितम्बर 2014 को संस्थान में विश्वकर्मा दिवस के अवसर पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया, इसके अन्तर्गत भगवान विश्वकर्मा जी की पूजा अर्चना, हवन तथा मशीनों एवं औजारों का पूजन किया गया। इस अवसर पर संस्थान के सचिव श्री दीपक गोयल, प्रबन्धक डॉ. गौतम गोयल, प्रधानाचार्य तथा समस्त अनुदेशक एवं प्रशिक्षार्थी उपस्थित रहे।

संस्थान द्वारा 6 जनवरी 2015 को मथुरा स्थित टैंटीवाल वायर प्रोड्क्ट्स लिमिटेड कम्पनी में सत्र 2013–15 के प्रशिक्षार्थियों को औद्योगिक भ्रमण कराया गया, इसी कम्पनी में सत्र 2012–14 के प्रशिक्षार्थियों का रोजगार हेतु साक्षात्कार भी हुआ।

19 जनवरी 2015 को ज्ञान निजी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में डॉ. एस.मुनब्बर हुसैन ने प्रधानाचार्य के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। डॉ. हुसैन अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग से सम्पूर्ण शैक्षिक योग्यता प्राप्त हैं तथा उन्हें तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में 30 वर्षो से भी अधिक समय का अनुभव है।

66 वें गणतन्त्र दिवस पर 26 जनवरी 2015 को पूरे भारत वर्ष के साथ ही ज्ञान औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में भी ध्वजारोहण कार्यक्रम हुआ। इस अवसर पर प्रशिक्षार्थियों, अनुदेशकों तथा प्राचार्य ने अपने–अपने विचार व्यक्त किये, सभी ने एक दूसरे को गणतन्त्र दिवस की बधाई दी तथा देश भक्ति के गीत प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का समापन भारत माता के जयकारों के साथ हुआ।

Scanned by CamScanner

Visitor's View

ज्ञान महाविद्यालय में बरसों बरस पहले आया था [illegible] था। आज आया तो विस्मित हुआ। यहाँ की विशाल भव्य इमारत, यहाँ के छात्र, यहाँ के अध्यापक एवं कर्मचारी – सभी ने अपने अपने स्तर पर आकर्षित – प्रभावित किया। अध्यापकों में भी ऊर्जा, चाह, आत्मीयता आदि ने सचमुच खुश किया।

मैं यहाँ के अध्यापकों, छात्रों, कर्मचारियों के प्रति अपना आत्मीय भाव प्रकट करते हुए उनके सुख, समृद्धि व विकास की कामना करता हूँ।

प्रेमकुमार.

प्रेमकुमार, हिंदी विभाग
धर्म समाज कॉलेज, अलीगढ़

To attend a guest lecture, I visited this college. Few of the things impressed me the most here.

1. Campus and building are noted for their cleanliness and organised & [illegible] with the various faculties.
2. The academic atmosphere of the college is exemplary.
3. The staff is well qualified and they have zeal for giving qualitative education.
4. I was really impressed with the fact that this college of self-finance looks very different. The management seems to be committed and dedicated to the true cause of education. I wish every success to the college.

[signature] 9/2/15
Dr. V.P. Singh

Dr V.P. Singh Associate Professor,
Dept of English
D.S. College [illegible]

It was a pleasure interacting with the students and faculty at Gyan. I enjoyed visiting the campus and going through all the good work that is being done. Keep up the spirit.

Parul

Parul Yadav, Deptt. of Zoology
D.S. College

आज दिनांक 27.1.15 को मैंने ज्ञान महाविद्यालय में बी.टी.सी. 2012 का तृतीय सेमे. की आन्तरिक परीक्षा हेतु सम्पन्न कराया। मैं यहाँ इससे पहले भी एक बार और आ चुकी हूँ परन्तु आज मुझे काफी अच्छा लगा। विद्यालय के प्रत्येक स्टाफ शिक्षक व प्रशासनिक का काफी सहयोग रहा। महाविद्यालय शैक्षिक गुणवत्ता के लिए अति उत्तम है। भविष्य में ज्ञान महाविद्यालय हमेशा प्रथम ही रहे। मेरी यही ईश्वर से प्रार्थना है।

Thanks.

Garima
27.01.15

Smt. Garima Rani

It is a pleasure to take practical examination in Gyan Mahavidhyalaya a nice college. With best wishes and compliments.

[signature]

Dr. R.M.S. Sengar
Deptt. of Botany, Agra College
Agra

Institute is very nice for the study point of view among self finance category. I wish the college for a bright future.

Dr. P. Raghav
Deptt. of Botany
S.D. College, Hathras

Scanned by CamScanner

Visitor's View

It was a pleasure interacting with the students and faculty at Gyan. I enjoyed visiting the campus and going through all the good work that is being done. Keep up the spirit.

Parul

Parul Yadav, Deptt. of Zoology
DS College

आज दिनांक 16.12.2014 को [illegible]

[illegible]

[illegible]

It is very exciting to take the Phy. Practical Exam at Gyan Mahavidyalya Aligarh. Wishing you all good luck.

[illegible]

Dr. Khushwant Singh
Assoc. Prof & Head. Phy. deptt.
B S A College, Mathura

I glad for visit the Gyan Mahavidyalaya Aligarh as a External Examiner in M.Com-Viva Exam 2014. I found the college is clean & Administrative office. Thanking to Dr. Y. K. Gupta, Principal of this Institution for fair system & Admn.

[illegible] 19/6/14
(Dr. H. P. Malonia)

DR. H.P. Malonia
Associate Professor in Commerce
SRK (PG) College, Hathras

I am very much pleased to college & its infrastructure. Definitely, no doubt that college is providing & doing very good work for the development of rural area of Aligarh Dist. I wish him all the success of the college.

Dr BK Tripathi, Deptt. of Geog.
AK. College Shikohabad.

Institute is nice for the Students Studies.

[illegible]

Dr. Abha Gupta
Deptt of Botany, BDKMV, AGRA

Scanned by CamScanner

Visitor's View

Infrastructure of college is well maintained. Quality of Education provide by the factulty is up to mark.

15/08/14

Dr. K. N. Tripathi
Associate Professor Commerce
P.C. Bagla College Hathras.

It is quite fascinating to see this college flourish. Hope to see it flourishing further in future.

15/8/2014

Dr. Shamim Ahmad
Deptt of Chemistry, D.S. College, Aligarh

The college is extending & growing in good & nice manner.

08/08/2014

Dr. Manu Pratap Singh
Dept. of Computer Science
I.E.T., Khandari
Dr. B.R. Ambedkar University
Agra.

Gyan College is mirror of Knowledge, Green Environment and Academic Excellence

G. Kishore
17.8.14

Dr. G. Kishore
Ex Dean, Edu., Agra Univ., Agra

Best of luck for future endeavour.
Thanks for inviting.

28/8/14.

Dr. Manju Gaur
Principal, Raghubir Bal Mandir, Aligarh.

You have well done and I hope that you will continue do it.

Rama Shankar Singh, R.S.I.C. Ali.

A great effort by the all faculties of Gyan Mahavidyalay regarding the improvement of teaching in future.

Rajendra Kumar R.S.I. College Aligarh

An immemorable day I spent in Gyan Mahavidyalaya. Credit goes to all teachers and dear students.

DR. M.K. Bhardwaj D.S. College Aligarh

ज्ञान महाविद्यालय के लगातार विकास के पथ पर अग्रसर रहते हुये अच्छा लगा भविष्य में विद्यालय के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ

अशोक (ओझा)

Scanned by CamScanner

Visitor's View

Good and very nice.

12/4/14

Pramod Kumar Sharma
Deptt. of Computer Sc, I.B.S
Khandari, Agra

Good and futuristic

16/4/14

Vikas Tiwari, Deptt of CS
IET Khandari Agra

Very Good college in Private Sector

27/5/14

Dr. Sumit Chandra, Deptt of Commerce
Govt Degree College, Mant, Mathura

Nice college, considering it's a self finance college.

Dr. P.K. Agrawal, Deptt. of Zoology
BSA College, Mathura.

मुझे, ज्ञान महाविद्यालय में आकर ऐसा महसूस नहीं हुआ कि यह संस्था स्ववित्त पोषित संस्थाओं में से एक है। स्टाफ का व्यवहार अति शोभनीय है।

Dr. D.P. Yadav; Deptt of Physics
N.D. College, Shikohabad.

Very nice institute for the students for bright future

Dr. R.S. Solanki
Botany Deptt, Gangdundwara College
Gangdundwara (Kasganj)

Very Nice
for students future
I am happy.

Dr. Kamal Singh
Deptt of Zoology
R.B.S. College Agra.

It is great pleasure to visit a college like this. Atmosphere of the college is upto the mark.

Dr. Arvind Kumar
Deptt of Chemistry
Narain (PG) College
SHIKOHABAD.

Scanned by CamScanner

सुर्खियों में ज्ञान महाविद्यालय

उद्योग व्यापार टाइम्स शुक्रवार, 03 अक्टूबर 2014

हिन्दुस्तान गुरुवार, 11 सितम्बर 2014

सभी को मिले समान अधिकार

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना की ओर से एक शिविर मंदिर का नगला स्थित रुस्तमपुर अकबर खां के प्राथमिक विद्यालय में लगाया गया।

प्राचार्य डॉ. वाईके गुप्ता ने सभी को समान अधिकार का हक दिलाने की बात कही। उप प्राचार्य एसएस यादव ने एनएसएस स्वयं सेवकों द्वारा किए जाने वाले सामाजिक कार्यों को बताया। उन्होंने कहा कि आज यदि मानवाधिकार नहीं होता तो लोगों को क्या पुलिस और अन्य सरकारी अमला हर किसी को अपने प्रभाव में लेता और उनसे दबाव में अपने मंसूबे पूरा करता। इस मौके पर विद्यालय की प्रधानाध्यापिका विमला सक्सेना, ललित उपाध्याय, डॉ. सोमवीर सिंह, डॉ. संध्या सेंगर, अमित कुमार, मीनाक्षी आदि मौजूद रहीं।

दैनिक जागरण 22 अक्टूबर 2014

एनएसएस से जुड़े हैं 32 लाख युवा

अलीगढ़ : राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारियों का सात दिवसीय प्रशिक्षण आगरा में सेंट जोंस कॉलेज में संपन्न हुआ। इसमें ज्ञान महाविद्यालय की एनएसएस इकाई के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. ललित उपाध्याय शामिल हुए।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना के क्षेत्रीय प्रमुख डॉ. अशोक श्रोत्रीय ने कहा कि एनएसएस देशभर में 367 विश्वविद्यालयों के 32 लाख स्वयंसेवकों की युवा शक्ति को जोड़ने वाला विश्व का सबसे बड़ा संगठन है।

अमर उजाला 3 अगस्त 2014

ज्ञान कॉलेज में हुआ 'प्रतिभा परिचय' का आयोजन

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय के स्वराज्य सभागार में बीएड के नए छात्र-छात्राओं के लिये 'प्रतिभा परिचय दिवस' समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में बीएड के साथ-साथ महाविद्यालय के सभी संकायों के शिक्षक और डा. गौतम गोयल, प्रबंध समिति के सचिव दीपक गोयल ने भी भाग लिया। मंच का संचालन उप प्राचार्य डा. रेखा शर्मा ने किया। सभी छात्र-छात्राओं ने बारी-बारी से मंच पर आकर अपना परिचय दिया। छात्रों ने गीत और भजन आदि प्रस्तुत कर लोगों का मन मोह लिया। इस मौके पर डा. रेखा शर्मा, डा. ललित उपाध्याय डा रत्नप्रकाश, सरिता वार्जानेय, आभाकृष्णा जौहरी आदि थे।

अमर उजाला शुक्रवार, 5 सितम्बर 2014

'क्षतिग्रस्त न हों अमूल्य दस्तावेज'

वृंदावन शोध संस्थान में कार्यशाला, इंटैक विशेषज्ञों ने दी जानकारियां

अमर उजाला ब्यूरो

[illegible]

[illegible]

अमर उजाला 14 सितम्बर 2014

ज्ञान महाविद्यालय में मनाया गया हिंदी दिवस

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। प्राचार्य डॉ. वाईके गुप्ता ने कहा कि राष्ट्रीय आवश्यकता एवं भाषी सौहार्द की अभिव्यक्ति राष्ट्रभाषा हिंदी है। कार्यक्रम को आभा कृष्ण जौहरी, डॉ. वीना अग्रवाल, डॉ. एसएस यादव, डॉ. रेखा शर्मा, डॉ. ललित उपाध्याय आदि ने संबोधित किया।

उद्योग व्यापार टाइम्स शुक्रवार, 12 सितम्बर 2014

ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़ में "संस्थापक दिवस" का आयोजन

Scanned by CamScanner

सुर्खियों में ज्ञान महाविद्यालय

राजपथ, 27 नवम्बर 2014

ज्ञान महाविद्यालय के ... में ... द्वारा ... आयोजित

अनुसूचित जातियों के उत्थान हेतु लोगों का हृदय परिवर्तन जरूरी–डा.एच.एन.सिंह

दैनिक जागरण

कवियों की जीवन शैली बताई

राजपथ 05 अगस्त 2014

ज्ञान महाविद्यालय अलीगढ़ में औद्योगिक अभिप्रेरणा अभियान

उद्योग व्यापार टाइम्स रविवार, 07 सितम्बर 2014

ज्ञान महाविद्यालय के प्रतिनिधि मंडल ने वृंदावन में आयोजित इंटेक कार्यशाला में प्रतिभाग किया

दस्तावेजों व पुस्तकालय सामग्री को संरक्षित करने हेतु जागरुकता व प्रशिक्षण आवश्यक : दीपक गोयल

रेनबो हॉस्पीटल
..., अलीगढ़ फो. 9319721978
डा. चारु माहेश्वरी
M.B.B.S. D.G.O., D.N.B. (Obs. & Gynae.), MRCOG - I (London)
स्त्री एवं प्रसूती रोग विशेषज्ञ

दैनिक जागरण 20 सितम्बर 2014

डायट की टीम ने ज्ञान महाविद्यालय को दी मात

अलीगढ़ : ज्ञान महाविद्यालय में आयोजित वालीबॉल प्रतियोगिता में डायट की टीम ने ज्ञान महाविद्यालय को पांच-शून्य से हरा दिया। ज्ञान महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने काफी कोशिश की मगर वे एक भी गोल नहीं कर सकें। इसमें दोनों ही तरफ से बीटीसी के विद्यार्थियों ने भाग लिया था। डायट की टीम में जितेंद्र, रामकुमार, कपिल, विक्रांत गोस्वामी, सूरज सिंह, अजित पाल सिंह, पंकज सिंह का अहम योगदान था।

Scanned by CamScanner

सुर्खियों में ज्ञान महाविद्यालय

दैनिक जागरण

सुशासन के लिए जागरूकता

ज्ञान महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई ने सुशासन दिवस पर संगोष्ठी का आयोजन गांव मंदिर का नगला ने किया। संचालन कार्यक्रम अधिकारी ललित उपाध्याय ने किया। उप प्राचार्य डॉ. एसएस यादव ने कहा कि युवाओं को सुशासन के लिए सरकार का सहयोग करना चाहिए। लोगों को जागरूक करने की जिम्मेदारी भी युवाओं की है। ग्रामीणों को सरकार की ओर से चलाई जा रही योजनाओं की जानकारी दी गई। कार्यक्रम में डॉ. विवेक मिश्रा, डीके रावत, अब्दुल बासित, राकेश, विनोद मौजूद रहे।

दैनिक जागरण

जागरूक कर दिलाया मतदान का संकल्प

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय के एनएसएस के छात्र-छात्राओं ने सोमवार को मतदाता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। इस मौके पर विद्यार्थियों और शिक्षकों ने संकल्प पत्र भर दस अप्रैल को होने वाले मतदान का संकल्प लिया।

- एनएसएस के छात्र-छात्राओं ने निकाली रैली
- शिक्षकों ने भी भरे संकल्प पत्र

इस अवसर पर ज्ञान महाविद्यालय के सचिव दीपक गोयल, निदेशक ज्ञान आईटीआई डॉ. गौतम गोयल, प्रिंसिपल डॉ. वाईके गुप्ता, वाइस प्रिंसिपल डॉ. एसएस यादव ने विचार व्यक्त करते हुए मतदान को लोकतंत्र की मजबूती के लिए जरूरी बताया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. ललित उपाध्याय ने किया। इस अवसर पर बीए, बीएससी, एमएससी, एम कॉम, बीएड, बीटीसी, बीबीए, बीसीए, आईटीआई के छात्र-छात्राओं ने नारे लगाए। जिसमें आभा कृष्ण जौहरी, डॉ. जेके शर्मा, डॉ. रेखा शर्मा, डॉ. विवेक मिश्रा, अभिषेक बघेल आदि उपस्थित रहे।

अमर उजाला बृहस्पतिवार, 10 ...

शिविर में 86 विद्यार्थियों ने दिया रक्त

अमर उजाला 28 सितम्बर 2014

ज्ञान महाविद्यालय में डांडिया का आयोजन

डांडिया नृत्य करती महिलाएं।

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय के ज्ञान भवन में शनिवार को माता की भेंट और डांडिया का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में अतिथि डॉ. मंजू गौड (रघुवीर बाल मंदिर प्रधानाचार्या) रहीं। कार्यक्रम में हवन के बाद माता दुर्गा के भजन प्रस्तुत किए। श्रद्धालुओं ने सामूहिक रूप से डांडिया नृत्य किया, जिसके बाद प्रसाद वितरित किया। कार्यक्रम में महाविद्यालय प्रबंधक मनोज यादव, प्राचार्य डॉ. वाईके गुप्ता, उपप्राचार्य डॉ. एसएस यादव, डॉ. रेखा शर्मा, मुख्य अनुशासन अधिकारी डॉ. ललित उपाध्याय, डीएस डिग्री कालेज के डॉ. पीके. शर्मा और डॉ. आशीष दत्त आदि मौजूद रहे।

प्रावदा शनिवार, 06 दिसम्बर 2014

गरीब कन्या को विवाह में सिलाई मशीन भेंट

हिन्दुस्तान

ज्ञान महाविद्यालय में मना उद्यमिता दिवस

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय में विश्व उद्यमिता दिवस के अवसर पर संगोष्ठी का आयोजन गुरुवार को किया गया। जिसमें उद्यमिता विकास के लिए नवप्रवर्तन की आवश्यकता पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बीबीए और बीसीए के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। इस मौके पर प्राचार्य डॉ. वाईके गुप्ता, प्रियंका शर्मा, कमल कुमार, बिजेन्द्र पाल सिंह, राधा सिंह आदि उपस्थित रहे।

Scanned by CamScanner

सुर्खियों में ज्ञान महाविद्यालय

राजपथ 14 मार्च 2014

ज्ञान महाविद्यालय द्वारा मतदाता जागरूकता रैली आयोजित

'युवजन के तीन काम- शिक्षा, सेवा व मतदान'

[illegible]

उद्योग व्यापार टाइम्स मंगलवार, 12 अगस्त 2014

अलीगढ़ में इण्डियन हैरीटेज क्विज 2014' का आयोजन

हिन्दुस्तान गुरुवार, 11 सितम्बर 2014

एनएसएस शिविर का हुआ समापन

[illegible]

आज 22 जुलाई 2014

'ज्ञान गंगा परिचय यात्रा' का मडराक में आयोजन

[illegible]

अमर उजाला 07 सितम्बर 2014

दस्तावेज संरक्षण के गुर बताए

अलीगढ़ (ब्यूरो)। इण्डियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एंड कल्चरल हैरीटेज (इंटेक) नई दिल्ली एवं वृंदावन शोध संस्थान, वृंदावन के संयुक्त तत्वावधान में दस्तावेजों और पुरातात्विक सामग्री के संरक्षण विषय पर आयोजित [illegible] दिवसीय कार्यशाला में अलीगढ़ से ज्ञान महाविद्यालय के [illegible] सदस्यीय दल ने सहभागिता की। अलीगढ़ दल में डा. विवेक मिश्रा, डा. [illegible] प्रकाश, डा. ललित उपाध्याय, पुस्तकालय प्रभारी सुषमा [illegible] व ज्ञान आईटीआई के [illegible] शर्मा ने सक्रिय प्रतिभाग किया। इस कार्यशाला में इंटेक के [illegible] गुप्ता [illegible] संरक्षण विभाग के डा. [illegible], वृंदावन शोध संस्थान के निदेशक डा. [illegible] नारायण शर्मा, इंटेक संरक्षण नई दिल्ली के प्रमुख निदेशक [illegible] मिश्रा, इंटेक संरक्षण संस्थान लखनऊ की निदेशक [illegible] मिश्रा, इंटेक नई दिल्ली के [illegible] मिश्रा द्वारा प्रशिक्षण दिया गया।

अमर उजाला

ज्ञान आईटीआई में अतिरिक्त सीटें

अलीगढ़। ज्ञान प्राइवेट आईटीआई संस्थान, आगरा रोड, अलीगढ़ को अगस्त 2014 में इलेक्ट्रीशियन ट्रेड में क्यूसीआई व डीजीईटी/एनसीवीटी द्वारा [illegible] 168 सीटों की मान्यता प्रदान की गई है। इस अवसर पर संस्थान के [illegible] डा. [illegible] द्वारा सभी प्राध्यापकों व छात्र-छात्राओं को जानकारी देने के साथ-साथ धन्यवाद भी दिया। साथ ही कहा कि इलेक्ट्रीशियन ट्रेड में 168 अतिरिक्त सीटों की मान्यता से इस क्षेत्र के छात्र-छात्राओं को तकनीकी शिक्षा प्राप्त कर लाभान्वित होंगे। इस मौके पर संस्थान के प्राचार्य [illegible], उप-प्राचार्य सुरेश चन्द्र, अजय [illegible] पाठक, [illegible] सिंह, गौरव कुमार, दीपक कुमार, भरत शर्मा, जितेन्द्र कुमार, [illegible] कुमार, महेन्द्र सिंह माथुर, [illegible], [illegible] यादव, [illegible] आदि मौजूद थे।

हिन्दुस्तान

सूखी धरती करे पुकार, वृक्षों से करें शृंगार

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा पौधरोपण दिवस मनाया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कॉलेज प्रिंसिपल डॉ. वाईके गुप्ता ने की। इस मौके पर स्वयंसेवकों एवं स्वयंसेविकाओं ने कॉलेज परिसर में पौधरोपण किया। वाइस प्रिंसिपल डॉ. एसएस यादव ने स्वयंसेवकों की सराहना करते हुए कहा कि सूखी धरती करे पुकार, वृक्षों से करें शृंगार। इस मौके पर डॉ. रेखा शर्मा, डॉ. जेके शर्मा, डॉ. आरके कुशवाह, डॉ. वीसी गुप्ता, यतेन्द्र कुमार, गौरव प्रसाद अग्रवाल, रजनी, अंजू आदि मौजूद रहे।

हिन्दुस्तान मंगलवार, 11 नवम्बर 2014

वाणिज्य संकाय में हुआ अतिथि व्याख्यान

अलीगढ़। आगरा रोड स्थित ज्ञान महाविद्यालय के वाणिज्य संकाय की ओर से सरस्वती सभागार में हुए अतिथि व्याख्यान में इंडियन ओवरसीज बैंक के पूर्व शाखा प्रबंधक डॉ. धर्मेन्द्र कुमार [illegible] ने वस्तु विनिमय से इंटरनेट बैंकिंग की यात्रा विषय पर व्याख्यान दिया। प्राचार्य डॉ. वाईके गुप्ता, उप प्राचार्य डॉ. एसएस यादव, वाणिज्य संकाय के प्रभारी डॉ. राजेश कुशवाहा आदि मौजूद थे।

अमर उजाला [illegible] अक्टूबर 2014

गोद लिए गांवों में किया श्रमदान

[illegible]

अमर उजाला 10 अगस्त 2014

राखी थाल सज्जा और मेहंदी प्रतियोगिता का आयोजन

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय में राखी थाल सज्जा एवं मेहंदी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डा. वाईके गुप्ता, उप प्राचार्य डा. रेखा शर्मा, बीटीसी विभागाध्यक्ष आरके शर्मा व अन्य अध्यापक उपस्थित रहे। प्रतियोगिताओं का मूल्यांकन बीएड विभाग की वरिष्ठ प्राध्यापिका आभा कृष्ण जौहरी एवं मधु चाहर ने किया। जिसमें मेहंदी प्रतियोगिता में [illegible] प्रथम, प्रीती शर्मा द्वितीय, शान अहमद ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। थाल सज्जा में [illegible] परवीन ने प्रथम, प्रीती शर्मा ने द्वितीय, और नीरज कुमार ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। राखी प्रतियोगिता में शान अहमद ने प्रथम, परम ज्योति ने द्वितीय, संजीव ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

अमर उजाला बृहस्पतिवार, 11 दिसम्बर 2014

घर-घर जाकर आर्थिक सर्वे किया

[illegible]

सुर्खियों में ज्ञान महाविद्यालय

अमर उजाला शनिवार, 15 नवम्बर 2014

बाल दिवस पर ज्ञान मेले का आयोजन

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय में छात्र-छात्राओं द्वारा ज्ञान मेले का आयोजन ऋतु ग्रीन वाटिका में किया गया। 35 स्टाल छात्र-छात्राओं द्वारा लगाए गए जिसमें भेलपूरी, चाऊमीन, बर्गर, मसाला डोसा, आइसक्रीम, दोसा, डेकोरेशन, ज्वैलरी व निःशुल्क पानी की स्टालें प्रमुख थी। डॉ सोनकर, डॉ. अमित चतुर्वेदी, डॉ. एके तोमर, डॉ. रेखा शर्मा, डॉ. ललित उपाध्याय आदि थे।

ज्ञान महाविद्यालय में विशेष उद्यमिता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

युवा रोजगार याचक न बनकर रोजगार सृजक बनें

दैनिक जागरण 17 दिसम्बर 2014

ज्ञान महाविद्यालय में ज्ञान दिवस पर सांस्कृतिक कार्यक्रम

द्रोणाचार्य बनें शिक्षक : शुक्ल

ज्ञान महाविद्यालय में आयोजित ज्ञान दिवस में शिरकत

अलीगढ़ 25.09.2014

ज्ञान महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस मनाया गया

वायु वेग से सामाजिक कार्य करें युवा

अमर उजाला मंगलवार, 25 नवम्बर 2014

नालेज ओलम्पियाड संपन्न

अमर उजाला सोमवार, 27 अक्टूबर 2014

प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरित

अलीगढ़। शिक्षित युवा जागरूक संगठन के बैनर तले एक सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन 19 अक्तूबर को किया गया था। जिसके विजयी प्रतिभागियों को रविवार को एक कार्यक्रम के दौरान सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि डॉ वाई के गुप्ता, डॉ एसएस यादव, डॉ ललित उपाध्याय, डॉ विवेक मिश्रा ने पुरस्कार वितरण किया।

अमर उजाला शुक्रवार, 02 जनवरी 2015

गरीबों की मदद को बढ़े हाथ

हिन्दुस्तान शुक्रवार, 02 जनवरी 2015

महाविद्यालय प्रबंधन ने बांटे कंबल

ज्ञान महाविद्यालय प्रबंधन की ओर से ... में सामाजिक ... के अंतर्गत ... 14 गांव के 70 गरीबों को कंबल बांटे गए। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि ... रहे। कंबलों का वितरण ... ग्राम प्रधानों की उपस्थिति में किया गया। इस दौरान समिति के प्रभारी डॉ. विवेक मिश्र ने स्वागत ... योजना और गोद लिए गांवों के विद्यार्थियों को महाविद्यालय द्वारा दी जा रही विशेष सुविधाओं के बारे में बताया। इस मौके पर डॉ. ... सोनकर, निखलेश कुमारी, मनोज कुमार, डॉ. वाईके गुप्ता आदि मौजूद रहे।

हिन्दुस्तान

शिविर ने किया निशुल्क नेत्र परीक्षण

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के तत्वावधान में गांव मंदिर का नगला में चल रहे सात दिवसीय विशेष शिविर के चौथे दिन निशुल्क नेत्र परीक्षण किया गया। इसमें 125 से अधिक मरीजों का नेत्र परीक्षण किया गया। इस दौरान धीरेन्द्र मोहन वार्ष्णेय ने लोगों को नेत्र रोगों के बचाव के तरीके बताए। इस मौके पर डॉ. रत्नप्रकाश उपप्राचार्य डॉ. एसएस यादव, डॉ. ललित उपाध्याय, डॉ. विवेक मिश्रा, डॉ. हरीश गोयल आदि मौजूद रहे।

दैनिक जागरण अक्टूबर 2014

निर्धनों संग बांटी खुशी

अलीगढ़ : ज्ञान महाविद्यालय की सामाजिक समिति व राष्ट्रीय सेवा योजना की ओर से 14 गांवों में ... गरीब लोगों को ... बांटी गई। ... मिश्र ने बताया कि ... आयोजन का उद्देश्य हर घर में ज्ञान ज्योति ... है। ... हरनाथपुर, ... मुकुन्दपुर, ... आदि गांवों में ... सामग्री भेंट की गई।

दैनिक जागरण 31 अगस्त 2014

ज्ञान महाविद्यालय में 36 शिक्षकों को दिया प्रशिक्षण

अलीगढ़ : ज्ञान महाविद्यालय के बीएड विभाग में क्वालिटी इंप्रूवमेंट इन टीचिंग लर्निंग प्रोग्राम के तहत 13 पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ा रहे 36 शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया गया। मुख्य अतिथि डॉ. आरएन सिंह रहे। उप प्राचार्य डॉ. रेखा शर्मा ने शिक्षकों को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के बारे में जानकारी दी। विषयवार जानकारी शिक्षक मधु, भावना, पुष्पेंद और डॉ. गौतम गोयल ने दी।

Scanned by CamScanner

सुर्खियों में ज्ञान महाविद्यालय

दैनिक प्रावदा

डा. ललित उपाध्याय ने किया राष्ट्र स्तरीय कार्यशाला में प्रतिनिधित्व

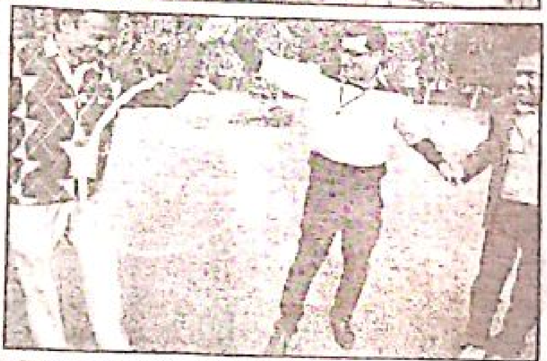

कल्पतरु एक्सप्रेस शुक्रवार, 22 अगस्त 2014

उद्यमिता विकास के लिए इनोवेशन जरूरी

विश्व उद्यमिता दिवस पर संगोष्ठी का आयोजन

प्रावदा बुधवार, 17 दिसम्बर 2014

ज्ञान महाविद्यालय में 'ज्ञान दिवस' का आयोजन किया

कल्पतरु एक्सप्रेस मंगलवार, 22 जुलाई 2014

गंगा को निर्मल बनाने का लिया संकल्प

सुर्खियों में ज्ञान महाविद्यालय

अमर उजाला

अलीगढ़

अलीगढ़। मंगलवार। 21 अक्तूबर 2014

कार्यक्रम अधिकारियों को किया प्रशिक्षित

अलीगढ़ (ब्यूरो)। राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारियों का सात दिवसीय प्रशिक्षण सोमवार आज संपन्न हो गया। प्रशिक्षण के उपरांत सभी को प्रमाणपत्र दिये गए। इस मौके पर मुख्य व्याख्यान डॉ.प्रभाकर सिंह, राहुल सिंह परिहार, अशोक श्रोत्रिय ने दिया। इस मौके पर ज्ञान महाविद्यालय के कार्यक्रम अधिकारी राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई डॉ ललित उपाध्याय, डॉ प्रतिमा गुप्ता, एसपी सिंह, डॉ सी एम जैन, डॉ मनुकान्त, डॉ पल्लवी आदि उपस्थित थे।

दैनिक जागरण 27 अक्टूबर 2014

रोहन व नितिन ने मारी बाजी

अलीगढ़ : शिक्षित युवा जागरूक सगठन की ओर से हुई सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का परिणाम घोषित कर दिया गया है। सीनियर वर्ग में रोहन प्रथम, सूरजपाल सिंह द्वितीय व शैलेश तृतीय स्थान पर रहे। जूनियर वर्ग मे नितिन शर्मा प्रथम, गौरी शकर द्वितीय व रवेंद्र तृतीय स्थान पर रहे। मुख्य अतिथि ज्ञान महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. वाई के गुप्ता, डॉ. एस एस यादव, डॉ. ललित उपाध्याय व डॉ. विवेक मिश्रा ने पुरस्कार दिए। इस मौके पर वृजेंद्र कुमार, ललित शर्मा, सोमवीर सिंह, महेश कुमार आदि मौजूद रहे।

हिन्दुस्तान रविवार, 14 सितम्बर 2014

बिन निज भाषा ज्ञान के मिटे...

अलीगढ़। राष्ट्रीय आवश्यकता एवं भाषा सामर्थ्य की अभिव्यक्ति राष्ट्रभाषा हिन्दी है। राष्ट्रभाषा प्रत्येक देशवासी के गौरव एवं उसकी अस्मिता का प्रतीक है।

यह उद्बोधन ज्ञान महाविद्यालय के प्रिंसिपल डॉ वाई के गुप्ता ने हिन्दी दिवस की पूर्व संध्या पर दिया। हिन्दी दिवस की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए वाइस प्रिंसिपल डॉ.एसएस यादव ने कहा किसी भी देश व राष्ट्र की कोई भी राष्ट्रभाषा न होना देश के वासियों को गूंगा-बहरा ही नहीं बल्कि गुलाम मानसिकता का बोध कराती है। वाइस प्रिंसिपल डॉ. रेखा शर्मा ने कहा हिन्दी प्रवाह वाली जुबान है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति हिन्दी में काम व पत्र व्यवहार करें। मुख्य अनुशासन अधिकारी डॉ. ललित उपाध्याय ने भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की 'बिन निज भाषा ज्ञान के मिटे न हिय को सूल' पंक्ति कहकर छात्र-छात्राओं में उत्साहवर्धन किया। हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. बीना अग्रवाल ने कहा कि देश की सर्वप्रिय भाषा हिन्दी है। जिसे लोकप्रिय व व्यावहारिक बनाते हुए सच्चे मन से अपनाने की प्रबल आवश्यकता है। इस मौके पर डॉ.विवेक मिश्रा, लक्ष्मी चन्द्र, डॉ. योगेश चन्द्र गुप्ता, डॉ. सुहैल अनवर, सरिता वार्ष्णेय, आरके शर्मा, शिवानी, रागिनी, निरंजन किशोर, भावना सारस्वत, दीनानाथ गुप्ता आदि मौजूद रहे।

छात्र-छात्राओं ने लिया भाग: अलीगढ़। रघुवीर बाल मंदिर में हिन्दी दिवस के मौके पर विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसमें छात्र-छात्राओं ने बढ़चढ़कर भाग लिया। प्रिंसिपल डॉ. मंजू गौड़ ने बताया कि कैसे मातृभाषा को सुदृढ़ बनाया जा सकता है। इस मौके पर ममता माहेश्वरी, श्याम बाबू, बीना शर्मा, नीरज, मीनू शर्मा आदि मौजूद रहे।

प्रावदा अलीगढ़ शनिवार, 01 नवम्बर 2014

ज्ञान महाविद्यालय एन.एस.एस. इकाई द्वारा एकता दौड़ का भव्य आयोजन

एकता के लिये दौड़े : युवा

एकता दौड़ में 160 से अधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया

अमर उजाला बुधवार, 17 दिसम्बर 2014

ज्ञान दिवस का आयोजन

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय में 'ज्ञान दिवस' का आयोजन किया गया। एएमयू के प्रोफेसर राजीव लोचन शुक्ल तथा प्रोफेसर अकील उर्रहमान कार्यक्रम में शामिल हुए। महाविद्यालय पुरातन विद्यार्थी समिति के नव निर्वाचित अध्यक्ष अग्निनी तिवारी, उपाध्यक्ष राजेन्द्र सिंह, कोषाध्यक्ष रेखा शर्मा तथा सचिव मयंक राठी को मुख्य अतिथि ने उनके पद की शपथ दिलायी। इस अवसर पर महाविद्यालय के सचिव दीपक गोयल, प्राचार्य डॉ. वाई के गुप्ता, उप प्राचार्य डॉ. एसएस यादव ने महाविद्यालय पुरातन विद्यार्थी समिति तथा ज्ञान सेवा योजना प्रकोष्ठ की संयुक्त वार्षिक पत्रिका - 2014 का विमोचन किया। महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर उपस्थित लोगों का मन मोह लिया। प्राचार्य डॉ. वाई के गुप्ता ने महाविद्यालय द्वारा गोद लिए गए 14 गांवों के विद्यार्थियों को दी जाने वाली सुविधाओं का उल्लेख किया।

अमर उजाला

संस्थापक दिवस का आयोजन

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय में संस्थापक दिवस का आयोजन ज्ञानार्जन दिवस के रूप में किया गया। कार्यक्रम में एमएलसी जगवीर किशोर जैन, आयकर आयुक्त राधा कृष्ण, आयकर अधिकारी शंकर सिंह, एडीएम सिटी अवधेश तिवारी आदि उपस्थित थे। महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित जर्नल ज्ञानभव, ज्ञान विज्ञान तथा ज्ञान अर्थ का विमोचन अतिथियों द्वारा किया गया। इस अवसर पर संस्थापक डॉ. ज्ञानेंद्र गोयल के परिजन उपस्थित थे।

Scanned by CamScanner

सुर्खियों में ज्ञान महाविद्यालय

कल्पतरु एक्सप्रेस शनिवार, 14 नवम्बर 2014

ज्ञान महाविद्यालय में छात्र-छात्राओं द्वारा ज्ञान मेला हुआ। मुख्य अतिथि एसीएम प्रथम डा. सोनकर तथा विशिष्ट अतिथि इग्नू के क्षेत्रीय निदेशक डा. अमित चतुर्वेदी उप प्राचार्य डीएस कालेज डा. एके तोमर व पूर्व प्राचार्य राष्ट्रीय महाविद्यालय एसपीएस जादौन आदि गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि डा सोनकर ने कि मेले के आयोजन से छात्र-छात्राएं आत्मनिर्भर बन सकते हैं। कार्यक्रम का संचालन डा रेखा शर्मा व मधु चाहर ने किया।

बाल दिवस के मौके छात्राओं को सम्मानित करते पदाधिकारी।

उद्योग व्यापार टाइम्स शनिवार, 26 जुलाई 2014

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय की ज्ञान सामाजिक सरोकार समिति के [illegible] ... 2014 हेतु [illegible] ...

हिन्दुस्तान शुक्रवार, 12 अगस्त 2014

ज्ञान महाविद्यालय में मना उद्यमिता दिवस

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय में विश्व उद्यमिता दिवस के अवसर पर संगोष्ठी का आयोजन गुरुवार को किया गया। जिसमें उद्यमिता विकास के लिए नवप्रवर्तन की आवश्यकता पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बीबीए और बीसीए के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। इस मौके पर प्राचार्य डॉ. वाईके गुप्ता, प्रियंका शर्मा, कमल कुमार, बिजेन्द्र पाल सिंह, राधा सिंह आदि उपस्थित रहे।

हिन्दुस्तान

डायबिटीज जैसे रोग जीन के कारण

अलीगढ़। आगरा रोड स्थित ज्ञान महाविद्यालय के सरस्वती सभागार में वनस्पति विज्ञान की ओर से हुई व्याख्यान माला के आयोजन में जीन क्लोनिंग की वर्तन समय में उपयोगिता को बताया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. वाईके गुप्ता ने की। संचालन डॉ. प्रमोद कुमार ने किया।

मुख्य वक्ता धर्म समाज कॉलेज के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. मुकेश भारद्वाज ने कहा कि जनेटिक इंजीनियरिंग शाखा है जो कि डीएनए का निर्माण करती है। क्लोनिंग का अर्थ है एक ही तरह की चीज बनाना। सबसे पहली जीन आधारित फसल टमाटर थी। आज हम बीटी टमाटर, बीटी कॉटन, बीटी बैंगन के नाम से जानते हैं। जीन में कॉपी करने के लिए पांच टूल की आवश्यकता होती है। स्मार्ट बेबी तकनीक भी जीन पर आधारित है। डायबटीज जैसे रोग भी जीन के कारण हो रहे हैं। व्याख्यान में उप प्राचार्य डॉ. एसएस यादव, डॉ. अंतिमा कुलश्रेष्ठ, डॉ. सुहेल अनवर, डॉ. प्रमोद कुमार, डॉ. कविता सिंह, डॉ. फैसल सिद्दीकी, डॉ. रिहान जहीर, प्रवीन कुमार, विवेक कुमार, नरेन्द्र सिंह, डॉ. ललित उपाध्याय आदि मौजद थे।

दैनिक जागरण गुरुवार, 05 फरवरी 2015

साहित्य ही समाज का दर्पण : डॉ . सिंह

अलीगढ : ज्ञान महाविद्यालय के कला संकाय में बुधवार को अंग्रेजी विषय में अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। सेमिनार का विषय अंग्रेजी साहित्य में रोमांटिक कवियों का महत्व रहा। व्याख्यान के मुख्य वक्ता डीएस कॉलेज के शिक्षक डॉ. वीपी सिंह ने कहा साहित्य व्यक्ति की भावनाओं और उसकी संवेदनाओं में निहित होता है। साहित्य समाज का दर्पण होता है। इसके साथ ही साहित्य का सामाजिक महत्व और इसके उपयोगिता की वकालत की। आगे बताया कि रोमांटिक युग अंग्रेजी साहित्य का सबसे रचनात्मक समय रहा है। डॉ. दीप्ति महेश्वरी ने कार्यक्रम का संचालन किया। डॉ. केपी सिंह ने विभिन्न कवियों के दर्शन और उनकी जीवन शैली के बारे में बताया। व्याख्यान में कॉलेज के प्राचार्य डॉ. वाईके गुप्ता, उपप्राचार्य डा. एसएस यादव, डा. ललित उपाध्याय, कलासंकाय के प्रभारी डॉ. विवेक मिश्रा, डॉ. वीसी गुप्ता, डा. नरेन्द्र सिंह, डॉ. डीएन गुप्ता आदि मौजूद रहे।

Scanned by CamScanner

सुर्खियों में ज्ञान महाविद्यालय

कल्पतरु एक्सप्रेस 05 अगस्त 2014

औद्योगिक अभिप्रेरणा व्यक्तित्व विकास का तरीका

05/08/2014

कल्पतरु समाचार सेवा

सेमिनार

- वैल्डिंग कोर्स के 25 प्रशिक्षार्थियों का साक्षात्कार कर दिया प्रशिक्षण
- सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग शुरू करने से पूर्व कर लें जानकारी

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय में आयोजित सेमीनार में वर्तमान परिवेश में उद्यमशीलता की आवश्यकता को स्पष्ट किया गया। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों को परिभाषित कर संस्थान के प्रमुख कार्यों से अवगत कराया गया।

एमएसएमई सहायक निदेशक शकील अहमद तथा इंवेस्टीगेटर सुशील यादव ने औद्योगिक अभिप्रेरणा अभियान संबंधी जानकारी देते हुए बताया कि मानव मनोविज्ञान के प्रमुख कारकों का उल्लेख किया।

शकील अहमद ने भारत के विभिन्न प्रकार के उद्योगों के विकास का जिक्र करते हुए कहा कि सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग शुरू करने एवं उनके सफल संचालन के सिद्धान्त तथा व्यावहारिक तरीकों को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए।

सुशील यादव (इंवेस्टीगेटर) ने उद्यमशीलता तथा प्रबन्धकीय विकास के सहयोग के बारे में भी जानकारी दी।

महाविद्यालय परिसर स्थित ज्ञान औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में बेसिक वैल्डिंग कोर्स करने वाले 25 प्रशिक्षार्थियों का साक्षात्कार कर प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन शकील अहमद ने किया।

इस मौके पर प्रधानाचार्य शारिक मुस्तफा तथा उपप्रधानाचार्य सुरेश चन्द्रा भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. गौतम गोयल ने किया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के सचिव दीपक गोयल, रेखा शर्मा, रत्न प्रकाश, ललित उपाध्याय भी उपस्थित थे। प्राचार्य डॉ. वाईके गुप्ता ने आभार व्यक्त किया।

दैनिक जागरण 05 अगस्त 2014

ज्ञान महाविद्यालय अलीगढ़ में औद्योगिक अभिप्रेरणा अभियान

[illegible]

आज 14 फरवरी 2014

ज्ञान महाविद्यालय में हुआ वार्षिकोत्सव

[illegible]

राजपथ 27 नवम्बर 2014

अनुसूचित जातियों के उत्थान हेतु लोगों का हृदय परिवर्तन जरूरी–डा.एच.एन.सिंह

[illegible]

Scanned by CamScanner

सुर्खियों में ज्ञान महाविद्यालय

दैनिक जागरण 14 फरवरी 2014

ज्ञान महाविद्यालय में वार्षिकोत्सव मनाया

अलीगढ़ : ज्ञान महाविद्यालय में बुधवार को वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया। विद्यार्थियों ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

इसका उद्घाटन अपर आयुक्त देवेंद्र दीक्षित और [illegible] एमबी यादव, [illegible] बोर्ड के सदस्य कृपाल सिंह ने संयुक्त रूप से किया। इस मौके पर महाविद्यालय की अध्यक्ष आशा देवी, सचिव दीपक गोयल, डा. गौरव [illegible], कोषाध्यक्ष [illegible] अग्रवाल मौजूद रहे।

प्राचार्य डा. वाईके गुप्ता ने प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। समारोह में डा. बीडी गुप्ता, [illegible] पुष्पेंद्र सिंह, रंजन सिंह, डा. ललित उपाध्याय, डा. रेखा शर्मा तथा डा. रामप्रकाश [illegible] दिया। कक्षाओं में प्रथम आने वाले विद्यार्थियों को भी पुरस्कृत किया गया। अतिथियों ने वार्षिक पत्रिका का विमोचन किया।

ज्ञान महाविद्यालय में वार्षिकोत्सव का उद्घाटन करते अतिथि।

प्रावदा रविवार, 26 अक्टूबर 2014

ज्ञान ज्योति से निर्धनों के घरों में दीपक जगमगाए

[illegible]

अमर उजाला बुधवार, 31 दिसम्बर 2014

बदले में समाज को कुछ दें

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय एनएसएस इकाई के तत्वावधान में गांव [illegible] में आयोजित सात दिवसीय शिविर का समापन मंगलवार को हुआ। [illegible] ने कहा कि हम सभी समाज से कुछ न कुछ लेते हैं। हमें बदले में समाज को कुछ देना भी चाहिए। इस अवसर पर [illegible], डॉ. एस. [illegible], डॉ. रेखा शर्मा, [illegible] आदि थे।

हिन्दुस्तान रविवार, 07 सितम्बर 2014

उच्च शिक्षा के महत्व को बताया

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय के सभागार में पहचान समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें बीकॉम प्रथम वर्ष के 165 विद्यार्थियों ने भाग लिया। समारोह में डॉ. राजेश कुशवाहा, डॉ. हीरेश गोयल, डॉ. समर रजा, डॉ. गिरीश गुप्ता, डॉ. संध्या सेंगर ने बीकॉम की व्यावसायिक क्षेत्र में उपयोगिता बताई। कॉलेज प्रिंसिपल डॉ. वाई के गुप्ता ने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ते निजीकरण के प्रभाव को विस्तार से बताया। इस दौरान डॉ. प्रमोद कुमार, डॉ. सुहेल अनवर, डॉ. सोमवीर सिंह, डॉ. सौरभ शर्मा आदि मौजूद रहे।

अमर उजाला

'अपने अधिकारों को पहचानें ग्रामीण'

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय द्वारा राष्ट्रीय सेवा योजना के शिविर में संगोष्ठी व रैली का आयोजन मंदिर का नगला गांव में किया गया। संचालन कार्यक्रम अधिकारी डॉ. ललित उपाध्याय ने किया। उन्होंने कहा कि ग्रामीण अपने अधिकारों को पहचानें और सरकारी की योजनाओं का लाभ लें। उप प्राचार्य डॉ. एसएस यादव ने कहा कि युवाओं को सरकार के साथ सहयोग करना चाहिए। इसमें नुक्कड़ नाटक के जरिए सुशासन के महत्व व योजनाओं की जानकारी दी गई। इस दौरान डॉ. विवेक मिश्रा, डीके रावत, अब्दुल वासित, राकेश, विनोद आदि थे।

हिन्दुस्तान

यदि इरादे बुलंद हों तो सफलता चलकर आती है

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय के सरस्वती भवन में बीटीसी विभाग में प्रभावशाली शिक्षण की विधियों पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। डॉ. भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय के पूर्व डीन डॉ. गिर्राज किशोर ने शिक्षण के अर्थ के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने यदि इरादे बुलंद हों तो सफलता चलकर आती है, समुद्र राह देते हैं चट्टानें थर्राती हैं कहकर छात्र-छात्राओं में जोश भरा। इस मौके पर कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. वाईके गुप्ता, डॉ. रेखा शर्मा, डॉ. ललित उपाध्याय, बीटीसी विभागाध्यक्ष आरके शर्मा आदि मौजूद रहे।

दैनिक जागरण

ज्ञान कॉलेज में पौधरोपण

अलीगढ़ : ज्ञान कॉलेज की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के विद्यार्थियों ने कैंपस में पौधरोपण किया। प्राचार्य डॉ. वाईके गुप्ता ने विद्यार्थियों को पौधरोपण के लिए प्रेरित किया। डॉ. ललित उपाध्याय ने स्वयं सेवकों से अपील की कि वे अपने व परिवारीजन के जन्मदिवस पर एक पौधा जरूर लगाएं। इस अवसर पर उप-प्राचार्य, डॉ. रेखा शर्मा, डॉ. जेके शर्मा, आरके कुशवाह, डॉ. वीसी गुप्ता, शर्वेद आदि थे।

दैनिक जागरण

ज्ञान महाविद्यालय में 125 मरीजों का नेत्र परीक्षण

अलीगढ़ : ज्ञान महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के विशेष शिविर में चौथे दिन 125 मरीजों का नेत्र परीक्षण किया गया। [illegible] में आयोजित शिविर में [illegible] के [illegible] ने नेत्र रोगों की जानकारी दी। [illegible] डॉ. [illegible] ने राष्ट्रीय सेवा योजना के [illegible] स्वयंसेवकों को अवगत कराया। प्राथमिक विद्यालय में साफ-सफाई की गई। संचालन डॉ. ललित उपाध्याय ने किया। इस मौके पर उप प्राचार्य डॉ. एसएस यादव, डॉ. विवेक मिश्र, डॉ. हरीश गोयल, डॉ. आरके कुशवाह आदि मौजूद रहे।

Scanned by CamScanner

सत्र 2014–15 में आयोजित हुए महाविद्यालय के कार्यक्रम एक नजर में

क्र. सं.	कार्यक्रम का नाम	दिनांक	भाग लेने वाले अतिथि	विशेष विवरण
1.	ज्ञान महाविद्यालय का वार्षिकोत्सव	13.02.2014	**मुख्य अतिथि –** श्री देवेन्द्र दीक्षित अपर आयुक्त, अलीगढ़ मण्डल **मानद अतिथि –** श्री एस.पी. यादव वरिष्ठजेल अधीक्षक, अलीगढ़ **विशेष अतिथि –** 1. श्री कृपाल सिंह ए.डी.ए. बोर्ड के सदस्य 2. श्री अनिल खण्डेलवाल, मथुरा 3. श्री आर. पी. सक्सैना, मथुरा 4. श्री सुरेश चन्द्र सक्सैना, मथुरा 5. श्री चन्द्रशेखर शर्मा, मथुरा 6. श्रीमती शील गर्ग, मथुरा 7. श्री देशराज सिंह 8. श्रीमती मोहिनी गुप्ता 9. श्री मनमोहन चावला, रामकृष्ण मिशन	प्रबन्धक समिति की अध्यक्षा- श्रीमती आशा देवी सचिव- श्री दीपक गोयल, कोषाध्यक्ष- श्री अखलूब अहमद तथा ज्ञान आई.टी.आई. के निदेशक डॉ. गौतम गोयल आदि ने उत्सव में भाग लिया।
2.	रोजगार एवं परामर्श समिति द्वारा विशेष व्याख्यान	24.02.2014	मुख्य वक्ता- श्री अभिषेक बघेल	व्याख्यान का विषय "व्यक्तित्व विकास"
3.	उद्यमिता जागरूकता कार्यक्रम	25.2.2014	समन्वयक- श्री जितेन्द्र कुमार शर्मा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (भारत सरकार) मुख्य अतिथि : 1. श्री वाई.पी. गुप्ता महा प्रबन्धक, जिला उद्योग केन्द्र, अलीगढ़ 2. श्री डी. वी. एस. चौहान सह-प्रबंधक, जिला उद्योग केन्द्र, अलीगढ़	महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने भाग लिया
4.	युवावर्ग हेतु स्व-रोजगारोन्मुख शिक्षा विषयक सैमीनार का आयोजन	05.03.2014	1. श्री सुनील कुमार इन्वेस्टीगेटर सूक्ष्म, लघु व मध्यम स्तरीय उद्यम वि. सं. नुनहाई (आगरा) 2. श्री एल.एन. अग्रवाल प्रबन्धक जिला उद्योग केन्द्र अलीगढ़ 3. श्री एन.पी. सिंह वित्तीय सलाहकार एफ.एल.सी.सी. 4. श्री शंकर लाल वर्मा लीड बैंक मैनेजर, अलीगढ़ 5. शाखा प्रबन्धक, केनरा बैंक, अलीगढ़	महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने भाग लिया
5.	बी. एस-सी. तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों का विदाई समारोह	06.03.2014	प्रबन्धक, प्राचार्य, उप प्राचार्य व प्राध्यापकगण	
6.	बी. ए. तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों के विदाई समारोह	08.03.2014	प्रबन्धक, प्राचार्य, उप प्राचार्य व प्राध्यापकगण	
7.	राष्ट्रीय पेंशन योजना पर गोष्ठी आयोजन	10.3.2014	डॉ. गिरीश कुमार वार्ष्णेय चेयरमैन, ग्लेबल एजूकेशन सोसाईटी	
8.	स्काउट एवं गाइड शिविर का आयोजन	10.3.2014 से 15.03.2014 तक	1. डॉ. दुष्यंत कुमार सक्सैना जिला स्काउट कमिश्नर, अलीगढ़ 2. श्री यतेन्द्र कुमार सक्सैना मुख्य प्रशिक्षक	1. डॉ. लक्ष्मी गोयल एसोसिएट प्रोफेसर (यू.एस.ए) 2. डॉ. रमेन गोयल (सर्जन)

Scanned by CamScanner

				3. डॉ. राजीव सूद (सर्जन) 4. श्री ऋषि गोयल 5. श्री दीपक गोयल सचिव 6. डॉ. गौतम गोयल निदेशक ज्ञान आई. टी. आई. आदि ने समापन समारोह में भाग लिया।
9.	होलिकोत्सव	15.03.2014	स्काउट एवं गाइड शिविर के समापन समारोह में भाग लेने वाले सभी अतिथि	
10.	बी. टी. सी. के विद्यार्थियों को थ्री ईडियट'' फिल्म दिखाई गयी।	22.03.2014		
11.	दैनिक जागरण के जन जागरण अभियान में सहभाग	24.03.2014		विद्यार्थी तथा प्राध्यापकों के साथ 1. श्री दीपक गोयल सचिव 2. डॉ. गौतम गोयल
12.	एन.एस.एस. द्वारा आयोजित मतदाता जागरूकता अभियान			
	अ. मतदाता जागरूकता रैली	13.03.2014	डॉ. चन्द्रवीर सिंह जिला समन्वयक स्वीप कार्यक्रम	
	ब. चुनाव पर्यवेक्षकों की गोष्ठी	25.3.2014	1. जिला निर्वाचन अधिकारी अलीगढ़ 2. सहायक जिला निर्वाचन अधिकारी अलीगढ़ 3. नोडल प्रभारी 'स्वीप' 4. ए.डी. एम. (वित्त) 5. जिला समन्वयक 'स्वीप'	महाविद्यालय के डॉ. ललित उपाध्याय कार्यक्रम अधिकारी N. S. S. ने भाग लिया।
	स. अपर मुख्य निर्वाचन अधिकारी द्वारा अलीगढ़ के कलेक्ट्रेट कक्ष में वीडियो कान्फ्रेसिंग	28.03.2014	1. नोडल अधिकारी 'स्वीप' 2. ए. डी. एम. (वित्त) 3. मुख्य चिकित्साधिकारी 4. लीडबैंक मैनेजर 5. जिला विद्यालय निरीक्षक	ज्ञान महाविद्यालय, डी. एस. कॉलिज, एस. वी. कॉलिज, मंगलायतन वि.वि. तथा ए.एम.यू की एन.एस.एस. इकाईयों के कार्यक्रम अधिकारी द्वारा प्रतिभाग
	द. वॉक फोर वोट	01.04.2014	1. जिला निर्वाचन अधिकारी 2. ए. डी. एम. (वित्त) 3. जिला क्रीड़ा अधिकारी 4. नगर आयुक्त, अलीगढ़	डॉ. ललित उपाध्याय ने भाग लिया
13.	देवी के गीतों का आयोजन	04.04.2014	1. आयकर आयुक्त 2. एस.पी. सिटी की पत्नी श्रीमती प्रीति पाण्डे 3. सी.ओ. सिटी की पत्नी श्रीमती रूबी सिंह 4. डॉ. पी. के. शर्मा, डॉ. डी.के. गौड़, डॉ. सुनीता गुप्ता, डॉ. सुभाष चौधरी, डॉ. वाई.पी. सिंह तथा डॉ. आशीष दत्त धर्म समाज कॉलिज, अलीगढ़	सचिव श्री दीपक गोयल तथा डॉ. गौतम गोयल ने भी भाग लिया
14.	क्वालिटी काउंसिल ऑफ इण्डिया की नवीं कानक्लेव में सहभागिता	15-16 अप्रैल 2014	1. श्री के.सी. शर्मा चेयरमैन क्यू.सी.आई. 2. प्रोफेसर बेलिला स्मिथ (जर्मनी) 3. श्री कीर्ति कपूर व्याख्याता एन.सी.ई.आर.टी 4. श्री आर. एन. सिंह डी.जी.एम., रोजगार एवं श्रम मंत्रालय	डॉ. वाई. के. गुप्ता प्राचार्य, डॉ. एस. एस. यादव, उपप्राचार्य, श्री आर. के. शर्मा विभागाध्यक्ष, बी. टी. सी. श्री वीरेन्द्र सिंह

Scanned by CamScanner

			5. श्री यू. एन. खावरे सचिव, एन. आई. ओ. एस. बोर्ड 6. श्री अमरजीत सिंह सचिव, मानव संसाधन विकास मंत्रालय	प्राचार्य Gyan I.T.I. ने भाग लिया
15.	पी-एच.डी. चैम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री द्वारा आयोजित कार्यशाला में सहभाग	05.05.2014	1. प्रोफेसर रनवीर सिंह कुलपति, राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, दिल्ली 2. प्रो. विनयशील गौतम आई. आई. टी., दिल्ली 3. डॉ. ज्योति, वैज्ञानिक विज्ञान व प्रौद्योगिकी मंत्रालय 4. डॉ. रेखा चतुर्वेदी, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली 5. प्रो. आर. के. मित्तल पूर्व कुलपति तीर्थन्कर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद 6. डॉ. रमेश गौड़, जे. एन. यू., दिल्ली 7. प्रो. एम.एन.हुडा, भारतीय विद्यापीठ संस्थान	डॉ. सौरभ शर्मा, डॉ. गिरीश कुमार वार्ष्णेय तथा डॉ. रत्नप्रकाश ने भाग लिया।
16.	महाविद्यालय के प्राध्यापकों का उन्मुखीकरण	02.05.2014 से 07.05.2014		B.B.A., B.C.A., कला, विज्ञान व वाणिज्य संकाय के प्राध्यापकों द्वारा प्रतिभाग
17.	महाविद्यालय में जीव जन्तु रक्षा अभियान का शुभारम्भ	10.05.2014		सचिव श्री दीपक गोयल एवं बी.टी.सी. के विद्यार्थी एवं प्राध्यापकों द्वारा प्रतिभाग
18.	मदर्स डे पर संगोष्ठी का आयोजन	11.05.2014		सचिव श्री दीपक गोयल महाविद्यालय के विद्यार्थी व प्राध्यापकों द्वारा प्रतिभाग
19.	'माध्यमिक विद्यालयी शिक्षा में गुणवत्ता' विषय पर कार्यशाला का आयोजन	15.05.2014	रमनलाल शोरा वाला पब्लिक स्कूल, मथुरा के निदेशक, एकेडमिक निदेशक, प्रधानाचार्य तथा 65 अध्यापकों के साथ-साथ हमारे महाविद्यालय के प्राध्यापकों ने भी भाग लिया।	
20.	प्लेसमेंट सैल ने अपने परिसर में विद्यार्थियों का साक्षात्कार	30.05.2014	श्री उमेश कुमार एवं प्रमोद कुमार इण्डियन डाईकास्टिंग इण्डस्ट्रीज प्रा. लि ,अलीगढ़	
21.	पर्यावरण संरक्षण विषयक पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन	04.06.2014	मुख्य अतिथि श्रीमती लक्ष्मी तुरेहा ए. बी. के., ए. एम. यू., अलीगढ़	सचिव महोदय के साथ बी.टी.सी. के प्राध्यापक एवं प्रशिक्षुओं ने भाग लिया।
22.	महाविद्यालय द्वारा 'पर्यावरण जनचेतना रैली' का आयोजन	05.06.2014	ग्राम प्रधान, पड़ियावली व प्राचार्य डा. वाई. के. गुप्ता	सामाजिक सरोकार समिति ने बी.टी.सी. व एन.एन.एस. के सहयोग से रैली का आयोजन
23.	रक्तदान शिविर के सफल आयोजन के उपलक्ष्य में N.S.S. के अधिकारी को सम्मान	14.06.2014		जिलाधिकारी अलीगढ़ ने N. S. S. कार्यक्रम अधिकारी डा. ललित उपाध्याय को सम्मानित किया।
24.	बी. एड विभाग में पोस्टर बनाने की प्रतियोगिता	26.07.2014		बी. एड के विद्यार्थियों तथा प्राध्यापकों ने भाग लिया

Scanned by CamScanner

25.	बी. एड. विभाग में मेंहदी व थाल सज्जा प्रतियोगिता का आयोजन	28.07.2014		
26.	वृक्षारोपण दिवस का आयोजन	31.07.2014	मुख्य अतिथि श्री सुबोध नन्दन पर्यावरणविद् व विशिष्ट अतिथि– श्री कृपाल सिंह सदस्य A.D.A.	विद्यार्थियों तथा प्राध्यापक गणों ने भाग लिया
27.	बी. एड. विभाग में प्रतिभा परिचय समारोह	02.08.2014	मुख्य अतिथि – 1. डॉ. बीना शर्मा एसो. प्रोफेसर डी.एस. कालेज विशिष्ट अतिथि – 2. डॉ. सुनीता गप्ता कला विभाग डी.एस. कॉलेज	श्री दीपक गोयल सचिव, डॉ. गौतम गोयल, बी. एड. के विद्यार्थियों तथा प्राध्यापक गणों ने भाग लिया
28.	औद्योगिक अभिप्रेरणा अभियान	04.08.2014	1. श्री शकील अहमद सहायक निदेशक एम.एस.एम.ई., आगरा 2. श्री सुशील यादव इन्वेस्टीगेटर एम.एस.एम.ई., आगरा	श्री दीपक गोयल सचिव, डॉ. गौतम गोयल, बी. एड. के 59 विद्यार्थियों तथा प्राध्यापक गणों ने भाग लिया
29.	बी.टी.सी. विभाग में राखी बनाना, थाल सज्जा एवं मेंहदी प्रतियोगिता	09.08.2014		बी.टी.सी. के विद्यार्थियों ने भाग लिया
30.	इण्डिया हैरीटेज क्विज 2014 का आयोजन	11.08.2014	इण्टैक इण्डिया हैरीटेज के क्विज मास्टर श्री रक्तिम कुमार नाग तथा इण्टैक ब्रजभूमि क्षेत्रीय चैप्टर के संयोजक श्री दीपक गोयल	अलीगढ़ नगर के 14 सैकेण्डरी व सीनियर सैकेण्डरी पब्लिक स्कूल के 76 विद्यार्थियों ने भाग लिया
31.	बी. एड. विभाग में अतिथि व्याख्यान	12.08.2014	अतिथि वक्ता प्रोफेसर अनवर जहाँ जुबैरी पूर्व कुलपति कालीकट विश्वविद्यालय, कालीकट	
32.	बी.टी.सी. विभाग में निबन्ध प्रतियोगिता	14.08.2014	विषय – 'आजाद भारत में शैक्षिक चुनौतियाँ'	
33.	स्वतंत्रता दिवस समारोह	15.08.2014	प्राचार्य डा. वाई. के. गुप्ता द्वारा ध्वजारोहण	
34.	बी.टी.सी. विभाग में अतिथि व्याख्यान	19.08.2014	अतिथि वक्ता डा. गिर्राज किशोर पूर्व डीन शिक्षा संकाय, डॉ. बी. आर. ए. विश्वविद्यालय, आगरा	विषय : प्रभावशाली शिक्षण की विधियां
35.	विश्व उद्यमिता दिवस पर संगोष्ठी का आयोजन	21.08.2014	प्राचार्य एवं उप प्राचार्य	बी. बी. ए. एवं बी. सी. ए. के छात्रों की सहभागिता
36.	बी.टी.सी. विभाग में शैक्षिक प्रदर्शनी एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम	26.08.2014	मुख्य अतिथि : डॉ. महेश चन्द्र वार्ष्णेय अध्यक्ष, फाइन आर्ट्स विभाग, श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय, अलीगढ़	बी.टी.सी. के विद्यार्थियों की सहभागिता
37.	बी.एड. विभाग द्वारा 13 उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों का शैक्षिक कार्यशाला का आयोजन	28.08.2014	मुख्य अतिथि डा. आर. एन. सिंह पूर्व प्राचार्य डी. एस. कालिज, अलीगढ़	Subject : Quality Improvement in Teaching Learning Process

Scanned by CamScanner

38.	इंटेक द्वारा वृन्दावन में आयोजित कार्यक्रम में प्रतिभागिता	3.09.2014 से 5.9.2014 तक	1. श्री के.के. गुप्ता (इंटेक) 2. अचल पाण्ड्या (आई.जी.एन.सी.ए.) 3. डॉ. महेशनारायण शर्मा वृन्दावन शोध संस्थान 4. श्री नीलाभ सिन्हा, श्रीमती ममता मिश्रा, श्री धर्मेन्द्र मिश्र (इंटेक)	हमारे महाविद्यालय के चार प्राध्यापक एवं पुस्तकालयाध्यक्ष ने कार्यशाला में भाग लिया
39.	बी.कॉम. प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों का उन्मुखीकरण	4.09.2014	प्राचार्य एवं उप प्राचार्य	
40.	शिक्षक दिवस	5.09.2014	डा. के. के. सिंह प्रधानाचार्य, एस.एम.बी. इण्टर कालिज, अलीगढ़	
41.	काव्य गोष्ठी का आयोजन	8.09.2014	मु. अ. : डॉ.प्रभाकर शर्मा विभागाध्यक्ष (हिन्दी), डी. एस. कालिज (अलीगढ़) वि. अ. : 1. कवि डॉ. अशोक अज्ञेय (वृन्दावन) 2. श्रीमती सुधा अरोड़ा (मथुरा) 3. श्री ब्रज भूषण चतुर्वेदी (वृन्दावन) 4. श्री अशोक अंजुम (अलीगढ़) 5. डॉ. दौलतराम (अलीगढ़)	श्री दीपक गोयल सचिव महोदय भी उपस्थित रहे।
42.	हास्य व्यंग्य कार्यक्रम	9.09.2014	मु.अ. : डॉ.मुकेश भारद्वाज एसो.प्रो.डी.एस.कालिज वि.अ. : 1. कवि डॉ. अशोक अज्ञेय (वृन्दावन) 2. कवि सबरस मुरसानी (हाथरस) 3. कवि अनुपम गौतम (वृन्दावन)	
43.	संस्थापक दिवस	11.09.2014	मुख्य अतिथि– श्री जगवीर किशोर जैन अतिथिगण : 1. श्री राधाकृष्ण (आयकर आयुक्त) 2. श्री शंकर सिंह (आयकर अधिकारी) 3. श्री अवधेश तिवारी (ए.डी.एम. सिटी) 4. डॉ. जी. सी. गुप्ता 5. श्री अनिल गुप्ता 6. श्रीमती मंजू श्री गुप्ता (दिल्ली) 7. श्री वीरेन्द्र गोयल (मथुरा) 8. श्री चन्द्र शेखर जी (मथुरा) 9. शाखा प्रबन्धक, बैंक आफ बड़ौदा, सासनी गेट 10. श्री अरविन्द कुमार बैंक ऑफ बड़ौदा 11. श्रीमती नीलम अग्रवाल (मथुरा) 12. श्री विष्णु जी (मथुरा) 13. डॉ. पी.के. शर्मा व डॉ. मुकेश भारद्वाज डी. एस. कॉलिज, अलीगढ़	1. श्रीमती आशा देवी अध्यक्षा 2. श्री दीपक गोयल सचिव 3. श्री चाँद गोयल (I.A.S.) 4. श्रीमती श्रीदेवी गोयल (I.P.S.) 5. डॉ. मधु गोयल (दिल्ली) 6. श्री ऋषि गोयल 7. डॉ. गौतम गोयल 8. कु. श्रेया गोयल
44.	हिन्दी दिवस	13.09.2014		महाविद्यालय के प्राचार्य, उपप्राचार्य विद्यार्थियों ने हिन्दी की वकालत की
45.	बी. एड. विभाग में सत्रीय परीक्षा	15.09.2014 से 17.9.2014 तक		
46.	उद्यमिता जागरूकता कार्यक्रम	16.09.2014	1. श्री प्रदीप पाण्डेय, सह. प्रबन्धक (N.S.I.C.) 2. श्री ललित कुमार, उप प्रबन्धक (N.S.I.C.) 3. श्री रामप्रकाश पाण्डेय वरिष्ठ विशेषज्ञ एन. एस. आई. सी., अलीगढ़	

Scanned by CamScanner

47.	विश्वकर्मा दिवस	17.9.2014		कालिज के सचिव श्री दीपक गोयल व ज्ञान आई.टी.आई. के निदेशक डॉ. गौतम गोयल ने भाग लिया।
48.	वॉलीबाल का मैत्री मैच	19.09.2014	श्री मुनीश अहमद प्रवक्ता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, मडराक (अलीगढ़)	
49.	बी.एड विभाग में अतिथि व्याख्यान	19.09.2014	अतिथि वक्ता डॉ. समीना फैजली प्राचार्या अलबरकात इंस्टीट्यूट ऑफ एजूकेशन, अलीगढ़	विषय : 'सूक्ष्म शिक्षण'
50.	बी.एस-सी. प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों का परिचय सम्मेलन	23.09.2014		
51.	एच.आई.वी./एड्स पर वार्ता का आयोजन	23.09.2014	1. डॉ. सईद मुहम्मद मलखान सिंह जिला चिकित्सालय 2. एड्स परामर्श दात्री श्रीमती जावित्री मलखान सिंह जिला चिकित्सालय	
51.	राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस का आयोजन	24.09.2014	1. श्री मुकेश सैनी एड्वोकेट 2. श्री ज्ञानेन्द्र मिश्र अध्यक्ष, उड़ान सोसायटी	
52.	माता की भैंट तथा डांडिया कार्यक्रम	27.09.2014	मुख्य अतिथि- 1. डॉ. मंजू गौड़ प्रधानाचार्या, रघुवीर बाल मंदिर विशिष्ट अतिथि- 1. डॉ. पी. के. शर्मा (डी. एस. कॉलेज, अलीगढ़) 2. डॉ. आशीष दत्त (डी. एस. कॉलेज, अलीगढ़)	
60.	N.S.S. इकाई द्वारा स्वच्छ भारत अभियान का श्री गणेश	02.10.2014	गांधी जयन्ती पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि : श्री रणवीर सिंह ग्राम प्रधान, मडराक	मडराक स्थित राजकीय संस्थानों में स्वच्छता अभियान
61.	NAAC की टीम द्वारा महाविद्यालय का मूल्यांकन	9, 10 व 11 अक्टूबर 2014 तक	विभिन्न संदर्भ व्यक्ति 1. प्रो. एस. इग्नासीमुथू पूर्व कुलपति, चेन्नई विश्वविद्यालय, चेन्नई 2. प्रो. केशवान वेलूथाट, दिल्ली विश्वविद्यालय 3. डॉ. भूषण के. शर्मा प्राचार्य, एस. डी. कॉलेज, चण्डीगढ़	
62.	N. S. S. इकाई के कार्यक्रम अधिकारी ने प्रशिक्षण में भाग लिया	सात दिवसीय प्रशिक्षण 12.10.2014 से 18.10.2014	विभिन्न विषय विशेषज्ञों द्वारा सत्रों का आयोजन	सेन्टजौन्स कालिज, आगरा में प्रशिक्षण हुआ, जिसमें डा. ललित उपाध्याय द्वारा प्रतिभाग
63.	ज्ञान आई.टी.आई. में आयोजित बेसिक बैंकिंग सर्टीफिकेट कोर्स के प्रमाण पत्रों का वितरण	14.10.2014	श्री सुशील यादव इन्वेस्टीगेटर, एम. एस. एम. ई. विकास संस्थान, आगरा	
64.	बी.कॉम.के विद्यार्थियों का मनोवैज्ञानिक परीक्षण	17.10.2014		

Scanned by CamScanner

65.	N.S.S. इकाई द्वारा एकता दौड़ का आयोजन	31.10.2014	मुख्य अतिथि : श्रीमती मिथलेश देवी ग्राम प्रधान बढ़ौली फतेह खाँ	
66.	युवोत्सव 2014 में प्रतिभागिता	7.11.2014 से 9.11.2014 तक		डॉ. बी.आर. अम्बेडकर वि.वि. आगरा में आयोजित उत्सव की 36 में से 10 प्रतियोगिताओं में हमारे विद्यार्थियों ने भाग लिया।
67.	वाणिज्य संकाय में अतिथि व्याख्यान	10.11.2014	अतिथि वक्ता : डॉ. डी. के. अस्थाना पूर्व मैनेजर इण्डियन ओवर सीज बैंक	विषय : "वस्तु विनिमय से इण्टरनेट बैंकिंग की यात्रा'
68.	विशेष उद्यमिता जागरूकता कार्यक्रम	11.11.2014	1. श्री सुधांशु मोहन संयुक्त आयुक्त (उद्योग) अलीगढ़ मण्डल 2. श्री वाई.पी. गुप्ता उपायुक्त (उद्योग) जिला उद्योग केन्द्र, अलीगढ़ 3. श्री एल. एन. अग्रवाल सहायक प्रबन्धक 4. श्री आर. पी. सिंह सहायक प्रबन्धक 5. श्री हरिओम शर्मा शाखा प्रबन्धक, केनरा बैंक, अलीगढ़	
69.	शिक्षा दिवस पर क्विज प्रतियोगिता का आयोजन	11.11.2014		
70.	बी. ए. के विद्यार्थियों का मनोवैज्ञानिक परीक्षण	12.11.2014		
71.	ज्ञान मेला	14.11.2014	मुख्य अतिथि– 1. डॉ. सी. एल. सोनकर ए. सी. एम. प्रथम विशेष अतिथि– 1. डॉ. अमित चतुर्वेदी क्षेत्रीय निदेशक IGNOU 2. डॉ. ए. के. तोमर प्राचार्य डी. एस. कॉलेज 3. डॉ. एस. पी. एस. जादौन पूर्व प्राचार्य, एस. वी. कॉलेज, अलीगढ़	विद्यार्थियों ने 35 स्थल लगाये, जिसमें प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पाने वालों को पुरस्कृत किया गया
72.	रक्तदान शिविर	19.11.2014	मु. अतिथि : श्री सतीश गौतम सांसद, अलीगढ़ 1. श्री रामेश्वर दयाल खरे मु. चिकित्सा अधीक्षक 2. डॉ. प्रमोद कुमार पोरवाल रक्त कोष प्रभारी, मलखान सिंह जिला चिकित्सालय, अलीगढ़	
73.	उद्यमिता जागरूकता कार्यक्रम	20.11.2014 से 22.11.2014	श्री अमरचन्द्र शर्मा (सह. प्रबन्धक खादी उद्योग) श्री जितेन्द्र कुमार शर्मा	
74.	समाज शास्त्र विभाग में अतिथि व्याख्यान	26.11.2014	अतिथि वक्ता डॉ. एच. एन. सिंह एसोसिएट प्रोफेसर डी. एस. कॉलेज	विषय: 'अनुसूचित जातियों की समस्या व उनका निवारण'
75.	बी.एड. तथा प्रबन्धन विभाग का शैक्षिक भ्रमण	26.11.2014		आगरा व फतेहपुर सीकरी गये
76.	बी.टी.सी. विभाग का शैक्षिक भ्रमण	29.11.2014		मथुरा, वृन्दावन गये

Scanned by CamScanner

77.	N.S.S. के एक-एक दिवसीय तीन शिविरों का आयोजन	10.12.2014 13.12.2014 19.12.2014	1. श्रीमती विमला सक्सैना प्रधानाध्यापिका, प्राथमिक विद्यालय, नगला मंदिर (रूस्तमपुर सकत खाँ) 2. श्रीमती मीनाक्षी शर्मा अध्यापिका, प्राथमिक विद्यालय, नगला मंदिर	प्राचार्य, उप प्राचार्य व कार्यक्रम अधिकारी द्वारा प्रतिभाग
78.	ज्ञान दिवस	16.12.2014	मुख्य अतिथि- प्रो. राजीव लोचन शुक्ला ए.एम.यू. विशिष्ट अतिथि- डा. अकील उर्रहमान, ए. एम. यू.	
79.	N.S.S. का सात दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन	24.12.2014 से 30.12.2014 तक	उद्घाटन सचिव श्री दीपक गोयल जी द्वारा डा. गौतम गोयल, प्राचार्य एवं उप प्राचार्य समापन श्री जी. किशोर मण्डलीय सहायक निदेशक (बेसिक) के द्वारा	श्रमदान, रैली, बौद्धिक सत्र, नेत्र जाँच शिविर, साफ-सफाई वृक्षारोपण आदि कार्यक्रम आयोजित
80.	सहभोज कार्यक्रम का आयोजन	31.12.2014	महाविद्यालय के समस्त छात्र-छात्राओं तथा प्राध्यापकों द्वारा सहभागिता	
81.	कम्बल वितरण एवं नववर्ष पर रंगा रंग कार्यक्रम का का आयोजन	01.01.2015	मुख्य अतिथि – श्री पूरण सिंह राणा उप जिलाधिकारी, कोल वि.अ. : डा. सी. एल. सोनकर ए. सी. एम. प्रथम श्रीमती मिथलेश यादव सहायक कमाण्डेण्ट, आर. ए. एफ.	
82.	राष्ट्रीय युवा दिवस पर प्रारम्भ 'पहल' कार्यक्रम	12.01.2015 से 18.01.2015	अतिथि – महाविद्यालय द्वारा गोद लिए गए सभी 14 गांवों के ग्राम प्रधान	ठिठुरती ठंड में असहायों हेतु गर्म वस्त्रों का वितरण
83.	राष्ट्रीय सेवा योजना चतुर्थ एकदिवसीय शिविर	13.1.2015	मुख्य अतिथि – डा. वैरिन्दम गुणाकर (यूथ फार नेशन)	प्राचार्य, उप प्राचार्य व कार्यक्रम अधिकारी द्वारा प्रतिभाग
84.	गणतंत्र दिवस समारोह	26.01.2015	प्रबन्धक एवं प्राचार्य द्वारा ध्वजारोहण	
85.	हिन्दी विभाग द्वारा अतिथि व्याख्यान	28.01.2015	मुख्य अतिथि – डा. प्रेम कुमार (एसो. प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, डी. एस. कालिज, अलीगढ़)	विषय – 'कहानी पाठ: लेखन एवं प्रक्रिया'
86.	वनस्पति विभाग द्वारा अतिथि व्याख्यान	03.02.2015	मुख्य अतिथि- डा. मुकेश कुमार भारद्वाज (एसो. प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग, डी. एस. कालिज, अलीगढ़)	विषय – 'जीन क्लोनिंग इन प्लाण्ट'
87.	अंग्रेजी विभाग द्वारा अतिथि व्याख्यान	04.02.2015	मुख्य अतिथि- डा. वी. पी. सिंह (एसो. प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग, डी. एस. कालिज, अलीगढ़)	Topic : "Significance of Romantic Poets in English Litreture"
88.	प्राणि विज्ञान विभाग द्वारा अतिथि व्याख्यान	06.02.2015	मुख्य अतिथि- डा. पारुल यादव (एसो. प्रोफेसर, प्राणि विज्ञान विभाग, डी. एस. कालिज, अलीगढ़)	विषय – 'बायोलुमिनिसेंस'

Scanned by CamScanner

ज्ञान महाविद्यालय की सहयोगी संस्था

ज्ञान निजी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान

आगरा रोड, अलीगढ़ – 202002

NCVT व श्रम मंत्रालय से मान्यता प्राप्त

इलैक्ट्रीशियन व फिटर

ज्ञान निजी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान के प्राचार्य एवं स्टाफ

बढ़ते कदम

Scanned by CamScanner

Mob.: 9219419405
E-mail : gyanmv@gmail.com
Website : www.gyanmahavidhyalaya.com

मुद्रक : नवमान आफसैट प्रिन्टर्स – 09358251032

Scanned by CamScanner